म अश्विनीकुमार कन्हाई ❀ वेगि चलो हरि ले...

सो०—नजर दीठ ...

नहिं जागति ...

सो०—व्याकुल ज...

गई यशोमति ...

ति आगम सुनत व...

कहुँ डसी भुजङ्गम ... झार। ॥

कहि हरि सदनहि ... बुलाये ॥

छु जानत मंत्र कन्... ते मैया ॥

महरि बुलावन ... र खाई ॥

झारि वेगि सँग ... हे भलाई ॥

भयो भले सुत ज... न यहवानी ॥

एक मंत्र मैं जा... हि सत्य बखानों ॥

यो मो दृष्टि जु अ... मरण न पावै ॥

कह्यो सुत जाहु कन्हा... कहि जाय जिवाई ॥

...न सुनत ब्रजनाथ... हर्षि कीरतिके साथा ॥

...रि हरिसंग लिवा... वृषभानु पुर समुहाई ॥

...दितमहरि लखि... ा, अतिहिगईकुम्हिलाय

...ल अंग बानी नि...खे, लीन्हीं कण्ठ लगाय ॥

सो०—तबहिं श्यामके पांय, परी कुवँरि लैकै महरि।

मोहन देहु जियाय, अति व्याकुल मेरी सुता॥

आये गारुड़ि कुँवर कन्हाई ❀ कुँवरि कानते यह सुनि पाई ॥

धन्य धन्य आपनको जानी ❀ हृदय हर्ष दृग आनँद पानी ॥

प्रगट रोम तनु स्वेद बढाई ❀ विह्वलदेखि जननि अकुलाई ॥

अन्तर भाव भेद हरि जाने ❀ रसिक शिरोमणि मनमुसकाने ॥

तब कछु पढिकै कुँवर कन्हाई ❀ मुरलि अंगसों दई छुवाई ॥

१ घर । २ आनंद ।

❀ ब्रजविलास. ❀

...श्रीकृष्णलीला मकरंद मधुकर तुल्य भक्तजनोंको नि...
...द्यपि अनेक कृष्णचरित्रके ग्रंथ महानुभावोंने निर्मा...
श्रीतुलसीदासका सर्व रामचरित्रोंमें उत्तम...
...वारण चक्रवर्ति महानुभाव श्रीब्रजवासी...
...ब्रजविलास'' ग्रंथ कृष्णचरित्रोंमें सबसे...
...सको हाथमें लेतेही उसकी उदासीका...
...त युत नेत्रसे साक्षात् कृष्णस्वरूप...
...इस ग्रंथको अनेक स्थानमें अ...
...परंतु संवत् १९४६ में ...
...जीसे इस ग्रंथके छा...
...जिये हम छापेंगे. तब ...
...करा और जहां...
...स बीचमें कु...
...रे परम मित्र
...किया तो ...

और भी
...त्र मक-
अवकी
मिलान
परमपुष्ट
कठिन
...वासीसे
...नोंके
...त्मा
...शुद्धि
...ति.

तुम अश्विनीकुमार कन्हाई ❀ वेगि चलो हरि लेहु जिवाई ॥
दो०-नजर दीठ इक रावरी, टेर कहत हम कान्ह ।
नहिं जागति तो देहिंगी, नन्दद्वार सब प्रान ॥
सो०-व्याकुल जननी तास, घरनि महर वृषभानुकी ।
गई यशोमति पास, वेगि जाय सुधि लीजिये ॥
कीरति आगम सुनत कन्हाई ❀ कीन्हीं बिदा सखी मुसकाई ॥
जो कहुँ डसी भुजङ्गम प्यारी ❀ तौ हम आय देहिं गे झारी ॥
ऐसे कहि हरि सदनहि आये ❀ देखि यशोमति निकट बुलाये ॥
तू कछु जानत मंत्र कन्हैया ❀ बूझति विहँसि यशोमति मैया ॥
कीरति महरिं बुलावन आई ❀ कुवँरि राधिका कारे खाई ॥
[illegible]नहुँ झारि वेगि सँग जाई ❀ कुवँरि जिवाये अतिहि भलाई ॥
गारुड़ि भयो भले सुत जानी ❀ आज सुनी श्रवणन यहवानी ॥
मैया एक मंत्र मैं जानों ❀ तेरी सौं कहि सत्य बखानों ॥
अहिकाट्यो मो दृष्टि जु आवै ❀ मोपै क्योंहूं मरण न पावै ॥
जननि कह्यो सुत जाहु कन्हाई ❀ देहु राधिकहि जाय जिवाई ॥
जननी वचन सुनत ब्रजनाथा ❀ चले हर्षि कीरतिके साथा ॥
चलीं महरि हरिसंग लिवाई ❀ गइ वृषभानु पुरा समुहाई ॥
दो०-रुदितमहरि लखिकुवँरिको, अतिहिगईकुम्हिलाय ।
शिथिल अंग बानी निरखि, लीन्हीं कण्ठ लगाय ॥
सो०-तबहिं श्यामके पांय, परी कुवँरि लैकै महरि ।
मोहन देहु जियाय, अति व्याकुल मेरी सुता ॥
आये गारुड़ि कुँवर कन्हाई ❀ कुँवरि कानते यह सुनि पाई ॥
धन्य धन्य आपनको जानी ❀ हृदय हर्ष दृग आनँद पानी ॥
प्रगट रोम तनु स्वेद बढाई ❀ विह्वलदेखि जननि अकुलाई ॥
अन्तर भाव भेद हरि जाने ❀ रसिक शिरोमणि मनमुसकाने ॥
तब कछु पढिकै कुँवर कन्हाई ❀ मुरलि अंगसों दई छुवाई ॥

१ घर । २ आनंद ।

ततक्षण लोचत कुँवरि उघारे ❋ सन्मुख सुंदर श्याम निहारे ॥
निरखत दृगन परम सुख लीनो ❋ सकुच सँभारि बसन सम कीनो ॥
बूझत बात जननि सों प्यारी ❋ आज कहा यह है महतारी ॥
जननी कहति हरषि उरलाई ❋ तोहिं मरतते कान्ह जिवाई ॥
करत लाज तू का री प्यारी ❋ करिवर बडी आज विधि टारी ॥
यों कहि महरि हृदय अनुरागी ❋ नंदसुवनके पायँन लागी ॥
बडो मंत्र तुम कियो कन्हाई ❋ सुतौ हमारी मरत जिवाई ॥
दो०-उर लगाय मुख चूमिकै, पुनि पुनि लेत बलाय ।
धन्यकोषि यशुति महरि, जहां अवतरे आय ॥
सो०-कछु मेवा पकवान, कह्यो खान घनश्याम सों ।
बिदा कियो दै पान, कीरति श्याम सुजानको ॥
महरि मनहिं मनमें अनुमानी ❋ जोरी भली विधाता ठानी ॥
ब्रज घर घर यह बात चलाई ❋ बडो गारुड़ी कुँवर कन्हाई ॥
सखी कहत हरिसों मुसकाई ❋ भले भले हो गारुड़िराई ॥
प्रगट्यो गारुड़ि नाम तुम्हारो ❋ भले आज तुम विषहि उतारो ॥
जननि कहति मेरी अति बारो ❋ अबधौं कौन करें निरुवारो ॥
जान्यों कठिन बसन ब्रजकारो ❋ अब यह मंत्रहिमतिहि बिसारो ॥
फिर कारो कहुँ करहि पसारो ❋ हम तबलैं हैं नाम तुम्हारो ॥
यह गारुड़ी कहां तुम पाई ❋ प्यारी एकहि टेर जिवाई ॥
अब हम जानी बात तुम्हारी ❋ जाहु आपने सदन बिहारी ॥
रसिक मुकुटमणि कुंजविहारी ❋ हँसि वश कीनी घोषकुमारी ॥
बिवश भई सब ब्रजकी बाला ❋ गये सदन मोहन नँदलाला ॥
जविलास बिलसत ब्रज प्यारो ❋ ब्रजवासी जनको रखवारो ॥
दो०-कारो सुत नँदराय को, जाकी लीला नित्त ।
तिनहींको हरि डसतहैं, जिनको उज्ज्वलचित्त ॥
सो०-धन्य धन्य ब्रजबाल, धनिधनि ब्रजके ग्वालसब ।

१ मैया । २ बेटी । ३ घर । ४ गोपनकी कन्या ।

जिनके सँग नँदलाल, दुहत चरावत गाय नित ॥
प्रात होत बल मोहन लाला ❀ गाय बच्छ सब लै सँग ग्वाला ॥
चले चरावन ब्रज वन माहीं ❀ क्रीडा करत सकल मग जाहीं ॥
देखि मुदित सब ब्रजकी बाला ❀ वृन्दावन गये मदनगोपाला ॥
गैया बगर गईं वन माहीं ❀ बैठे कान्ह कदमकी छाहीं ॥
सखालिये सँग सुबल सुदामा ❀ क्रीडा करत सहित बलरामा ॥
ग्वाल जहाँ तहँ गाय चरावैं ❀ आनँद भरे कृष्णगुण गावैं ॥
करत विहार विविध सब ग्वाला ❀ गये दूरि बन सघन विशाला ॥
कोऊ गैयन घेरन धायो ❀ कोऊ बछरन लै बिलगायो ॥
हलधर रहे कहूं वनजाई ❀ आप अकेले रहे कन्हाई ॥
मन मन कहत श्याम सुखदाई ❀ सखारहे कत बन बिरमाई ॥
गौराँभन कहुं सुनियत नाहीं ❀ गये निकसि धौं कित वनमाहीं ॥
आलस गात जानि मनमाहीं ❀ बैठे बंशीवटकी छाहीं ॥
दो०-सखावृन्द हलधर सहित, लिये बच्छ अरु गाय ।
वृन्दाबन घन छांडिकै, रहे तालवन जाय ॥
सो०-मन हरषे सब ग्वाल, देखि भूमि सुन्दर परम ।
फरे विपुल तरु ताल, अति रसमय मीठे मधुर ॥

अथ धेनुकवधलीला.

गोधनवृन्द दिये बगराई ❀ लगे खान फल मन हरषाई ॥
अँचयो बल रसताल रसाला ❀ बाढ्यो उर आनंद विशाला ॥
सुरत नन्दनन्दनकी आई ❀ कह्यो सखनसों कहाँ कन्हाई ॥
ल्यावहु घेरि जाय सब गैया ❀ चलो बेगि जहँ कुँवर कन्हैया ॥
सुनत सखा हलधरकी बानी ❀ वनमें श्याम अकेले जानी ॥
आतुर गैयन घेरन धाये ❀ टेर दई सब ग्वाल बुलाये ॥
तहाँ असुर इक धेनुकनामा ❀ खरके रूप रहे वनधामा ॥
सोयो हुतो विटपकी छाया ❀ सुनत शोरकर तामस धाया ॥
अतिबलवान बिशाल कराला ❀ परम भयंकर मानहुँ काला ॥

दाऊ कहि सब ग्वाल पुकारे ❋ भाजे जित तित भयके मारे ॥
असुर महाबल गर्व बढाई ❋ बलके सन्मुख गरजो आई ॥
मत्त तालके रस बलराई ❋ देखि असुर मन रिस उपजाई ॥
दो०-बल सँभारि उठि कोपकरि, असुरप्रचारयोजाय ।
अग्रज भ्राता श्यामको, तिहुँपुर जासु बडाय ॥
सो०-बलको आवत जानि, असुर जोरि दोऊ चरण ।
चपर चलाई आनि, बहुरो हठ ठाढो भयो ॥
बहुरो फिरि मारनको धायो ❋ बलजूको तामस तब आयो ॥
जबहिं असुर फिरि चरण चलायो ❋ गहि लीन्हों करिकोप फिरायो ॥
पटक्यो लै तरुताल हिलाइ ❋ भयो प्राण बिन तरुहि गिराई ॥
तरुसों तरु टूटे भहराई ❋ उड्यो सकल बन घन घहराई ॥
और बहुत धनुक परिवारा ❋ कीन्हों बल सबको संहारा ॥
मारयो असुर महादुखदाई ❋ ग्वालबाल सब करत बडाई ॥
आये सब वृन्दावन माहीं ❋ जहँ तहँ श्यामहिं टेरत जाहीं ॥
चढि चढि द्रुमन पुकारत ग्वाला ❋ आवहु हो मोहन नँदलाला ॥
ल्याये घेरि मिलीं सब धेनू ❋ आवहु मधुर बजावहु बेनू ॥
कोमल चरण कहूँ मति धावहु ❋ कंटक कठिन मही इत आवहु ॥
ऐसे हरिको टेरत जाहीं ❋ तृषितभये सब वनके माहीं ॥
ग्वालबाल सब यमुनहिं आये ❋ बल रसमत्त न पहुँचन पाये ॥
दो०-गोप गाय अँचवत भये, कालीदहको नीर ।
निकसत सब अकुलायकै; बैठि गये जलतीर ॥
सो०-परे सकल मुरझाय, जहां तहां विष झारते ।
ग्वाल बच्छ अरु गाय, भये मनों बिन प्राण सब ॥
हरि ठाढे वंशीवट छाहीं ❋ बारहिं बार कहत मनमाहीं ॥
अबहिं रहे सब संग चरावत ❋ निकसि गये धौं कित वनधावत ॥
गौरँभन ग्वालनके बैना ❋ अनकत कछु न सुनत बन ऐना ॥
तरु चढि इत उत गैयन हेरत ❋ लै लै नाम सखन को टेरत ॥

कालीदह तन आहट पाई ❀ शोधलेत उत चले कन्हाई ॥
वन घन ढूंढत हरि तहँ आये ❀ गाय ग्वाल सब मूर्छित पाये ॥
मनमें ध्यान करतही जान्यो ❀ काली अहि ह्यां आय समान्यो॥
रहत इहां खगपतिभय मानी ❀ अँचयो इन ताको विषपानी ॥
अमीदृष्टि प्रभु सकल निहारे ❀ तुरत उठे सब भये सुखारे ॥
देखि कृष्णको अति सुखपाई ❀ मिले सकल प्रेमातुर धाई ॥
बोले हरि मृदुवचन सुहाये ❀ तुम सब मोहिं छोड़ि कै आये ॥
कितते कित इत निकसे आई ❀ मैं वन ढूंढि रह्यो पछिताई ॥

दो०-खोजलेत आयो इहाँ, देखे सब बेहाल ।
मुरछि परे काहे धरणि, भयो कहा जंजाल ॥

सो०-गाय वच्छ अरु ग्वाल, उठे एकही बार पुनि ।
कहा कियो इह ख्याल, देखि मोहिं अचरज भयो ॥

सुनि हरिवचन परम सुखदाई ❀ कहत सखा सब सुनहुँ कन्हाई ॥
अँचयो तृषित यमुन जल आई ❀ तबहिं गिरे सब तट अकुलाई ॥
कारण हम कछु जान्यो नाहीं ❀ भये प्राण बिन सब क्षण माहीं ॥
इह हम जानी कुँवर कन्हाई ❀ तुमहीं हमहि जिआयो आई ॥
हो तुम ब्रजजनके रखवारे ❀ जहां तहां तुम हमहिं उबारे ॥
तब हरि बलदाऊको हेरो ❀ कह्यो चलहु वन होत अँधेरो ॥
सखा बोलि ल्याये बलरामहिं ❀ हँसे देखि सुन्दर घनश्यामहिं ॥
बड़ीदेर भइ तुम्हें कन्हैया ❀ रहे अकेले वनमें भैया ॥
चलहु वेगि अब घरको जाहीं ❀ लेहु लिवाय गाय वनमाहीं ॥
हेरी देत चले सब ग्वाला ❀ गावत गुण सुन्दर गोपाला ॥
गोधन आगे दये चलाई ❀ सखन मध्य मोहन बलभाई ॥
चले ब्रजहि ब्रजजन सुखदाई ❀ निरखि वदनछवि मदन लजाई ॥

दो०-सुनि ब्रजसुन्दरि परस्पर, कहत मुरलि सुर घोर ।
आवत वन बसि अहर निशि, आगम नंदकिशोर ॥

सो०-धाई गृह तजि काज, निरखनको मनभाँवतो ।

सुन्दर सुत ब्रजराज, लाज साज सब छोंडिकै ॥
वै देखो आवत बल मोहन ❋ सुबल सुदाम सुदामा गोहन ॥
मेघश्याम तनु गैयन पाछे ❋ शीश मुकुट कटि कछनी काछे ॥
कमलवदन कर बेणु बजावें ❋ गौरी राग मिले सुरगावें ॥
नयन विशाल कमलते आछे ❋ कोटि मदनकी छबिको बाछे ॥
कुंडल श्रवण वदन छबि छाई ❋ गोरज छबि कहुँ चंद्र छिपाई ॥
निरखि मुदित सब ब्रजकी बाला ❋ पहुँचे आय सदन नँदलाला ॥
ब्रजजीवन बल मोहन भैया ❋ निरखि जननि दोउ लेत बलैया ॥
ग्वाल कहत धनि यशुदा माता ❋ धनि धनि बलमोहन दोउ भ्राता ॥
नरतनु धरे देव ये कोऊ ❋ ब्रज अवतार लियो इन दोऊ ॥
ये हैं सब ब्रजके रखवारे ❋ गाय गोपके राखनहारे ॥
गर्दभ रूप असुर इक भारो ❋ ताहि आज हलधर वन मारो ॥
हम सब यमुनातट मुरझाई ❋ तहां कान्ह सब मरत जिवाई ॥

दो०—अब हम काहू डरत नाहिं, ये हैं हमैं सहाय ।
बल मोहनके बल फिरत, वन वन चारत गाय ॥

सो०—परत गाढ जब आय, तब तब होत सहाय हरि ।
चिरजीवैं दोउ भाय, यशुमति ये तेरे कुँवर ॥

यशुमति सुनि ग्वालनकी बानी ❋ कह्यो गर्ग सब सत्य बखानी ॥
नितनव चरित सुनत हरि केरे ❋ हैं कोऊ ये बडन बडेरे ॥
धन्य धन्य ये ब्रजमें आये ❋ धन्य धन्य हम सुत करि पाये ॥
अतुलित कर्म दुहुनके जानी ❋ दोउ जननी मनमांझ सिहानी ॥
श्याम राम दोऊ नँदरानी ❋ लिये लाय छाती हरषानी ॥
भूखे जानि तुरत अन्हवाये ❋ षटरस ब्यंजन सरस जिमाये ॥
भोजन करि अँचये दोउ भाई ❋ लीन्हें पान संतसुखदाई ॥
पौढ़े सेज दासहितकारी ❋ ब्रजवासी जन है बलिहारी ॥
चिन्तामणि हरि जनसुखदानी ❋ कालीकी चिन्ता उर आनी ॥
ग्वाल गाय नित वनको जाहीं ❋ दुखपावत कालीदह माहीं ॥

विषधरको रहबो जलमाहीं ❀ वृन्दाबन ढिग नीको नाहीं ॥
कालिहि काढि इहां ते दीजै ❀ यमुनाको जल निर्मल कीजै ॥
दो०–यह विचार मनमें करत, भये नींद वश श्याम ।
यशुमति हरि पौढायकै, आप लगी गृह काम ॥
सो०–खरैं न बोलन देत, घरमें काहूको महरि ।
बल मोहनके हेत, जागि परैं मति नींदते ॥
शिव सनकादि दिवसनिशि ध्यावैं ❀ कबहूं जाको अन्त न पावैं ॥
ब्रह्म सनातन आनँदखानी ❀ सो नँदगृह सोवत सुखदानी ॥
देखो नंद कान्ह अति सोवत ❀ श्रमित जानि बनके मुख जोवत॥
मानत नाहि कहो किन कोऊ ❀ आप हठीले भैया दोऊ ॥
करसों पोंछत सुभग शरीरा ❀ कहियत यहै प्रेमकी पीरा ॥
निजपलका तहँ लिये मँगाई ❀ सोये हरिके ढिग नँदराई ॥
यशुमति हू पौढी तहँ आई ❀ निशिबीते अधिकी अधिकाई ॥
जागि उठे तब कुँवर कन्हैया ❀ कहां गई मोढिगते मैया ॥
सँग सोवत जान्यो बल भाई ❀ अतिही श्याम उठे अकुलाई ॥
जागे नँद अरु महरि यशोदा ❀ हरिको ऐंचिलियो नँद गोदा ॥
काहे झिझकि उठचो अनयासा ❀ तुरतहि दीपक कियो प्रकासा ॥
संपने गिरो यमुनजल जाई ❀ काहू मोको दियो गिराई ॥
दो०–नित प्रति मैं बरजतरहौं, तू हठि यमुना जाय ।
सुधि रहगई अन्हानकी, जिन हो लाल डराय ॥
सो०–कोरे लै नँदराय, पौढाये निज संग तब ।
वृन्दावन तू जाय, किहिं कारण जित तित फिरत ॥
अब तू वृन्दावन जनि जाई ❀ तहां कौन धौं रहत बलाई ॥
सोये दंपति बीच कन्हाई ❀ तुरतहि गई नींद फिरि आई ॥
सपनो[1] सुनि जननी अकुलानी ❀ कहत नंद सों यशुदारानी ॥
देख्यो धौं कह सुपन कन्हाई ❀ या ब्रजके जीवन दोउ भाई ॥

१ सुखमानी ।

यहै यत्न इनको अब कीजै ❀ गाय चरावन जान न दीजै ॥
गृहसंपति द्वै तनक ढोटौना ❀ इनहीं लौं बल भोग ठठौना ॥
ये वनजात चरावन गैयां ❀ हँसी करत ब्रज लोग लुगैयां ॥
दंपति आपसमें इहि भांती ❀ करत विचार वीति गइ राती ॥
तारागण सब गगन छिपाने ❀ गयो तिमिर अम्बुज बिकसाने ॥
उठि यशुमति लागी गृह काजा ❀ भूलिगयो निशि शोच समाजा ॥
प्रात स्नान यमुन नित जाई ❀ नंदहि तुरतहि दियो उठाई ॥
मथनहारि ग्वालिनि सब जागीं ❀ जित तित दही बिलोवनलागीं ॥

दो०–हरि प्यारी सुरभीनको, जम्यो जु दधि बिलगाय ।
सो हरि हित माखन लिये, मथति यशोदा माय ॥

सो०–सदमाखन निज पानि, मथत तुरत मथनी धर्‌यो ।
बड भागिनि नँदरानि, माखन प्यारे लाल हित ॥

लगी जगावन हरिको आई ❀ उठहु तात माता बलि जाई ॥
प्रगट्यो तरणि किरणि महि छाई ❀ खोलि देहु मुख कमल कन्हाई ॥
सखा द्वार सब तुमहिं बुलावैं ❀ तुम कारण सब धाये आवैं ॥
उठि तिनको मिलिकै सुख दीजै ❀ होत अवार कलेऊ कीजै ॥
तब हरि उठिकै दरशन दीन्हों ❀ माता निरखि मुदित मनकीन्हों ॥
दाऊजू कहि श्याम पुकार्‌यो ❀ नीलांबर गहि मुखते टार्‌यो ॥
मनु घनते शशि भयो नियारो ❀ प्रगट्यो सुन्दर मुख उजियारो ॥
हँसत उठे सुन्दर दोउ वीरा ❀ गौर श्याम अति सुभग शरीरा ॥
शयनभवन ते बाहर आये ❀ लखि दोउ जननि परम सुखपाये ॥
दतवन लै दोउवन कर दीन्हीं ❀ चौकी बैठि मुखारी कीन्हीं ॥
मातन निज निज कर मुख धोयो ❀ नयननको आरस सब खोयो ॥
अँचरनसों मुखकमल अँगोछे ❀ उर लगाय सब अंगन पोछे ॥

दो०–करहु कलेऊ लाल दोउ, तब कहुँ बाहर जाउ ।
मथ्यो तुरत मीठो मधुर, माखन रोटी खाउ ॥

सो०–दई दुहुन को मात, रोटी अरु माखन मधुर ।

हरषि परस्पर खात, माता अंतर हेतु

अथ कालीदमनलीला.

ऋषि नारद हरिभक्त सयाने ❋ प्रभुके मनकी रु
गावत गुण हरि परम हुलासा ❋ गये तुरत मथुरा
देखि कंस आदर अति कीन्हों ❋ करि दंडवत बरा
नारद कह्यो कुशल नृपराई ❋ कछुक शोचवश प
तुम प्रताप मुनि कुशल सदाई ❋ एक शोच मोहिं
ये दोउ ब्रजमें नंदकुमारा ❋ जानिपरत मोहिं को
कहत जिन्हें बलराम कन्हाई ❋ तिनकी गति मति ज
तृणावर्त्तसे दैत्य पठाये ❋ सो उन पल इक मा
बकी पठायदई पहिलेहीं ❋ ऐसनको बल
उनते भयो नहीं कछु काजा ❋ यह सुनि समुझि हो
अब मुनि तुम कछु कहहु बिचारा ❋ जिहिंविधि मार
मुनि हरिके गुण नीके जाने ❋ सुनि नृपवचन

दो०—तब बोले मुनि नृपति सों, सत्य कही
वै दोऊ अवतारहैं, इन गति जानि

सो०—हैं ये तुम्हरे काल, प्रगट भये ब्रज
नंदगोपके बाल, तुम इनको राखो

एक बात मेरे मन आवै ❋ करहु कंस तुमको
काली अहि रह्यो यमुना आई ❋ तहाँ कमल फूले
फूल तहाँ ते मांगि पठावहु ❋ दूत पठै नंदहिं
यह सुनि ब्रजके लोग डरैहैं ❋ यहे बात वेऊ सु
जैहैं अवशि फूलके काजा ❋ तहाँ घात करिहैं
यह सुनि कंस बहुत सुखपायो ❋ भलो मंत्र मुनि मोहिं
धनिधनिकहिपुनिपुनिशिरनावत ❋ हरषि चले मुनि हरिगुण
तबहि कंस इक दूत बुलायो ❋ ब्रजहि नंदके पास
दीन्हों ताको पत्र लिखाई ❋ कहियो यहै नंदको

पालन ॥
ग्वाला ॥
बचाई ॥
ठाहीं ॥
श्यामा ॥
मँगाई ॥
ठानो ॥
कान्ह ।
न्ह ॥
शिव ।
खा ॥
कामा ॥
तोसों ॥
त वाहू ॥
नंदघर ॥
कन्हाई ॥
ढोटा ॥
ई ॥
सों ॥
ई ॥
यो ॥
हीं ॥
हीं ॥
हु ।
॥

यहै यत्न इनको
गृहसंपति द्वै तन
ये वनजात च
दंपति आपसमें
तारागण सब गग
उठि यशुमति लागी
प्रात स्नान यमुन
मथनहारि ग्वालिनि
दो०—हरि प्या
सो हरि
सो०—सदमा
बड भा
लगी जगावन ह
प्रगट्यो तरणि किर
सखा द्वार सब तुम
उठि तिनको मिलिवै
तब हरि उठिकै
दाऊजू कहि
मनु घनते श
हँसत उठे सुन्द
शयनभवन
दतवन लै दोउ
मातन निज नि
अँचरनसों मुख
दो०—करहु
मथ्यो
सो०—दई

कालीदह केरे ❀ पहुँचावहु लै कालिह सवेरे ॥
काज मँगाये ❀ बनिहै तुमको तुरत पठाये ॥
आतुर ब्रज धाई ❀ जानि लई सब कुँवर कन्हाई ॥
रहे ता दिन घरहिं, बनहिं पठाये ग्वाल ।
सी जनके सुखद, ब्रजजीवन नँदलाल ॥
हैं आवत जान, आप गये बहराय हरि ।
श्याम सुजान, खेलत ग्वालन संग मिलि ॥
यसुनजल न्हाये ❀ पैठत सदन छीक भइ बांये ॥
मन अशकुनजान्यो ❀ आज कहा उर शोच समान्यो ॥
दूत जब आयो ❀ नंद महर घरही मैं पायो ॥
ी कर राखी ❀ नृपकी कही मुखागर भाखी ॥
फूल मँगाये ❀ ता कारण अति डाट पठाये ॥
फूल पठावहु ❀ तो कोउ ब्रजमें रहन न पावहु ॥
नन्द जितेका ❀ डारौं मारि न राखौं एका ॥
कमल मैं पाऊँ ❀ दोउ सुत तेरे बाँधि मँगाऊँ ॥
न्दि गये मुरझाई ❀ और गोप सब लिये बुलाई ॥
सब बात सुनाई ❀ परी आय यह अति कठिनाई ॥
ल कालीदह माहीं ❀ कहौ कौन धौं काढन जाहीं ॥
जो कालिह न पाऊँ ❀ तो सुत तेरे बाँधि मँगाऊँ ॥
सुत दोउ नृपति उँर, खटकत हैं दिनरात ।
ज कही यह बात सो, बल मोहन पर घात ॥
ढिहै ब्रजपर धाय, कालिह कंस अति कोपकरि ।
न्यो मरण अब आय, को राखै कित जाइये ॥
जियको डर नाहीं ❀ शोच श्याम बलको उर माहीं ॥
र देखियत नाहिं कोई ❀ बल मोहनहिं राखि को गोई ॥
हैं राखै बाँधि नृपाला ❀ रहैं सदैन बल मोहन लाला ॥

१ विचार । २ चिट्ठी । ३ हृदय । ४ गृह ।

ग्यालन ॥
नन्दवचन सुनि सब ब्रजबासी ❀ भये दुखित मन ग्वाला ॥
काहू पै कछु बात न आई ❀ अति भय त्रसित ग बचाई ॥
चकित महा ब्रजबासी ठाढे ❀ मानहुँ चित्र चिन्ह ठाहीं ॥
नन्दघरनि ब्रजनारि विचारैं ❀ अतिव्याकुल नयन श्यामा ॥
ब्रजहिं बसत सब जन्म सिरान्यो ❀ इहि विधि कंस न क मँगाई ॥
कालीदहके फूल मँगाये ❀ कहौ कौन विधि जा ठानो ॥
अतिहि शोचवश सब नरनारी ❀ भये कंसभय बहु कान्ह ।
कोउ कह शरण चलो सब जाहीं ❀ शरण गये कहिये वान्ह ॥
कोउ कह देहु जितो धन चाहैं ❀ ऐसे सब मिलि बु शिव ।

दो०—यहै शोच सब मिलि परेँ, नहीं कहूं खा ॥
ब्रज भीतर नँदभवनमें, घर घर यहै कामा ॥
सो०—अन्तर्य्यामी जानि, खेलत ते आ तोसों ॥
देखतही नँदरानि, दृगं भर लिये ल त वाहू ॥

नंदवर ॥
चितवत माता कुवँर कन्हाई ❀ बूझत कत रोव कन्हाई ॥
बूझहु जाय तात सों बाता ❀ मैं बलि जाउँ बद ढोटा ॥
तुमहीं काज कंस अकुलाई ❀ बाहर मति कहुँ जाहु ाई ॥
जाय तातको शोच मिटावो ❀ अपने मधुरे वचन सों ॥
आयो श्याम नंद पै धायो ❀ जान्यो मात पिता दुख ाई ॥
बूझत नंदहि कुवँर कन्हैया ❀ तात दुखित कत तुम अ यो ॥
मोसा बात कहौ किन सोई ❀ कहा शोचवश हौ सब हीं ॥
नंदलाल कनियां बैठारे ❀ कहा कहौं तुम सों मैं ाहीं ॥
जबते जन्म भयो सुत तेरो ❀ करत कंस तुम सों हु ।
केती करवर टरीं तुम्हारी ❀ कुलदेवन कीन्हीं ॥
प्रथमहिं अधम पूतना आई ❀ शकट तृणा पुनि आयो
वत्स बका अघ पुनि दुख दीन्हों ❀ सबते तोहिं राखि विधि ली

१ लवलीन । २ गृह । ३ अन्तरके जाननेहारे । ४ आंखें । ५ मीठे । ६ बल

यहे यत्न इनको
गृहसंपति द्वै तन्दहके फूल अब, पठये भूप मँगाय ।
ये वनजात । यह गाढी परी, को करिलेय सहाय ॥
दंपति आपसमें …हिं आव फूल, लिख्यो कंस मोहिं डाटिकै ।
तारागण सब ग ब्रजहिं निर्मूल, बाँधि मगाऊँ तव सुतन ॥
उठि यशुमति ला काहे दुख पाई ❀ कहत कौन धौं करै सहाई ॥
प्रात स्नान यमु ब्रजहिके माहीं ❀ रहत हमारे संग सदाहीं ॥
मथनहारि ग्वालि सब ठौर बचाई ❀ करिलैहैं सोइ देव सहाई ॥
दो०—हरि प्र …हे फूल पठैहै ❀ ब्रजवासिनको शोच मिटैहै ॥
सो हरि …गहि सोई मारै ❀ असुर मारि भूभार उतारै ॥
सो०—सदम सोई देव मनावो ❀ अपने मनते शोच मिटावो ॥
बड भा॥ …रिमुखकी बानी ❀ भये सुखी धीरज उर आनी ॥
लगी जगावन …शीश नवायो ❀ जहां तहां तुम श्याम बचायो ॥
प्रगट्यो तरणि किशु शरण तुम्हारी ❀ अबहूं करहु सहाय हमारी ॥
सखा द्वार सब तु मिटि जाई ❀ रहैं सुखी बलराम कन्हाई ॥
उठि तिनको मिलि इहि ढँगलाई ❀ आप चले खेलन हरषाई ॥
तब हरि उठिकै …व कुँवर कन्हाई ❀ कह्यो खेलिये गेंद मँगाई ॥
दाऊजू कहिदामा यह सुनतही, गयो धाम निज धाय ।
मनु घनते …पनी गेंद लैआयकै, दीन्हों हरिको आय ॥
हँसत उठे …लो खेलिये धाय, बाहर घोष निकासकै ।
शयनभवन …हँ कोउ आय न जाय, गेंद खेल बनिहै तहाँ ॥
दतवन लै …ा लै बाहर जाई ❀ रच्यो गेंदको खेल कन्हाई ॥
मातन निज …इक भाजत जाहीं ❀ रोंकिलेत इक बीचहि माहीं ॥
अँचरनसों …मांझ परस्पर मारैं ❀ नाना रंग करिकै किलकारैं ॥
दो०—क… मारत दूजो जाहीं ❀ मारत धाय बहुरि सो ताहीं ॥
… सखनको खेलत माहीं ❀ यमुना तट तन लीन्हें जाहीं ॥
सो०—

१ जडते उखारि । २ बाल । ३ कुलदेवता । ४ बीच ।

आपुन जात कमलको लालन ❀ सखा संग लीन्हें सब ख्यालन ॥
को जानहिं यह हरिके ख्याला ❀ यमुना निकट गये सब ग्वाला ॥
श्याम सखाको गेंद चलाई ❀ अंगमोरि सो गयो बचाई ॥
परी गेंद यमुनाजल माहीं ❀ ह्वै गयो खेलभंग तिहि ठाहीं ॥
पकरी धाय फेंट श्रीदामा ❀ मेरी गेंद देहु तुम श्यामा ॥
जान बूझ तुम गेंद गिराई ❀ बनि है दीन्हें गेंद मँगाई ॥
और सखा मोको मति जानो ❀ मोसों मतिहि ढिठाई ठानो ॥

दो०–सखा हँसत सब तारि दै, भली करी तुम कान्ह ।
दीन्हीं गेंद बहाय जल, देहु श्रीदामहिं आन्ह ॥

सो०–सकल लोक शिरताज, पार न पावैं ब्रह्म शिव ।
ताहि गेंदके काज, फेंट पकरि झगरत सखा ॥

छांडि देहु मेरि फेंट सुदामा ❀ रांरि बढावत थोरेहि कामा ॥
बदले गेंद लेहु तुम मोसों ❀ फेंट न गहौं कहौं मैं तोसों ॥
छोटो बडो न जानत काहू ❀ करत बराबर पकरत वाहू ॥
हम काहेको तुमहि बराबर ❀ तुम उपजे अब बडे नंदघर ॥
ऐसे हम अब गये बिलाई ❀ तुमहु बराबर नाहिं कन्हाई ॥
सुनहु श्याम हम तुम इक जोटा ❀ कहा भयो तुम नँदके ढोटा ॥
गेंद दियेही बनै मँगाई ❀ मोसों चलि है नाहिं ढिठाई ॥
मुँह सँभारि बोलत नहिं मोसों ❀ करिहौं कहा धुताई तोसों ॥
पुनि पुनि करत बराबर आई ❀ तैं नहिं जानत मोरि धुताई ॥
प्रथम पूतना शकटा मारयो ❀ कागासुर अरु तृणा पछारयो ॥
वत्स बकासुर वनके माहीं ❀ मारयो सो कह जानत नाहीं ॥
अघ मारयो पुनि देखत तोहीं ❀ ऐसो धूत न जानत मोहीं ॥

दो०–तुम मारे सो सांच सब, कतही लाल डराहु ।
कंस कमल अब देहु तब, हमहिं मारियो जाहु ॥

सो०–कालिहहि परि है जानि, पकरि मँगैहै कंस जब ।

१ झगड़ा । २ नरहें । ३ धूर्त्तता ।

देत फूल किन आनि, बहुत अचकरी करि रहे ॥
सांच कहौं मैं सुनु श्रीदामा ❀ आयो इहां फूलके कामा ॥
कितक बापुरो कंस बतायो ❀ जाके भय तुम मोहि डरायो ॥
केश पकरि गहि ताहि पछारों ❀ देखहुगे तुम देखत मारों ॥
कोटि कमल तिहिं आज पठाऊं ❀ ब्रजते ताको त्रास नशाऊं ॥
कालीदह जल पियत मरे सब ❀ गहि ल्याऊं सोई काली अब ॥
लीन्हीं रिस करि फेंट छुडाई ❀ चढे कदम पर धाय कन्हाई ॥
नांचे सखा हँसन सब लागे ❀ श्रीदामाके डर हरि भागे ॥
रोय चले श्रीदामा घरको ❀ जाय कहत मैं महरि महरको ॥
टेरंत कहि कहि सखा कन्हाई ❀ लेहु गेंद मैं ल्यावत जाई ॥
यह कहि नटवर मदन गोपाला ❀ कूदि परे जलमैं नँदलाला ॥
हाय हाय करि सखा पुकारे ❀ भये श्यामबिन बहुत दुखारे ॥
रोवत चले ब्रजहिं सब धाई ❀ श्रीदामाको दोष लगाई ॥

दो०—कोमल तनु अति साँवरो, साजे नटवर साज।
जलमैं पैठि गये तहां, जहँ सोवत अहिराज ॥

सो०—यहि अंतर हरिमाय, भूखे ह्वै हैं जानि हरि।
खेलत ते अब आय, मोसों भोजन मांगि हैं ॥

यशुमति चली रसोई कारन ❀ तबहीं छीक उठी इक ग्वारन ॥
ठिठकिरही उर शोचत ठाढी ❀ भली नहीं कछु चिंता बाढी ॥
आई अजिर निकसि पछिताई ❀ चली बहुरि सो दोष मिटाई ॥
मांजारी तब पंथ कटाई ❀ बहुरों यशुमति बाहर आई ॥
व्याकुल भई निकरि गै द्वारे ❀ कहँ धौं खेलत मेरे बारे ॥
बायें काग दाहिने स्वर खरै ❀ सुनि आई अति व्याकुल फिर घर ॥
क्षण बाहर क्षण आंगन माहीं ❀ टेरत हरिहि शांत मन नाहीं ॥
तबहीं नंद चले घर आवत ❀ देख्यो श्वान श्रवर्ण फटकावत ॥
दहिने काहू रोय सुनायो ❀ माथेपर है काग उडायो ॥

१ कमर । २ पुकारत । ३ गधा । ४ कान ।

सन्मुख गररी करत लराई ❀ डरे नंद अशकुन बहु पाई ॥
आये घर मन मलिन विशेखी ❀ व्याकुल मलिनवदनतिय देखी ॥
बूझत यशुदहि नंद डराई ❀ काहे तव मुख गयो झुराई ॥
दो०–चली रसोई करन हौं, छींक भई मुहिं आज ।
आगे ह्वै मंजारि पुनि, गई दूसरे भाज ॥
सो०–तबते मो जिय शोच, हरि धौं खेलत है कहां ।
समुझ कंस कृत पोच, मेरे मनमें त्रास अति ॥
नंद कहत पैठत घरमाहीं ❀ मोहिं शकुन नीके भय नाहीं ॥
आज कहा यह समुझि न जाई ❀ हैं धौं कित बलराम कन्हाई ॥
महरि महर मन त्रास जनाई ❀ खोजत हरिहि चले अकुलाई ॥
सखा सकल इहि अंतरे धाये ❀ रोवत ब्रजहि पुकारत आये ॥
महरि महर सों आय जनाई ❀ यमुन बूडे कुँवर कन्हाई ॥
सुनि दम्पति बूझत अकुलाई ❀ कैसे कहां कहो समुझाई ॥
खेलत कदम चढे हरि धाई ❀ कूदि परे कालीदह जाई ॥
सुनतहि परी धरणि महँ मैया ❀ कीन्हें सपनो सत्य कन्हैया ॥
रोवत नंद यमुनतट आये ❀ बालक सब नंदहि सँग धाये ॥
ब्रज घर जहां तहां यह बाता ❀ ब्रजबासी धाये बिलखाता ॥
कहां परयो गिरि कुँवर कन्हाई ❀ दई बालकन ठौर बताई ॥
त्राहि त्राहि करि नंद पुकारे ❀ गिरे धरणि नहिं अंग सँभारे ॥
दो०–लोटतअतिब्याकुलधरणि, दृगनचलतजलधाय ।
कहत श्याम तुम दियो दुख, मोको बैस बुढाय ॥
सो०–लोग उठे सब रोय, दीन वचन सुनि नंदके ।
कहत बिकल सब कोय, हरि तुम ब्रजसूनो कियो ॥
नंदहि गिरत सबहि गहिं राख्यो ❀ ताक्षणको दुख जात न भाख्यो ॥
कहत गोप नंदहि समुझाई ❀ बन्यो मरण सबहीको आई ॥
हरिबिन को जीवै ब्रजमाहीं ❀ कहो कान्ह किहि जीवन नाहीं ॥

१ भय । २ बीच । ३ नंदयशोदा । ४ रोते पीटते । ५ अवस्था । ६ पकर ।

मोहमगन अति यशुमति मैया ❀ टेरत मेरे लाल कन्हैया ॥
आज कहां तुम बेर लगाई ❀ माखन धरयो खाउ किन आई ॥
अति कोमल तुम्हरे मुख योगू ❀ जेंवहु लाल लेहुँ मैं रोगू ॥
धौरीदूध धरयो औटाई ❀ तुम निजकर दुहि गये कन्हाई ॥
सदमाखन अतिहित मैं राख्यो ❀ आज नहीं तुमने कछु चाख्यो ॥
प्रातहिते मैं दियो जगाई ❀ दँतवन करि जु गये दोउ भाई ॥
मैं चितवत तव पंथ कन्हाई ❀ देखत आज अबार लगाई ॥
बैठो आय संग दोउ भैया ❀ तुम जेंवहु मैं लेहुं बलैया ॥
शोकसिंधु बूडत नँदरानी ❀ तनुकी सुधि बुधि सबै भुलानी ॥

दो०—ब्रजयुवती सुनि महरिके, वचन प्रेम आधीर ।
अकुलानी रोवत सबै, बढी कठिन उर पीर ॥

सो०—बरजत यशुदहिं ग्वाल, यह कहि कहि हरिहैं भले ।
सुत बियोग बिकराल, जात नहीं कहि मातको ॥

चौंकिपरी तनुकी सुधि आई ❀ रोवत देखे लोग लुगाई ॥
तब जानी दह गिरे कन्हाई ❀ पुत्र पुत्र कहिकै उठि धाई ॥
ब्रजवनिता सब संगहि लागीं ❀ श्याम वियोग व्यथा सब पागीं ॥
कान्ह कान्ह कहि सकैल पुकारैं ❀ तोरत लट उरसों कर मारैं ॥
अति व्याकुल यमुनातट जाई ❀ गिरी धरणि यशुमति अकुलाई ॥
मुरझि परी तनुदशा भुलाई ❀ प्राण रह्यो हरि सुरतिसमाई ॥
ब्रजवासी सब उठे पुकारी ❀ जल भीतर कह करत मुरारी ॥
संकटमैं तुम करत सहाई ❀ अब क्यों नाहिं बचावत आई ॥
मात पिता अतिही दुख पावैं ❀ रोय रोय सब कृष्ण बुलावैं ॥
आय गये हलधर तेहि काला ❀ देखी जननी विकल बिहाला ॥
नाक मूंदि जल सींचि जगाई ❀ जननी कहि कहि टेर लगाई ॥
बार बार जब हलधर टेरयो ❀ भयो चेत कछु बलतन हेरयो ॥

दो०—कहत उठी बलरामसों, बनहिं तज्यो लघु भ्रात ।

१ लडका । २ विछोह । ३ सम्पर्ण । ४ ध्यान । ५ माता ।

कान्ह तुमहिं बिन रहत नहिं, तुमसों क्योंरहिजात ।
सो०-मगनशोचसरमांझ, कहत लै आवहु कान्हकोउ ॥
भूखे ह्वैगइ सांझ, आज कछू खायो नहीं ॥
कबहुँ कहत बनगयो कन्हाई ❀ कबहुँ बतावत घर समुहाई ॥
कान्ह कान्ह कहि टेर लगावै ❀ कित खेलत कहि लालबुलावै ॥
अतिही मोहविकल नँदरानी ❀ करत बोध हलधर मृदुबानी ॥
कतरोवत तू यशुमति मैया ❀ नीके हैं धरु धीर कन्हैया ॥
श्यामहिं नेक कहूं डर नाहीं ❀ तू कत डरपत है मनमाहीं ॥
तेरी सौं[1] मैं कहत पुकारे ❀ वह काहूके मरैं न मारे ॥
जिन काली भय होहु दुखारी ❀ तू अपने मन देखु विचारी ॥
पहिले बकी कपट करि आई ❀ तब दिन दशके हते कन्हाई ॥
शकटा तृणावर्त पुनि आयो ❀ तू देखत हरि तिन्हैं नशायो ॥
वत्स बका अघ बनमें मारे ❀ विष जलते सब सखा उबारे ॥
अब वे काली नाथ लै ऐहैं ❀ कमल पठाय कंसको देहैं ॥
मोहिं भरोसो कान्हर केरो ❀ मानों सत्य कह्यो सुनु मेरो ॥
दो०-मोहिं दुहाई नंदकी, अबहीं आवत श्याम ।
नाग नाथि लै आवहीं, तौ कहियो बलराम ॥
सो०-सुनि हलधरके बैन[3], अति उदार हरिके चरित ।
भयो कछुक उर चैन, जो कछु करहिं सु सोह सब ॥
बाँह पकरि बलको बैठाई ❀ लै बलाय उर रही लगाई ॥
अति कोमल तनुधरे कन्हाई ❀ पहुँचे कालीके ढिग जाई ॥
हरिको देखि उरगकी नारी ❀ रही चारु मुखचिह्न निहारी ॥
कहत कौन तू इत कित आयो ❀ अति कोमलतनु काको जायो ॥
बारहि बार कहति अकुलाई ❀ वेगि भाज इतते कितजाई ॥
देखै नाग जागकै जबहीं ❀ ह्वै है भस्म क्षणकमें तबहीं ॥
सुनत नागनारीकी वाणी ❀ बोले हँसि हरि शारँगपाणी ॥

१ शपथ । २ मारचो । ३ वचन । ४ सर्प-कालीकी स्त्री ।

पठयो मोहिं कंस नृपराई ❋ तू याको अब देहि जगाई ॥
कंस कहा तू इनहिं बतैहै ❋ एक फूंकमें तू जरिजैहै ॥
अजहूं भाजि कह्यो करि मेरो ❋ लगतं छोहं देखत तनु तेरो ॥
मरहु कंस जिन तोहिं पठायो ❋ तू कत इहां मरणको आयो ॥
बालक जानि दया अति मेरे ❋ दुख पैहैं पितु माता तेरे ॥
दो०-अरी बावरी सर्प्पसों, कहा डरावत मोहि ।
जैसो मैं बालक प्रकट, अबहिं दिखावहुँ तोहि ॥
सो०-तू किन देत जगाय, देखौं म याके बलहि ।
यापै कमल लयाद, लैजैहौं इहि नाथि ब्रज ॥
सुनत वचन अहिनारि रिसानी ❋ छोटे वदन कहत बडिवानी ॥
स्वर्गपतिसों सरवर जिनठानी ❋ ताहि कहत नाथन अज्ञानी ॥
देखतही ह्वैहै जरि छारा ❋ केतिक तू बपुरो सुकुमारा ॥
बपुरो मोहिं कहत अहिनारी ❋ बोलत नाहिन बात सँभारी ॥
अबहीं तोहिं बपुरि करि डारौं ❋ एकहि लात खसम तुव मारौं ॥
सोवत काहू मारिय नाहीं ❋ चलि आई है बात सदाहीं ॥
ताते तू पति देहि जगाई ❋ देखौं मैं याकी मनुसाई ॥
जो पै तोहि मरन बुधि आई ❋ तो तूही किन लेत जगाई ॥
तब हरि झटकि ताहि दे गारी ❋ दाबी चरण पूंछ अहिकारी ॥
मसकी नेक धरणि सो लाई ❋ काली उरग उठ्यो अकुलाई ॥
आयो जानि गरुड़ भय बाढ्यो ❋ देख्यो बालक आगे ठाढ्यो ॥
तबहि क्रोध करि गर्व बढायो ❋ झटकि पूंछ अतिरिसकरि धायो ॥
दो०-दांव घात लाग्यो करन, सहँसौ फन फटकार ।
बार बार फुंकार कर, डारत विषकी झार ॥
सो०-जरत यमुनको नीर, जात फेन उतरात विष ।
परसत नाहिं शरीर, अरिमर्दमोचन श्यामके ॥

१ मोह । २ गरुड़ । ३ छोटा । ४ पति । ५ पृथ्वी । ६ सहस्र-हजार ।
७ पानी । ८ स्पर्श । ९ कालीका गर्व निवारणवारे ।

किये युद्ध बहु उरग अघाई ❀ मुरे नहीं नेकहु यदुराई ॥
कहत परस्पर अहिकी नारी ❀ देखहु यह बालक अतिभारी ॥
विषज्वाला जल जरत यमुनको ❀ याके तनु परसत नहिं तनको ॥
यह कछु मंत्र यंत्र धौं जानै ❀ अतिकोमल विष नेक न मानै ॥
सहसौ फनन करत अहिघाता ❀ अबलों बच्यो पुण्य पितुमाता ॥
तब अहिराज श्याम तन हेरी ❀ कहत पूंछ दाबी इन मेरी ॥
अतिहि क्रोधकरि आतुर धाई ❀ हरिके अंग गयो लपटाई ॥
नखते शिखलौं अहि लपटाई ❀ कहत करी इन बहुत ढिठाई ॥
कौतुकनिधि हरि सब गुण खानी ❀ दियो दांवइहि अहिको जानी ॥
तिहि अवसर सुर मुनि गन्धर्वा ❀ अति व्याकुल आये ब्रजसर्वा ॥
उरग नारि मन मन पछिताहीं ❀ हरिको रूप समुझि मनमाहीं ॥
कहैं गर्वकरि अति यहआयो ❀ कालविवश पगइताहिं चलायो ॥

दो०–काली हरिसों लिपटकै, गर्व कियो मन मांह ।
कहत मोहिं जानतनहीं, मैं सर्पनको नाह ॥

सो०–भंजन गर्व गोपाल, गर्व भरे सुनि अहिवचन ।
कीन्हों वपुष विशाल, विकल भयो अहिराजतन ॥

जबहिं श्यामतन अति विस्तारो ❀ टूटन लग्यो अंग सब सारो ॥
शरण शरण तब उरग पुकारो ❀ मैं नहिं जान्यो रूप तिहारो ॥
जीवदान प्रभु मोको दीजे ❀ अपनी शरण राखि मोहिं लीजे ॥
यह वाणी सुनतहि भगवाना ❀ सकुचि गये हरि कृपानिधाना ॥
यहे वचन गजराज सुनायो ❀ गरुड छाँडि ताके हित आयो ॥
यहे वचनसुनि द्रुपद सुताको ❀ बँसन बढाय दियो पुनि वाको ॥
यहे वचन सुनि लाक्षा गृहते ❀ लीन्हें राखि पाण्डवन जरते ॥
यहवाणी सहिजात न श्यामहिं ❀ दीनबन्धु करुणाके धामहिं ॥
लीनो अंगसँकोच कृपाला ❀ देख्योविकल शिथिलजबर्व्याला ॥

१ विह्वल । २ चोटी । ३ राजा । ४ शरीर । ५ गजेन्द्रमोक्षाख्यानका हाथी । ६ द्रौपदी । ७ लुगड़ा-वस्त्र । ८ नाग ।

पगसों चापि नाकधरि फोरी ❋ लीन्हों नाथ हाथगहि डोरी ॥
कूदिचढ़े हरि ताके शीशा ❋ मनमन करत विचार अहीशा ॥
मैं यह सुन्यो हतो विधिपाहीं ❋ कृष्णऽवतार होहि ब्रजमाहीं ॥

दो०—ते गोकुलमें अवतरे, मैं जान्यो निरधार।
ये अविनाशी ब्रह्महैं, ब्रजहि कृष्ण अवतार ॥

सो—०किये बहुत फन घात, बार बार पछितात मन।
अस्तुति करत लजात, रह्यो दीनह्वै सकुचि अति ॥

देख्यो व्याल विहाल कृपाला ❋ दियो दरश निज दीनदयाला ॥
देखि दरश मनहर्ष बढाई ❋ बोल्यो दीन वचन अहिराई ॥
मैं अपराध कियो विन जाना ❋ क्षमो नाथ तुम क्षमानिधाना ॥
तामसयोनि कीट विष जानों ❋ कौनभांति तुमको पहिचानों ॥
अब कीन्हों प्रभु मोहिं सनाथा ❋ दीन्हों दरश जगतके नाथा ॥
अशरणशरण नाथ तव बाना ❋ कहत सन्त सब वेद पुराना ॥
ते अपराध क्षमा सब कीजे ❋ अब प्रभु शरणराखि मोहिंलीजे ॥
आज धन्य यह मेरो माथा ❋ जापर चरण दिये मम नाथा ॥
अब ये चरणपरसि प्रभुतेरे ❋ मिटे दोष दुख अघ सब मेरे ॥
जो पदकमल पुनीत तुम्हारे ❋ निशिदिन रहत रमा उरधारे ॥
शिव विरञ्चि सनकादिक ध्यावैं ❋ जे पद योगी ध्यान लगावैं ॥
जे पदपद्म सलिल सुरसरिता ❋ तीन लोककी पावन करता ॥

दो०—जिन पदपंकज परसते, गति पाई ऋषिनारि।
सुर नर मुनि वन्दित तिन्हैं, सन्ततं प्राण अधारि ॥

सो०—फिरत चरावत गाय, श्रीवृन्दावन जे चरण।
भक्तनके सुखदाय, ब्रजवासी जन दुखहरण ॥

जे पदपंकज परम सुहाये ❋ प्रभु मैं आज सुलभकारि पाये ॥
गरुड़त्रास ते इत भजिआयो ❋ भलो कियो मोहिं गरुड़ सतायो ॥
जाते दरश भयो प्रभु तेरो ❋ अब भय ताप मिट्यो सब मेरो ॥

१ ब्रह्मा। २ कीड़ा। ३ पाप। ४ आकाशगंग। ५ कमलसे पद। ६ सदैव। ७ सहज।

आज भयो मैं नाथ सनाथा ❀ गह्यो नाथ मम प्रभु निजहाथा ॥
सुनत दीन कालीकी बानी ❀ दीनबन्धु अतिशय सुखमानी ॥
फनप्रति चरण सरोज छुवाये ❀ ताके सब संन्ताप नशाये ॥
तब ब्रजनाथ भक्तहितकारी ❀ यह अपने मनमाहिं विचारी ॥
कालीको ब्रजदेश दिखै ये ❀ कमलभौर यांपै लै जैये ॥
ह्वै हैं ब्रजके लोग दुखारी ❀ करौं जाय अब तिनहिं सुखारी ॥
कमल कंसको देउँ पठाई ❀ कालिह चढ़ैगो ब्रजपर आई ॥
लीन्हें अहिपर कमल लदाई ❀ चले ब्रजाहि ब्रजजनसुखदाई ॥
लियो नाथ गहि अहि उचकाई ❀ फनपर ठाढे कुवँर कन्हाई ॥

दो०-उरगनारि कर जोरिकै, प्रभुके सन्मुख आय ।
करत विनय अति दीनह्वै, पतिहित हरिहि सुनाय ॥
सो०-इत यशुमति उर माहिं, उठी लहर अति प्रेमकी ।
कान्हर आयो नाहिं, कहत रोय बलराम सों ॥

कहत राम सुनु यशुमति मैया ❀ अबही आवत कुँवर कन्हैया ॥
नेक धीर धरु मति अकुलाई ❀ यह सुनिकै बलकी बलिजाई ॥
पुनि यह कहत कान्ह नाहिन अब ❀ झूठहिं मोहिं प्रबोध करत सब ॥
भई बिनासुत व्याकुल मैया ❀ कहत कहां मेरो बाल कन्हैया ॥
गिरी धरणि व्याकुल मुरझाई ❀ रोयउठे सब लोग लुगाई ॥
ब्रजवासी सब भये बिहाला ❀ कहत कहां मोहन नँदलाला ॥
तुम बिन यह गति भई हमारी ❀ आवत नहीं धाय बनवारी ॥
प्रातहिते जलमाँझ समाने ❀ तुमहिं बिना युगयाम बिहाने ॥
अबको बसै जाय ब्रजमाहीं ❀ धृगधृग जीवन तुमहिं बिनाहीं ॥
अति व्याकुल रोवत नँदराई ❀ बिकल मनहुँ फणि मणीगवाँई ॥
यशुमति धाय चलत जल माहीं ❀ राखति ब्रजयुवती गहि बाहीं ॥
हलधर सबहिनको समझावैं ❀ बिना श्याम कोउ धीर न पावैं ॥

---

१ दुःख । २ बोझा । ३ कालीकी नाथ पकड़ । ४ कालीकी स्त्री । ५ समझावत ।
६ दशा । ७ धिक्कार । ८ दौड ।

दो०-कहत यशोदा नंदसों, धृग धृग बारहिं बार ।
और किते दिन जियहुगे, मरतनहीं मोहिंमार ॥
सो०-करि देखहु मन ज्ञान, ऐसे दुखमें मरन सुख ।
नंद भये बिन प्रान, मूर्छि परे सुनि तियवचन ॥
तबहिं धाय बल पिता जगायो ❋ बार बार कहि कहि समुझायो ॥
वृथा मरत काहे सब कोई ❋ कान्हर मारनहार न कोई ॥
हलधर कहत सुनहु ब्रजबासी ❋ वे अन्तर्य्यामी अविनासी ॥
सब गुणसागर आनँदरासी ❋ रमासहित जलहीके बासी ॥
मेरो कह्यो सत्य करि मानो ❋ आवत श्याम धीर उर आनो ॥
यमुनाके भीतर तिहिंकाला ❋ उच्यो सलिलं झकझोर विशाला ॥
बोलि उठे आतुर बलरामा ❋ वे देखो आवत घनश्यामा ॥
सुनत वचन लखिके उठि धाये ❋ यमुनानीर तीर सब आये ॥
कोउ जलमें कोउ बाहर ठाढे ❋ दरशातुर विरहानल डाढे ॥
प्रगट भये जलते तेहि काला ❋ ब्रजजनजीवन नँदके लाला ॥
कमलभार कालीपर लीन्हें ❋ नटवर भेष मनोहर कीन्हें ॥
भये सुखी सब ब्रजके बासी ❋ लखि हरिवदन परमसुखरासी ॥
छं०-हरिवदनलखिकैराशिसुखकी, मुदितंब्रजवासीभये ।
मनहुँ बूडत नाव पाई, परम उर आनँद छये ॥
मात पितु लखिजो भये सुख, जात सो कापै कह्यो ।
पुलकतनमन हरषि गदगद, प्रेमजल लोचन बह्यो ॥
चकित हरितन लखत इकटक, मिलनको आतुर हियो ।
श्याम निरतंत अहिफनन पर, खौर चन्दनतनुकियो ॥
श्रवण कुण्डल लोल लोचन, चारु मुकुट बिराजहीं ।
मनहुं मरकत गिरिशिखर माणि, मोर तापर राजहीं ॥
पीतपटकटि काछनी उर, माल मणि भूषण सजे ।

१ श्रीकृष्ण । २ नाशनहीं । ३ पानी । ४ दुःखसेभरे । ५ देखकर ।
६ मनको लुभानेहारा । ७ प्रसन्न । ८ नाचत ।

नृत्य ताण्डव करत फण प्रति, व्योमंदिवि दुन्दुभि बजे ॥
भई जय ध्वनि गगन वर्षहिं, सुमंन सुर आनँद भरे ।
गन्धर्व गुण गण गगन गावत, तान तालन अनुसरे ॥
उरगनारी श्याम सन्मुख, करत अस्तुति आवहीं ।
नाथ अब अपराध क्षमि करि, करि कृपा पति पावहीं ॥
राखे चरण निज शीश याके, अति बडाई इन लई ।
ऐसी बडाई औरको प्रभु, नाहिं तुम कबहूं दई ॥
शेष इक ब्रह्माण्ड भरि शिर, राखि मन गर्बित कियो ।
कोटि कोटिब्रह्माण्ड तवतन, अधिकइन यह भरि लियो
सुर असुर नर नाग खग मृग, कीट जन सब रावरे ।
क्षमिय अब अपराध अहि के, सुभग सुन्दर साँवरे ॥
दो०–सुनि अहिनारिनके वचन, करुणामय यदुराय ।
उतरि परे अहिशीशते, यमुनाके तट आय ॥
सो०–तट पर कमल धराय, कालीको आयसु दियो ।
उरगद्वीप अब जाय, करहु बास निर्भय सदा ॥

तब काली कह सुनहु कृपाला ❀ तव वाहन डर डरत विशाला ॥
धनि ऋषिशाप दियो है ताहीं ❀ ताते आय सकत ह्यां नाहीं ॥
तब मैं भागि बच्यो इत आई ❀ नातरु लेत मोहिं सो खाई ॥
चरणचिह्न लखि तव फण मेरे ❀ परिहै गरुड़ आय पग तेरे ॥
तू अब मति खगपतिहि डराई ❀ अपने द्वीप करहु सुख जाई ॥
वाते बडो कौन सुखनाथा ❀ अभयदान पद परस्यो माथा ॥
जे पदकमल भजन परतापा ❀ जन प्रहलाद मिटे सन्तापा ॥
ते पदचिह्न शीशपर धारी ❀ जन्म जन्मको भयो सुखारी ॥
उरगिन सहित नाइ पद माथा ❀ गयो उरगद्वीपहि अहिनाथा ॥
जैजै ध्वनि नभ सुरन बखानी ❀ धन्य धन्य जनके सुखदानी ॥

१ आकाश । २ पुष्प । ३ आज्ञा । ४ गरुड़ । ५ दुःख ।

शरण राखि काली अहि लीन्हों ❀ जलते काढि कृपाकरि दीन्हों ॥
फन पर चरण चिह्न प्रगटाई ❀ कठिन गरुड़की त्रास मिटाई ॥
दो०—धन्य धन्य प्रभु धन्य कहि, मुदित सुमनबर्षाय ।
गये देव निज निज सदन, हृदय परमसुख पाय ॥
सो०—द्वीप पठायो ब्याल, सुरगण सुर लोकहिं पठै ।
आयो निकसि गोपाल, ब्रजबासी जन सुखकरन ॥
धाय मिले सगरे ब्रजवासी ❀ विरह ताप तनुकी सब नासी ॥
माता दौरि कण्ठलपटानी ❀ पुलकरोमतन गदगदबानी ॥
नयन नीर अति प्रेम अधीरा ❀ उरलगाय मेटत उरपीरा ॥
कहि कहि मेरो बाल कन्हैया ❀ दुहूं करन सों लेत बलैया ॥
धाय नन्द उर सों लै लाये ❀ गये प्राण मानहुं फिरि आये ॥
गदगद बैन नयन जल ढारो ❀ कहत जन्म फिरि भयो तुम्हारो ॥
बार बार उरम्भों लपटावत ❀ दारुण उरकी ताप नशावत ॥
प्रेमाकुल देखी बल माता ❀ मिले रोहिणी सों सुखदाता ॥
निरखि वदन कह यशुमति मैया ❀ मैं बरजौं नित तुमहिं कन्हैया ॥
यमुनातीर न्हान मति जाहू ❀ तुम बरजो मानत नहिं काहू ॥
मैं निशि सपने मांझ डरान्यो ❀ सोई कछू आय प्रकटान्यो ॥
कंस कमलके फूल मँगाये ❀ ब्रजवासी सब अतिहि डराये ॥
दो०—मैं गेंदहि खेलत यहां, आयो यमुनातीर ।
मोहिं डारि काहू दियो, कालीदहके नीर ॥
सो०—देख्यो उरग विशाल, जाय तहां मैं डरो अति ।
तब पूंछ्यो मोहिं ब्याल, किन पठयो तोकों इहां ॥
जब ऐसे मैं ताहि बतायो ❀ कमलकाज मोहिं कंस पठायो ॥
यह सुनतहिं अहि उठ्यो डराई ❀ मोको फणपर लियो चढाई ॥
कमल लियो निज पीठि लदाई ❀ आपुहि आय गयो पहुँचाई ॥
ऐसे जननी बोधि कृपाला ❀ सुनत बचन सब ब्रजकी बाला ॥

१ डर । २ प्रसन्नतासे । ३ गृह । ४ जल । ५ समझाकर !

लै लै हरिको उरसों लावैं ❋ कठिन विरहकी शूलं मिटावैं ॥
श्याम बिना बहुतै दुख पायो ❋ सो हरि तिनको ताप नशायो ॥
लखे सखा सब आरत बाढे ❋ प्रेमातुर मिलवेकों ठाढे ॥
गये दौरि तिन पास कन्हाई ❋ मिले धाय सब कण्ठ लगाई ॥
कहत सखा धनि धन्य कन्हैया ❋ जो तुम कह्यो कियो सोइ भैया ॥
तुमही सब ब्रजके सुखदानी ❋ कंस मारिहौ तुम हम जानी ॥
कहा भयो जो तुम हौ बौरे ❋ हैं तुम्हरे गुण सब ते न्यारे ॥
भलो यदपि सिंहनको छोटो ❋ कौनकाज गज लम्बो मोटो ॥

दोहा—तुम हम पर रिस करि गये, सो अब देहु भुलाय ।
यह सुनतहि हरि हँसि उठे, मिले बहुरि हरषाय ॥

सो०-जबहलधरअरुश्याम, मिलेबिहँसिदोउमनहिमन ।
निरखि मगन नर बाम, भेद न कोऊ जानहीं ॥

सब कोउ कहत धन्य बलरामा ❋ तुम जो कही करी सोइ श्यामा ॥
तब हरि कह्यो नंदसों जाई ❋ मेरे मनहिं बात यह आई ॥
आज बसैं सब यमुना तीरा ❋ अति रमणीक सुगन्ध समीरा ॥
इहां कीजिये भोग बिलासा ❋ होत प्रात सब चलहिं अवासा ॥
कमल पठाय कंसको दीजे ❋ सुनहु तात अब बिलँब न कीजे ॥
गोप जाय आवें पहुँचाई ❋ कालिह चढे नतु ब्रजपर धाई ॥
यह सुनि नन्द बहुत सुख पायो ❋ सब ब्रजवासिनके मन भायो ॥
तुरत ग्वाल बहु घरन पठाये ❋ षटरस भोजन बहुत मँगाये ॥
यमुनातीर गोप समुदाई ❋ भोजन कियो बहुत सुखपाई ॥
नंदराय तब शकट मँगाये ❋ कोटि कमल तिनपर लदवाये ॥
बहुत भार दधि घृतके कीन्हें ❋ ते अहिरन कांधे धरि लीन्हें ॥
अपनीसरि जे गोप सुहाये ❋ तिनहिं संग करि नृपहिं पठाये ॥

दो०-बहुत विनय करि कंसकों, दीन्हों पत्र लिखाय ।
कहियो मेरी ओरते, नृपसों ऐसी जाय ॥

१ पीडा । २ छोटे । ३ पवन । ४ घर । ५ छकड़ा ।

सो०–गयो कमलके काज, कालीदह मेरो सुवन।
तुव प्रताप ते राज, आप गयो पहुँचाय अहिं ॥
कोटि कमल नृप मांगि पठाये ❀ तीनिकोटि तहँ ते हैं पाये ॥
सो राखे जल मांझ सजाई ❀ आयसु होय तो देउँ पठाई ॥
तब गोपन सों कुवँर कन्हाई ❀ ऐसे बोलि उठे मुसकाई ॥
नृपसों लीजो नाम हमारो ❀ यह कारज हम कियो तुम्हारो ॥
कमल शकट दधि धृतके भारा ❀ चले गोपलै नृपके द्वारा ॥
राजद्वार शकटन पहुँचाई ❀ जाय पौरियन खबरि जनाई ॥
तुरत पौरिया भीतर धाई ❀ समाचार सब नृपहिं सुनाई ॥
सुनत बात यह मनहिं डरान्यो ❀ आपनिकसि आयो अतुरान्यो ॥
देखी शकट भीर अति भारी ❀ भयो चकित सुधिबुद्धि बिसारी ॥
कमल देखि भय भयो बिशाला ❀ लगे ताहि मनु ब्याल कराला ॥
नंदविनय तब गोपन भाषी ❀ दीन्हों पत्र भेंट सब राषी ॥
गोपन बहुरि कह्यो नृपराई ❀ नंदसुवन यह कह्यो कन्हाई ॥
दो०–हम कालीदह जाय यह, कियो राजको काम।
नृप हमको जानत नहीं, कहियो मेरो नाम ॥
सो०–सुनतश्यामसन्देश, देखिकमलअति भयविकल।
भीतर गयो नरेश, मन बाढी चिन्ता विपुल ॥
मनहीं मन यह करत विचारा ❀ यासों मेरो नाहिं उबारा ॥
दैत्य गये ते सबहि नशाये ❀ काली ते ऐसे बचि आये ॥
ताहीपर कमलन लै आये ❀ सहस शकट भरि मोहिं पठाये ॥
कबहुं कहत गोपनको मारों ❀ इनको ह्वांते तुरत निकारों ॥
फेर कछू मनमें भय पावै ❀ करत विचार न कछु बनि आवै ॥
पुनि संभारि धीरज मन कीन्हों ❀ गोपन बोलि भीतरहि लीन्हों ॥
हृदय दुखित ऊपर सुखमानी ❀ पहिराये दीन्हें मनमानी ॥
शिरोपाव नन्दढुको दीन्हों ❀ कहियो काज बड़ो तुम कीन्हों ॥

१ पुत्र। २ कालीनाग। ३ राजाकंस। ४ सर्प। ५ मारे। ६ हनार।

तेरे सुत बलराम कन्हाई ❋ एक दिवस देखिहौं बुलाई ॥
यह सुनि अति पुरुषारथ कीन्हों ❋ कालीदहके फूलन लीन्हों ॥
यह कहि बिदा किये सब ग्वाला ❋ भयो कंस उर शोच विशाला ॥
मनहीं मन शोचत हरिके गुन ❋ रह्यो काठ ज्यों भीतरही घुन ॥
दो०-तब दावानल बोलिकै, कह्यो मरम सब ताहि ।
देखौं मैं तेरे बलहि, तू अब ब्रजको जाहि ॥
सो०-जाय कीजियो छार, ब्रज सब ब्रजवासिन सहित ।
बचहिं न नन्दकुमार, ऐसो यत्न विचारि उर ॥
दावानल सुनि नृपकी बानी ❋ चल्यो रिसाय गर्व उर आनी ॥
करौं भस्म इक पलमहँ जाई ❋ सहितगोप नँदसुवन कन्हाई ॥
नृपको काज आज करि जाऊं ❋ जो कहुँ एक ठौर सब पाऊं ॥
इहां गोप कमलन पहुँचाई ❋ आये यमुनतीर हरषाई ॥
नन्द तुरत सब निकट बुलाये ❋ सुनत सकल ब्रजजन जुरिआये ॥
गोपन कही नन्द सों आई ❋ लिये कमल नृप अति सुखपाई ॥
दियो हर्ष तुमको पहिरायो ❋ मुँदित नन्द लै शीश चढायो ॥
अपने सब पहिराव दिखाये ❋ लखि सब ब्रजवासिन सुखपाये ॥
हरिको नाम सुन्यो जब राजा ❋ हरषि कह्यो कीन्हों उन काजा ॥
इक दिन बल मोहन दोउ भाई ❋ देखहुंगो मैं इहां बुलाई ॥
यह सुनि नन्द बहुत सुखपायो ❋ हरषि भूप मो सुतन बुलायो ॥
करी कृपा अति नृप हरिपाहीं ❋ सब नर नारि हरषि मनमाहीं ॥
दो०-कहत श्याम बलराम सों, हँसि हँसि कै यह बात ।
नृप हम तुम देखन लिये, कह्यो बुलावन तांत ॥
सो०-ब्रजजन परम हुलास, इक सुख हरि अंहिते बचे ।
मिट्यो कंसको त्रास, दुतिय कमल पठये नृपहिं ॥

अथ दावानलवर्णनलीला

यहि विधि ब्रजजन अति सुखपायो ❋ खान पान करि दिवस बितायो ॥

१ भेद । २ राख । ३ हर्षित । ४ पिता । ५ कालीनागते ।

सोये सब मिलि यमुना तीरा ❀ राखि हृदय सुन्दर बलवीरा ॥
वहां असुर दावानल आयो ❀ चाहत है सब व्रजहि जरायो ॥
देखे सब व्रजजन इकठाहीं ❀ कियो हर्ष अपने मनमाहीं ॥
प्रगटी दावानल चहुँओरा ❀ अतिहि प्रचण्ड पवन झकझोरा ॥
दशहूं दिशिते घेरत आवै ❀ तृण तरु खग मृग जीव जरावै ॥
जागि परे सब व्रजनरनारी ❀ कहैं चहूंदिशि लगी दवारी ॥
भये चकित सब अति मनमाहीं ❀ काहू दिशि मगै दीखत नाहीं ॥
चहत चलन भजि नहीं निकासू ❀ लेत सबै भरि शोचउसासू ॥
आयगई दव अतिहि निकटहीं ❀ चले कहत सब यमुना तटहीं ॥
अब न देखियत कहूँ उबारा ❀ बढी अनल पहुंची नभँ झारा ॥
व्रजके लोग अतिहि अकुलाने ❀ जरे सकल मनमांझ डराने ॥

छं०-अतिविकलसबडरे व्रजजन, देखिअनलं भयावनो ।
भई धरं नभ ज्वालपूरण, धूम धुंध डरावनो ॥
लपट झपटत जरत तरुवर, गिरत महि भहरायकै ।
उठत शब्द अघात चहुँदिशि, बढत झरझहरायकै ॥
फटत फल फूटत पटकदल, जरत बरत लताघनी ।
काँस चटकत बाँसपटकत, अँगार उचटत नभतनी ॥
हरिण मोर बराह वनपशु, विकल पन्थ न पावहीं ।
जरत जहँ तहँ जीव खग मृग, विपुलजिततितधावहीं ॥

दो०-दावानल अति क्रोध करि, लियो दशहुँदिशि घेर ।
उठी अनल ज्वाला प्रबल, मानहुँ अचल सुमेर ॥

सो०-धूम धुन्ध विकराल, भयो अँधेरो गगन सब ।
बिच बिच चमकत ज्वाल, तडित माल जनु सघनघन ॥

भये देखि व्रजलोग दुखारे ❀ तब सब हरिकी शरण पुकारे ॥
कहत श्याम तुम करो सहाई ❀ जरत सकल व्रज लेहु बचाई ॥
तृणा शकट बक अघ तुम मारे ❀ कंस त्रासते तुमहिं उबारे ॥

१ तिनका । २ आग । ३ मार्ग । ४ आकाश । ५ अग्नि । ६ धरती ।

जहँ जहँ परी गाढ हम आई ❋ तहां तहां तुम करी सहाई ॥
अब हरि यत्न कछू सो कीजै ❋ हमहिं बचाय अग्निसे लीजै ॥
व्याकुल गोप नन्द मन माहीं ❋ करत विचार बनतकछु नाहीं ॥
यशुमति सबहिन कहत पुकारे ❋ दई परचो है ख्याल हमारे ॥
नाना रूप असुर बहु आये ❋ कोउखग कोउपशु रूप बनाये ॥
कोऊ पवनरूप ह्वै आयो ❋ भयो तहां कोउ पुण्य सहायो ॥
आज उरगं सों बच्यो कन्हाई ❋ मरुकरि मन नृप त्रास नशाई ॥
अब यह बाढी अग्नि अपारा ❋ होत सकल ब्रजको संहारा ॥
किमि बचिहैं यह बालक दोऊ ❋ मोहिलखि परत उपाय न कोऊ ॥

दो०–सुनिजननीके वचन प्रभु, लखि सब ब्रज बेहाल ।
कह्यो सबन धीरजधरो, मति डरपौ लखि ज्वाल ॥
सो०–कौतुकनिधि गोपाल, को जानै तिनके गुणनि ।
दुख सुख जिनके ख्याल, जनके हितकारकसदा ॥

तब हरि कह्यो डरो मति कोई ❋ विनवहु देव बहुरि सब सोई ॥
जिन सहाय कीन्हीं अबताई ❋ सोई करै सहाय सादाई ॥
हरि हँसि सबसों आँखि मुँदाई ❋ करिगये अग्निपान सुखदाई ॥
ह्वै गइ चहुँदिशि शीतलताई ❋ रह्यो न अग्निलेश कहुँ राई ॥
खोलि देहु दृग सब हरि बोले ❋ सुनतहि तुरत सबन दृग खोले ॥
देखि चकित सब ब्रज नर नारी ❋ कहत धन्य धनि तुम बनवारी ॥
धरणि अकाश बराबर ज्वाला ❋ लपट झपट अतिही बिकराला ॥
नहिं बरस्यो नहिं सींच्यो काहू ❋ गयो बिलाय कहां धौं दाहू ॥
कैसे यह सब अग्नि बुझानी ❋ हम यह कछू न काहू जानी ॥
तब हँसि बोले कुँवर कन्हाई ❋ वह करनी यह कहि न सुहाई ॥
तृणकी आग प्रथम बहु जागे ❋ फिरि तिहिं बुझत बिलंब न लागे ॥
सुनत श्यामकी कोमल बानी ❋ भये सुखी सब त्रास नशानी ॥

दो०–जीव जन्तु खग मृग जिते, भये सुखी ततकाल ।

---

१ सर्प । २ नेत्र ।

द्रुम बेली तृण हरित सब, प्रफुलित वन सुखमाल ॥
सो०-श्याम सहायक जाहि, ताहि कहौं डर कौनको ।
यह न बडाई वाहि, पांचतत्त्व उनके किये ॥
कहत परस्पर ब्रजकी नारी ❀ हैं सखि बडे बीर बनवारी ॥
देखत कोमल श्याम सलोना ❀ यह सखि जानत हैं कछु टोना ॥
नाथ्यो नाग पतालहि जाई ❀ लायो तापर कमल लदाई ॥
मांगे कमल कंस नृपराई ❀ कोटि कमल तिहिं दिये पठाई ॥
दावानल नभ धरणि बराबर ❀ घेर लिये ब्रजके नारि नर ॥
नयन मुँदाय कहा धौं कीन्हों ❀ रह्यो नहीं कछु ताको चीन्हों ॥
ये उतपात मिटे उनहीं पै ❀ और न होय सके किनहीं पै ॥
यह कोउ सखी बडे अवतारा ❀ है यहही कर्त्ता संसारा ॥
लखि हरिचरित यशोदा मैया ❀ चकित निरखि मुख लेत बलैया ॥
लखि सुतचरित मुदित नँदराई ❀ करत गोपगण सकल बडाई ॥
कहत देव मुनि अति अनुरागा ❀ हे ब्रजवासिनके बडभागा ॥
जिनके संग श्याम सुख शीला ❀ करत रहत नितनव रसलीला ॥
दो०-एक दिवस[१]निशि यमुनतट, बसि सब गोपीग्वाल ।
होत प्रात निज निज सदन[२], आये सहित गोपाल ॥
सो०-हरि जनकेसुखकार, विलसत विविधविलासब्रज ।
सन्तन प्राण अधार, ब्रजबासी जन जाहिं बलि ॥
हरि ब्रज जनके दुख बिसरावन ❀ करत चरित सुरमुनि मन भावन ॥
तुरत सकल ब्रज लोग भुलाये ❀ कौन कंस कब कमल मँगाये ॥
कब हरि यमुना जलहि समाये ❀ कालीनाग नाथि कब लाये ॥
कब दावानल जारन आयो ❀ एक दिवस निशि कहां बितायो ॥
नहिं जानत कछु नंद यशोदा ❀ करत श्याम सोइ बाल विनोदा ॥
माखन मांगत कुँवर कन्हाई ❀ बार बार जननी सों जाई ॥
आतुर दधिहि मथत नँदरानी ❀ सद माखन हरिको रुचि जानी ॥

१ दिनरात । २ घर ।

कहत तनक तुम रहत ललारे ❀ तुम्हैं देउँ नवनीत पियारे ॥
मैं बलि भूखलगी तुम भारी ❀ बात बनावत सुतहि दुलारी ॥
बूझत बात काहुकी कान्हहिं ❀ कहत श्यामसों सुनत न कानहिं ॥
झूठहि देत हुँकारी जननी ❀ भूल गई सब हरिकी करनी ॥
तब लौं मथि दधि माखन कीन्हों ❀ तुरतहि लै सुतके कर दीन्हों ॥

दो०—लैलै अधरन परसि करि, माखन रोटी खात ।
करत प्रशंसा मधुर कहि, सुनत प्रफुल्लित मात ॥

सो०—जो प्रभु अलख अपार, दुर्लभ शिवसनकादिकहुँ ।
धन्य नन्दकी नार, ताको सुत करि मानई ॥

अथ प्रलम्बासुरवधलीला.

नित नवलीला करत कन्हाई ❀ तात मात ब्रज जन सुखदाई ॥
मुदित सकल ब्रजके नर नारी ❀ निशिदिन हरिसुखचंद निहारी ॥
इक दिन श्याम राम दोउ भाई ❀ खेलत सखनसंग बन जाई ॥
नानाविधि सब करत कलोलैं ❀ भांति भांतिकी वाणी बोलैं ॥
कबहूं मोर हंसकी नाई ❀ बोलत हँसत श्याम सुखदाई ॥
कबहूं मधुरे स्वर सब गावैं ❀ मध्य श्याम घन वेणु बजावैं ॥
कबहूं चढत तरुन पर जाई ❀ कूदि परत गहि डार नवाई ॥
नानाविधिके खेलन खेलैं ❀ बालविनोद मोदरस केलैं ॥
तहां प्रलम्ब असुर इक आयो ❀ कंस ताहि दै पान पठायो ॥
सो छलरूप गोपवपुधारी ❀ मिल्यो आय सब सखनमँझारी ॥
ताको ग्वाल न काहू जान्यो ❀ यहतौ असुर श्याम पहिचान्यो ॥
बलदाऊको दियो जनाई ❀ ताहि हतनेंको रच्यो उपाई ॥

दो०—सखा बुलाये निकट सब, तिनहिं कह्यो नँदलाल ।
फलबुझाय अब खेलिये, भये मुदित सुनि ग्वाल ॥

सो०—द्वै बालक करि राय, सखा लिये तब बांटि सब ।
आधे इक दिशि आय, आधे एक दिशा भये ॥

१ बताय । २ मारनको ।

निज निज जोट सखन जुरिलीन्हों ❋ हलधर जोट दनुजसँग कीन्हों ॥
आपसमें यह होड लगाई ❋ जो हारै सो पीठि चढाई ॥
भांडीर बनलौं लै जाही ❋ फेर इहां पहुँचावै ताही ॥
फलको नाम बुझावन लागे ❋ बूझिदियो बल सबते आगे ॥
चले सखा चढि चढि निज जोरी ❋ चढे दनुज बल घींच मरोरी ॥
भांडीर वन पहुँचे जाई ❋ फिरे सखा सब ठांव छुवाई ॥
असुर चल्यो लै बलको आगे ❋ प्रगट्यो दनुजशरीर अभागे ॥
तब बलदेव कोप करि भारी ❋ मुष्टि एक ताके शिर मारी ॥
विकसिगयो शिर गिरचो अधीरा ❋ उतरि परे तब श्रीबलवीरा ॥
भयो पलकमें सो विनप्राना ❋ देखत सुर मुनि चढे विमाना ॥
भई गगन ते जय जय बानी ❋ फूलनकी वर्षा वरषानी ॥
बहु विधि अस्तुति बलहिं सुनाई ❋ मुदित सकल सुर मुनि समुदाई ॥

दो०—ग्वाल बाल चक्रित सबै, दौरि गये बल पास ।
मृतक असुर तनु देखिकै, तब मन कियो हुलास ॥

सो०—धन्य धन्य बलराम, धन्य तुम्हारे मात पितु ।
बडो कियो यह काम, कपटरूप मारचो असुर ॥

यह शठ गोपभेष बनि आयो ❋ हम काहू इहिं जानि न पायो ॥
जो यह शठ नहिं जात निपांतो ❋ तो काहू लरिकहि लै जातो ॥
हो तुम बडे वीर दोउ भाई ❋ जहँ तहँ हमको होत सहाई ॥
वनके दुष्ट सकल तुम मारे ❋ हो तुम हम सबके रखवारे ॥
ताहि कहो काको डर भैया ❋ जासु मीत बलराम कन्हैया ॥
देत ग्वाल सब बलहि बडाई ❋ धँन्य धन्य ब्रजजन सुखदाई ॥
दुष्ट मारि बल मोहन लाला ❋ आये सदन सहित सब ग्वाला ॥
ग्वालन कही आय सब बाता ❋ सुनतचकित ब्रजजन पितुमाता ॥
करत सकल बलराम बडाई ❋ जननी मुदित लिये उरलाई ॥

---

१ दैत्यमलम्बासुर । २ दाऊजी । ३ मुक्का । ४ फटगयो । ५ आकाश ।
६ मारचोजातो । * आयमिले तब हँसे कन्हाई ।

बल मोहन दोउबीर निहारी ❋ दोऊ जननि जात बलिहारी ॥
भूखे जानि बनहिते आयो ❋ दोउ भइयन भोजन करवायो ॥
जो सुख लहत नंदकी रानी ❋ सो शारद नहिंसके बखानी ॥
दो०-सुतसनेहयशुमति मगन, निशि दिन जात न जान।
करत चरित सन्तनसुखद, भक्त बछल भगवान ॥
सो०-नितनव परम हुलास, ब्रजवासी हरिसँग लहत।
बिलसत विविध विलास, बाटघाट गृह बन सघन ॥

अथ पनिघटलीला.

पनिघट यमुनाके तटमाहीं ❋ ठाढे श्याम कदमकी छाहीं ॥
सखावृन्द चहुँ ओर बिराजें ❋ कोटिकामछबि निरखत लाजें ॥
शीश मुकुटकी लटक सुहाई ❋ सुरँग खौर केशर छबिछाई ॥
कुंडल झलक अलक घुँघरारी ❋ कंठ कंनककण्ठी[१] द्युतिकारी ॥
चटकीली लटकी बनमाला ❋ परसति चरणसरोज[२] बिशाला ॥
मुक्तमाल मणिमाल सुहाई ❋ उर बिशाल पै अति छबिछाई ॥
अरुणअधरदशननद्युतिनीकी ❋ मृदु मुसकांनि मोहनी जीकी ॥
चटकीलो पट पीत बिराजे ❋ कटि तट क्षुद्रघंटिका राजे ॥
भुजविशाल भूषण युत सोहै ❋ करमुद्रिका मुदित मनमोहै ॥
तनु घनश्याम रसीले नैना ❋ हँसिहँसि कहत सखनसों बैना ॥
कनकलकुटिसों पगलपटान्यो ❋ भूषण सहित न जात बखान्यो ॥
गहि द्रुमडार तिरीछे ठाढे ❋ अंग अंग अनुपम छबि बाढे ॥
दो०-कबहुँबजावत अधर धरि, करि मुरलीध्वनि घोर
निकट बुलावत वन मृगन, कबहुँ नचावत मोर॥
सो०-रहे गगन घन छाय, सुखदछांह शीतल किये।
वर्षा ऋतु को पाय, निरखत सुत नँदरायको ॥
हरित भूमि चहुँ ओर सुहाई ❋ मनहुँ काम मँसनंद[३] बिछाई ॥
बहत समीर धीर सुखदाई ❋ शीतल अधिक सुगंध सुहाई ॥

१ सुवर्णकी । २ चरणकमल । ३ सेज ।

बहत यमुन बाडुलते पूरी ❀ परत भवँर जहँ तहँ छबिरूरी ॥
उठत श्याम जल सुभगतरंगा ❀ छबितरंग जिमि हरिके अंगा ॥
या छबि सों पनिघट हरि ठाढे ❀ संग गोप बालकहित बाढे ॥
यमुना जल तिय भरन न जाहीं ❀ ग्वाल भीर देखत सकुचाहीं ॥
हरिके गुण मनमैं सब जानैं ❀ रोकत टोकत शंक न मानैं ॥
ताते जाय सकत कोउ नाहीं ❀ दरश लालसा अति मनमाहीं ॥
सबके अन्तर्य्यामि कन्हाई ❀ युवतिनके मनकी गति पाई ॥
तब इक बुद्धि रची नँदलाला ❀ रसिक शिरोमणि मदनगोपाला ॥
सघन एक तरु१तर बैठाई ❀ पनिघटते सब भीर मिटाई ॥
आप रहे द्रुमओट छपाई ❀ हेरत युवतिन मगचितलाई ॥

दो०—इहि अन्तर आवत लखी, युवती इक घनश्याम।
आप रहे द्रुमओट हरि, यमुना तट गइ बाम ॥

सो०-नागरि जलहिं हिलोर, भरि गागरि शिरधरिचली।
पाछेते चितचोर, घटलै दियो लुढाय महि ॥

गही चतुरग्वालिनिभुजहरिकी ❀ पाई कनक लकुटिया करकी ॥
सबसों तुम करि रहे ढिठाई ❀ तैसेहिं मोसों लगत कन्हाई ॥
देन लगे तब हरि हँसि गागरि ❀ लेत नहीं ग्वालिनि अतिनागरि ॥
कहत कि रीतो घटनहिं लेहौं ❀ जल भरि देहु लकुटि तब देहौं ॥
कहा जो तुम नँदसुवनकन्हाई ❀ हमहूं बडे बापकी जाई ॥
एक गांव बस बास हमारो ❀ मैं नहिं सहिहौं कह्यो तुम्हारो ॥
एक कहौ तो दश मैं कैहौं ❀ मैं कछु तुम सों डरपि न जैहौं ॥
यह सुनि हँसिदीन्हें नँदलाला ❀ लियो चोरि चित मदनगोपाला ॥
कहत लकुटिया देरी मेरी ❀ मैं भरि देहौं गागरि तेरी ॥
देखत रूप सुनत मृदुबानी ❀ ग्वालिनि तनुकी दशा भुलानी ॥
लागी हृदय मदन२की सांटी ❀ मन परिगयो प्रेमकी घांटी ॥
करते लकुटि गिरत नहिं जान्यो ❀ विवश भई चित चेत हिरान्यो ॥

१ वृक्षके नीचे। २ कामदेवकी साँटी।

दो०–तब घट भरि हरि भावते, दीन्हों शीश उठाय ।
नेकहुँ सुधि ता तन नहीं, चली ब्रजाहिं समुहाय ॥
सो०–कियो दृगन मैं धाम, सुन्दर नट नागर सुखद ।
जित देखे तित श्याम, पंथ ताहि दीखै नहीं ॥

उते अपर ग्वालिनि इक आई ❀ कहत कहा तू रही भुलाई ॥
सूधे पंथ चलतहै नाहीं ❀ कहा शोच तेरे मनमाहीं ॥
अबहीं हँसति भरन जल आई ❀ कहाँचली इत आप गवाँई ॥
ताको देखि कहत सुनु आली ❀ मोपै श्याम मोहनी घाली ॥
मैं जल भरन अकेली आई ❀ मेरी गागरि कृष्ण ढुढाई ॥
तब मैं कनक लकुटिगहिलीन्हों ❀ उन मोतनलखिकै हँसिदीन्हो ॥
वहे हँसनि मोहिं परी ठगोरी ❀ तबहीं ते मैं ह्वैगइ बौरी ॥
कहा कहौं तोसों अब आली ❀ मेरे चित वह चितवन शाली ॥
बस्यो श्याम मेरे दृग माहीं ❀ और कछू मोहिं दीसत नाहीं ॥
सुनत बात वह ग्वालि सयानी ❀ आप विलोकन को अतुरानी ॥
ताहि बाँहगहि घर पहुँचाई ❀ आप गई जलको अतुराई ॥
देख्यो जाय श्यामतहँ नाहीं ❀ इत उत लखिशोचति मनमाहीं ॥

दो०–हरि देखत तरु ओटह्वै, ग्वालिनिमन दुखपाय ।
चली नीर भरि गागरी, बार बार पछिताय ॥
सो०–मनके जाननहार, देखि ग्वालिनी बिकल अति ।
प्रगटे नंदकुमार, आय अचानक निकटहीं ॥

गहिलीन्हीं अंकम भरि ग्वारी ❀ ताके तनुकी तपनि निवारी ॥
ता तन चितै कह्यो तू कोरी ❀ तोहि कबहुं देख्यों नहिं गोरी ॥
मन हरिलीन्हों रूप दिखाई ❀ बहुरि भये तरुओट कन्हाई ॥
मिलि हरिसों सुखपायो ग्वाली ❀ छकी प्रेमरस लखि बनमाली ॥
नहिं जानत मैं को कित आई ❀ भई मगन मन तनु बिसराई ॥
घरको पंथ भूलिगइ नागरि ❀ इत उत फिरत शीशलिये गागरि ॥

१ नेत्र । २ मार्ग ।

और सखी इक उतते आई ❀ देखि दशा तिन निकट बुलाई ॥
कहा फिरे भूली मगमाहीं ❀ बूझत सखी सुनत कछु नाहीं ॥
चौंकपड़ी सपने ज्यों जागी ❀ तासों बचन कहन तब लागी ॥
श्यामबदन इक मिल्यो ढुटोना ❀ तिन मोको कछु कीन्हों टोना ॥
मैं भरि गागरि शीश चढाई ❀ औचक मोहिं अंक भरिलाई ॥
मोसों कह्यो कौन तू गोरी ❀ देखी नाहिं कबहुँ ब्रजखोरी ॥

दो०–ऐसे कहि चितयो बिहँसि, मैं लखि रही भूलाय।
तबहिं भयो अंतर कहूं, मेरो चित्त चुराय ॥
सो०–कही सखी सों बात, ग्वालिनि लाज बिसारिकै ।
निरखि नंदको तात, भई जलदकी बूंद जिमि ॥

सो सखि सावधान करि ताको ❀ चली आप आतुर यमुनाको ॥
देखी श्याम युवति ढिगआई ❀ ठाढे तरुकी ओट कन्हाई ॥
तासु अंगछबि रहे निहारी ❀ गोरे बदन चूनरी कारी ॥
छूटी अलक बदन छबिछाई ❀ मनहुँ जलजं अलिअवलि सुहाई ॥
हाथन चूरी चारु बिराजैं ❀ कनक मुँदरियन अति छबिछाजैं
सहज शृँगार उँरोज उठोहैं ❀ अंग अंग सुठि सुंदर सोहैं ॥
ग्वालिनि हरिको देख्यो नाहीं ❀ जाने कहूं गये बनमाहीं ॥
जल भरिचली मनहिं पछिताई ❀ गागरि नागरि शीश उठाई ॥
औचक श्याम गही लट आई ❀ यह कहि कहां चली अतुराई ॥
चिबुक परश उरसों करलायो ❀ ग्वालिनि मनहिं हर्ष अतिपायो ॥
ऊपर कहत बंककरि भौंहन ❀ छांडिदेहु मेरीलट मोहन ॥
उर परसत कछु सकुच न मानत ❀ और ग्वालि सी मोको जानत ॥

दो०–छांडि देहु लट देखिहै, ब्रज युवती कोउ आय ।
हाहा मैं पायँन परति, तुमको नंद दुहाय ॥
सो०–इतनेही को मोहिं, सौंह दिवावत बावरी ।

*इनऔचकमोहिंअंकमेंछाई । १ मेघ । २ कमल । ३ भौंरोंकी पाँति । ४ स्तन । ५ ठोडी ।

पहिंचान्यों नहिं तोहिं, ताते मुख देखत तनक ॥
यों कहि श्याम छाडि लट दीन्हीं ❀ मुरि मुसकनि नागरि वशकीन्हीं ॥
चली भवन मन हरि हरि लीन्हों ❀ जिय यह कहति कहा हरिकीन्हों ॥
पगद्वै चलत ठिठकि रहि जाई ❀ भूलिगई मारग जिहिं आई ॥
प्रेम मगन तनु सुधि बिसराई ❀ रहे दृगनमें श्याम समाई ॥
गृह गुरुजनकी सुधि जब आई ❀ तब कछु जियमें गई लजाई ॥
ज्यों त्यों करि पहुँची गृह माहीं ❀ उरते श्याम टरत क्षण नाहीं ॥
सखी संगकी बूझत आई ❀ कहाँ यमुन तट बेर लगाई ॥
और दशा भइ है कछु तेरी ❀ कहति नहीं हमसों सखि हेरी ॥
कहा कहों तुमसों री आली ❀ मोह्यो मोहिं श्याम वनमाली ॥
सुनहु सखी री वा यमुना तट ❀ मैं जल भरचो अकेली पनिघट ॥
लै गगरी शिर मारग डगरी ❀ कितहूं ते आयो मो ढिगरी ॥
औचक आनि गही लट मेरी ❀ कह्यो नेक मुख देखन देरी ॥

दो०—मैं मृदु बचन अमोल सुनि, देखि वदन जलजात ।
जकी चकी सी ह्वै रही, उन परस्यो मो गात ॥

सो०—प्रफुलित हिये गुवारि, मनमोहनके रस विवश ।
कुलकी लाज बिसारि, कही सखिन सों बात सब ॥

सुनत बात सब सखी सयानी ❀ श्याम विलोकनको अतुरानी ॥
इक क्षण श्याम न बिसरत काहू ❀ सुनत भयो यह अधिक उछाहू ॥
घर घरते धाईं सब नागरि ❀ लै लै आईं जलकी गागरि ॥
चलीं यमुनतट अति अतुराई ❀ देख्यो कुँवर नंदको जाई ॥
मोरमुकुट कटि कछनी सोहै ❀ कुंडल चटक लटक मन मोहै ॥
पीत वसन लखि तडितै लजाई ❀ नयन विशाल अधर अरुणाई ॥
देखत कह्यो सखिन ढिग जाई ❀ ठगत फिरत हो नारि पराई ॥
काहि ठग्यो कैसे ठग चीन्ह्यों ❀ तुमरो कहो कहा ठगि लीन्ह्यों ॥
कौन ठग्यो कहि कहा बखानै ❀ और हिंके ठग तुमको जानै ॥

१ कमल । २ बिजुरी ।

कहाठग्यो सो हम नहिं मानैं ❀ कहौ नाम धरि तब हम जानैं ॥
सर्वस ठगत पलकके माहीं ❀ कहा ठग्यो सो जानत नाहीं ॥
ठगके लक्षण मोहिं बतावहु ❀ कैसे मोको ठग ठहरावहु ॥
दो०-ठगलक्षण हम पै सुनहु, फाँसी मृदु मुसकान ।
रूपठगौरीते ठगत, ब्रज तिय मन धन प्रान ॥
सो०-फिरत विकल बेहाल, लोकलाज कुल कानि तजि ।
ठगी नंदके लाल, भई विदित तिहुँ लोक तिय ॥
अपने लक्षण मोहिं लगावहु ❀ जैसे तुम सब चितहि चुरावहु ॥
कहति कि प्रकटी तिहुँपुर बाता ❀ ब्रजतिय ठगत नंदको ताता ॥
यह अति कहति कहत सब कोई ❀ सुरनर मुनि वेदहु नहिं गोई ॥
तीन लोकको ठाकुर जोई ❀ ब्रजवनितन वशकीन्हों सोई ॥
यों सुनि सब ग्वालिनि मुसुकानी ❀ कहौ सखी सुनि हरिकी बानी ॥
हरि तुम बात उलटि यह ठानत ❀ तुम्हरी नागरता हम जानत ॥
अतिहि कान्ह तुम करत ढिठाई ❀ छाँडि देहु अब यह लँगराई ॥
काहूकी ढारतहो गगरी ❀ काहू लट गहि करत अचगरी ॥
काहूको अंकम भरि लावत ❀ ब्रज लोगनपै सबन हँसावत ॥
तुमते मग कोउ चलन न पावत ❀ बाट घाट डरपत सब आवत ॥
यमुना भरन देत नहिं पानी ❀ बहुत अचगरी अब तुम ठानी ॥
कहो तो यशुदहि जाय सुनावें ❀ फेरि तुम्हें ऊखल बँधवावें ॥
दो०-यह सुनि हरि रिस करि उठे, ईंडुरी लई छुडाय ।
कहो जाय सब मातसों, लीजो मोहिं बँधाय ॥
सो०-मोहिं कहत ठग चोर, आप भई साहुनि सबै ।
डारी गागरि फोर, कहत जाहु चुगुली करन ॥
तब युवती सब हरि ढिग आई ❀ कहत ईंडुरी देहु कन्हाई ॥
नहिं तो तुमको गहि लै जैहैं ❀ यशुमति पास न नेक डरै हैं ॥
बाट घाट तुम करत ढिठाई ❀ काहु न नेक डरात कन्हाई ॥
ईंडुरी लै फोरी सब गागरि ❀ आज मिटावै तुम्हरी लांगरि ॥

तव हरि चढे कदम पर जाई ❀ इँडुरी दीन्हीं जलहि बहाई ॥
बदन सकोरत भौंह मरोरत ❀ मुरि मुसकनि सबकेचितचोरत ॥
कहत कहौ मैयासों जाई ❀ सब मिलि लीजो मोहिं बुलाई ॥
तुम सब जुरि मोहिं मारन धाई ❀ तब मैं इँडुरी जलहि बहाई ॥
ऐसो करि तुम मोको पायो ❀ मानहुँ मोको मोल मँगायो ॥
यह सुनि युवति कहत मुसुकाई ❀ कहति यशोमति सों हम जाई ॥
वे दिन बिसरिगये मनमोहन ❀ बाँधे मात ऊखली गोहन ॥
ह्याँई रहो तौ बदहिं कन्हाई ❀ जाउ कहूं तो नन्द दुहाई ॥

दो०-कान्हहिं सौंह दिवायकैं, लै उरहन सब बाम ।
ऊपर रिस अंतर सुखी, चलीं नंदके धाम ॥

सो०-मथति महरि निज धाम, दधि माखनहरिके लिये ।
तिहिं अंतर ब्रज बाम, आवत देखी भीर अति ॥

मैं जानति हरि इनहिं खिझाई ❀ ताते सब उरहन लै आई ॥
कहत युवति सब रिस भरि आई ❀ ऐसो ढीठ कियो सुत माई ॥
भरन देत नहिं यमुना पानी ❀ रोकत आँय करत कुलकानी ॥
काहूकी गागरि ढरकावै ❀ इँडुरी लै जलमाहिं बहावै ॥
काहूको घट डारत फोरी ❀ गारी देत सहै नित खोरी ॥
महरि कहत तुमसों सकुचाहीं ❀ हरिके गुण तुम जानत नाहीं ॥
अब नाहीं ब्रजवास हमारो ❀ करत अचकरी सुवन तुम्हारो ॥
नेक नहीं सकुचत मन माहीं ❀ महरिसुतहि तुम बरजत नाहीं ॥
यशुमति सबहिन कहत निहोरी ❀ कहा करौं सो तुमहिं कहो री ॥
जो हरिको मैं ह्यां गहि पाऊं ❀ तो तुम सबको अबहिं दिखाऊं ॥
तुमहूं जानति हो गुण हरिके ❀ ऊखल सों बाँधे मैं धरिके ॥
मारन लगी सांटि लै जबही ❀ बरज्यो मोहिं तुमहिं तब सबही ॥

दो०-अब घरआवहिं जबहिं हरि, तबहि करौं सोइहाल ।
लरिकाईते अचकरो, मैं जानत गोपाल ॥

१ यशोदा । * घाट । २ पुत्र ।

सो०—अब जो पकरन जाउँ, ताहि गहन पाऊं कहां।
सुनतहि मेरो नाउ, को जानै भाजि जाय कित॥
यह अपराध क्षमो सब हमको ❋ यहै कहत हौं मैं अब तुमको॥
इहि विधि युवतिन बोध कराई ❋ महरि सबनको घरन पठाई॥
इतते घरन चलीं सब ग्वाली ❋ उतते घर आवत वनमाली॥
ह्वैगइ भेंट बीच मग आई ❋ तुरत नयन हरि गये लजाई॥
मात बुलावत जाहु कन्हाई ❋ बहुत बडाई करि हम आई॥
निरखि बदन हँसि कह्यो कन्हाई ❋ मैं समुझाय लेउँ गो माई॥
सकुचतही आये घर मोहन ❋ द्वारहिते लागे हरि जोहन॥
देखि जननि घरकारज लागी ❋ गोपिन उरहनके रिस पागी॥
भीतर रोहिणि पाक बनावै ❋ कहि कहि तिन सों बात सुनावै॥
हरुवे हरुवे तब हरि जाई ❋ सुनत आप पाछे चित लाई॥
यहै कहति यशुमति रिसिआई ❋ गयो कहां धौं भाजि कन्हाई॥
पनिघट रोंकत धूम मचावत ❋ यमुनाजल कोउ भरन न पावत॥
दो०—गारि देत बेटिन बहुन, वै आवत ह्यां धाय।
हाहामैं सबको करति, क्योंहूँ खोट छुटाय॥
सो०—इँडुरी देत वहाय, सबकी गागरि फोरिकै।
कित धौं गयो पराय, यहकहिकाहिधिरवत सुतहिं॥
जाति पांतिसों कह लँगराई ❋ मारेहु मानत नाहिं कन्हाई॥
तब पाछेते हरि उठि बोले ❋ मधुर वचन कोमल अति भोले॥
तू मोहींको मारन जानै ❋ उनके गुणन नाहिं पहिचानै॥
कहति जु वै मानत तू सोई ❋ तिनके चरित न जानत कोई॥
कदमतीरते मोहिं बुलावैं ❋ बातैं गढि गढि आप बनावैं॥
मटकत गिरैं शीशते गगरी ❋ नाम लगावत मेरे सगरी॥
फिरि चितई देखे हरि पाछे ❋ सुन्दर श्याम पीतपट काछे॥
कह तू कहां रह्यो मो पाहीं ❋ मैं कह तोको जानत नाहीं॥

१ धीरेधीरे।

हरि मुख देखतही नँदनारी ❋ तुरतहिं भूलिगई रिस भारी ॥
कहतकि उरहन सब लै आवैं ❋ झूठहि खोरि कान्हको लावैं ॥
मैं जानत गुण उन सबहीके ❋ बातन जोरि बनावत नीके ॥
वे सब जोबनकी मदमाती ❋ फिरत सदा हरिसों अठिलाती ॥
दो०–कहाँ श्याम मेरो तनक, वे सब जोबनजोर ।
अब उरहन जो आवहीं, तौ पठऊं मुख मोर ॥
सो०–तू कित उन ढिग जात, मैं बरजत मानत नहीं ।
लावत झूठी बात, वे सब ढीठ ग्वालिनी ॥
यह कहि चूमि सुताहि उर लायो ❋ मनमोहन मन हर्ष बढायो ॥
ब्रज घर घर यह बात जनाई ❋ पनिघट रोकत कुवँर कन्हाई ॥
श्याम वरण नटवर वपुकाछे ❋ मुरली मधुर बजावत आछे ॥
करत अचकरी जो मन भावे ❋ यमुना जल कोउ भरन न पावे ॥
बैठत आप कदमकी डारी ❋ सबन बुलावत दै दै गारी ॥
काहूकी गागरि गहि फोरै ❋ काहूकी इडुरा गहि बोरै ॥
काहूको अंकम गहि लावै ❋ काहूको घट भूमि लुढावै ॥
नयन सैन दै चितहि चुरावत ❋ काहूसों मन अपनो लावत ॥
ब्रजयुवती सुनि सुनि उठि धावैं ❋ बिनहरिदरश न क्षण कल पावैं ॥
कोउ बरजै कोउ कहै कोटि विधि ❋ सबके ध्यान श्याम सुन्दरनिधि ॥
मन क्रम वचन तिन्हैं रतिहरिसों ❋ नातो नेह न मानत घरसों ॥
निशिदिन जागत सोवत माहीं ❋ नंदनँदन क्षण बिसरत नाहीं ॥
दो०–यह लीला सब करत हरि, ब्रजयुवतिनके हेत ।
कृष्ण भजै जो भाव जिहिं, तेहिं तैसो फल देत ॥
सो०-चिन्तामणिजेहिनाम, चिन्तित फलदायक जनन ।
सबही को सब बाम, जैसो को वैसो सदा ॥
सुनि यह श्रीवृषभानु दुलारी ❋ पनिघट ठाढे कुंज बिहारी ॥
देखनको चित अति अतुराई ❋ कह्यो सखिनसों कुँवरि बुलाई ॥

१ घड़ा ।

चलहु यमुनतट ल्यावहि पानी ❀ सुनत बात यह सब हरषानी ॥
इक इक कलश सबन गहि लीन्हों ❀ तुरत गमन यमुना तट कीन्हों ॥
देखे तहाँ कुँवर नँदलाला ❀ सुन्दर श्यामल नयन विशाला ॥
प्यारी मन अति हर्ष बढायो ❀ प्यारिहि देखि श्याम सुख पायो ॥
रहे रीझि हरि दीठि लगाई ❀ भरयो नीर प्यारी मुसकाई ॥
चली घरहि यमुनाजल भरिकै ❀ सखिन मध्य गागरि शिर धरिकै ॥
मंद मंद गति चलति सुहाई ❀ मोहन मनहिं मोहनी लाई ॥
चले श्याम संगहि उठि लागे ❀ विवश भये प्यारी रस पागे ॥
सखियन बीच नागरी सोहै ❀ गागरि शिर पै हरिमनमोहै ॥
डुलत ग्रीवँ[1] लटकत नकवेसर ❀ वंदन बिन्दु[2] आड दिये केसर ॥

दो०-लोचनलोलविशालअति, मुरि मुरि चितवतजाय ।
भृकुटी धनुष कटाक्ष शर, हरि दृग मगन लगाय ॥
सो०-अँग अँग छबि समुदाय, मानहुँ सेना कामकी ।
अंचल ध्वज फहराय, टिटुकि चलत हरि मन हरत ॥

रीझे श्याम निरखि छबि प्यारी ❀ संगहि चले लागि बनवारी ॥
कबहुँक आगे जात कन्हाई ❀ कबहुँ रहत पीछे चित लाई ॥
नाना भाँतिन भाव बतावैं ❀ प्यारिहि निज अभिलाष जनावैं ॥
कनक लकुटलै करके माहीं ❀ आगे पंथ सवाँरत जाहीं ॥
देखत जहां प्रिया परछाहीं ❀ तहां मिलावत निजतनु छाहीं ॥
छबि निरखत तनु वारि जनावैं ❀ पीतांबर लै शीश फिरावैं ॥
कबहुँ श्याम पाछे रहिजाहीं ❀ निरखत कुँवरिहि छबिललचाहीं ॥
गागरि ताकि कांकरी मारैं ❀ उचटिउचटि तिय अंगन पारैं ॥
ओट पीतपट शीश नवाई ❀ इहि मिस निकसतढिगह्वै आई ॥
प्यारी अपने जिय अनुमाने ❀ मेरे हित हरि भावन ठाने ॥
सखियन मध्य नागरी जाई ❀ नहिं पावत लग लगनकन्हाई ॥
कियो चरित तब रसिकविहारी ❀ सखिन सहित मोही सुकुमारी ॥

१ गर्दन । २ सिन्दूरकाबिन्दा ।

दो०—मिसकरि निकसे निकटह्वै, निरखिवदनमुसकाय ।
मन हरिलीन्हों सबनको, दियो काम उपजाय ॥
सो०—भई बिवश सुकुमार, अंग उमँग आँगी दरकि ।
मोहे नंदकुमार, सुधि बुधि बिसरी देहकी ॥
सखिन संग पहुँची घर आई ❀ अटकिरह्यो मन हरि सँग जाई ॥
पुनि पुनि उर यहकरत बिचारा ❀ कैसे मिलहिं श्याम सुकुमारा ॥
गागरि निज निज गृह पहुँचाई ❀ बहुरि सखी प्यारी ढिग आई ॥
बार बार सब कहत निहोरी ❀ चलिये यमुना जलहि बहोरी ॥
तिनको उत्तर देत न प्यारी ❀ चित उरझो चितवनपर वारी ॥
ठगिसी रही मनहिं मन शोचै ❀ प्रेमविवश दृगवारि विमोचै ॥
देखि दशा बूझत सब ग्वारी ❀ कहा भयो तोको री प्यारी ॥
शोचति कहा कैहै किन सो री ❀ काहू लयो चोर कछु चोरी ॥
उत्तर हमैं देत क्यों नाहीं ❀ कहा ठगीसी है मन माहीं ॥
गहि गहि भुजा कहैं सब गोरी ❀ चलहि न यमुना आवहि खोरी ॥
तब सखियन वृषभानुदुलारी ❀ लीन्हीं सबन निकट बैठारी ॥
जलजनयन जल भरि अनुरागी ❀ हरिके चारित कहन सब लागी ॥
दो०—कहौ सखी कैसे चलैं, वा यमुनाकीओर ।
गैल न झांडत सांवरो, रसिया नंदकिशोर ॥
सो०—धरै न कोऊ नाँव, इह शंकनि डरपत हियो ।
एक भाँतिको गाँव, वह चंचल मानै नहीं ॥
मोको देखत जहां कन्हाई ❀ मेरे संग लगत उठि धाई ॥
इत उत नयन चुराय निहारे ❀ मोको मगमें आनि जुहारै ॥
आगे चलत लकुट करलाई ❀ मेरो पंथ सवाँरत जाई ॥
सो बहु मोहिं निहोरो लाई ❀ फिर चितवै मोतन मुसकाई ॥
जब मैं यमुनाको जल भरिकै ❀ चलति गगरी शिरपर धरिकै ॥
तब घट में वह कांकरि मारै ❀ उचटि लगत तब अंग निहारै ॥

मेरे उर अंचल फहराई ❀ सो वह देखि देखि ललचाई ॥
कबहूं पीताम्बर शिर फेरै ❀ बार बार करि मोतन हेरै ॥
कबहूं आपनि छबि दरशावै ❀ मेरे चितको आनि चुरावै ॥
जब देखौं तब मोतनु हेरै ❀ नेक नहीं दृग इत उत फेरै ॥
जहां जाति मेरी परछाई ❀ तहां मिलाय रहत निज छाई ॥
जब लग लागन पावत नाहीं ❀ तब वाको जिय अति अकुलाहीं ॥

दो०—मोतनु छूवै हरि चले, ताहि भरतहै अंक ।
हौं सकुचत बोलौं नहीं, लोक लाजकी शंक ॥
सो०—ब्रज घर घर यह शोर, को जानै कहियत कहा ।
चितवत यह चितचोर, बिवश होत सखि प्राण तब ॥

कहिये कहा सखी जिय जैसी ❀ भइ गति सांप छछूंदर कैसी ॥
घरते निकसत बनि नहिं आवै ❀ लोक लाज कुल कानि मिटावै ॥
जो घर रहौं रह्यौ नहिं जाई ❀ तनु घ[illegible]मानहुन जहां कन्हाई ॥
कितो करौं आवत इत नाहीं ❀ बँध्यो पीत[illegible]ट आंचर माहीं ॥
अब तो मेरे मन यह रांची ❀ करिहौं प्रीति [illegible]ाम सँग सांची ॥
ब्रजके लोग हँसो किन कोई ❀ कुलमर्य्याद [illegible]ाउ किन सोई ॥
कहा लाभ सो कहहु सयानी ❀ जामें होय जीवकी हानी ॥
सोना कहा कान जिहिं टूटै ❀ अंजन कहा आंखि जिहिं फूटै ॥
कहा कांच संग्रहते होई ❀ जो अमोल मणि करते खोई ॥
विष सुमेर कहु कौने काजा ❀ सुखद बूंद इक ओषधि राजा ॥
कुलकी कानि कांच किरचाई ❀ चिन्तामणिकी खानि कन्हाई ॥
कहा लेहुँ कह तजौं सयानी ❀ सिखवहु मोहिं सखी जिय जानी ॥

दो०—मोको अब सूझै नहीं, बिनु वह मृदु मुसुकान ।
कापै न्यारो होत री, चूनो हरदी सान ॥
सो०—मेटि लोककी कानि, पतिव्रत राखौं श्याम सों ।
यहै बनी अब आनि, भलो बुरो कोऊ कहौ ॥

१ सतावै ।

सुनत गोपिका राधा बानी ❋ हरि अनुराग सिंधु मन मानी ॥
गदगद कंठ पुलकितनु आये ❋ लोचन जलज प्रेम तनु छाये ॥
भई प्रेम वश गोप कुमांरी ❋ लोक सकुचकुलकानि बिसारी ॥
बारहिं बार कहत ब्रजनारी ❋ धन्य धन्य वृषभानुदुलारी ॥
हम सब तोसों सत्य बखानै ❋ तैं हरि भली भांति पहिचानै ॥
यह मोहन सबको मन मोहै ❋ तियलखि बिवश न होय सु को है ॥
अंग अंग प्रति अति छबि छाजै ❋ समताकाम कोटि द्युति लाजै ॥
सुवन श्याम दोउ पाणि पकरिकै ❋ करत बेणु धुनि अधरन धरिकै ॥
तब यह दशा सबनकी होई ❋ जड चेतन मोहत सब कोई ॥
वन मृग निकट धाय सब आवें ❋ खग ह्वै मौन न अंग डुलावें ॥
तृण गहि दंत धेनु रहि जाई ❋ थनते क्षीर पियत बछ नाहीं ॥
यमुना बहिबेते रहि जाई ❋ जलचर प्रकटत बाहर आई ॥

दो०-जडचेतन चेतन जडहि, सुनत होत कल बैन ।
कै विष कै मद कै अमी, किधौं भरचो रस मैन ॥

सो०-गृहवन कछु न सुहाय, सुनतश्रवण वहमधुरधुनि ।
गृहकारज बिसराय, चकित थकित रहियत सबै ॥

बाट घाट जहँ मिलत कन्हाई ❋ मोहत सुन्दर रूप दिखाई ॥
नई नई छबि क्षण क्षण माहीं ❋ झलकावत सब अंगन माहीं ॥
ऐसी को जु देखि नहिं मोहै ❋ नंदसुवन सम सुन्दर को है ॥
वह सखि सबहीके मन भावै ❋ सब कोउ वाहि देखि सुखपावै ॥
लोक लाज कुल कौने कामहिं ❋ जो पावें सुन्दर बर श्यामहिं ॥
पै यह मोहिं अगम अति लागै ❋ यह सुख मिलै नहीं बिन भागै ॥
इनको गर्ग कह्यो नँदपाहीं ❋ बिना सुकृत ये प्रापत नाहीं ॥
तुमहू इनको तपकरि पायो ❋ ऐसे नंदहि गर्ग सुनायो ॥
कहँ सखि इतनो भाग हमारो ❋ जो बर पावहिं नंददुलारो ॥
ताते मो मनमें यह आवै ❋ कीजै जो सबके मनभावै ॥

१ गो । २ दूध ।

तप कीजै हरिके हितलागी ❋ पूज गौरिपति सों बर मांगी ॥
नंदसुवन सुन्दर बर पावैं ❋ और सकल कामना नशावैं ॥
दो०–जप तप संयम नेमते, प्रभु प्रकटत पाषान।
ताते अब तप कीजिये, और उपाय न आन ॥
सो०–कीजै यह दृढ नेम, प्रात जाय यमुना नदी।
पूजहिं सब करि प्रेम, तौ पावहिं पतिकरि हरिहि ॥
तपकरि योगी जन हरि ध्यावैं ❋ मनवांछित फल तपकरि पावैं ॥
सकल कामनाके शिवदाता ❋ कहत वेद विधि पंडित ज्ञाता ॥
हमको मन वांछित सखि एहा ❋ नंदसुवन पदकमल सनेहा ॥
सुनत सप्रेम सखी की बानी ❋ श्रीवृषभानुसुता हर्षानी ॥
यहै मंत्र सबके मन मान्यो ❋ धन्य धन्य कहि ताहि बखान्यो ॥
कहत सबै कीजै सखि सोई ❋ जाविधि नंदनंदन हितहोई ॥
वृथा जन्म जग जान न दीजै ❋ यशुमति सुतसों हितकरिलीजै ॥
यहै मंत्र सबहिन दृढ कीन्हों ❋ नंदनंदन सों पतिव्रत लीन्हों ॥
धन्य धन्य ब्रज गोपकुमारी ❋ जिनके हित पति कृष्णमुरारी ॥
मन वच क्रम हरिसों मन मानी ❋ लोक लाज तिनका सम जानी ॥
इकक्षण श्याम न रउते टरहीं ❋ नेम धर्म ब्रत हरि हित करहीं ॥
जिनको यश शारद श्रुति गावैं ❋ ब्रजबासी जन कहा बतावैं ॥
दो०–जाग्रत स्वप्न सुषुप्तिहू, ब्रज युवतिन मन माहिं।
सदा एक तुरिया रहत, और अवस्था नाहिं ॥
सो०–ऐसो कौन प्रवीन, चहै प्रेम ब्रज तियनको।
हरि छबि जल मन मीन, बिछुरि सकत नहिं एकपल ॥

अथ चीरहरणलीला.

भवँन रवन सबहिन बिसरायो ❋ ब्रज युवतिन हरि सों मनलायो ॥
यहै बासना सब उर जामी ❋ होय गुपाल हमारो स्वामी ॥
काम बासना करि उर ध्यायो ❋ हरिके हेत तपहि मन लायो ॥

१ पति। २ पत्थरते। ३ सरस्वती। ४ घर।

षटदशसहस गोपकी कन्या ❀ करन लगीं तप हरि हित धन्या ॥
रहत क्रियायुत तप को साधे ❀ छांडि दई सब भोग उपाधे ॥
प्रातकाल यमुनाजल न्हाहीं ❀ प्रहर प्रयन्त रहैं जल माहीं ॥
जपहिं उमापति हर वृषकेतू ❀ सुन्दर श्याम कृष्णपति हेतू ॥
शीत भीत मनमें नाहिं ल्यावें ❀ नयनमूंदिकै ध्यान लगावें ॥
बार बार यह कहैं मनाई ❀ हम बर पावहिं कुवँर कन्हाई ॥
जलते बहुरि निकसि सब आई ❀ पूजहिं गोपेश्वर शिव जाई ॥
चन्दन बिल्वपत्र जल धारा ❀ अक्षत सुमन सुगंध अपारा ॥
प्रीति सहित सब शिवहि चढावें ❀ धूप दीपकरि अस्तुति गावें ॥

छं०-करहिं अस्तुति गानबहुविधि, पाणि पंकजजोरहीं ।
बारबार नवाय मस्तक, प्रेम सहित निहोरहीं ॥
जयमहेश कृपालु शिव, आन्दनिधि गिरिजापते ।
कैलासपति कल्याण अगजग,नाथ सर्व नमामिते ॥
जटाजूट त्रिपुण्ड्र शशि कल, गंगयुत शोभित शिरे ।
कमल नयन विशाल सुन्दर, चारुकुण्डल श्रुतिधरे ॥
नीलकंठ भुजंग भूषण, भस्म अंग दिगम्बरे ।
अर्द्धंग गौरिविशाल उर, शिरमालधर करुणाकरे ॥
कर्पूर गौर प्रसन्न आनन, पंचवक्त्र त्रिलोचने ।
कामप्रद सुखधाम पूरण, काम शोच विमोचने ॥
भगवानभव भव भय हरण, भूतादि पति शंभूहरे ।
प्रणत जन पूरण मनोरथ, जगत पति मन्मथअरे ॥
वृषभबाहन त्रिपुर अरि, मृगराज बरछालाम्बरे ।
शूलपाणि त्रिशूल मूलन, मूलकर शिवशंकरे ॥
सुर असुर नर नाग तव पद, बन्दिमतबांछित लहैं ।
पूजते पदकमल प्रभु हम, कृष्णपति चाहति अहैं ॥

१ सोलहजार । २ कामकेशत्रु । ३ त्रिपुरकेबैरी ।

दो०-तुम सर्वज्ञ सुजान शिव, जानत जनमन पीर।
परम दान दीजै हमैं, सुन्दर बर बलवीर॥
सो०-यह बरदान न आन, शिव तुमसों चाहत अहैं।
कृष्ण कमल पद ध्यान, रहै हमारे उर सदा॥
यहि विधि ब्रज तिय नेम निबाहैं ❀ शिवको पूजि कृष्ण पति चाहैं॥
नितप्रति प्रात यमुन जल खोरैं ❀ प्रीतिरीति सों मन नहिं मोरैं॥
संविता सों बहु भांति निहोरैं ❀ गोद पसारि युगलै कर जोरैं॥
तेजराशि दिनमणि जगस्वामी ❀ जगतचक्षु सब अन्तर्य्यामी॥
प्रणत मनोरथ पूरणकारी ❀ हम पर होहु दयालु मुरारी॥
काम हमारे तनुहिं जरावै ❀ नन्दसुवन बर हमको भावै॥
होय हमारो पति नँदलाला ❀ करहु कृपा सो दीनदयाला॥
ऐसे हरि हित गोपकुमारी ❀ करैं नेम व्रत तप तनु धारी॥
गेह देहकी सुरति विसारी ❀ कृशतन भई परम सुकुमारी॥
वर्ष दिवस यों कहत विहान्यों ❀ प्रभु अन्तर्य्यामी सब जान्यों॥
मों हित शिव पूजत ब्रजनारी ❀ और कामना सकल निवारी॥
सकल भावके हरि हैं ज्ञाता ❀ सकल देव द्वारा फलदाता॥
दो०-देखि नेम यह प्रेममय, गोपिनको गोपाल।
भये प्रसन्न कृपालु चित, जनहित दीनदयाल॥
सो०-मो कारण जलन्हात, भये जलहिमें प्रकट हरि।
सुन्दरश्यामलगात, नवकिशोर वर वपुधरे॥
न्हात जहां युवती सब आछे ❀ मींजत पीठि सबनके पाछे॥
चकित सबन पाछे हरिहेरो ❀ देख्यो कान्ह कुवँर नँदकेरो॥
मनमें हर्षित भईं सब नारी ❀ व्रत फल प्रकटे कुंजविहारी॥
नवल किशोर ध्यान मन लायो ❀ सोई प्रगट रूप दरशायो॥
दृष्टि परतही सकल लजानी ❀ लागीं अंग दुरावन पानी॥
एक एकको भेद न जानैं ❀ हरिको सब अपने ढिग मानैं॥

१ सूर्य। २ दोनों।

कहत लाज लागत नहिं तुमको ❀ बिना बसन देखतहौ हमको ॥
हँसि निकसे तब कुवँर कन्हाई ❀ चीर हार लैचले पराई ॥
हांक देत सब शपथ दिवावैं ❀ फिरहु बसन भूषण हम पावैं ॥
डारि बसन भूषण तब दीन्हें ❀ गोपिन तुरत दौरिकै लीन्हें ॥
चीर फटे भूषण सब टूटे ❀ लेत न बनै तहां नाहिं छूटे ॥
एक एककी लाज लजाहीं ❀ बसन अभूषण पहिरत जाहीं ॥

दो०–लगे श्यामढीठी करन, यह कहि कहि पछितात ।
अन्तरगति आनन्द अति, झूठहि खीझत जात ॥

सो०–लोगन कहत सुनाय, कान्ह करत लँगराइ अति ।
यशुमतिके ढिगजाय, कहत चलो कहिये सबैं ॥

चलीं यशोमति पै सब ग्वारी ❀ प्रेम बिबंश तनुदशा बिसारी ॥
पुलक अंग अँगिया दरकानी ❀ टूटे हार लिये निज पानी ॥
चीर चीर नख घात बनाई ❀ यहि मिसकरि उरहन लै आई ॥
देखो महरि श्यामके ये गुन ❀ ऐसे हाल किये सबके उन ॥
चोली चीर हार दिखराये ❀ टेर करत इतको भजि आये ॥
और बात इक सुनहु न माई ❀ ढीठ भयो अति कुवँर कन्हाई ॥
विनावसन हम न्हाति जहां सब ❀ मींजत पीठ जाय पाछे तब ॥
और कहत तुमसों सकुचावैं ❀ उर उघारिकै तुमहिं दिखावैं ॥
महरि विचारत कहत कहा सब ❀ भयो श्याम यहिलायक धौं कब ॥
सुनि युवतिनके मुख यह बानी ❀ बोली बिहँसि नंदकी रानी ॥
बात कहौ सो जो निवैहेरी ❀ बिनाभीत नहिं चित्र लहेरी ॥
तुमको कहत लाज नहिं आवति ❀ चोरी रही छिनारो लावति ॥

दो०–तुम चाहतिहो गगँनते, गहन तरैया बाम ।
सो केस करि पाइहो, तुमलायक नहिं श्याम ॥

सो०–मैं बूझी सब बात, तुमसों हौं कहिहौं कहा ।
वृथा फिरत अठिलात, मष्ट करौ सुनिहै जगत ॥

१ सौंगंद । २ हाथ । ३ आकाशते । ४ चुप ।

यहि अन्तर हरि आय गये घर ❋ शशि मुकुट लीन्हें मुरलीकर ॥
अति कोमल तनु भूषण सोहैं ❋ बाल भेद देखत मनमोहैं ॥
जननी बोलि बाँह गहि लीनी ❋ कहत सबनिसों रिसरस भीनी ॥
देखहु री तुम सब इत आवो ❋ इनहींको अपराध लगावो ॥
देखहु समुझि लाज नहिं आवत ❋ इनहींके नख उरन दिखावत ॥
मेरो कान्ह अबहिं सुत बारो ❋ तुम कोउ औरहि जाय निहारो ॥
देखत हरिहि यवति भईं भोरी ❋ कहतमहरिकछु तुमहि न खोरी ॥
देन उरहनो तुमको आईं ❋ नीकी पहिरावन हम पाईं ॥
आपसमें सब कहत सुनाई ❋ देखहु री यह भाव कन्हाई ॥
यमुना तीर मिले जब आई ❋ कहां गई तबकी तरुणाई ॥
इनके गुण ऐसेको जानै ❋ और करत औरेही ठानै ॥
घर आवतही भये नन्हाई ❋ ऐसे मनके चोर कन्हाई ॥

दो०-देखि चरित नँदलालके, भइ बाल मति भोर ।
सुधि बुधि मन कछु थिर नहीं, कहत औरकी ओर ॥

सो०-सकुची बहुरि सभारि, बिवश देखि अपनी दशा ।
चलीं घरन ब्रजनारि, हरि मुखकमल निहारिकै ॥

गईं घरन ब्रज गोपकुमारी ❋ चित हरिलीन्हों मदन मुरारी ॥
नेक न मन लागत घर माहीं ❋ धाम कामकी सुधि कछु नाहीं ॥
मात पिताको डर नहिं मानो ❋ गारि देत कोउ सुनत न कानो ॥
प्रात होतही गोपकुमारी ❋ गईं यमुनतट सब सुकुमारी ॥
देखत जहां जाय नँदनंदन ❋ मोरमुकुट शोभिततनुचंदन ॥
मकराकृत कुण्डल उर माला ❋ पीतवसनदृगकमल विशाला ॥
दरश देखि अँखियां तृपतानी ❋ भईं सुखी उरतपन बुझानी ॥
कहत परस्पर मिलि सब ग्वाली ❋ यमुना निकट गये वनमाली ॥
कौन भांति करि आज अन्हैबो ❋ बनत नाहिं अब यमुना ऐबो ॥
कैसे करि हम बसन उतारैं ❋ कान्ह हमारी ओर निहारैं ॥
मींजत पीठ औचकहि आईं ❋ वसन अभूषण लै भजिजाईं ॥

कहौं फेरि कैसे तब पावैं ❀ अब नाहिं कान्ह घाट पै आवैं ॥
दो०–कहत सकुचकी बात सब, ऊपर मन आनंद ।
अन्तरगतिके वृत्तंको, जानत सब नँदनंद ॥
सो०–जानी जाननराय, लाजान्तर युवती करत ।
सो अब देउँ मिटाय, अन्तर भलो न प्रेममैं ॥
और बात इक श्याम विचारी ❀ ये जल भीतर न्हात उघारी ॥
जो तिय जलमैं नांगी न्हाई ❀ ताको दोष होत अधिकाई ॥
ताको दोष नाश तब पावै ❀ नांगी परपति सन्मुख आवै ॥
सो इनको यह दूषण टारौं ❀ और लाज अन्तर निरवारौं ॥
करौं आज इनसों विधि सोई ❀ इनको हित मम कौतुक होई ॥
जो कछु चूक दासते होई ❀ आप सुधारि लेत हरि सोई ॥
अन्तर प्रभुको नेक न भावै ❀ भजै निरंतर जब हरिपावै ॥
अन्तर रहित भक्ति हरिप्यारी ❀ कहत वेद सब सन्त पुकारी ॥
तब हरि मन यह कियो विचारा ❀ इनके बसँन हरौं इक बारा ।
प्रभु सबकी तब दृष्टि बचाई ❀ कदम वृक्ष चढि रहे लुकाँई ॥
जब गोपिन हरि देख्यो नाहीं ❀ चकित बिलोकीं इत उत माहीं ॥
जाने सर्दन गये नँदलाला ❀ न्हान चलीं तब सब ब्रजबाला ॥
दो०–धरे उतारि उतारि सब, तटपर भूषण चीर ।
नग्नं होय अस्नानहित, पैठीं यमुना नीर ॥
सो०–ग्रीवालौं जलमाहिं, पैठि करति अस्नान सब ।
मुख छबि कही न जाहिं, कर्नंककंज फूले मनहुँ ॥
बार बार बूझत जलमाहीं ❀ प्रेम सहित मन मुदित नहाहीं ॥
शिवसों बिनती करत निहोरी ❀ कबहूं रवि बन्दैं करजोरी ॥
यहै कामनाकरि सब ध्यावैं ❀ नँदनंदनके पतिकरि पावैं ॥
कामातुर सब गोपकुमारी ❀ धरैं ध्यान उर कुंजविहारी ॥
मूँदहिं नयन दरश चित लावैं ❀ शब्द विचार श्रवण सुखपावैं ॥

१ वृत्तांत । २ वस्त्र । ३ डुबकगये । ४ घर । ५ नंगी । ६ सुवर्णके कमल ।

भुज जोरत अंकम हितलागी ❋ मगन प्रेमरसः तिय वड़भागी ॥
प्रभु अन्तर्य्यामी सब जानैं ❋ देखैं कदमचढ़े सुखमानैं ॥
कहत धन्य धनि ब्रजकी बाला ❋ मेरे हित तप करत विशाला ॥
प्रीति रीति सबकी पहिचानी ❋ क्षण क्षणकी सेवा हरिमानी ॥
काहू भाव मोहिं कोउ ध्यावें ❋ मोहिं बिरदराखे बनिआवे ॥
कियो बहुत श्रम ममहित कारण ❋ अब इनको दुखकरौं निवारण ॥
उपजी कृपा समुझि जनपीरा ❋ उतरे तरुते श्रीबलवीरा ॥
दो०–प्रेम मगन युवर्त सबै, रहीं ध्यान मन लाय।
हरि सब भूषण वसन लै, चढे कदमपर जाय ॥
सो०–भूषण बसन अपार, सोरह सहस बधूनके।
हरे एकही बार, ल राखे तरु नीप पर ॥
करचो नीपतरु अति विस्तारा ❋ फूले सुमन सुगंध अपारा ॥
लै लै बसन डार अटकाये ❋ जहां तहां भूषण लटकाये ॥
नीलाम्बर पाटाम्बर सारी ❋ श्वेत पीत चूनरि अरुणारी ॥
जहां तहां शाखनप्रति सोहैं ❋ देखत छवि बसन्त मनमोहैं ॥
सो तरुशाखा परम सुहाई ❋ बैठे छबिकी राशि कन्हाई ॥
युवती सुकृति तरुण धरिमानो ❋ परचो सुकृति पूरण फल जानो ॥
देखत कदम चढे नँदलाला ❋ बसन विना जलमें सबबाला ॥
ध्यान करतते जब सबजागीं ❋ तब जलबाहर निकसन लागीं ॥
जलते निकरि आय तट देख्यो ❋ भूषण बसन तहां नहिं पेख्यो ॥
इत उत चितै चकितभईं भारी ❋ सकुचिगईं फिरि जल सुकुमारी ॥
नाभिप्रयन्त नीरमें ठाढी ❋ भुजलगाय उर चिन्ता बाढी ॥
कँपत शीतमें अति अकुलानी ❋ बार बार कहि कहि पछितानी ॥
दो०–ऐसो को भूषण बसन, सबके एकहि बार।
तटते लये चुरायकै, लगी न नेक अबार ॥
सो०–हम जानत यह बात, अम्बर हरि हरि लैगये।

१ दूरकरो । २ वृक्ष । ३ वृक्ष । ४ कदंब । ५ वस्त्र ।

और कौनको गात, जो ब्रजमें ढीठो करैं ॥
दीन होय तब युवति पुकारी ❋ हौ कहुँ श्याम जाहिं बलिहारी ॥
दरश दिखाय विनय सुनि लीजे ❋ अम्बर देहु कृपा अब कीजे ॥
थरथर काँपत अँग सुकुमारी ❋ देखि श्याम नहिं सके सँभारी ॥
बोलि उठे तब मदनगोपाला ❋ कहा कहत मोसों ब्रजबाला ॥
कतहौ जलमें मरत जडाई ❋ लेहु बसन भूषण इत आई ॥
तुम पट भूषण सुरति बिसारी ❋ तबमैं लै कीन्हों रखवारी ॥
अब अपने पट भूषण लीजे ❋ रखवारी कछु हमको दीजे ॥
जब ऐसे हरि बोल सुनायो ❋ तब सबके मन धीरज आयो ॥
सुनि हरि वचन सकल हरषानी ❋ लखे कदम ऊपर सुखदानी ॥
कहत सुनो सखि हरिकी बातैं ❋ बसन चुराय करैं ये घातैं ॥
हम सब जलके बीच उघारी ❋ माँगत हैं हमसों रखवारी ॥
तब हँसि बोली ब्रजकी बाला ❋ सुनहु श्याम सुन्दर नँदलाला ॥
दो०–तन मन धन अर्प्यो तुम्हें, है जु तुम्हारे पास ।
अब अम्बर दीजै हमैं, जानि आपनी दास ॥
सो०–तब हँसि कह्यो कन्हाय, जो तन मन मोकोदियो ।
लेहु बसन ह्यां आय, तौ मानो मेरो कह्यो ॥
सुनहु श्याम घन बात हमारी ❋ नग्न कौनविधि आवैं नारी ॥
हम तरुणी तुम तरुण कन्हाई ❋ बिना बसन क्यों देह दिखाई ॥
यह मति आप कहां धौं पाई ❋ आज सुनी यह बात नवाई ॥
पुरुष जाति यह कहत न जानहु ❋ हाहा ऐसो मन जनि आनहु ॥
कहत श्याम जो नग्न न ऐहो ❋ तौ तुम पट भूषण नहिं पैहो ॥
जो तन मन दीन्हा तुम मोही ❋ तौ राखत कित लज्जा द्रोही ॥
यह अन्तर मोसों जनि राखौ ❋ मानि लेहु तुम मेरो भाखौ ॥
शीत सहत कत नवलकिशोरी ❋ लाज देहु जलहीमें बोरी ॥
जलते निकसि बेगि इत आवो ❋ हाथजोरि मोहिं बिनय सुनावो ॥

१ नंगी ।

ज्यौं जलमें रविते कर जोरो ❀ त्यौं ह्वै सन्मुख मोहिं निहोरो ॥
यह सुनि हँसीं सकल ब्रजनारी ❀ ऐसी बात न कहो मुरारी ॥
हाहा लागहिं पाँय तिहारे ❀ पाप होत है जाडन मारे ॥
दो०-छांडि देहु यह टेक हरि, बरु भूषण तुम लेहु ।
शीत मरत हम नीरमें, बसन हमारे देहु ॥
सो०-दूषण होत अपार, जो तिय अँग देखहि पुरुष ।
ताते नंदकुमार, नारी नग्न न देखिये ॥
तुमको छोह होत नहिं राई ❀ बडे निठुर हौ कुवँर कन्हाई ॥
ऐसो करौ जो तुमको सोहै ❀ आज तुम्हारी पटतर को है ॥
आजहिते हम दासि तिहारी ❀ कैसे अंग दिखावहिं नारी ॥
अंग दिखाये भुषण पैहौ ❀ नातरु जलमें बैठी रैहौ ॥
मेरे कहे निकसि सब आवो ❀ थोरे में मो भलो मनावो ॥
कत अंतर राखत हौ हम सों ❀ बार बार मैं भाषत तुमसों ॥
लेहु आय अपने पट भूषण ❀ यह लागे हमको सब दूषण ॥
मोहित तुम कीन्हों तप भारी ❀ अब कत लज्जा करत हमारी ॥
मैं अन्तर्य्यामी सब जानी ❀ करिहौं तुम्हरे मनकी मानी ॥
अब पूरण तप भयो तुम्हारो ❀ अन्तर इतो दूरि करि डारो ॥
सुनि यह मोहनके मुख बानी ❀ सब युवती मनमें हरषानी ॥
तब सबहिन यहबात विचारी ❀ अबतो टेकपरे बनवारी ॥
दो०-कहत परस्पर मिलि सबै, हरिहठ छांडत नाहिं ।
बसन बिना कैसे बनै, कौन भाँति घर जाहिं ॥
सो०-चलौ लीजिये चीर, इनहीं को हठ राखिकै ।
मनमोहन बलबीर, जो कछु कहैं सो कीजिये ॥
यह विचारि जल बाहर आई ❀ बैठि गई तट अतिहि लजाई ॥
बार बार हरि निकट बुलावैं ❀ त्यौं त्यौं अधिक लाज को पावैं ॥
कहत श्याम अम्बर अब दीजै ❀ हाहा इतनो हठ नहिं कीजै ॥

बहत समीर शीत अति भारो ❀ मानेंगी उपकार तुम्हारो ॥
हम दासी तुम नाथ हमारे ❀ हम सबकी पति हाथ तुम्हारे ॥
कहत श्याम यह तजौ सयानी ❀ छांडहु लाज करहु मम बानी ॥
अपने बसन लेहु ह्यां आई ❀ देहौं तुमको नन्ददुहाई ॥
आवहु सकल लाजको त्यागे ❀ करहु शृँगार आय मो आगे ॥
तब सबहिन यह मनमें जानी ❀ करिहैं श्याम आपनी ठानी ॥
कर कुच अंग ढांकि भईं ठाढी ❀ बदन नवाय लाज अति बाढी ॥
गईं कदमतर हरिके पासा ❀ कहति देहु अब हमको बासा ॥
हरि बोले यों बसन न पावो ❀ हाथ जोरि मोहिं विनय सुनावो ॥
दो०-जो कहिहौ करिहैं सबै, हँसि बोलीं ब्रजबाम ।
लैहैं दांव हमहूं कबहुँ, सुनो श्याम अभिराम ॥
सो०-उभय कमल कर जोरि, सलँ[1]जसहासनिहारि हरि ।
मांगत सकल निहोरि, कहत देहु अब बसन प्रभु ॥
लखि युवतिनकी प्रीति कन्हाई ❀ रीझे भक्तनके सुखदाई ॥
धन्य धन्य बोले गोपाला ❀ निश्चय प्रीति करी तुम बाला ॥
देखि निरन्तर गोप कुमारी ❀ दीन्हें बसन अभूषण डारा ॥
अति आतुर सब पहिरन लागीं ❀ प्रेम प्रीतिके रस मति पागीं ॥
तब हँसि बोले कुंजविहारी ❀ मैं पति तुम मेरी सब प्यारी ॥
अन्तर शोच दूरि करि डारो ❀ मेरो कह्यो सत्य उर धारो ॥
शरद रात तुम आश पुरैहौं ❀ अंकम भरि सबको उर लैहौं ॥
अब तप करि तुम मत तनु गारो ❀ मैं तुमते क्षण होत न न्यारो ॥
करसों परश सबन सुख दीन्हों ❀ विरह ताप तनुको हरि लीन्हों ॥
विदा करी हँसि नँदके लाला ❀ निज निज सदन गईं ब्रजे[2]बाला ॥
गोपिन उर अति हर्ष बढायो ❀ मन मन कहति कृष्ण बर पायो ॥
ब्रजबासी जनके सुखदाई ❀ आये अपने सदन कन्हाई ॥
दो०-इहिंविधि ब्रज सुन्दरिनको, हित करि सुंदरश्याम ।

१ लज्जायुक्त । २ ब्रजकी स्त्रियाँ ।

ब्रजविलास बिलसत विविध, सकल लोक अभिराम ॥
सो०-सुंदर घन सुखरास, सब विधि करि सबके सुखद ।
नितनव करत विलास, मुदित सकल ब्रजलोग लखि ॥

अथ वृन्दावनवर्णनलीला.

हरि लखि मात पिता सुख पावैं ❋ बालभाव बहु लाड लडावैं ॥
नवलकिशोर शुभगतनु श्यामा ❋ निरखतमुदितसकलब्रजबामा ॥
ग्वाल बाल सब सर्मकरि जानैं ❋ सखा प्राण प्रीतम करि मानैं ॥
नित उठि गाय चरावन जाहीं ❋ क्रीडाकरैं विविध ब्रजमाहीं ॥
इक दिन सोवत सदन कृपाला ❋ आये द्वार बुलावन ग्वाला ॥
चलहु श्याम वन धेनु चरावन ❋ यह सुनि जननी लगी जगावन ॥
उठहु तात मैया बलि जाई ❋ टेरत ग्वाल बाल बल भाई ॥
बदन दिखाय सबन सुख देऊ ❋ दँतवन करि कछु करहु कलेऊ ॥
भई बेर बनको नँदलाला ❋ अब मति सोवहु मदनगोपाला ॥
देखनको छबि अति अतुराई ❋ सखा द्वार सब टेर लगाई ॥
सोवतते हरि जागत नाहीं ❋ सुनत बात आलस मनमाहीं ॥
कबहूं बसन ढांपि मुख सोवैं ❋ कबहुँ उघारि जननितनु जोवैं ॥
खोलत नयन पलकझुकि आवैं ❋ सो छबि निरखि मातु सुख पावैं ॥

दो०-उठो लाल जननी कह्यो, तब चितये हँसि मन्द ।
पटगहि पुनि पुनि फेर मुख, तबहिं उठे ब्रजचन्द ॥
सो०-कबके टेरत ग्वाल, बलदाऊ यह कहि उठे ।
बनको भई अवार, गईं गाय आगे निकसि ॥

यह सुनि तुरतहि उठे कन्हाई ❋ यशुमति जल झारी भरिलाई ॥
दुहुं भैयन करवाय मुखारी ❋ पोंछे मुख जननी निज सारी ॥
करहु कलेऊ अब कछु प्यारे ❋ एक थार दोउ सुत बैठारे ॥
दधि माखन रोटी अरु मेवा ❋ करत प्रात दोउ भ्रात कलेवा ॥
करत निकट बैठे मनमोदा ❋ दृग सुख लूटत महरि यशोदा ॥

१ बराबरके । २ घरमें । ३ यशोदा । ४ दाँतन ।

मात प्रेमते अति तृपताई ❀ अँचवन कर जु उठे दोउ भाई ॥
द्वारे टेर उठ्यो इक ग्वाला ❀ बनकहँ वेगि चलहु नँदलाला ॥
बल मोहन आवहु दोउ भैया ❀ आगे निकसि गई हैं गैया ॥
ग्वाल वचन सुनि अति अतुराई ❀ कछु अँचयो कछु नहिं दोउ भाई।
मुरली मुकुट लकुट पट लीन्हों ❀ निकसि दौरि बनहीं मन दीन्हों ॥
केतिक दूरि गई चलि गैया ❀ ग्वालहि बूझत जात कन्हैया ॥
कछु वन पहुँची ह्वैहैं जाई ❀ कछु मग मिलिहैं कुँवर कन्हाई ॥

दो०—वन पहुँचत सुरभी लई, बल मोहन दोउ धाय ।
कहत सबन सों जात कित, हमहूं पहुँचे आय ॥

सो०—तुम आये अतुराय, जेंवत पर लखिके हमैं ।
तुमसँग रहत बलाय, अब हम दूरि चरायहैं ॥

यह सुनि सखा धाय सब आये ❀ हरिको अंकम भरि उर लाये ॥
तुम हो सबहिनके सुखदाई ❀ हमको तजि मति जाहु कन्हाई ॥
आज कुमुदबन चलहु चरावन ❀ शीतल सुखद सघन अतिपावन ॥
सुनत कह्यो अति हर्ष कन्हाई ❀ नीकी कही बात यह भाई ॥
अपनी अपनी गाय बुलावो ❀ एक ठौर करि सबन चरावो ॥
यह सुनि ग्वाल सुरभि गण घेरत ❀ लै लै नाम गाय सब टेरत ॥
धौरी धूमरि राती कबरी ❀ पियरी गोरी गैनी कजरी ॥
खैरी फुलही रोची चौरी ❀ धूरी हमरी मुंडी भोरी ॥
लीली कपिली सुवरन जेती ❀ लाखी निकही रतनी तेती ॥
ऐसे सुरभी टेरि बुलाई ❀ सब मिलि चले कुमुदबन धाई ॥
तब बल कह्यो दूरि मति जाहू ❀ नंद रिसैहैं अरु यशुदाहू ॥
बलको कह्यो मानि सुखदाई ❀ बोलि लिये सब सखा कन्हाई ॥

दो०—कहत सबन समुझाय हरि, कौन कुमुदबन जाय ।
बुरो मानि हैं नंद सुनि, और यशोदा माय ॥

सो०—लावहु गाय फिराय, चलिये वृन्दावन सुखद ।
सुरभी चरत अघाय, वंशीवट यमुना निकट ॥

१ कमोदवन ।

यह कहि श्याम चले अगुवाई ❀ फेरी गाय ग्वाल सब धाई ॥
वृन्दावनहिं चले मनमोहन ❀ हर्षित सखा वृन्द तब गोहन[1] ॥
करत कुलाहल आनँद भारी ❀ पहुँचे वृन्दावन वनवारी ॥
सुरभीगण[2] चहुँदिशि बगराई ❀ कहत सखा सब हर्ष बढाई ॥
जादिन अघ हति श्याम सिधाये ❀ ता दिनते या वन अब आये ॥
देखत वन सब भये सुखारी ❀ बहत मनोहर त्रिविध[3] बयारी ॥
विटपनकी शोभा चित दीन्हैं ❀ देखत श्याम सखन सँग लीन्हैं ॥
नव किसलयदल सुमन सुहाये ❀ मनहुँ बसन्त शृँगार बनाये ॥
मधुर मिष्ट सुन्दर सुखकारी ❀ फलके भार रहीं नवडारी ॥
मनहुँ देखि श्यामहिं सुखपाई ❀ देत भेंट तरु शीशनवाई ॥
सुमन[4] भँवर गुंजत छबि पावैं ❀ अस्तुति मनहुँ मधुर सुर गावैं ॥
एक पांव ठाढे सब आगे ❀ जहँ तहँ थकित मनहुँ अनुरागे ॥

दो०—बेलिविविध लपटीं ललित, फूलि रहीं बहुरंग ।
शोभितसहित शृँगारजिमि, नारि पतिन केसंग ॥

सो०—हालि उठत सब पात, मन्द पवन लागत कबहुँ ।
आनँद उर न समात, बार बार पुलकत मनहुँ ॥

कुंज पुंज मुंजुल सुखदाई ❀ शीतल सुमन सुगंध सुहाई ॥
हरि विश्राम हेत वन जानो ❀ रचे विचित्र सदन बहु मानो ॥
बोलत हैं कल खग[5] बहुरङ्ग ❀ कीर[6] कपोत[7] कोकिला भृङ्ग ॥
मनहु भेरि सब आनँद गावैं ❀ जहँ तहँ बरही नृत्य दिखावैं ॥
तरुदल खरक पवन गति साजै ❀ मधुर सुरन बाजत ज्यौं बाजै ॥
क्रीडत मरकट[8] शुभमतिलीने ❀ करत कला ज्यौं नट परवीने ॥
मृगगण चितवत आनँद बाढे ❀ मनहुँ तमाशगीर सब ठाढे ॥
पाय श्याम घनहित वनराई ❀ करी मनहु आनंद बधाई ॥

---

१ संग । २ गौवनके झुंड । ३ शीतलमंदसुगंधयुत । ४ फूल । ५ पक्षी । ६ । तोता । ७ कबूतर । ८ मोर । ९ बंदर

वनशोभा कछु बरणि न जाई ❀ ऋतु वसंत जहँ रहत सदाई ॥
जहां स्वभाव काल गुण नाहीं ❀ वैरभाव नहिं खग मृग माहीं ॥
सदा एकरस परम प्रकाशी ❀ परम सुखद आनँदकी राशी ॥
चिन्तामणि सब भूमि सुहावन ❀ कोमलविमल शुभगअतिपावन ॥

दो०-शोभा वृन्दाविपिनकी, बरणि सकै अस कौन ।
शेष महेश गणेश विधि, पार न पावत तौन ॥

सो०-महिमा अमित अपार, श्रीवृन्दावन धामकी ।
जहँ नित रहत बिहार, परब्रह्म भगवान हरि ॥

देखि श्याम वन भये सुखारी ❀ बैठे तरुतर विपिनविहारी ॥
वृन्दावनकी करत बडाई ❀ बलदाऊ सों कहत कन्हाई ॥
मैं यह वन देखत सुख पावत ❀ वृन्दावन मोको अति भावत ॥
कामधेनु सुरतरु विसरावत ❀ रमा सहित वैकुंठ भुलावत ॥
यह यमुनातट यह बन यावत ❀ ये सुरभी अति सुखदसुहावत ॥
यहसुख त्रिभुवन कितहुँ न पावत ❀ ताते मैं तनु धरि इत आवत ॥
दाऊजू तुम सचकर मानों ❀ यह वृन्दावन जडमति जानों ॥
चितवनमें आनँदकी रासा ❀ प्रेम भक्तिको यहां निवासा ॥
परमधाम मम परम सुहावन ❀ पावनहूते पावन पावन ॥
जे तरु वृन्दावनके माहीं ❀ कल्पवृक्ष तिनकी सरि नाहीं ॥
कल्पवृक्षके तरु जब जाई ❀ तब मांगे वांछित फल पाई ॥
वृन्दावन तरु चितत जोई ❀ प्रेम भक्ति मम पावत सोई ॥

दो०-जाके वश मैं रहत हौं, अपनी प्रभुता त्याग ।
प्रेम भक्तिसों लहत नर, वृन्दावन अनुराग ॥

सो०-श्रीमुख वरण्यो श्याम, श्रीवृन्दाबननकोमहत ।
सुख पायो बलराम, सुनत कान्हके वचन वर ॥

सखावृन्द सुनि श्रीमुख बानी ❀ प्रेम मगन तनु दशा भुलानी ॥
चितवत हरिमुख पलक बिसारी ❀ जिमि चकोरगण शशिहि निहारी ॥

१ ब्रह्मा । २ वृक्ष । ३ वृन्दावनविहारी । ४ लक्ष्मी । ५ पवित्रतेहू पवित्र ६ माहात्म्य ।

कहत चकित सब अति सुख पावत ❋ निजलीला हरि प्रगट जनावत ॥
पुनि पुनि पुलक कहत शिरनाई ❋ सुनहु श्यामघन कुँवरकन्हाई ॥
बार बार तुमको कर जोरैं ❋ हमहिं कान्ह तुम तजहु न भोरैं ॥
जहां जहां तुम तनुधरि आवो ❋ तहां तहां जनि चरण छुडावो ॥
तब हँसि बोले कुँवर कन्हैया ❋ ब्रजते तुम्हें न टारौं भैया ॥
तुम मेरे मनको अति भावत ❋ तुमते मैं बहुतै सुख पावत ॥
या ब्रजसम त्रिभुवन कहुँ नाहीं ❋ तुम्हरे ढिग मैं रहत सदाहीं ॥
मैं तुम हेत देह यह धारी ❋ तुमते ब्रजलीला विस्तारी ॥
है यह ब्रज मोको अति प्यारो ❋ ताते कबहूं होत न न्यारो ॥
ऐसे हरि ग्वालनके माहीं ❋ गुप्त बात कहि कहि समुझाहीं ॥

दो०-मधुर[1] वचन सुनि श्यामके, सखा वृन्द सुखपाय ।
प्रेम पुलकितनु मुदित मन, रहे सबै गहि पाय ॥

सो०-धनिधनिधनितुमश्याम,धनिब्रजधनिवृन्दाविपिन
तुम्हरे गुण अभिराम, हम सब अज्ञ[2] न जानहीं ॥

सुनहु श्याम घन नंद दुलारे ❋ तुम प्रभु हम सब दास तुम्हारे ॥
दुर्लभ यह हरि संग तुम्हारो ❋ कब धौं फेरि गोप तनु धारो ॥
ना जानिये बहुरि ब्रजनाथा ❋ कब तुम फिरिहौ सुर मुनिसाथा ॥
कब तुम छाक छीनिकै खैहौ ❋ कब धौं फिरि ऐसे सुख दैहौ ॥
बलि बलि जइये श्याम तुम्हारी ❋ अब इक विनती सुनहु हमारी ॥
सुन्दर मुरली नेक बजावो ❋ अधरसुधारस श्रवणन प्यावो ॥
तुम्हैं नन्दकी सौंह दिवावैं ❋ मुरली धुनि सुनि हम सुखपावैं ॥
तुम्हरे मुख यह बाजत नीकी ❋ हम सबकी जीवन है जीकी ॥
सुनत सखनकी कोमल बानी ❋ प्रेम सुधारस सों लपटानी ॥
गुणगम्भीर गोपाल कृपाला ❋ भक्तवश्य प्रभु दीनदयाला ॥
भये प्रसन्न भक्तसुखदाई ❋ चितये कमल नयन समुदाई ॥
करते लकुट निकट धरि दीन्हों ❋ पाछे मुरलीको गहिलीन्हों ॥

१ मीठे । २ मूर्ख ।

दो०–पकरि दुहूँ कर अधरधर, मधुर मुरलि धुनिगान ।
मोहिलियाचर अचरनभ, जल थल श्यामसुजान॥

सो०–भई थकित[1] गति पौन[2], यमुना जल लीन्ही शयन[3] ।
ह्वै गये खग मृग मौन[4], रहे जहां तहँ चित्रसे ॥

उपजावत गावत गति सुंदर ❋ राग रागिनी ताल विविधवर॥
सखावृन्द सुनि तन मन वारैं ❋ निरखत मुखछबि पलक बिसारैं ॥
चलत नयन भ्रुकुटी पुट नासा ❋ करपल्लव मुरली सुरश्वासा ॥
मानहुँ निरतक भाव बतावैं ❋ शुभगति नायक सैन सिखावैं ॥
कुंचित अलक[5] वदन छबि देई ❋ मनहुँ कमल रस अलिगर्ण[6] लेई॥
कुंडल झलक कपोलन माहीं ❋ मनहुँ सुधारस मकर[7] भ्रमाहीं ॥
दशनदमक मोतिन लर ग्रीवाँ ❋ मनहुँ सकल शोभाकी सीवाँ ॥
तिलक विचित्र भालछबि छाजै ❋ मनहुँ महा छबिदशन बिराजै ॥
चमकत मोर चंद्रिका चारू ❋ मनहुँ सकल शृँगार शृँगारू ॥
श्यामगात उर गजमणि माला ❋ सँग शोभित वनमाल विशाला॥
मरकत[9] गिरि मनो सुरसरिधारा[10] ❋ बैठी पंगति कीर[11] कि नारा[8] ॥
कटि पटपीत तड़ित[12] दुति हारी ❋ पद पंकजनूपुर रुचिकारी ॥

दो०–ग्रीवा लटकनमुरकि पर, शोभित छबि समुदाय ।
प्रेम मगन निरखत मुदित, गोप बाल सुखपाय ॥

सो०–सुन्दर श्याम सुजान, देत परम सुख सखनको ।
वारत तन मन प्रान, धन्य धन्य कहि ग्वाल सब ॥

रीझत ग्वाल रिझावत श्यामा ❋ लेत मुरलिमें सबको नामा॥
हँसत ग्वाल सब देकर ताला ❋ लेत हमारो नाम गोपाला ॥
कहत श्याम अब तुमहुँ बजावो ❋ ऐसे हमको गाय सुनावो ॥
हँसि मुरली तिनके कर दीन्हों ❋ अधरन धर अमृत रस लीन्हों ॥
लै लै निज कर सकल बजावत ❋ हरिके स्वरको रूप न पावत ॥

---

१ आकाश । २ पवनचलने सों रहिगयो । ३ बहिबेते रहिगयो । ४ चुप्प है गये ।
५ घूंघरवारी अलक । ६ भौंरनके समूह । ७ मगर । ८ नार । ९ पन्नाको पर्वत ।
१० गंगा । ११ तोता । १२ बिजुरी ।

आस पास सोहत सब बालक ❋ मधि प्रभु प्रीति रीतिके पालक ॥
हँसि हँसि सबके चित्त चुरावैं ❋ सबमिलि प्रेमानंद बढावैं ॥
जैसे श्रीमुरलीधर गायो ❋ काहू पै सो रूप न आयो ॥
हँसि हँसि कहत परस्पर भाई ❋ हरिकी सम को सकै बजाई ॥
चतुराँनन पंचानँन ध्यावैं ❋ सहसाँनन नवनित गुणगावैं ॥
सुर नर मुनि कोउ पार न पावैं ❋ सो ग्वालन सँग वेणु बजावैं ॥
ब्रजवासी जनको प्रतिपाला ❋ भक्त वश्य प्रभु दीनदयाला ॥

दो०—कारण करण अनंत गुण, निँगम नेति जिहिं गाव ।
सो ग्वालन सँग गावहीं, देखहु भक्तिप्रभाव ॥

सो०—वृन्दावनकी रेनु, ब्रह्मादिक बांछित सदा ।
जहां श्याम सुखदेनु, ग्वालनसँग चारत सुरभि ॥

अथ द्विजपत्नीयाचनलीलावर्णन.

विहरत वृन्दावन बनवारी ❋ विविधभांति लीला अनुसारी ॥
कबहूं सखन संग मिलि गावैं ❋ कबहूं मुरली मधुर बजावैं ॥
कबहूं गैयन घेरत धाई ❋ कबहूं यमुनाके तट जाई ॥
करत कुलाहल आनँद भारी ❋ देत दिवावत रसकी गारी ॥
ऐसे लीला करत अपारा ❋ भये क्षुधारत गोपकुमारा ॥
कहत भये तब हरिसों जाई ❋ हमको क्षुधा लगी अधिकाई ॥
यह सुनि प्रभु भक्तन हितकारी ❋ अपने मन यह बात विचारी ॥
सुनि सुनि मेरे गुण गण गाना ❋ करत रहत द्विजतियँ मनध्याना ॥
तिनको दरशन आज दिखाऊं ❋ तिनके मनकी ताप नशाऊं ॥
तब हरि ग्वालन कह्यो बुझाई ❋ यज्ञ करत ह्यां द्विजँ समुदाई ॥
तिनके निकट जाउ तुम भाई ❋ प्रथम प्रणाम कीजियो जाई ॥
कहियो हमको कृष्ण पठायो ❋ तुमपै भोजन मांगन आयो ॥

दो०—यह सुनि ग्वाल गये तहां, जहां विप्र समुदाय ।

१ ब्रह्मा । २ महादेव । ३शेष । ४ वेद । ५ भूखे । ६ माथुर चौबेन्की स्त्री । ७ माथुरब्राह्मण ।

यज्ञ करत अहंमिति[1] लिये, विद्याको बल पाय ॥
सो०-ग्वालन करी प्रणाम, कह्यो तिन्हैं कर[2] जोरिकै ।
हमैं पठाये श्याम, मांग्यो है भोजन कछू ॥
वनमें राम कृष्ण दोउ भैया ❀ आये इतहि चरावन गैया ॥
वे कछु आज भयेहैं भूखे ❀ यह सुनि विप्र है गयें रूखे ॥
कह्यो यज्ञ हित करी रसोई ❀ अहिरन पहिले देय न कोई ॥
यह सुनि ग्वाल सकल फिरिआये ❀ हरिसों तिनके वचन सुनाये ॥
सुनि हलधरतन चितै कन्हाई ❀ बोले वचन मन्द मुसुकाई ॥
ये द्विज धर्म कर्म लपटाने ❀ बिना भक्ति मोको नहिं जाने ॥
तब ग्वालनसों कह्यो मुरारी ❀ जाउ जहां इनकी सब नारी ॥
उनको है दृढ भक्ति हमारी ❀ वे मानैंगी कही तुम्हारी ॥
उनसों भोजन मांगहु जाई ❀ कहियो भूखे भये कन्हाई ॥
तब द्विजनारिन ढिग ये आये ❀ हाथ जोरि तिनको शिरनाये ॥
कह्यो राम अरु कुवँर कन्हैया ❀ वनमें भूखे हैं दोउ भैया ॥
मांग्यो है कछु भोजन तुमसों ❀ आज्ञा देहु सो कहिये उनसों ॥
दो०-ग्वालनके सुनि वचन सब, हर्षि उठीं द्विजवाम ।
कहत हमारो भाग्य धनि, भोजनमांग्योश्याम ॥
सो०-करतरहींनितध्यान, सुनिसुनिजिनकेगुणश्रवण ।
सफल जन्म निज जान, तिनको भोजन लै चलीं ॥
षटरसके व्यंजन विधि नाना ❀ कोमल भांति अमित पकवाना ॥
खीर खांड सिखरन दधि न्यारो ❀ माखन लियो श्यामको प्यारो ॥
कहँलग वरणों कहौं प्रकारा ❀ प्रेमसहित लीन्हें भरि थारा ॥
बहुते ग्वालनके करेंदीन्हें ❀ बहुते अपने शिर धरि लीन्हें ॥
नयनन दरश लालसा बाढी ❀ उपजी चाह हृदय अति गाढी ॥
चलीं पतिनकी कानि बिसारी ❀ देखनको प्रभु गोपविहारी ॥
ग्वालन सों पूछत यह बाता ❀ कितहैं हरि जनके सुखदाता ॥

१ अहंकार । २ हाथ ।

जिनके पुरुष हते घरमाहीं ❋ तिनको जान देत सों नाहीं ॥
कहत जात तुम कित अतुराई ❋ लोकलाज तनु दशा भुलाई ॥
तिनसों कहत भई ते नारी ❋ हमको श्रीगोपाल हँकारी ॥
भोजन मांग्यो है हमपाहीं ❋ तिनहिं देन ग्वालन सँग जाहीं ॥
तिनको दरशदेखि सुख पैहैं ❋ बहुरि तिहारे घर हम ऐहैं ॥
दो०—यहसुनिपतिअतिक्रोधकरि, तिनहिंदिखायोत्रास ।
कहत भई तुम बावरी, बैठति नाहिं अबास ॥
सो०—जिनके उर नँदलाल, बसे लकुट मुरली लिये ।
तिनहिं न भय यम काल, कौन भांति रोकेरुकहिं ॥
हरि पै हमें जान पिय देहू ❋ कहारोंकि अपयश शिर लेहू ॥
देखन देहु नंदके लालहि ❋ त्रिभुवनपतिप्रभुमदनगोपालहि ॥
इतनी बात मानि पिय लीजे ❋ हा हा हमै दान यह दीजे ॥
वेहैं यज्ञपुरुष भगवाना ❋ अन्तरयामी कृपानिधाना ॥
करत यज्ञ विधि तिन्हैं बिसारी ❋ कहा सरैगी बात तिहारी ॥
कहँ लगि कहौं बात समुझाई ❋ जात दरशकी अवधि बिहाई ॥
जो तुम स्वामी जानत नाहीं ❋ तो हम सत्य कहैं तुह पाहीं ॥
मन तो मिल्यो जाय नँदलालहि ❋ करिहौ कहा रोंकिकै खालहि ॥
लेहुसँभारि देह यह सारी ❋ जासों पिय तुम कहत हमारी ॥
को राखै इतने जंजालहि ❋ मिलिहैं प्राण यशोदा लालहि ॥
जो निश्चय नहिं श्याम सनेहा ❋ तौ यह कौन काज की देहा ॥
सब सखियनके आगे जाई ❋ देखोंगी छबि कुवँर कन्हाई ॥
दो०—ऐसे देह अरु गेह तजि, पतिकी कानि निबारि ।
पहुँची सबते प्रथमही, जो रोकी ब्रजनारि ॥
सो०—कठिन प्रेमको पंथ, तहां नेमकी गम नाह ।
कहत सकल सदग्रन्थ, जहां नेम तहँ प्रेम नहिं ॥
ऐसे भोजनलै द्विजबाला ❋ पहुँचीं वन जहँ मोहन लाला ॥

१ घर । २ बुराई । ३ समय । ४ चमड़ा । ५ गम्यनहीं ।

नटवर भेष चित्र तन कीन्हें ❋ ठाढे सखा संग भुजदीन्हें ॥
मोरमुकुट बैजन्ती माला ❋ करमुरली दृगकमल विशाला ॥
कुण्डल अलक तिलक झलकाहीं ❋ कोटिकाम छबि पटतर नाहीं ॥
मुख मृदुहँसिनि लसनि पटपीरो ❋ निरखत नयन ताप भयो सीरो ॥
भोजन लै हरि आगे राखे ❋ अपने भाग्य धन्य करि भाखे ॥
तिन्हें देखि हरि मन सुख मान्यो ❋ वचनन करि तिनको सनमान्यो ॥
तिन सों बहुरो कह्यो कन्हाई ❋ गृहपति ताजि तुम कितइतआई ॥
कहियत विप्र वेदअधिकारी ❋ हौ तिनकी तुम पतिव्रत नारी ॥
वे सब यज्ञ करत बन माहीं ❋ तुमविन यज्ञ होय है नाहीं ॥
यह तुम कछू भलो नहिं कीन्हों ❋ पतिको कह्यो मानि नहिं लीन्हों ॥
पति आयसु तिय पालै जोई ❋ चारि[1] पदारथ पावै सोई ॥

दो०—पति देवता सु तीय कहँ, वेद वचन परमान ।
जाहु वेगि तुम पतिन पहँ, ताते यह जियजान ॥
सो०—सुनिहरि वचन प्रमान, कर्म धर्म मानो सुखद ।
द्विज तिय परम सुजान, बोलीं सब करजोरिकै ॥

सुनहु श्यामघन अन्तर्यामी ❋ तुमहीं सकल जगतके स्वामी ॥
यज्ञपुरुष तुमहीं सुखधामा ❋ तुमहीं सबके पूरणकामा ॥
विविध यज्ञ करि तुमको ध्यावें ❋ तुमते चारि पदारथ पावें ॥
सकल धर्म ते शरण तुम्हारी ❋ है सब जीवनको सुखकारी ॥
यह हम सुनी पतिन मुखबानी ❋ कहत वेद इतिहास बखानी ॥
ताते शरण तुम्हारी आई ❋ यह दूषण नहिं हमें गुसाईं ॥
तव मायावश सकल भुलाने ❋ ताते पतिन न तुम पहिंचाने ॥
तिनको दोष क्षमा प्रभु कीजै ❋ हमको शरण आपनी दीजै ॥
चारि पदारथ हूते भारो ❋ है प्रभुदरशन शरण तुम्हारो ॥
ताते नहीं निरादर कीजै ❋ अपने चरण शरण रख लीजै ॥
सुनि प्रभु द्विजपत्नी की बानी ❋ भये प्रसन्न भक्त सुखदानी ॥

---

१ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष ।

धन्य धन्य प्रभु तिनको भाख्यो ❀ हितकरि तिनको भोजनराख्यो ॥
दो०-द अपनी दृढ भक्ति हरि, तिन्हैं कह्यो घर जाहु ।
ह्वै हैं तुम्हरे दरशते, शुद्ध तुम्हारे नाहु ॥
सो०-हरि आयसु धरिमाथ, पाय भक्ति वरदान वर ।
राखि हृदय ब्रजनाथ, चलीं हर्षि द्विजतियसदन ॥
नँदनंदनकी करत बडाई ❀ द्विजपत्नी सब घरको आई ॥
देखत तिन्हैं विप्र समुदाई ❀ भये पुनीत विमल मति पाई ॥
धन्य धन्य कहि तियन बखानी ❀ आप कहत हम अतिअज्ञानी ॥
जिनके हेतु यज्ञ हम कीन्हों ❀ तिनमांग्यो भोजन नहिं दीन्हों ॥
हम विद्या अभिमान भुलाने ❀ अविगतिकी गति कैसे जाने ॥
परब्रह्म प्रभुजन सुखदाई ❀ भक्तन हित प्रगटे प्रभु आई ॥
तिनको हम पहिचान्यो नाहीं ❀ बारबार यह कहि पछिताहीं ॥
हैं ये तिय अतिशय बडभागी ❀ कृष्णचरण पङ्कज अनुरागी ॥
ब्रह्मादिक खोजत हैं जिनको ❀ देख्यो जाय प्रगट इन तिनको ॥
ऐसे बहु विधि तियन सराहीं ❀ आदर करि लीन्हीं घरमाहीं ॥
प्रेमप्रीति करि जो हरि ध्यावैं ❀ सो नर नारि अभयपद पावैं ॥
नरनारी कछु नाहिं बिचारा ❀ प्रभुको केवल प्रेम पियारा ॥
दो०-भाव तियनको धारि उर, तहँ हरि कृपानिकेत ।
सखन सहित भोजन करत, रुचि सों प्रीति समेत ॥
सो०-ब्रह्मलोक लौं शौर, ग्वालनके सग खात हरि ।
छीनि छीनिकै कौर, करत परस्पर हासरस ॥
अति हित भोजन तहँ हरिकीन्हों ❀ सखा वृन्दको अतिसुख दीन्हों ॥
वनमें फिरत चरावत गैया ❀ बैठे आय कदमकी छैया ॥
भये सखा सिगरे इकठाहीं ❀ गैयां बगर रहीं बनमाहीं ॥
दुपहर घाम जानि मनमाहीं ❀ लागे चलन सघन वनछाहीं ॥
बैठे ग्वालबाल चहुँडरियाँ ❀ आगे धरीं दूधकी घरियाँ ॥

१ पति २ । स्त्रीन्को ।

मध्य श्याम सुन्दर नँदनन्दा ❀ उडगणमें जिमि पूरणचन्दा ॥
मोरमुकुट कटि कछनी काछे ❀ कोटि कामकी छबिको बाछे ॥
कबहूँ मुरली मधुर बजावैं ❀ कबहुँ सखन मिलि सारँग गावैं ॥
कोऊ सखा नृत्यको करहीं ❀ कोऊ टिटकारी उच्चरहीं ॥
करत केलि ऐसे बन माहीं ❀ देखि देखि सुरवृन्द सिहाहीं ॥
कोऊ ताल बजावत नीके ❀ उपजावत कोउ आनँद जीके ॥
कहत धन्य ये ब्रजकी बाला ❀ विहरत जिनसँग कृष्णकृपाला ॥

दो०–धन्य विटप धनि भूमि यह, धनि वृन्दावनचन्द ।
धनि ब्रज कहि वर्षैं सुमन, रीझ रीझ सुरवृन्द ॥

सो०–मन मन देव सिहाहिं, वनविहार हरिको निरखि ।
श्रीवृन्दावन माहिं, हम न भये द्रुम लता तृण ।

श्रीदामा सब कह्यो बुझाई ❀ खेलहिमें सब रहे भुलाई ॥
गैयां कितहिं चरत को जाने ❀ यह सुनिकै सब खेल भुलाने ॥
जित तित हेरनेको उठि धाये ❀ गैयां जाय घेरि लै आये ॥
जे सुरभी आई नहिं जानी ❀ चरत सघन वन मांझ समानी ॥
तिनको तरुचढि कान्ह बुलाई ❀ मुरली टेर सुनत उठि धाई ॥
ऐसी गैयां श्याम सधाई ❀ मुरली सुनि सब हरि पै आई ॥
जब जब गैयन श्याम बुलावैं ❀ हूं हूं करि सब हरि पै आवैं ॥
तिनपर कर फेरत मनमोहन ❀ पीतांबर सों झारत छोहन ॥
करत प्यार तिनपर बनमाली ❀ हस्तकमलकी सब प्रतिपाली ॥
हरिको निरखि गाय सुख पावैं ❀ तिनके भाग्य कहत नहिं आवैं ॥
जब हरि गैयन करसों परसैं ❀ लखि लखि कामधेनुमन तरसैं ॥
कहत कहा जो का मद कीन्हों ❀ हमको विधि ब्रज जन्म न दीन्हों ॥

दो०–धनि धनि ब्रजकी धेनु ये, चारत त्रिभुवन नाथ ।
झारत पोंछत बहुत नित, हितकरि अपने हाथ ॥

सो०–मनहीं मन पछिताहिं, कामधेनु ब्रजधेनु लखि ।

१ देवगण । २ ढूंढवेको । ३ देसके ।

हम न भईं ब्रजमाहिं, हरिपद पंकज परसतीं ॥
ऐसी लीला करत अनेका ❀ वनमें ललित एकते एका ॥
वृन्दावन सब दिवस बितायो ❀ संध्या समय निकट जबआयो ॥
तब हरि कह्यो चलो अब गेहू ❀ गैयां सब आगे करि लेहू ॥
पहुँची सांझ आय नियराई ❀ वनमें करहु अबेर न भाई ॥
यह सुनि गाय सबन अगुवाई ❀ भली बात यह कही कन्हाई ॥
वनते निकरि चले सब ग्वाला ❀ ब्रज आवत नटवर गोपाला ॥
सुरभीवृन्द गोपबालक सँग ❀ अति आनँद गावत नाना रँग ॥
अधर अनूप मुरलि सुर कौ री ❀ ऊँचे सुरन बजावत गौरी ॥
सुंदर श्रवण सुनत ब्रज धाई ❀ गृहकारज तियं तजि सब आई ॥
कहत परस्पर मोहन आवत ❀ देखि देखि छबि अतिसुखपावत ॥
पूरण कला उदित शशि जैसे ❀ कुमुदिनि सर फूलीं तिय तैसे ॥
नयन चकोर रहे टकलाई ❀ दिवस विरहकी ताप नशाई ॥
दो०-प्रेममगन आनंद अति, कहत सकल ब्रजबाम ।
देखहु सखि यशुमति सुवन, शोभित अतिअभिराम ॥
सो०-श्यामल तनु पटपीत, जलजमाल बरहीमुकुट ।
लई मनों इन जीत, घन दामिनि बग धनुष छबि ॥
भृकुटि बिकट दृग चंचलताई ❀ अतिछबिदेति वरणि नहिं जाई ॥
धनुष देखि बिच खंजन जानों ❀ उडन करत डरि उडत न मानो ॥
प्रफुलित नयन शरद अंबुजसे ❀ मनोकुंडलि रविकरके परसे ॥
गोपद रज पराग छबि छाई ❀ ता माधि अलि बैठ्यो जनु आई ॥
एक कहत देखहु वह शोभा ❀ अति सुख देत लसत मन लोभा ॥
कमलवदन मुरली रस लेई ❀ कुटिल अलक ऐसे छबि देई ॥
मानो अलिगण साजी सैना ❀ सहिन सकत चाहत निज ऐना ॥
अधर सुधा लगि अतिदुखपाई ❀ मुरली सों मनो करत लडाई ॥

१ ब्रजगोपिका । २ कमलमाला । ३ मोरमुकुट । ४ कमल । ५ भौंरा । ६ भौंरोंके झुंड ।

शोभितनासा[1] परम सोहाई ❁ तामें सजि उपमा यह पाई ॥
मनहुँ अनंग[2] सहायक आयो ❁ तिलप्रसून[3] शर ताहि चलायो ॥
सुनि यह युक्ति सकल हर्षांई ❁ निरखत हरिमुख छवि सुखपाई ॥
कृपादृष्टि हरि सबन निहारी ❁ आये ब्रजजनमनसुखकारी ॥

दो०-कहतमुदितमनयुवतिजन, धनिधनिसखि वे मोर ।
जिनके पंखनको मुकुट, कीन्हों नंदकिशोर ॥

सो—धनि धनि सखि वे बांस, जाकी मुरलीअधरधरि ।
हरिपूरत निजसांस, को पुनीत ताके सदृश ॥

निज निज सदन गये सब ग्वाला ❁ आये घर हलधर गोपाला ॥
देखि दुहूं मातन सुखपायो ❁ हरषि दुहुनको कण्ठ लगायो ॥
काहे आज अबार लगाई ❁ यह कहि बार बार बलिजाई ॥
रोहिणि सों कह यशुमति मैया ❁ भूखे ह्वैहैं दोऊ भैया ॥
मैं दोउनको देत न्हवाई ❁ तुम भोजनको करहु चढाई ॥
निकट लये मुरली कर लीन्हीं ❁ हरि करते लकुटी धरि दीन्हीं ॥
नीलाम्बर पीताम्बर लीन्हों ❁ मुकुटउतारि श्याम तब दीन्हों ॥
प्राणसमान यशोमति जानी ❁ धर्यो सँभारि सदन नँदरानी ॥
छोरति अँगभूषण महतारी ❁ मुक्तमाल बनमाल उतारी ॥
कटि किंकिण अंगद भुज छोरे ❁ निरखि गात[4] आनंद न थोरे ॥
पट लै दोउनके अँग झारे ❁ उरलगाय लीन्हें अति प्यारे ॥
तुम दोउ मेरे गाय चरैया ❁ और न कोऊ टहल करैया ॥

दो०-लीन्हें तुमहि बिसाहि मैं, तब अति रहे नन्हाय ।
सुनि हँसि हरि बलसों कहत, कहत झूठही माय ॥

सो०-यह तो समुझि न जाय, सांचझूठकी बात कछु ।
यशुमति लेत बुलाय, मैं चोरी हँसि हँसि कहत ॥

सुमनासुत[5] अंगन परसाई ❁ तपत तरणिको जल लै आई ॥

---

१ नासिका । २ कामदेव । ३ तिलपुष्पवत्‌बाण । ४ शरीर । ५ सुगंधिपुष्पोंकातैल ।

परम प्रीति दोउ सुत अन्हवाये ❀ सरसबसन तनुपोंछि सुहाये ॥
षटरस भोजन जाय जिमाये ❀ यशुमतिके सुख जायँ न गाये ॥
शीतल जल कपूर रस रचयो ❀ लै झारी दुहु भैयन अँचयो ॥
भोर भयो मुख धोय उठे जब ❀ बीरे पान दये जननी तब ॥
बीरा खात मुदित दोउ भाई ❀ ब्रजवासिन जूंठनि सब पाई ॥
यशुमतिके सुख कौन गनावै ❀ शारदहू कहि पार न पावै ॥
धन्य नन्द धनि यशुमति माता ❀ महिमा नहिं कहिसकै विधाता ॥
ब्रह्म सनातन हैं प्रभु जोई ❀ जिनके पुत्र कहावत सोई ॥
जो प्रभु सकल विश्वके स्वामी ❀ तीनि लोकपति अन्तरयामी ॥
विश्वम्भर निजनाम कहावै ❀ ताहि यशोमति माय खवावै ॥
रात सुवावै प्रात जगावै ❀ बालक ज्यों फुसलाय लडावै ॥

दो०—रहत मगन गुण श्यामके, निशिदिन आठौं याम।
महरि महरके प्राणधन, मोहन सुंदर श्याम ॥
सो०—हरि क्षण बिसरत नाहिं, ब्रजके नरनारी जिनहिं ।
मगन प्रेम मन माहिं, निशिदिन जात न जानहीं ॥

अथ गोवर्द्धनलीला.

कृष्ण प्रेम ब्रज लोग समाने ❀ देव पितर सब लोक भुलाने ॥
कार्तिक सुदि परिवा जब होई ❀ इंद्रहि पूजत ब्रज सब कोई ॥
ताकी सुधि बुधि सबन भुलाई ❀ सबके मनमें ध्यान कन्हाई ॥
सो तिथि अति समीप जब आई ❀ तब यशुमतिके उर सुधि आई ॥
कहत नंदसों नन्दकि रानी ❀ सुरपतिपूजा तुमहिं भुलानी ॥
जाकी कृपा बसत ब्रज माहीं ❀ एकहु वस्तु कमी कछु नाहीं ॥
जाकी कृपा दूध दधि गाई ❀ सहस मथानी मथत सदाई ॥
जाकी कृपा पुत्र हम पाये ❀ जासु कृपा सब विघ्न नशाये ॥
भई सकल ब्रज मांझ बडाई ❀ कुशल रहो बलराम कन्हाई ॥
सुरपति हैं कुलदेव हमारे ❀ गोप गाय ब्रजके रखवारे ॥

१ श्रेष्ठवस्त्र । २ निकट । ३ इन्द्र ।

तिनकी तुम सब सुरति भुलाई ❀ रहे दिवस पांचक अब आई ॥
कहो सकल गोपनके राई ❀ इन्द्र यज्ञकी करो चढाई ॥

दो०–भली दिवाई मोहिं सुधि, कहत महरिसों नंद ।
भूलि गये हम देवको, काज मोहवश मंद ॥

सो०–हाथ जोरि नँदराय, विनय करत सुररायसों ।
तुमको गयो भुलाय, क्षमा कीजियो मोहिं प्रभु ॥

तबहिं नन्द उपनन्द बुलाये ❀ श्रीवृषभानु सहित सब आये ॥
सबको देखि नन्द सुख पायो ❀ महरि महर कहि शीश नवायो ॥
अति आदर सबहीको कीन्हों ❀ सादर सबको बैठक दीन्हों ॥
मनहीं मन सब शोध कराहीं ❀ कंस कछू मांग्यो तो नाहीं ॥
राजअंश उनको जो होई ❀ बिन मांगे हम दीन्हों सोई ॥
बूझत नंदहि सब सकुचाये ❀ कौन काज हम सबन बुलाये ॥
तबहिं नन्द सबको समझायो ❀ मैं तुमको यहि काज बुलायो ॥
सुरपति पूजाके दिन आये ❀ सो तुम सबहिन मिलि बिसराये ॥
मैंहूं राज काज लपटानो ❀ निशिदिनलोभहिं मांझ भुलानो ॥
इन्द्रयज्ञकी सुरति भुलानी ❀ अति समीप दिन पहुँचो आनी ॥
ताते अब सब करो चढाई ❀ इन्द्रयज्ञ कीजे सुखदाई ॥
इन्द्रहिको हम सदा मनावैं ❀ तिनहीं ते ब्रजजन सुखपावैं ॥

दो०–यह सुनि मन हर्षे सबै, देवकाज जिय जान ।
हम सब भूले सुरपतिहिं, मन लागे पछितान ॥

सो०–भली करी नँदराय, तुम हमको दीन्हीं सुरति ।
सुरपतिको शिरनाय, क्षमा करावत पाप सब ॥

बिदाहोय सब गोप सिधाये ❀ घर घर बाजन लगे बधाये ॥
पूजाकी विधि करत सबै मिलि ❀ जिहिं जिहिं भांति सदा आई चलि ॥
अमितभांति पकवान मिठाई ❀ होत घरनि घर वरणि न जाई ॥
नन्द महर घर बजत बधाई ❀ गावत मंगल अति हर्षाई ॥

१ तयारी । २ अनेकप्रकार ।

नेवज करत यशोदा आतुर ❋ आठौं सिद्धि घराहिं अति चातुर ॥
मैदाके अनेक पकवाना ❋ बेसनके बहु करत विधाना ॥
घृत मिष्टान्न सबै परिपूरण ❋ मिश्रीकरत पाकको चूरण ॥
विविध भांति पकवान मिठाई ❋ कहँ लगि नाम कहौं सब गाई ॥
और नारि ब्रजकी सँग लागी ❋ घृतपक करत सबै अनुरागी ॥
जहां तहां कहुँ चढी कढाई ❋ यशुमति सबन सराहत जाई ॥
जो सामा मांगतिहैं जोई ❋ रोहिणि ताहि देतिहै सोई ॥
महरि करति रचि और निहारे ❋ धरत जोरि विधि न्यारे न्यारे ॥

दो०-सैंति सैंति अति नेमसों, धरति अछूते जात।
श्याम कहूं परसैं नहीं, यह मनमाहिं, डरात ॥

सो०-शंक करत मनमाहिं, सुरपति पूजा जानि जिय।
यशुमति जानति नाहिं, सब देवनके देव हरि ॥

खेलत ते सन्तन सुखदाई ❋ भीतर आये कुवँर कन्हाई ॥
जननी कहति इहां जनिआवै ❋ लरिकनको यह देव डरावै ॥
रहे ठिठुकि आंगनहिं डराई ❋ मनहीं मन हँसि कहत कन्हाई ॥
मैयारी मोहिं देव दिखैहै ❋ इतनो भोजन वह सब खैहै ॥
यह सुनि खीझि कहतिहै मैया ❋ ऐसी बात न कहौ कन्हैया ॥
जोरि जोरि कर देव मनावै ❋ बालकको अपराध क्षमावै ॥
बाहर चले श्याम अनखाई ❋ युवति कहैं हरि गये रिसाई ॥
जान देहु हरि अबहिं अयाने ❋ देवकाज बालक कह जाने ॥
छुइहै कहूं श्याम यह भोजन ❋ उनकी पूजा जानै को जन ॥
और नहीं हम काहू जानैं ❋ कै सुरपति कै गोधन मानैं ॥
यह कहि कहि इन्द्रहि शिर नावैं ❋ राम श्यामकी कुशल मनावैं ॥
और देव नहिं तुमहिं सरीशो ❋ कहँ नहिं कृपा करी सुरईशा ॥

दो०-ऐसे सुरपति यज्ञहित, यशुमति करति विधान।
द्वारे बैठे नंद जहँ, गये तहां को कान्ह ॥

१ छुवैंनहीं। २ समान।

सो०—जुरे नंद ढिग आय, ब्रजके जे उपनंद सब ।
बैठे अति सुख पाय, करत बात विधि यज्ञकी ॥
दीप मालिका रचि रचि साजत ❀ पुहुप[1] माल मण्डली बिराजत ॥
ढोल निशान बाजने बाजैं ❀ मुदित[2] ग्वालगण जित तित राजैं ॥
गैयन चित्रविचित्र बनावैं ❀ अंगन आभूषण पहिरावैं ॥
सात वर्षके कुवँर कन्हाई ❀ खेलत मन आनंद बढाई ॥
द्वारन युवती चित्र बनावैं ❀ मंगल गान मुदितमन गावैं ॥
साथिया रचि पुनि थापाईं हाथा ❀ पूजा देखि हँसे ब्रजनाथा ॥
मो आगे सुरपतिकी पूजा ❀ मोते और देव को दूजा ॥
ब्रजवासी मोको नहिं जानैं ❀ मो अच्छत सुरपतिको मानैं ॥
अब यह मेटौं यज्ञबहाने ❀ लीन्हों भाग बहुतदिन याने ॥
ब्रजवासिनपै आप पुजाऊं ❀ गिरि गोवर्द्धन नाम धराऊं ॥
यह विचार मनमें ठहराई ❀ गये नन्द ढिग कुँवर कन्हाई ॥
हर्षि नन्द कैनियां[3] पौढाये ❀ वदन चूमि उरसों लपटाये ॥
दो०—तब हरि बोले नन्दसों, मधुर मन्द मुसकाय ।
करत पुजाई कौनकी, बाबा मोहिं बताय ॥
सो०—कौन देव सो आहि, काहेको पूजत तिन्हैं ।
मैं नहिं जानत ताहि, कहौ मोहिं समुझाय सब ॥
नंद कह्यो तब सुनहु कन्हाई ❀ इंद्र सकल देवनको राई[4] ॥
तिनको पूजत गोप सदाई ❀ कुलमें यहै रीति चलिआई ॥
ताते तिन्हैं पूजियत ताता ❀ जाते कुशल रहो दोउ भ्राता ॥
या पूजाते सुरपति हरषैं ❀ ह्वै प्रसन्न तब जल वे बरषैं ॥
तृण अनाज उपजत है जाते ❀ गाय गोप सुख पावत ताते ॥
याते सदा यज्ञ यह कीजै ❀ जो गोधन धन कबहुँ न छीजै ॥
तब हरि कह्यो सुनो नँद ताता ❀ ऐसे तुम जो कहि यह बाता ॥
जहां इन्द्र पूजत नहिं प्रानी ❀ तहां कहा वर्षत नहिं पानी ॥
जब हरि ऐसे वचन सुनायो ❀ तब नन्दहि उत्तर नहिं आयो ॥
सुनि हरिवचन रहे सकुचाई ❀ मनहिं कहत चतुरंग कन्हाई ॥

१ पुष्पमाला । २ मसन्न । ३ गोद । ४ राजा ।

है बालक अबहीं अति नान्हा ❋ देव कार्य कह जानै कान्हा ॥
तब चुचकारि कह्यो नँदराई ❋ सदन जाउ तुम कुँवर कन्हाई ॥
दो०—ऐसेमैं जिन जाहु कहुँ, भीड़ बडी है तात ।
को जानै किहिं भावको, कित धौं आवत जात ।
सो०—सोय रहौ गोपाल, मेरे पलँगा जाय तुम ।
मैंहूं आवत लाल, पाछे ते तुम्हरे निकट ॥
तब हरि मन इकबुद्धि उपाई ❋ बैठे और महरि ढिगजाई ॥
तिनको हरियों कहि समुझायो ❋ आज मोहिं सपनो इक आयो ॥
पुरुष पुनीत[१] एक अतिचारू ❋ चार भुजा तनु सुभग शृंगारू ॥
तिन मोसों यों कह्यो बुझाई ❋ इन्द्रहि पूजे कहा बडाई ॥
मैं तुमको इक देव बताऊं ❋ गिरि गोवर्द्धन प्रगट दिखाऊं ॥
यह पूजा तुम इनहिं चढावो ❋ जाते मुँह मांगे फलपावो ॥
तुम आगे भोजन वह खैहै ❋ प्रगट आपनो रूप दिखैहै ॥
चार पदारथके ये दाता ❋ अन धन गोधन केतिकबाता ॥
ऐसे देव छांडि घरमाहीं ❋ तुम पूजत सुरपतिहि वृथाहीं ॥
कोटि इन्द्र क्षणमें वे मारैं ❋ क्षणहीमें पुनि कोटिसँवारैं ॥
गोवर्द्धन सम देव न दूजा ❋ करहु जाय उनहींकी पूजा ॥
ताते मो मनमें यह आई ❋ पूजहु गोवर्द्धन सब जाई ॥
दो०—चकित गोपसबवचनसुनि,कहत अकथ यहबात ।
सुने न अबलौं देव कहुँ, प्रगट होयके खात ॥
सो०—सुनी बात यह नंद, शोचत सब उपनंद मिलि ।
कहा कहत नँदनंद, समुझि परत नहिं सपन यह ॥
सुनि यह बात सबन ब्रजपाई ❋ देख्यो ऐसो सपन कन्हाई ॥
सुरपति पूजा देत मिटाई ❋ गोवर्द्धनकी करत बडाई ॥
कोऊ कहत कान्ह कह सांची ❋ कोऊ कहत बात यह कांची ॥
बालक जानै कहा पुजाई ❋ कोऊ कहत कहै को भाई ॥
कोऊ इन्द्रहि कहत सकोने ❋ हम तो कछु यह बात न जाने ॥

१ घर । २ पवित्र । सुंदर । ४ डरपे ।

हलधर कहत सुनो ब्रजवासी ❀ को महिमा जानत अविनासी ॥
इनको बालककरि मतिजानों ❀ जो हरि कह्यो सत्यकरि मानों ॥
नंदनिकट जो गोप सयाने ❀ हरिको बलप्रताप सब जाने ॥
कहत नंदसों ते सुखपाई ❀ कीजे सोइ जो कहत कन्हाई ॥
कहत नन्द तब सवन सुनाई ❀ मेरे हू मनमें यह आई ॥
हरिको स्वप्न झूंठ नहिं होई ❀ है प्रतीति मेरे मन सोई ॥
कालीको स्वप्नो हरि देखो ❀ भयो प्रातही तासु विशेखो ॥

दो०–ताते सोइ कीजिये, कान्ह कहैं जोइ बात ।
सब ब्रजवासी पूजिये, गोवर्द्धन चलि प्रात ॥

सो०–यहै मंत्र ठहराय, बूझत हरिसों हरषि सब ।
कहौ कान्ह समझाय, कौनभाँति गिरि पूजिये ॥

हर्षि कान्ह तब सवन बुलायो ❀ इन्द्रयज्ञ हित तुम जो बनायो ॥
बहुव्यञ्जन पकवान मिठाई ❀ सो सब शकटन लेहु भराई ॥
नाचत गावत सहित हुलासा ❀ चलहु सकल गोवर्द्धन पासा ॥
तहां जाय गिरिवरहिं मनाई ❀ पूजहु बहुविधि मंगलगाई ॥
मांगि मांगि तुमसों गिरि खै हैं ❀ मुँहमांगे तुमको फल दे हैं ॥
मेरो कह्यो सत्य तुम जानों ❀ मेरो स्वप्न झूंठ मतिमानों ॥
यह परचो तुम आंखिन देखो ❀ तबहिं मोहिं सांचो करिलेखो ॥
जो चाहो ब्रजकी ठकुराई ❀ तौ पूजो गोवर्द्धनराई ॥
कान्हर जो कछु आज्ञा दीन्ही ❀ सबहिन बात मानि सो लीन्हीं ॥
कहहिं परस्पर सब सुखपाई ❀ चलहु गोवर्द्धन कहत कन्हाई ॥
ब्रज घरघर सब होत कुलाहल ❀ फिरत गोप आनन्द उमाहल ॥
मिलत परस्पर अंकमदैलै ❀ शकटन साजत भोजन लैलै ॥

दो०–बहुव्यंजन पकवान बहु, बहुत मिठाई पाक ।
रस गोरस मेवा विविध, अमित भाँतिके शाक ॥

सो०–षटरसके सब भोग, कछु शकटन कछु काँवरिन ।
गृह गृहते ब्रजलोग, लै लै गिरि पूजन चले ॥

नन्द महरके घरकी सामा ❋ कहँ लगि वरणि बताऊं नामा ॥
सहस शकट पकवान मिठाई ❋ रस गोरस बहु भार भराई ॥
नंद सदनते लै बहु ग्वाला ❋ चले अग्र उर हर्ष विशाला ॥
पट भूषण सब गोपन साजे ❋ भाँति अनेक बाजने बाजे ॥
नंद महर अरु महरि जितेका ❋ और गोप बहु भीर अनेका ॥
बलदाऊ अरु कुवँर कन्हैया ❋ सुभग शृँगार किये दोउ भैया ॥
सखा वृन्द सुंदर सब लीन्हें ❋ कोटि काम छबि लज्जित कीन्हें ॥
शोभित नंद महरके साथा ❋ चले सकल पूजन गिरिनाथा ॥
यशुमति अरु रोहिणि महतारी ❋ नंदगांवकी अरु जे नारी ॥
भूषण वसन सवाँरि सवाँरि ❋ चलीं हर्षि उर आनँद भारी ॥
पुरे वृषभानु आदि जे ग्रामा ❋ चलीं सकल गोपनकी वामा ॥
श्रीराधा वृषभानुदुलारी ❋ ललितादिक सब गोपकुमारी ॥

दो०—नौसत साज शृँगार अति, पट भूषण बहुरंग ।
यूथ यूथ जुरिकै चलीं, कीरतिजूके संग ॥
सो०—सबके मन यह काम, देखनको हरिरूप दृग ।
परम मुदित सब वामें, सबके मनमोहन बसे ॥

चन्द्रवदन सी सब मृगनयनी ❋ सकलसुघर सब कोकिलबयनी ॥
नवयौवनमें सबहिं प्रवीना ❋ सबको मनमोहन आधीना ॥
चलीं सकल गोवर्द्धन पाहीं ❋ भई भीर अति मारग माहीं ॥
शकटवृन्द अरु गोप समूहा ❋ जात चले युवतिनके जूहा ॥
कौतुक करत गोपगण राजें ❋ ताल मृदंग अनेकन बाजें ॥
कोउ गावत कोउ नाचत जाहीं ❋ कोउ ठाढ़े मग पावत नाहीं ॥
कोऊ शकटन साजि सँवारे ❋ कोऊ एकन एक पुकारे ॥
गावत मंगल गोपकुमारी ❋ निरखि श्यामछबि होत सुखारी ॥
होत कुलाहल अति मगमाहीं ❋ कोऊ बात सुनत कछु नाहीं ॥

---

१ बरसानो । २ गोपी ।

कौतुक श्याम देखि हर्षाहीं ❀ अति उत्साह सवन मनमाहीं ॥
सखन संग खेलत हरि जाहीं ❀ सबकी सुरति श्यामके माहीं ॥
ब्रजवासिनकी भीर सुहाई ❀ उपमा मोपै वरणि न जाई ॥
छं०-उपमा न मोपै जात वरणी, भीर अतिसुन्दर भई।
बढ्यो आनँदसिंधुको सुख, विविध तनधर सोहई ॥
छबि उजागर नगर कैधौं, सुकृतपुंज सुहावने।
तिनमध्य सबके श्यामनायक, सकललायकपावने ॥
दो०-नंदमहर उपनंद सब, श्याम राम दोउ भाय।
पहुँचे गोवर्द्धन निकट, निरखि शिखर सुख पाय ॥
सो०-उतरे सहित समाज, चहूंओर ब्रजलोग सब।
मधि शोभित गिरिराज, कोटि काम शोभासरस ॥
चहुँ दिशि फेर कोश चौरासी ❀ उतरे घेर सकल ब्रजवासी ॥
ब्रजवासिनकी भीर अपारा ❀ लगे चहूँदिशि चारु बजारा ॥
वस्तु अनेक वरणि नहिं जाई ❀ बिन मोलहि सब सौंज बिकाई ॥
ठौर ठौर ब्रजयुवती गावैं ❀ जहँ तहँ नटवा नाच दिखावैं ॥
कहूं विदूषक[2] हांस हँसावैं ❀ हर्ष मांझ अति हर्ष बढ़ावैं ॥
नर नारी सब परम हुलासा ❀ अति आनंद उमँग चहुँ पासा ॥
बूझत पूजनविधि नँदराई ❀ अधिकारी तहँ कुँवर कन्हाई ॥
कह्यो कृष्ण तब विप्र बुलाई ❀ प्रथम यज्ञ आनंद कराई ॥
पूंछि वेद विधि तिनसों लीजै ❀ वाही विधि गिरिपूजा कीजै ॥
तबहिं विप्र नँदराय बुलाये ❀ आदर सहित गोप लै आये ॥
हरिको कह्यो मानि तिन लीन्हों ❀ प्रथम अरम्भ यज्ञको किन्हों ॥
परम रुचिर वेदिका बनाई ❀ सामवेद धुनि द्विजवर गाई ॥
दो०-देखनको धाये सबै, ब्रजके नर अरु वाम।
भयो देवता गिरि बडो, ताहि पुजावैं श्याम ॥
सो०-बडे महर उपनंद, नंद आदि ठाढे सबै।

---

१ आनंदसमुद्र। २ मसखरा।

कहत जो कछु नँदनंद, करत सकल सोई तहां ॥
पंचामृत बहु कलश भरायो ❋ डारिशिखरते गिरि अन्हवायो ॥
बहुरो लै गंगाजल ढारयो ❋ चंदन वंदन तिलक सवाँरयो ॥
भूषण वसन विचित्र चढाये ❋ सुमन सुगंध माल पहिराये ॥
धूप दीप करि आरति साजीं ❋ घंटा शंख झालरैं बाजीं ॥
करत वेद धुनि विप्र सुहाई ❋ चक्रित नभ[१] लखि सुरस[२]समुदाई ॥
सुरपतिपूजा कृष्ण मिटाई ❋ थाप्यो गिरि ब्रज तिलकचढाई ॥
देखि इन्द्र मन गर्व बढायो ❋ ब्रजवासिनके मन कह आयो ॥
पूजत गिरिहि मोहिं बिसराई ❋ गिरि समेत ब्रज देउँ बहाई ॥
पावहिं मम अपमान सजाई ❋ देखौं तब को करत सहाई ॥
अब देखौं मैं इनकी करनी ❋ उपजी है इनकी बुधि मरनी ॥
गिरिको पूजत प्रेम बढाई ❋ सपनेको सुखलेत मनाई ॥
कितकबार पुनि इनको मारत ❋ ऐसे सुरपति मनहिं बिचारत ॥
दो०-कह्यो कृष्णं तब नन्दसों, भोजन लेहु मँगाय ।
गिरि आगे सब राखिकै, अरु यह विनय सुनाय ॥
सो०-यह सुनिकै नँदराय, लावहु ग्वालनसों कह्यो ।
लीन्हों तहां मँगाय, सामग्री सब भोगकी ॥
नाना भाँति जात पकवाना ❋ विविध मिठाई अमियसमाना ॥
षटरस व्यंजन बहु तरकारी ❋ दही दूध सिखरन रुचिकारी ॥
मधु मेवा फल फूल अनेका ❋ सुंदर स्वाद एकते एका ॥
खीर आदि बहु भांति रसोई ❋ कहँ लगि वरणिसके सबकोई ॥
मूंग भात अरु वरा पकोरी ❋ बहुतक दधिबोरी अरु कोरी ॥
कियो अन्नको कूट सुहावन ❋ जैसो गिरि गोवर्द्धन पावन ॥
परसि परसि गिरि आगे राखत ❋ जैसी विधिसों मोहन भाखत ॥
गिरिपूजत जिहिं भांति कन्हाई ❋ तैसे सब ब्रजलोग लुगाई ॥
गिरि गोवर्द्धनके चहुँ पासा ❋ कीन्हों बहु विधि सहितहुलासा ॥

१ आकाश । २ देवताओंका समूह ।

ठौरहि ठौर वेदिका राजैं ❀ अन्नकूट चहुँ ओर विराजैं ॥
तिनमधि गोवर्द्धनगिरि पावन ❀ परम अनूप स्वरूप सुहावन ॥
चंदन केशरि रोरी हाथा ❀ शोभितअतिचहुँदिशिगिरिमाथा ॥
दो०-गिरिगोवर्द्धनरायकी, छबि नाहिं परत लखाय।
ब्रजवासी जनके हिये, ध्यान परम सुखदाय ॥
सो०-महिमा अमित अपार, श्रीगोवर्द्धन अचलकी।
जेहि पूजत करतार, शारद विधि नाहिं कहिसकै ॥
प्रातहिते परसत भोजन सब ❀ गयो ढरकि युगयाम तरणितब ॥
कह्यो श्यामसों तब नँदराई ❀ जेवहिं गिरिसों कहो कन्हाई ॥
तब हरि कह्यो सबन समुझाई ❀ भोग समर्प्पहु घंट बजाई ॥
मनमें कछू खटक जिन राखो ❀ दीन वचन मुखते कहि भाखो ॥
नयनमूँदिकै ध्यान लगावो ❀ प्रेम सहित करजोरि मनावो ॥
हरि गोपन पूजा सिखरावैं ❀ अपनी पजा आप करावैं ॥
जिनपर कृपा करत नँदनंदन ❀ तिनसों आप करावत वंदन ॥
सबन मानि हरि कह्यो जो लीन्हों ❀ बहु विधिगिरिआराधन कीन्हों ॥
तब प्रगटे गोवर्द्धन नाथा ❀ यज्ञ पुरुष प्रभु श्रुतिके माथा ॥
सहसभुजातनु श्याम तमाला ❀ मोर मुकुट वैजंती माला ॥
नखशिखभूषण परम सुहाये ❀ अंग अंग छबि झलकन छाये ॥
भये देखि ब्रजलोग सनाथा ❀ दियो दरश गोवर्द्धन नाथा ॥
दो०-जय जय जय कहि देव मुनि, वर्षत सुमनअकास।
ब्रजवासी जय जय करत, भये अनंद हुलास ॥
सो०-सहसौ भुजा पसारि, लागे भोजन करन गिरि।
देखत ब्रजनरनारि, अति अद्भुत हरिके चरित ॥
कहत मुदित सब लोग लुगाई ❀ कान्हहिंकी शोभा गिरिराई ॥
जैसे कान्ह श्यामतनु सोहै ❀ तैसोई गिरिवर मनमोहै ॥
तैसेइ कुण्डल तैसेइ माला ❀ तैसेइ चंचल नयन विशाला ॥

१ पर्वतकी। २ सरस्वती। ३ दोपहर। ४ सूर्य।

तैसोइ मुकुट पीतपट तैसो ❀ नख शिख रूप कान्हको जैसो ॥
द्वैभुज हरिके परम सुहाई ❀ गिरिकी भुजा सहँस अधिकाई ॥
देखि दर्श गिरिवरके रूरे ❀ नंद यशोदा आनँद पूरे ॥
कहतकि बडे देव हम पाये ❀ देखहु परगट दरश दिखाये ॥
ऐसो देव सुन्यो नहिं देख्यो ❀ जीवन जन्म सफल करिलेख्यो ॥
ललिता राधहि कहत बुझाई ❀ मैं यह बात समुझिहै पाई ॥
यह लीला सब श्याम बनावैं ❀ आपहि जेंवत आप जिमावैं ॥
मैं जानी हरिकी चतुराई ❀ इंद्रहि मेटि आप बलि खाई ॥
हैं इनके गुण अगम अगाधा ❀ मेरी बात मान तू राधा ॥

दो०-इतहि नंदको कर गेंहे, गोपन सों बतरात ।
उत आपहिधारि सहस भुज, रुचिसों भोजनखात ।
सो०-श्रीराधा सुख पाय, मुदित विलोकति श्यामछबि ।
भक्तनके सुखदाय, नितनव करत विनोद ब्रज ॥

इत गोपनसँग हर्षित राहीं ❀ उत सबहिनको भोजन खाहीं ॥
ग्वालिनि एक विलोकनहारी ❀ रहि वृषभानुसदन रखवारी ॥
तासु नाम बदरीला गायो ❀ तिन घरहीते भोग लगायो ॥
प्रेम सहित बहु विनय सुनाई ❀ सबके अन्तरयामि कन्हाई ॥
ऐसे प्रीतिक्षुधित बनवारी ❀ लई तासु बलि भुजा पसारी ॥
भोजन करत परम रुचि मानी ❀ गुणसागर लीला यह ठानी ॥
कहत नंदसों कुवँर कन्हाई ❀ मैं जो बात कही सो आई ॥
अब तुम गिरि गोवर्द्धन जाने ❀ मेरे वचन सत्य करि माने ॥
तुम देखत भोजन सब खायो ❀ परगट तुमको दर्श देखायो ॥
तुम्हरी भक्ति भाव पहिंचानी ❀ गिरि तुम्हरी पूजा सब मानी ॥
तुम अब मांग्यो चाहौ जोई ❀ मांगिलेहु इनपै सब सोई ॥
नंद कहत धनि धन्य कन्हाई ❀ यह पूजा तुम हमहिं बताई ॥

दो०-प्रीतिरीतिके भावसों, भोजन सबके खाय ।

१ हजार । २ पकड़े । ३ प्रीतिके भूखे ।

है प्रसन्न अति नंदसों, तब बोले गिरिराय ॥
सो०-लेहु नंद वरदान, अब जो तुम हमसों चहौ ।
मैं लीन्हों सुखमान, बहुत करा तुम भक्ति मम ॥
भली करी तुम मेरी पूजा ❀ सेवक तुमते और न दूजा ॥
तेरे सुत बल मोहन भाई ❀ इनको कुशल अनन्द सदाई ॥
मैंहीं इनको स्वप्न दिखायो ❀ मैंहीं सुरपति यज्ञ मिटायो ॥
अब जो सुरपति तुमहिं रिसाई ❀ जल वर्षै ब्रज ऊपर आई ॥
तौ तुम अपनेजिय मतिडरियो ❀ कान्ह कहै सोई तुम करियो ॥
अब तुम मम प्रसाद ले खाहू ❀ अपने अपने घर सब जाहू ॥
ब्रजमें बसो निशंक सदाहीं ❀ और कछू माँगौ हम पाहीं ॥
यहसुनिचकितसलकब्रजनारी ❀ भोजन कियो प्रथम गिरिधारी ॥
अब बोलत मुख वचनप्रमाना ❀ ऐसे परछंत देव न आना ॥
नंद कह्यो कह मांगों स्वामी ❀ देखि दरश भयो पूरणकामी ॥
सकलसिद्धिसुखतुम्हरोदीन्हों ❀ कृपासिंधु मैं तुम्हरो कीन्हों ॥
मोहविवश प्रभु तुमहिं बिसारे ❀ भूलि फिरचों देवनके द्वारे ॥
छं०-फिरचों भूल्यो देवद्वारन नाथ तुमहिं बिसारके ।
पूजा तुम्हारी कहा जानें हम अहीर गँवार के ॥
आपही करि कृपा दीन्हों स्वप्न श्यामहिं आयकै ।
दई बालकको बडाई नाथ यह अपनायकै ॥
अब हमैं डर कौनको प्रभु शरण तुम्हरी पायकै ।
इन्द्र कह करिहै हमारो नाथ ब्रजपर आयकै ॥
तुमहिं कर्त्ताहौ सबनके तुमहिं सबके ईशहौ ।
कोटिकोटिब्रह्मण्डतुम्हरे रोमप्रति जगदीशहौ ॥
श्याम हलधर दास तेरे कुशल ये दोऊ रहैं ।
करि कृपा यह देहु प्रभु हम और कछु नाहीं चहैं ॥
सुतन ल दोउ डारि गिरिपद आप नँद चरणन परे ।

१ मत्यक्ष २ मालिकहो ।

बिहँसि गिरि लखि प्रीतिपंकज पाणि दुहुँ माथे धरे ॥
दो०-नन्द गोप उपनन्द सब, श्रीवृषभानु समेत ।
बार बार गिरिराजके, चरण परत अति हेत ॥
सो०-करि सबको सनमान, दै प्रसाद निज पाणिसों ।
सबन कह्यो घर जान, ह्वै प्रसन्न गिरिराज तब ॥
चलहु घरन तब कह्यो कन्हाई ❋ भये प्रसन्न देव गिरिराई ॥
भली भांति पूजा तुम कीन्हीं ❋ गिरिवरराज मान सब लीन्हीं ॥
दोउ करजोरि भये सब ठाढे ❋ भक्ति भाव सबके मन बाढे ॥
हरि करि परिकरमा सब गिरिको ❋ परसत चरण चलत ब्रजघरको ॥
देखि चकित गण गंध्रव सुरमुनि ❋ कहत धन्य ब्रजवासी गुणगुनि ॥
धन्य नंदको सुकृत पुरातन ❋ धन्य धन्य पर्वत गोवर्द्धन ॥
करत प्रशंसा सुर मुनि पुनिपुनि ❋ वर्षि सुमन करि करि जैजै धुनि ॥
निज निज लोकन देव सिधाये ❋ ब्रजवासी सब ब्रजको धाये ॥
मुदित सकल ब्रज लोग लुगाई ❋ गोवर्द्धनकी करत बडाई ॥
कहत धन्य यशुमतिको जायो ❋ बडो देवता कान्ह पुजायो ॥
अब इनते ब्रजमें सुख पैहैं ❋ गोप गाय सब सुखसें रैहैं ॥
वर्ष वर्ष प्रति इन्द्र पुजायो ❋ कबहूं प्रगट दर्श नहिं पायो ॥
दो०-प्रगट देत हैं दश गिरि, सबके आगे खात ।
परम हर्ष नर नार सब, सबके मुख यह बात ॥
सो०-खेलत नित नव ख्याल, भक्तपाल नँदलाल ब्रज ।
दुष्टनके उरशाल, सुर नर मुनि मोहत निरखि ॥
इन्द्र देखि गोवर्द्धन पूजा ❋ कियो क्रोध मो सम को दूजा ॥
ब्रजवासिन मोको बिसरायो ❋ मेरो बलि लै गिरिहि चढायो ॥
नेक नहीं शंका उर आनी ❋ कछू कानि मेरी नहिं मानी ॥
तेंतिस कोटि सुरनको नायक ❋ मेघ वत्त सब मेरे पायक ॥
कियो अहीरन मम अपमाना ❋ का धौं इन अपने मन जाना ॥
जानि बूझि इन मोहिं भुलायो ❋ गिरिहिथापिशिर तिलकचढायो ॥

काहू उन्हैं दियो बहँकाई ❋ मरण काल ऐसी मति आई ॥
तुरत उन्हैं अब देहुँ सजाई ❋ देखौं धौं को करत सहाई ॥
पर्वत पहिले खोदि बहाऊं ❋ ब्रजजन मारि पताल पठाऊं ॥
फूलि फूलि भोजन जिन कीन्हों ❋ नेक न राखौं ताको चीन्हों ॥
सकल गोप यह नयनन देखैं ❋ बडे देवताको फल लेखैं ॥
ता पाछे ब्रज देउँ बहाई ❋ भुवंपर खोज रहै नहिं राई ॥

दो०–ऐसे सुरपति क्रोधकरि, मनमें गर्ब बढाय।
प्रलयकालके मेघ सब, लीन्हें तुरत बुलाय ॥

सो०–तिनहिं कह्यो सुरराय, ब्रजपर बर्षौ जाय तुम।
पर्वत प्रथम मिटाय, पुनि बोरहु ब्रजलोकसब ॥

मोसों अहिरन करी ढिठाई ❋ मेरी बलि पर्वतहि खवाई ॥
ताकारण मैं तुम्हहिं बुलाये ❋ सैन समेत जाहु सब धाये ॥
गिरिसमेत सब देहु बहाई ❋ भूतल खोज रहै नहिं राई ॥
सुरपतिवचन सुनत घन तमके ❋ कापर क्रोध करत प्रभु मनके ॥
केतक गिरि ब्रज हमरे आगे ❋ तुम प्रभु क्रोध करत केहिलागे ॥
क्षणहींमें ब्रज खोदि बहावें ❋ डूँगरको घर नाम मिटावें ॥
होत प्रलय प्रभु हमरे पानी ❋ रहत अजयवट तनक निशानी ॥
आप क्षमा कीजे सुरराई ❋ हम करिहैं उनकी पहुँनाई ॥
यह सुनि सुनासीर सुखपायो ❋ हर्षि पान दै तिनहिं चढ़ायो ॥
चले मेघ सब शीश नवाई ❋ आये ब्रजके ऊपर धाई ॥
क्षणहींमें रवि गगन छिपाने ❋ देखतही देखत अधिकाने ॥
कीन्हों शब्द गरज घन भारी ❋ अतिही घटा भयावन कारी ॥

छंद–अतिहीभयानक घटाकारी कज्जलहु पटतरनहीं।
घेरि लीन्हों ब्रज चहूंदिशि पवनप्रलय झकोरहीं ॥
गर्जत गगन घन घोर तड़पत तडित बारहिं बारहीं।
होत शब्द अघात ब्रज नर नारि चकित निहारहीं ॥

१ पृथ्वीपर। २ इन्द्र। ३ आकाश। ४ बीजुरी।

गये वन जे गाय लैते धाय फिरि ब्रज आवहीं ।
अन्धधुन्ध अपार खोजत धाम पंन्थ न पावहीं ॥
सैंतत जहां तहँ वस्तु सब नर नारि मन शोचत महा ।
बैर सुरपति सों कियो अब होन धौं चाहत कहा ॥
दो०–उमड़ि घुमड़ि घहराय घन, परन लगे जल जोर ।
टेरत सुतको मात पितु, ब्रज गलबल चहुँ ओर ॥
सो०-ब्रजजनसकलविहाल, बिललाने जिततित फिरत ।
श्यामकरत यह ख्याल, देखि देखि मनमें हँसत ॥
अति व्याकुल जहँ तहँ नरनारी ❀ कहत देत पर्वतको गारी ॥
आये पूजि गोवर्द्धन जाई ❀ सुरपति निजकुल देव मिटाई ॥
दीन्हों गिरिवर यह फल भारी ❀ लेहु सबै अब गोद पसारी ॥
चल्यो प्रचारि कोपि सुरराई ❀ देत पलकमें ब्रजहि बहाई ॥
जोपै बडे देव गिरिराजू ❀ तो किन आय बचावत आजू ॥
नंदसुवन यह पूजा ठानी ❀ ताते इन्द्र चल्यो रिस मानी ॥
कहति यशोमति सों ब्रजबाला ❀ कहा काम यह कियो गोपाला ॥
सुरपति हैं कुलदेव हमारे ❀ ब्रजते मेटि दियेते न्यारे ॥
चल्यो आय ब्रज ऊपर सोई ❀ अब सहाय काहे न गिरि होई ॥
घन गर्जत तर्जत अति भारी ❀ देखि देखि डरपत नरनारी ॥
सकल विकल भय मन पछिताहीं ❀ लरिकन दुरवत गोदन माहीं ॥
भये शोच वश सब ब्रजलोगा ❀ कहतबन्यो अब मरण सँयोगा ॥
दो०–देखि देखि ब्रजकी दशा, नन्द महरि पछितात ।
कियो निरादर इन्द्रको, मनमें बहुत डरात ॥
सो०–श्याम राम दोउ भाय, लियेनिकट शोचतमहरि ।
जुरे गोप तहँ आय, मनहीं मन मुसुकात हरि ॥
कहत कृष्णसों सब ब्रजवासी ❀ सुनहु श्याम सुन्दरसुखरासी ॥
तुम तो सुरपति यज्ञ मिटायो ❀ ब्रजबासिन पै गिरिहि पुजायो ॥

१ मार्ग । २ छिपावत ।

दो०–वरुण लोकते जायकै, लाये मोहिं गोपाल ।
ये प्रगटे ब्रज आय कोउ, उत्तम पुरुष विशाल ॥
सो०–महिमा कही न जात, कोटि भाँति बरणी वरुण ।
साँच कहत मैं बात, इनको नर मति मानियो ॥
भयो अधीन बहुत जलराई ❀ परयो चरण कमलनपर आई ॥
रानिन सहित धोय पदपूजे ❀ जानि जगतपति भाव न दूजे ॥
ब्रज नर नारि सुनत यह गाथा ❀ कहत भये सब सकल सनाथा ॥
यशुमति सुनत चकित यह बानी ❀ कहत कहा यह अकथ कहानी ॥
प्रभुकी मायामें अरुझानी ❀ कहति नंदसों यशुदारानी ॥
मैं बरजत निशि न्हानसिधाये ❀ कुशल परी पुण्यनते आये ॥
हरिको चूमि लियो उरलाई ❀ लाये नंदहि खोजि कन्हाई ॥
विप्रन बोलि दियो बहुदाना ❀ घर घर बँटी मिठाई पाना ॥
गावत मंगल नारि सुहाई ❀ बाजी नंद अवास बधाई ॥
नंद कहत यशुमति सुन बौरी ❀ तू अब कितहि करत मन भौरी ॥
जाको त्रिभुवनपति सो ताता ❀ ताहि सदा मङ्गल दिनराता ॥
कही गर्गमुनि वाणी जोई ❀ प्रगटत जात बात सब सोई ॥
दो०–इनते समरथ और नहिं, येहैं सबके नाथ ।
ब्रजवासी आनंद सब, सुनि सुनि हरि गुण गाथ ॥
सो०–धनि धनि ब्रज नर नार, कहत हमारे भाग्य सब ।
हम सँग करत विहार, श्रीवैकुंण्ठनिवास हरि ॥

अथ वैकुंठदर्शनलीला.

कहत परस्पर सब ब्रजवासी ❀ हरिहैं श्रीवैकुण्ठनिवासी ॥
सो वैकुण्ठ अहै धौं कैसो ❀ जन्म मरण भय जहां न ऐसो ॥
जाको वेद पुराण बखाने ❀ हरि जहँ बसत सदा सुखमाने ॥
जो हरि हमहिं दिखावैं सोई ❀ तौ बडभाग्य होइ सब कोई ॥
यह मनसा सबके मन आई ❀ जानि लई भक्तन सुखदाई ॥

१ रात । २ घर ।

तबहिं कृपाकरि सब ब्रजलोका ❋ पहुँचाये वैकुण्ठ विशोका ॥
धम धाम जो वेदन गायो ❋ दिव्यदृष्टि दै सबन दिखायो ॥
देखत भूलिरहे सब ग्वाला ❋ पुर वैकुंठ अनूप विशाला ॥
भूमि वज्रमणि द्युति छबि छाई ❋ परम प्रकाश बरणि नहिं जाई ॥
वापी कूप तडाग अमीके ❋ विविध नगन बांधे तटनीके ॥
रत्ननकी सोपान सुहाई ❋ जहाँ देव मुनि रहत लुभाई ॥
फूले कमल विपुल बहुरंगा ❋ करत शब्द ... ंग गुंजतभृंगा ॥

दो०-कल्पवृक्षके बाग वन, सुगम सु... अपार ।
खग मृग सब तेजोमयी, दिव्य स्वरू... उदार ॥

सो०-मंदिर बरणिन जाहिं, चिंतामणिमय खा...
तैसे ताहि लखाहिं, जैसी जाकी भावन...

सकल चतुर्भुज तहँके वासी ❋ शुद्धसतोगुण सब सुखरा...
राम सहित तहँ प्रभु सुख शीरा ❋ शोभित नव जलदान शरी...
भूषण वसन दिव्य परकाशी ❋ सुन्दर सकल सकलअविनाशी ॥
वदन प्रकाश हास सुखकारी ❋ कोटि चंद्र कीजे बलिहारी ॥
मणिन जटित शिरमुकुटविराजें ❋ भूषण बसन अनूपम राजें ॥
दिव्य पारषद चवँर ढुलावें ❋ नारद तुम्बुर गुणगण गावें ॥
चकित विलोकत सब ब्रजबाला ❋ जान्यो प्रभुप्रभाव तिहिं काला ॥
चारि भुजा तहँ प्रभुहि निहारी ❋ शंख चक्र गद अंबुज धारी ॥
द्विभुज कान्हको रूप न देख्यो ❋ मुरली लकुट पाणि नहिं पेख्यो ॥
नाहिं मुकुट शिर मोरपखौवा ❋ कटि काछनी न गुंज हरौवा ॥
नहीं भेष नटवर गोपाला ❋ भये विरहवश तब सब ग्वाला ॥
ब्रजवासी सो रूप उपासी ❋ तास्वरूप बिन भये उदासी ॥

दो०-अकुलाने दृग सबनके, देखनको तिहिं काल ।
मोरपंख धर गुंज धर, मुरली धर गोपाल ॥

१ हीराकीपृथ्वी । २ तलाव । ३ अमृत । ४ सीढी । ५ पक्षी । ३ कमळ । ७ नेत्र ।

सो०-ब्रज बासिनके ध्यान, नटवर वेष गोपालको।
अमितरूप भगवान, तदपि उपासन रूप यह॥
विरह विवश हरि ब्रजजन जाने ❋ तबहीं तुरत सकल ब्रज आने॥
कान्ह देखि सब भये सुखारी ❋ रहे चकित शशिबदन निहारी॥
कहत सबै मन अचरजपाये ❋ कहाँ गये हम कैसे आये॥
देख्यो स्वप्न सबै इकबारा ❋ किधौं साँच यह करत विचारा॥
यह चरित्र सब मोहन करहीं ❋ पुर वैकुंठ दिखायो हमहीं॥
धन्य धन्य हम सब ब्रजवासी ❋ ब्रह्म हमारे संग विलासी॥
हरिके चरण परश सब धाई ❋ करत गोप सब मुखन बडाई॥
नंदि हँसि सबसों कहत कन्हाई ❋ रहे कहाँ तुम सकल भुलाई॥
हरिके कहाँ ऐसो तुम देख्यो ❋ सोकिन मोसों कहतविशेख्यो॥
विप्रन कह देखत नंददुलारे ❋ तुमहीं सकल दिखावन हारे॥
गावलु नाके पताल निहारो ❋ सकल जगत तुम्हरो विस्तारो॥
नंद सुनि श्याम मंद मुसकाई ❋ दिये सकल पुनि मोह भुलाई॥
दो०-करत चरित्र विचित्र प्रभु, ब्रजवासिनके माहिं।
लखि लखि शिवब्रह्मादिसुर, मुनि जन मनहिं सिहाहिं॥
सो०-अति आनँदब्रजलोग, हरिकेनितनव चरितलखि।
सबको सब सुखयोग, ब्रजवासी प्रभु नंदसुत॥
सदा श्याम भक्तन सुखदाई ❋ भक्तन हित अवतार सदाई॥
संकटमें जन जहां पुकारैं ❋ तहां प्रगटि तिनको निस्तारैं॥
मुख भीतर जिनसुमिरण कीन्हों ❋ तिनको तहां दरश हरि दीन्हों॥
सुख दुखमें जो हरिको ध्यावैं ❋ तिनको नेक न हरि बिसरावैं॥
देव दनुज खग मृग नरनारी ❋ भक्तविवश सबते गिरिधारी॥
चितदै भजै भाव जो जैसे ❋ ताको होत प्रगट हरि तैसे॥
ब्रह्मा कीट आदिके स्वामी ❋ प्रभु हैं निरलोभी निःकामी॥
वेद पुराण साखि सब बोलैं ❋ भाववश्य सबके सँग डोलैं॥

१ स्वर्गलोक। २ दैत्य।

कामभाव ब्रज गोपी ध्यावें ❀ मन वच क्रम हरिसों मनलावें ॥
इक क्षण हरिको नाहिं बिसारें ❀ भौन काज चित हरिसों धारें ॥
गोरसलै निकसैं ब्रजमाहीं ❀ जहाँ श्याम तेहि मारग जाहीं ॥
तिनके मनकी प्रीति विचारी ❀ रीझे गोपीजन मनहारी ॥
दो०-नवसत साजि शृँगार तन, गोरस लै ब्रजनारि ।
बेंचन इहिं मग आवहीं, मोसों प्रीति बिचारि ॥
सो०-अब इन संग विहार, करौं दान दधि लायकै ।
यह मन कियो विचार, हरि ब्रजमोहन लाडिले ॥

अथ दानलीला.

दधिको दान रचौं इकलीला ❀ भक्तनकी सुखदायक शीला ॥
दधिदानी निजनाम धराऊं ❀ ब्रज युवतिन मन सुखउपजाऊं ॥
श्याम सखन तब लियो बुलाई ❀ सबसों कहि यह बात सुनाई ॥
ब्रजयुवती नित गोरस ल्यावें ❀ या मारगह्वै बेंचन आवें ॥
तिन्हें खिझाय दान दधि लीजे ❀ गोरस खाय जान तब दीजे ॥
यह सुनि सखा उठे हरषाई ❀ भली बात तुम श्याम सिखाई ॥
सबहिन मन अति हर्ष बढायो ❀ कहत श्याम दधिदान लगायो ॥
तबहिं जाय घेरयो बन घाटा ❀ आवत नित ग्वालिनि यहि बाटा ॥
कह्यो श्याम सबसों समुझाई ❀ रहो तरुनकी ओट लुकाई ॥
जबहीं ग्वालिनि दधिलै आवे ❀ घेरि लेहु कोउ जान न पावें ॥
यह सुनि सखा घेरिकै बाटा ❀ बैठे ठाटि ठगनको ठाठा ॥
उतते बनि बनि ग्वालि नबेली ❀ बेंचन दधिहि चलीं अलबेली ॥
दो०-हँसत परस्पर आपमें, चलीं जाहिं जिय मोर ।
पाय घातमें सघन सब, घेरिलई चहुँ ओर ॥
सो०-देखि अचानक भीर, चकित रहीं चहुँदिशि चितैं ।
सहमी कछुक शरीर, कितते आये ग्वाल सब ॥
शंकित ह्वै ग्वालिनि भईं ठाढ़ी ❀ मनहुं चित्र कीसी लिखि काढ़ी ॥

१ मार्ग । २ वृक्षनकी । ३ छिपरहो ।

हाथ पांव अँग भये अडोले ❀ कछू वदन ते वचन न बोले ॥
तहँ हँसि ग्वालिनि दियो जनाई ❀ मति डरपो जिय कान्ह दुराई ॥
इहाँ चोर ठग कोऊ नाहीं ❀ अभय कान्हको राज सदाहीं ॥
आवत जात न भय कछु कीजे ❀ दधिको दानलगै सो दीजे ॥
नाम कान्हको जब सुनि पायो ❀ तब युवतिन मन धीरज आयो ॥
बोलीं बिहँसि तबहिं ब्रजबाला ❀ कहाँ तुम्हारे प्रभु नँदलाल ॥
चोरी करि नहिं पेट अघायो ❀ अब बनमें दधि दान लगायो ॥
तब अति बालकहते कन्हाई ❀ सही जु कछु कीन्हीं लरिकाई ॥
होउ जो कछु वा धोखे माहीं ❀ परिहै समुझि अबहिं क्षणमाहीं ॥
प्रगट भये तब कुँवर कन्हाई ❀ देखि सबन बोले मुसकाई ॥
रहि युवती तुम पोच सदाई ❀ करि आई हौ बहुत ढिठाई ॥

दो०—तबलौं हम लरिका हुते, सही बात अनजान ।
सो धोखो अब मेटिकै, छाडि देहु अभिमान ॥
सो०—हम मांगत दधि दान, तुम उलटी पलटी कहत ।
करत नन्दकी आन, दिये पाइहौ जान सब ॥

तब बोलीं ग्वालिनि सुमकाई ❀ अब तुम डर हम तजी ढिठाई ॥
नन्दहुते कछु तुम्हें कन्हाई ❀ भयो जानिये तब अधिकाई ॥
कालिहहि चोरि चोरि दधि खाते ❀ घर घर देखतही भजिजाते ॥
रातिहि भयो स्वप्न कछु आई ❀ प्रातहि भई आज ठकुराई ॥
भली कही नहिं ग्वालिनि बानी ❀ तुम यहबात कछू नहिं जानी ॥
पिता चरित धन धाम जु होई ❀ पुत्रकाज आवत है सोई ॥
तुमसी प्रजा बसाई गाँवहिं ❀ तौ हम ठाकुर क्यों न कहावहिं ॥
कह्यो तबहिं ग्वालिनि झहराई ❀ बात सँभारे कहत कन्हाई ॥
ऐसो को बहिगयो हमारे ❀ जो परजा ह्वै बसहि तुम्हारे ॥
कंस नृपतिके सब कहवावैं ❀ कहा भयो जु बसत इक गावैं ॥
जो तुम याते हौ गरुवाने ❀ तौ अब तजि हैं गाँवबिहाने ॥

१ तमक । २ प्रातःकाल ।

यह सुनि विहँसि कह्यो वनमाली ❃ कहा बात यह कहत गुवाली ॥
दो०-गाँव हमारो छांडिकै, बसिहौ का पुर माहिं ।
ऐसोको तिहुँ लोकमें, जो मेरे वश नाहिं ॥
सो०-का गनतीमें कंस, जाके हम कहवावहीं ।
देहु दानको अंस, रारि करत बेकाजहीं ॥
बडी बात छोटे मुखमाहीं ❃ आप सँभारि कहत हौ नाहीं ॥
तीनि लोक अस कंस भुवाला ❃ भयो तिहारे वश केहिकाला ॥
यह तुम बात कहौ तिनमाहीं ❃ जो कोउ तुमको जानत नाहीं ॥
हम इन बातन भय नहिं मानें ❃ जैसे हौ तुम तैसे जानें ॥
हमसों लीजै दान सवाई ❃ पहिले थैली लेहु मँगाई ॥
पीताम्बर वोझन फटि जैहै ❃ तब पाछे पछितावो ऐहै ॥
ऐसे कहि ग्वालिनि मुसुकानी ❃ तब बोले हरि दधिके दानी ॥
तू ग्वालिनि हमको कह जानें ❃ हम नहिं झूंठी बात बखानें ॥
झूंठी हौ तुमहीं सब ग्वारन ❃ सतर होति हौ बिनहीं कारन ॥
अजहूं मानि कह्यो किन लेहू ❃ लेखो करो दान मम देहू ॥
नन्द सौंह यों जान न देहौं ❃ बहुरो छोरि दही सब लैहौं ॥
काहेको अठिलात कन्हाई ❃ छांडि देहु मोहन लरिकाई ॥
दो०-पहिली परिपाटी चलौ, नई चलौ क्यों आज ।
जानि पाइहैं कंस जो, तौ पुनि होय अकाज ॥
सो०-हँसी घरी द्वै चारि, बीतन लाग्यो यामयुग¹ ।
बनमें रोंकी नारि, बाढि जाइहै बात पुनि ॥
कहा कंस कहि मोंहि सुनावो ❃ अबहीं वाको जाय बुलावो ॥
लरिका कहिकहिमोहिं बखानत ❃ मेरी लरकाई नहिं जानत ॥
मारि पूतना स्वर्ग पठाई ❃ तृणावर्त महि दियो गिराई ॥
वत्सा बका अघासुर मार्‌यो ❃ गिरि गोवर्द्धन कर पर धार्‌यो ॥
ऐसी है मेरी लरिकाई ❃ जानि बूझि तुम देत भुलाई ॥

१ दोमहर ।

तुमहीं हँसी करति हौ ग्वारी ❋ देत देवावति हौ हठि गारी ॥
बात जानिकै भाषत नाहीं ❋ आपहि बैठी हौ बनमाहीं ॥
चोरी सदा बेंचि दधि जाहू ❋ बिनादान क्यों होत निबाहू ॥
अबतो आज पकरि मैं पाई ❋ सबदिवसनको लेहुँ चुकाई ॥
सबै भली तुमकरी कन्हाई ❋ बधे असुर सो सुनी बडाई ॥
गिरि धारचो बलिखाय हमारि ❋ जानी हम सब बात तुम्हारी ॥
मांगि लेहु अबहूं दधि खाहू ❋ होत दान सुनि हमको दाहू ॥
दो०—हमैं कहत हौ चोरटी, आप भयो जो साह ।
बडे भये चोरी करत, अब लूटत हौ राह ॥
सो०—लेहु दही बलिजाउँ, हमको होत अबार अब ।
लिये दानको नाउँ, एक बूँद नहिं पाइहो ॥
यह तुम मोको कहा सुनाई ❋ दधि माखन सब लेहुँ छिनाई ॥
यौवन रूप अंग जो तुम्हरो ❋ ताको दान लेउँगो सिगरो ॥
कंचन भार युवति तुम सगरी ❋ आवति जाति हमारी डगरी ॥
दही मही मोको दिखरावो ❋ ताहि न यौवन रूप बतावो ॥
अंग अंगको दान गिनावो ❋ लेखो करि सब मोहिं चुकावो ॥
यह सुनि सब ग्वालिनिझहरानी ❋ भये कान्ह तुम ऐसे दानी ॥
अंग अंगको दान चुकावत ❋ यौवन रूपहि दीठि चलावत ॥
जानि परी प्रगटी तरुणाई ❋ यशुमति सों अब कहिहौं जाई ॥
उर आनँद ऊपर रिस करिकै ❋ चलीं सबै मटुकी शिर धरिकै ॥
तब हरि पीतांबर कटिकसिकै ❋ धरचो धाय आँचरपट हँसिकै ॥
रिसकै मटुकी लई छुडाई ❋ दधि माखन सब दियो लुटाई ॥
गहि गहि भुजा सबन झकझोरी ❋ अँगिया फारि तनी गहि तोरी ॥
दो०—कहत कह्यो मानत नहीं, ढीठ भई सब आय ।
दान देत झगरो करत, यौवन रूप लदाय ॥
सो०—जो कहिहौ घर जाय, जननी नहीं पत्यायहै ।
आवहुगी पछिताय, निबहौगी पुनि कालिहकिमि ॥

१ दिननको । २ कमर । ३ यशोदामैया ।

भये कान्ह तुम निपट दुलारे ❋ देखहु फारे बसन हमारे ॥
तापर मांगत यौवन दाना ❋ यह अबलों कहुं सुन्यो न काना ॥
दधि माखन सब दियो लुटाई ❋ चलो कहैं यशुमति सों जाई ॥
यहकहि ग्वालि चलीं सब रिसभरि ❋ अबहिंमँगावत हैं तुमको धरि ॥
यह सुनि हरि हँसि भौंह सिकोरी ❋ गई उरहनो लै सब गोरी ॥
यशुमति सों सब जाय सुनायो ❋ कहा महरि सुतको सिखरायो ॥
अतिही कान्ह भये अब ईतर ❋ रोंकत युवतिनको बन भीतर ॥
दही दूध सब दियो लुढाई ❋ मागत यौवन दान कन्हाई ॥
चोली फारि हार सब तोरे ❋ गहि गहि आँचर पट झकझोरे ॥
ऐसो को कुल भयो महरिके ❋ यौवन दान लियो जिन अरिके ॥
नित उतपात जात सहि नाहिन ❋ कहँलगि पीयर बन दे दाहिन ॥
कैसे गोरस बेंचन जैये ❋ हरिपै मारग चलन न पैये ॥

दो०–सुनत ग्वालिनीके वचन, बोली यशुमति मात ।
मैं जानी तुम सबनके, उर अन्तरकी बात ॥
सो०–आप फिरत इतरात, कहत श्याम ईतर भयो ।
उर[1]न लाय नखघात, उरहनको दौरी फिरत ॥

दशहि वरषको कहाँ कन्हाई ❋ कहँ सब तुम माती तरुणाई ॥
दोष लगावत श्यामहिं आनी ❋ कैसे धौं कहि आवत बानी ॥
हरिपर फिरत सबै मडरानी ❋ यौवन मदमाती अठिलानी ॥
तुमको लाज लगति है नाहीं ❋ जाहु सबै बैठो घर माहीं ॥
अहो महरि ऐसो नहिं कीजै ❋ बिन बूझे गारी नहिं दीजै ॥
सुत ऐसो मग चलन न देही ❋ मांगत दान लूटि दधि लेही ॥
तुमहूँ खीझ करत सुतओरी ❋ ऐसे ब्रजमें बसिहैं को री ॥
तजि हैं आजहिं गाँव तिहारो ❋ बहुरि न सुनि हो नाम हमारो ॥
ऐसे कहा कहत डरपाई ❋ बसत नहीं किन अनतहि जाई ॥

---

१ छातीपर ।

मेरो कहा कछू घटि जैहै ❋ झूंठी बात नहीं कोउ सैहै ॥
यौवन दिन द्वै सबहिन बोरी ❋ तुम बांधति आकाशहि डोरी ॥
मोसों कहति आप तुम जैसी ❋ को पतियाय बात सुनि तैसी ॥
दो०-बोलत नहीं सँभारि तुम, सब मिलि भई गवाँरि ।
ऐसी कैसे हरि करैं, वृथा बढावति रारि ॥
सो०-महरि मनहिं रिसियाय, हम झूँठी भाषैं नहीं ।
जो तुम नहिं पतियाय, बूझि न देखो आनसों ॥
तुम सुतके कर्मन नहिं जानो ❋ हठकरि टेक आपनी मानो ॥
दश गायन करि कहा बडाई ❋ अहिर जाति सब एकहि माई ॥
महाढीठ हरि मानत नाहीं ❋ बनमें झगरत गहि गहि बाहीं ॥
सखा भीर सँग लीन्हे डोलैं ❋ बन कुञ्जनमें करत कलोलैं ॥
नेकु सकुच शंका नहिं आनैं ❋ सोई करत जो कछु मन मानैं ॥
यह सुनि कहत नंदकी नारी ❋ कहत गैलकी बात इहांरी ॥
और चली कह इहां जातकी ❋ मुहिं रिस सुनिअनमिलतबातकी ॥
कहां बसत तुम कहां कन्हाई ❋ कब हरि बांहगही बनजाई ॥
कहत बात नहिं नेक लजाहू ❋ सुनिहैं कहीं तिहारे नाहू[1] ॥
मेरो कान्ह अबहिं अतिबारो ❋ तुम नहिं अपनी ओर निहारो ॥
ऐसी बात कहति हो आई ❋ झूंठो दोष सह्यो नहिं जाई ॥
नेकु नहीं डर करत ईशको[2] ❋ मनों भयो हरि वर्ष बीशको ॥
दो०-धन्य धन्य तुम कहति हौ, मोको आवति लाज ।
माखन मांगत रोय हरि, दोष देति बिन काज ॥
सो०-सुनहु महरि तुम बात, हरि सीखे टोना कछू ।
बनहिं तरुण ह्वै जात, बालक ह्वै आवत घरहिं ॥
एक दिवस किन देखो जाई ❋ वनमें तरुकी ओट छिपाई ॥
हैं हरि दश कै बीश वरखके ❋ देखहु अपने नयन निरखके ॥
जाहु चली मैं सब देख्यों है ❋ एक एक दिन करि लेख्यों है ॥

१ तुम्हारे पति । २ परमेश्वरको ।

दश अरु बीश बनावन आई ❀ डीठ लगावति है घरमाई ॥
जरहिं बरहिं ये आंख तुम्हारी ❀ जो हरिको नहिं सकत निहारी ॥
आप करत ढिग चरचा जाई ❀ मोको साखि दिखावन आई ॥
अहो महरि कहिये का तुमसों ❀ कहे बिलग मानत हौ हमसों ॥
सुतकी कानि मानि तुम लीन्ही ❀ गारी कोटिक हमको दीन्हीं ॥
हमें कहा मोहन प्रिय नाहीं ❀ जीवहु युग युग हरि ब्रजमाहीं ॥
कहा करैं जब बहुत खिझावैं ❀ तब हम तुमहिं कहनको आवैं ॥
भलो बोध हमको तुम कीन्हों ❀ उलटहि दोष हमारो दीन्हों ॥
सुतको हटकत नेक न माई ❀ हमहीं सों रिस करति सदाई ॥
दो०-कहा करौं तुम आय सब, कहत अटपटी बात ।
मोको यह भावै नहीं, तरुणिन यहै सुहात ॥
सो०-मन आपन गुणिलेहु, तुम तरुणी हरि तरुण नहिं ।
समुझि उरहनो देहु, ऐसी मोसों मति कहौ ॥
महरि वचनसुनि ग्वालिनि सगरी ❀ निरउत्तर ह्वै घरको डगरी ॥
यह यशुमति गोपिनको झगरो ❀ कृष्ण प्रेम रस[1] सागर सगरो ॥
कहत सुनत भक्तन सुखदाई ❀ ब्रजवासीजन जीवन गाई ॥
ब्रज घर घर सबहिन सुनिपाई ❀ मोहन दधिको दान लगाई ॥
सब गोपिन मिलि रुचि उपजाई ❀ जैये दधि लै जहां कन्हाई ॥
यह अभिलाष सबन मन बाढ्यो ❀ राख्यो गुप्त न बाहिर काढ्यो ॥
श्याम सखनको लियो बुलाई ❀ कह्यो सबनसों यों समुझाई ॥
काल्हि उठहु सब ग्वाल सबेरे ❀ चलिकै वृन्दावन मग घेरे ॥
प्रातहि यमुनाके तट जाई ❀ तरु चढि चढि सब रहौ लुकाई ॥
ब्रजयुवती मिलि आपसमाहीं ❀ नितप्रति दधि बेंचनको जाहीं ॥
राधा चन्द्रावलिको यूथा ❀ ललितादिक नागरी बरूथा ॥
गोरस लै जबहीं सब आवैं ❀ घेरि सबन तब दान चुकावैं ॥
दो०-सुनि मन हर्षे ग्वाल सब, भली कही हरि बात ।

१ चलीं । २ इच्छा । ३ झुंड ।

सांझ भई चलिये सदन, कालिह उठहिंगे प्रात ॥
सो०-निज घर घरसब आय,मात पिताको सुखदियो ।
सोये सुखसों जाय, रुचिसों भोजन खायकै ॥

प्रात उठे सब गोप कुमारा ❀ जहँ तहँ बोले खुले किवाँरा ॥
सुनी श्याम ग्वालनकी बानी ❀ जागतहू सोवत पटतानी ॥
नंदद्वार बैठे सब आई ❀ आवहु उठि घनश्याम कन्हाई ॥
ग्वाल टेर सुनि यशुदामाता ❀ दिये जगाय श्याम सुखदाता ॥
मात वचन सुनि अति अतुराई ❀ उठे सेजते कुँवर कन्हाई ॥
लै पटपीत मुकुट शिरधारी ❀ मुरली करलै चले मुरारी ॥
सखन सहित यमुनातट आये ❀ कहत सबनसों अतिसुख पाये ॥
भली करी उठि प्रातहि आये ❀ मैं जानत सब तुमन बुलाये ॥
आवतह्वैहैं अब व्रजभामिनि ❀ घर घरते दधि लै गजगामिनि ॥
हँसे सखा सब तारि बजाई ❀ मनमें अतिआनन्द बढ़ाई ॥
कहत सबनसों हँसि नँदलाला ❀ जाय द्रुमन सब चढो गुवाला ॥
मुँहमूंदे सब रहौ छिपाने ❀ जिहिंविधि युवति न कोऊ जाने ॥

दो०-जबहीं जान्यो युवति सब, आई वनहिं मँझाय ।
कूदिपरो तब द्रुमनते, दे दे नंद दुहाय ॥
सो०-शंख शब्द घहराय, कीजै मुरली शृंग धुनि ।
उरन जाहिं अकुलाय, जैसे युवतीगण सबै ॥

घेरि सबन इहिं विधि डरपाई ❀ बहुरि तिन्हैं कहियो समुझाई ॥
नितहिं हमारे मारग आई ❀ दधिमाखन बेचत हौ जाई ॥
हरिको दान मारि नित जावो ❀ आज दियेबिन जान न पावो ॥
ऐसे श्याम सखन समुझावत ❀ अपने मनकी प्रीति बढावत ॥
व्रजवनितन लखिकै सुख पाऊं ❀ तुमसों नाहिंन कछू दुराऊं ॥
यहि मारग बेंचन दधि आवैं ❀ अन्तरगति मोसों हित लावैं ॥
आवत ह्वैहैं बन सब बाला ❀ करत बात ऐसे नँदलाला ॥

प्रात उठीं सब गोप किशोरी ❁ चित्र विचित्र वसन तनु धोरी ॥
अंग अंग आभूषण साजैं ❁ केश सवाँरि चारु दृग आँजैं ॥
अँगिया अंग अनूप सवाँरी ❁ चित्र विचित्र बसन तनु धारी ॥
बेंदी भाल मांग मोतिनकी ❁ अंग अंग छबि नगज्योतिनकी ॥
दशनदमक अधरन अरुणाई ❁ चिबुकनीलकनकी छबिछाई ॥

दो०-गोरे तनु मुख छवि सदन, नव यौवन ब्रजनारि ।
लै लै दधि निकसीं सबै, सुखमा बढी अपारि ॥

सो०-ब्रजके खेड़े जाय, भईं ग्वालिनि इकठौर सब ।
निज निज यूथ बनाय, दधि मटुकी शिरपरधरे ॥

बेंचन दही चलीं ब्रजनारी ❁ षटदश सहस गोप सुकुमारी ॥
सबके मन मग मिलहिं कन्हाई ❁ कहत न एकहि एक जनाई ॥
करत जाहिं गुणगान विहारी ❁ पगनूपुरकी धुनि अति भारी ॥
हरि जानी युवती आवत जब ❁ कह्यो सखन द्रुम जाय चढो अब ॥
सुनत श्यामके मुखसों बैना ❁ धाय चढी द्रुम बालकसैना ॥
पञ्चसहस्र सखा समुदाई ❁ जहां तहां द्रुम रहे लुकाई ॥
कछुक ग्वाल सँगराखि कन्हाई ❁ निकसिगये आपुन अगुआई ॥
ठाढे भये घेरि बनघांटी ❁ लैलै करन सुमनकी सांटी ॥
इहि अन्तर आईं ब्रजनारी ❁ देखत बन लाग्यौ कछु भारी ॥
पाछेहींते लई हँकारी ❁ कहत तिन्हैं अबहीं तुम हारी ॥
एकसंग जुरिभईं तरुणि तब ❁ इतउतचकित चलीं चितवतसब
आगे दृष्टिपरे नँदनंदन ❁ मुकुटशीश तनुचित्रित चंदन ॥

दो०-लिये सखा सँग मग गहे, ठाढे यमुना तीर ।
ठिठुकि रहीं युवती सबै, लखि ग्वालनकी भीर ॥

सो०-भयो हर्ष उरमाहिं, कहत वचन मुख भयसहित ।
आगे कैसे जाहिं, मगमें ठाढो सांवरो ॥

* सबकी सुरति श्यामकीओरी । १ मस्तक । २ दांत । ३ होठ । ठोडी ४ । ५ पांचहजार । ६ फूलकी छड़ी ।

कोऊ कहत चलत क्यों नाहीं ❀ कोऊ कहत घरहि फिरि जाहीं ॥
कोउ कहै का करै कन्हाई ❀ इनहूं सों कहँ जाहिं पराई ॥
कोऊ बोलि उठी ब्रजबाला ❀ लूटिलई हमै कालिह गुपाला ॥
अतिही ढीठ भयो है कान्हा ❀ मांगत है गोरसको दाना ॥
सुनि ऐसे मोहनको ख्याला ❀ घरको फिरीं सकल ब्रजबाला ॥
तब हरि ग्वालन सैन बताई ❀ कूदहु विटपन ते झहराई ॥
जात फिरीं युवती ब्रज गाँवहिं ❀ घेरिलेहु कोउ जान न पावहिं ॥
तब ग्वालन बनमें चहुँधाई ❀ झर झराय तरुडार हलाई ॥
शंख मृदंग मुरलि करतारी ❀ कीन्हें शब्द सबन यकबारी ॥
चकित द्रुमन चितईं सब बाला ❀ डारन डारन देखे ग्वाला ॥
कूदि कूदि तरुतरुते धाई ❀ घेरिलई तरुणी सब जाई ॥
कहा नितहि दधि बेंचन जाहू ❀ आज पकरि पायो सब काहू ॥

दो०—दान लगत ह्यां श्यामको, सो सब लेहिं चुकाय ।
अब तौ देहैं जान तब, तुमको नन्ददुहाय ॥

सो०—दधि लै जात प्रभात, आवति हौ निशि बेंचिकै ।
दान मारि नित जात, भली करत यह बात नहिं ॥

ठाढे यमुना तीर कन्हाई ❀ जाहु चली निज दान चुकाई ॥
यह सुनि बिहँसि कह्यो इक ग्वाली ❀ नई बात इक सुनहु रि आली ॥
मांगत दधिको दान मुरारी ❀ सिखै पठाये हैं महतारी ॥
सो ये सखा लेन सब आये ❀ यमुना तटते श्याम पठाये ॥
काहेको सब मिलि इतराहू ❀ सूधे अपने मारग जाहू ॥
दधि माखन कछु चाहत कोऊ ❀ सूधे मांगिलेत किन सोऊ ॥
सूधी बात कहौ सुख होई ❀ बांधत कहा अकाश खरोई ॥
दान बजार हाटमें पावो ❀ यह निज कान्हैं जाय सुनावो ॥
बोले सखा सुनहुं री ग्वारी ❀ हमजानी अब बात तुम्हारी ॥
गाँव बसेकर यह दुख होई ❀ नहिं सकात चीन्हे सों कोई ॥

भानिकै । २ वृक्षवृक्षते । ३ दुकान ।

मारग अपनो दान उगाहू ❋ कहत मांगि किन हम पै खाहू ॥
हाट बाट सब हमहिं उगैहैं ❋ अपनो दान तुमहुं पै चैहैं ॥

दो०—लेखो करि सब कान्हको, दीजै दान जगात ।
चली जाहु सुखसों डगर, फेरि कहै कोउबात ॥

सो०—तुमको कैसो दान, कौन कान्ह मांगत कहा ।
परि है अबहीं जान, रोंकत हौ वनमें तियन ॥

आये तबहीं निकट कन्हाई ❋ संग सखनकी भीर सुहाई ॥
बोलि उठीं लखि नागरि सगरी ❋ कहा श्याम तुम करत अचगरी ॥
नारिनको रोंकत हौ वनमें ❋ जै है बात दूरिलौं छनमें ॥
आजहि दान पहिरि तुम आये ❋ कहा छापिकानि तुमहिं पठाये ॥
वैसी चाल चलो नँदलाला ❋ चलत बाप तुम्हरो जिहिंचाला ॥
वृथा न रारि करहु बनमाहीं ❋ छांडि देहु दधिबेंचन जाहीं ॥
कहत कान्ह दधि दान न दैहौ ❋ विना दान दीन्हे नहिं जैहौ ॥
लैहौं छीनि दूध दधि माखन ❋ देखतही रहिहौ सब आंखन ॥
मात पितालौं उघटत बानी ❋ नहिं जानत मोको दधिदानी ॥
जात नितहि नित बेंचि चुराई ❋ सब दिवसनको लेहुँ भराई ॥
मांगत छाप कहा दिखराऊँ ❋ काको तुमको नाम बताऊँ ॥
ऐसो को मोको नहिं जानत ❋ एक नहीं मोको तुम मानत ॥

दो०—नीके हम जानत तुम्हें, गोद खिलाये कान्ह ।
वे दिन अब बिसराय सब, भये जगाती आन ॥

सो०—करहु नहीं लगि बात, जो निब है सुख पाइये ।
ऐसी क्यों सहिजात, नितहि हमैं दधि बेंचनो ॥

अजहूँ मांगिलेहु दधि दैहैं ❋ खाहु सहजमें हम सुख पैहैं ॥
दान वचन तुम हमहिं सुनायो ❋ यहै हमैं सुनिके नहिं भायो ॥
होत अबार जान अब दीजै ❋ नई रीति मोहन नहिं कीजै ॥
गोरस लेत प्रात सब कोई ❋ बहुरि धरयो रहिहै ऐसोई ॥

दान दिये बिन जान न पैहो ❋ जब देहौ तबही सब जैहौ ॥
तुमसों बहुत लेन है हमको ❋ सो नाहिं अबहिं सुनावत तुमको
नितहि हमारे मारग आवत ❋ मोको कबहूं नाहिं जनावत ॥
दिन दिन को लेखो भरि लेहौं ❋ अब तौ तुम्हें जान तब देहौं ॥
ऐसी हठ कह करत मुरारी ❋ वनमें रोंकत नारि पैरारी ॥
आये दान पहिरि तुम कापै ❋ चलहु न हम सब चलिहैं तापै ॥
तुम अपने घरहीके राजा ❋ सबको राजा कंस विराजा ॥
जो कहुँ सुनत नेकुसी पैहै ❋ बहुरि सँभार अबहि परि जैहै ॥

दो०—हम गुहरावैं जाय कहँ, बसत तुम्हारे गांव ।
ऐसी विधि जो कहत हौ, को रहि है यहि ठांव ॥

सो०—करत फिरत उतपात, लिये सखा सँग सेंतके ।
नाहिंन नेक डरात, कठिन कंसको राजहै ॥

यह सुनि कान्ह उठे रिसियाई ❋ लीन्हों कछु दधि दूध छिनाई ॥
बसन छोर तरु सों उरझाये ❋ कछु दधि भाजन भूमि लुढाये ॥
कहत जाय कंसहि गुहरावो ❋ आजहि मोहिं हजूर बुलावो ॥
मारौं एक पलकमें वाही ❋ मोको कहा बतावत ताही ॥
अब तो मोसों वैर बढायो ❋ लेहौं दान आपनो भायो ॥
मेरे हट क्यों निबहन पैहो ❋ देखो अब धौं कैसे जैहो ॥
तुम देखत रहिहो हम जैहें ❋ गोरस बेंचि बहुरि घर ऐहें ॥
बोले ज्वाब न तुमको देहैं ❋ नेकहु तुमसे नाहिं डरैहें ॥
सुनि गृहते जन ऐहैं जबहीं ❋ नहिं सँभारि सकिहौ हरि तबहीं ॥
एक बूंद गोरस नहिं पैहौ ❋ देखत ऐसेही रहि जैहौ ॥
धरिकै यशुमति पै लै जैहें ❋ तहां श्याम पुनि वचन न ऐहें ॥
मानो कह्यो हमारो अबहूं ❋ हम पै दान न पैहौ कबहूं ॥

दो०—गृहजन कहा बतावहू, कंसहि लेहु बुलाय ।
देखतही तुम सबनके, पूजा करौं बनाय ॥

१ पराई । २ पुकारैंगी ।

सो०–जैहौ धौं केहि भाँति, अब देखहुँ गो मैं तुम्हैं ।
बात कहत अनखाति, सूधे देती दान नाहिं ॥

जो मानत नहिं कंसहि राजा ❀ तौ अब भये तुमहिं ब्रजराजा ॥
तौ सिंहासन बैठत नाहीं ❀ गाय चरावत कत बन माहीं ॥
मोर पखनको मुकुट उतारो ❀ नृपकिरीट माथे पर धारो ॥
पहिरत कहा गुंजके हारा ❀ नृपभूषण किन करत शृँगारा ॥
छत्र चमर शिर ऊपर राजैं ❀ तजहु मुरलि अब नौवत बाजैं ॥
हमहूं यह लखिके सुखलीजे ❀ संगहि संग काज कछु कीजे ॥
झगरत कहा दहीके काजा ❀ लखि हमको उपजत है लाजा ॥
ओछी बुद्धि तुम्हारी तीकी ❀ तुम्हरे चित रजधानी नीकी ॥
मेरो दासन दास कहावै ❀ सपनेहूं यह ताहि न भावै ॥
कंस मारि शिर छत्र धराऊं ❀ कहा तुच्छ यह साध पुराऊं ॥
ब्रजमें मेरो राज सदाई ❀ और इहां काकी ठेकुराई ॥
तुम कछु राज बडो करि मानो ❀ मेरी प्रभुताको नहिं जानो ॥

दो०–हमहूं जानतहैं तुमहिं, लरिकाई ते कान्ह ।
काहेको अपने वदन, कीजत बहुत बखान ॥

सो०–फिरत चरावत गाय, कांधे कामरि कर लकुट ।
देखीहै ठकुराय, कत बढि बढि बातैं करत ॥

यह कमरी कमरी तुम जानो ❀ जितनी बुधि तितनो अनुमानो ॥
यापर वारौं चीर पटम्बर ❀ तीनलोककी यह आडम्बर ॥
ब्रह्मा भूल्यो जाहि निहारी ❀ सो कमरी कत निंदत ग्वारी ॥
कमरीके बल असुर सँहारौं ❀ कमरीते संतन उद्धारौं ॥
या कमरीते सब सुख भोगा ❀ जाति पाँति यह मम सब योगा ॥
सुनत हँसीं सब ब्रजकी बाला ❀ यह तुम सांच कही गोपाला ॥
धनि धनि यह कामरी तुम्हारी ❀ सब विधि तुम्हैं निबाहनहारी ॥
यहे ओढिके गाय चरावो ❀ यहे सेज करि भूमि बिछावो ॥

१ चिरमिठी । २ मालकी ।

याहीते वर्षा¹ऋतु टारो ❀ शिशिर शीत याते निर्वारो ॥
याते ग्रीषम² घाम बचावो ❀ यहै उठगनी शीश बनावो ॥
यहै जानि यह गृह यह टारी ❀ यहै सिखावत सब परिपाटी ॥
हमजो कहन चहतही तुमसों ❀ कही सो तुम अपने मुख हमसों ॥
दो०—कही जात अपनी प्रगटि, नीके हमैं हँसाय ।
तापर मांगत दान दधि, युवतिन रोंकि कन्हाय ॥
सो०—कामरि ओढनिहारि, तुम्हैं न छाजत पीतपट ।
कारे तनु परचारि, कारी कामरि सोहई ॥
मोसों बात सुनो ब्रजतिय अब ❀ सत्य कहत उपमा न जगत सब ॥
बालक अरु तिय मुख नहिं दीजे ❀ इन सों बहुत हेतु नहिं कीजे ॥
गँड चढत नेकहि चुचकारैं ❀ जो मनकरे सोई करि डारैं ॥
ोई गुण प्रगटत तुम जाहू ❀ कतक कहतमें तुम अठिलाहू ॥
जानहु कहा हमैं तुम ग्वारी ❀ सदा छाँछकी बेचनहारी ॥
सुनहु कान्ह हम तुमको जानैं ❀ नंद महरके सुत पहिचानैं ॥
धेनु दुहत पुनि तुमको देखे ❀ गाय चरावतहू बन पेखे ॥
चोरी करी वहौ पुनि जाने ❀ खरिका खोलत फिरत बिराने ॥
ये ढँग छांडि भये अब दानी ❀ यहै बात अब सबहिन जानी ॥
और सुनहु यशुमति जब बाँधे ❀ ऊखल सों दोऊ भुजसाधे ॥
तब सहाय करि हमहिं बचाये ❀ करके बंधन जाय छुडाये ॥
जानत यहै रहत ब्रज माहीं ❀ हम ते दूरि बसत कछु नाहीं ॥
दो०—कहत कहा तुम बावरी, हँसी लगत सुनिबात ।
कब जनमत देख्यो हमैं, कौन मात को तात ॥
सो०—कबै चराई गाय, कत चोरी पकरचो हमैं ।
कब बाँधे हम माय, दुही गाय किन कौनकी ॥
जानहु मुहिं यशुमति जाये ❀ यशुमति नंद कहाँते आये ॥
तुम पूरण अविगति अविनासी ❀ बांधे सब मायाकी फांसी ॥
मैं

१ शरदीको । २ गरमीम ।

यह सुनि हँसीं सकल ब्रजबाला ❋ ऐसेउ गुण जानत गोपाला ॥
जैसे निदरच्यो तुम सब काहू ❋ तैसे निदरत मात पिताहू ॥
तुमको यशुमति महर न जाये ❋ तौ तुम कहौ कहांते आये ॥
घर घर माखन चोरच्यो नाहीं ❋ बांधे मात न ऊखल माहीं ॥
हा हा करि हम नाहिं छुडाये ❋ ग्वालन संग न बच्छ चराये ॥
नहीं गाय तुम दुही हमारी ❋ ये सब बातें झूंठ तुम्हारी ॥
भक्त हेतु जन्मत जगमाहीं ❋ कर्म धर्मके मैं वश नाहीं ॥
योग यज्ञ मनमें नाहिं ल्याऊं ❋ दीन गोहारि सुनत उठिधाऊं ॥
भावाधीन रहौं सब पासा ❋ और नहीं कछु मोको त्रासा ॥
ब्रह्मा कीट आदिके माहीं ❋ व्यापक हौं समान सब ठाहीं ॥

दो०-कहांकहांकी बात कहि, डरपावत हौ नारि ।
स्वर्ग पतालहि एक करि, बांधत बारहिंबार ॥

सो०-इहां सुनावत काहि, जो लायक तो आपको ।
कौन प्रकृति यह आहि, वनमें रोंकत हौ तियन ॥

केतक दधिको दान कन्हाई ❋ जिहिं कारण युवती अरुझाई ॥
दधि माखन सबही तुम लेहू ❋ रीती जान हमैं घर देहू ॥
जो तुम याही में सुखपावो ❋ काहे को बहु बात बनावो ॥
दधि माखन कह करौं तिहारो ❋ सकल बणिजको दान निवारो ॥
जो जो बणिज नितहिं तुम लावो ❋ लेखो करि सब मोहिं चुकावो ॥
अब ऐसे कैसे घर जैहो ❋ जबलग लेखो मुहिं न बुझैहौ ॥
करत बणिज तुम नये बनाये ❋ नित उठि जात जगात बचाये ॥
सुनि वाणी हरि नागर नटकी ❋ दै दै सैन युवति सब सटकी ॥
मनहींमन अति हर्ष बढाई ❋ बोलीं हरि सों सब मुसकाई ॥
ऐसे कहौ बणिजको अटके ❋ अबलौं श्याम कहां तुम भटके ॥
हमहूं कहि मन मांझ लजाई ❋ कह मांगत दधिदान कन्हाई ॥
बणिजहेतु रोकी अब जानी ❋ तबहीं क्यों न कही यह बानी ॥

---

१ पुकार ।

दो०—हँसि बोली राधा कुँवरि, कहा वणिज हम पास ।
कहो श्याम सो नाम धरि, देहिं दान हम तास ॥
सो०—भूले कहा कन्हाय, वणिज कहा युवती करत ।
कासों लियो चुकाय, सो हमको बतलाइये ॥

कहो तुमहिं बूझत कह हमहीं ❀ लै लै नाम बतावो तुमहीं ॥
तुम जानत मैंहूं कछु जानौं ❀ तुमते माल सु नाहिं छिपानौं ॥
डारि देहु जापर जो लागै ❀ फिर न कछू तुमसों कोउ माँगै ॥
इतनेहीं को लरत बृथाहीं ❀ देखो समुझि सबै मन माहीं ॥
कहत परस्पर ग्वालि सयानी ❀ समुझतहो कछु इनकी बानी ॥
इनहीं सों बूझौ सब कोऊ ❀ कहा बतावत सुनिये सोऊ ॥
हरिकी गूढ मधुर रस बातैं ❀ सुनिसुनि सुख पावत सब जातैं ॥
कोइ काहूको भेद न जानैं ❀ लोक लाज डर सब कोउ मानैं ॥
मन मन हर्ष भई सब सुंदर ❀ जानैं हरि सब रसिकेपुरंदर ॥
तब बोलीं हँसि कै ब्रजबाला ❀ कहतनाहिं क्यों तुमहिं गुपाला ॥
कहा माल देख्यो हम पाहीं ❀ जिहिं कारण रोकी वनमाहीं ॥
बैल लदाये देख्यो हमको ❀ कहो हमैं बूझतिहैं तुमको ॥

दो०—लौंग जायफर लायची, गिरी छुहारे दाख ।
कहँ लादे हम जात हैं, सो कहिये किन भाख ॥
सो०—दीजै वणिज बताय, ताकी देहिं जगाति हम ।
तुमको नंददुहाय, जो अब वेग कहो नहीं ॥

कौन वणिज कहि मोहिं बतावो ❀ लौनमिरच कहिकहि बहँकावो ॥
तुम तौ माल गयंद लदायो ❀ महिष वृषभ कहि मोहिं सुनायो ॥
वडे मोलकी वस्तु जो होई ❀ कैसे दुरत दुराये सोई ॥
मो आगे तुम कहा छिपावो ❀ देहो दान जान तब पावो ॥
भये चतुर हरि तुम अब जानी ❀ दधिको दान मेटि यह ठानी ॥
देतीं दही कछुक हम छोहन ❀ खाते लै ग्वालन सँग मोहन ॥

१ छिपीभई । २ रासिकनकेइन्द्र । ३ हाथी ।

इन बातन अब खोयो सोऊ ❋ यह कहि युवति हँसीं सब कोऊ ॥
श्याम कही मैं जानत तुमको ❋ सूधे दान न देहौ हमको ॥
दधि माखन तो लेहौं छोरी ❋ उठिकै भुज गहि गहि झकझोरी ॥
तब पीताम्बर झटक्यो प्यारी ❋ कहत भये तुम ढीठ मुरारी ॥
हरि रिसकरि अंकम गहि लीन्ही ❋ इहिं मिस भेंट प्रेमकी कीन्ही ॥
टूटि गई प्यारी उरमाला ❋ तब घेरे युवतिन नँदलाला ॥

दो०—गहि गहि अंकम लेत सब, झगरत रसहि बढाय ।
हँसत सखा सब तारिदै पकरे गये कन्हाय ॥

सो०—हांक दई नँदलाल, तबहिं सखन ललकारिकै ।
धाय परे सब ग्वाल, लीन्हें श्याम छुडाय तब ॥

रिसकरि बोले ग्वाल सयाने ❋ भई ढीठ हरिको नहिं जाने ॥
हम भईं ढीठ भले तुम कीन्हों ❋ देहौं ज्वाव दईको चीन्हों ॥
वनभीतर रोंकी सब बाला ❋ देखौ हमें कियो जंजाला ॥
बात कहनको एहू आवत ❋ बडे सुधर्मा आप कहावत ॥
ऐसी साख सखा की भरि सब ❋ आवहुगे नृप[१]जीति सबै तब ॥
जानी बात तुम्हारी सबकी ❋ तजहु ख्याल लरिकाई तबकी ॥
जो युवतिनको हाथ लगैहो ❋ कियो आपनो तौ तुम पैहौ ॥
जो यह बात घरन सुनि पैहैं ❋ मात पिता हमको कह कैहैं ॥
तोरचो मुक्ताहार कन्हाई ❋ घरहिं कहा कहिहैं हम जाई ॥
आपन भईं सबै तुम भोरी ❋ हरिको दोष लगावत गोरी ॥
जब तुम झपटी पीत पिछोरी ❋ तब उन मोतिन की लर तोरी ॥
मांगत दान श्याम कब सेती ❋ तुम अठिलात ज्वाब नहिं देती ॥

दो०—लेहिं छोरि सबते अबहिं, देखतही रहिजाहु ।
झक झोरा झोरी करत, नँदनन्दनहिं डराहु ॥

सो०—को त्रिभुवनके माहिं, मोहनकी सरि[२]दूसरो ।
तुम सब जानत नाहिं, नँदनन्दन ब्रजराज सुत ॥

१ कंसको । २ समान ।

कहा बडाई इनकी सरिमें ❀ इनको जानति नीके करि मैं ॥
नृपति त्रास बसुदेव निकारे ❀ नंद यशोमतिने प्रतिपारे ॥
आये हैं शुभ घरके माहीं ❀ काहू बदत ताहिते नाहीं ॥
पहिले जब उन भुजा झकोरी ❀ तब हम झटकी पीत पिछोरी ॥
याते ढीठकही तुमको हम ❀ श्यामहि झिरकन हार भई तुम ॥
इतने पर मानत नहिं हारी ❀ तबते हमें देतहो गारी ॥
बहुत सही हम बात तुम्हारी ❀ वणिज करत अरु झगरत ग्वारी ॥
ब्रज ऊपर मनमोहन दानी ❀ अबलौं तुम यह बात न जानी ॥
बोलि उठे तब कुवँर कन्हाई ❀ अब नहिं छोडों नंददुहाई ॥
अब तौ दांव आपनो लेहौं ❀ तबहीं जान सबन को देहौं ॥
कौन बात यह कहत कन्हाई ❀ मांगत कहा जानि नहिं जाई ॥
फिरि फिरि करि करि नंद दुहाई ❀ डरपावत हौ हमको आई ॥

दो०–डरपावहु तुम जाय तिन्ह, जो कोउ तुम्हैं डराहि ।
यहँ डरपावत कौनको, तुमते घटि हम नाहिं ॥

सो०–जैहैं यशुमति पाहिं, तोरचो हार भली करी ।
यहौ बनत पै नाहिं, इतनो धन कहँ पाइहौ ॥

एक हार मोहिं कहा बतावो ❀ सब अँगभूषण काहि दुरावो ॥
मोतीमांग जराऊ टीको ❀ करणफूल बेसर नग नीको ॥
कंठशिरी दुलरी तिलरी गर ❀ तापर और हार जो चौसर ॥
सुभग हमेल बिजौटा बाजू ❀ कंकण पहुँचिन मुँदरिन साजू ॥
कटि किंकिणि नूपुर पग देखो ❀ जेहरि बिछिया ये सब लेखो ॥
शोभा साज और अँगमाहीं ❀ सबको नाम लेत क्यों नाहीं ॥
याहूमें कछु बांट तुम्हारो ❀ अचरज आय सुनोरी भारो ॥
भूषण देखि न सकत हमारो ❀ याही लिये भयो घटवारो ॥
आपनहूं कछु दई गढाई ❀ महरि यशोमति कै नँदराई ॥
आई पहिरि जितो हम याही ❀ याते दूनों है घरमाहीं ॥

१ व्यापार । २ कमर ।

देखि परत कछु बहुत लुभाने ❋ बनधौं सूनो लखि ललचाने ॥
बाँटि कहा तौलौं सब मेरो ❋ जौलौं तुम नहिं दान निबेरो ॥

दो०—आभूषणको कह कहत, बहुत वस्तु तुम पास ।
मानौं मैं जानत नहीं, सो किन करत प्रकास ॥

सो०—लेहौं सबको दान, समुझिलेहिंगे बाँटि पुनि ।
पैहौ तबहीं जान, मैं तुमसों सांची कहत ॥

भये श्याम ऐसे रसनागर ❋ युवतिनमें अब होत उजागर ॥
कालिहिहि गाय चरावन जाते ❋ छाक मांगि ग्वालन सँग खाते ॥
कांधे कामरि लकुटी हाथा ❋ बनमें फिरत बछरुवन साथा ॥
आज पीतपट कटि कसि आये ❋ लै कर लकुटी बडे कहाये ॥
भये कछू अब नवल सुजाना ❋ मांगत युवतिनसों वह दाना ॥
देहौ दानकि झगरति हौ तुम ❋ बहुत तुम्हारी बात सुनी हम ॥
प्रथम दानजंजाल निबारिये ❋ तापाछे तुम हमहिं निदरिये ॥
कहत कहा निदरेसे हौ तुम ❋ सहजहिं बात कहति तुमसों हम ॥
आदिहिते तुमको पहिंचानैं ❋ दान कहा सो हम नाहिं जानैं ॥
ग्वालिनि चली सबै रिस करि करि ❋ दधिमटुकी माथेपर धरि धरि ॥
तब हरि गहि अंबर झरकारी ❋ जाति कहां हौ री बनिजारी ॥
इतनो वणिज लिये तुम जाहू ❋ बिना दान क्यों होत निबाहू ॥

दो०—नाम तुम्हारे वणिजके, सब मैं देहुँ बताय ।
देहु दान तब मोहिं तुम, देखहु सब ठहराय ॥

सो०—सब क्यों छोड्यो जात, एक होय तौ छोडिये ।
तुम विचारि यह बात, देखहु अपने चित्तमें ।

एती वस्तु लिये तुम जावो ❋ दान देति मेरो खिझरावो ॥
मत्तगयंद[2] तुरंगम[3] तुमसों ❋ कैसे दुरत दुराये हमसों ॥
हंस मोर केहरि[4] मृगवारे ❋ कनककलश मदरससों भा[…] ।
चमर सुगंध कपोत[5] कीर[6]बर ❋ कोकिल विद्रुम[7] वज्र[8] धनुष[…] ॥

१ पीताम्बर । २ हाथी । ३ घोड़ा । ४ सिंह । ५ कबूतर । ६ तोता । ७ मूंगा । ८ […]

एतो धन खग मृग तुम पाहीं ❀ कैसे निबहत दान बिनाहीं ॥
सुनि यह चकित कहति ब्रजबाला ❀ कहा बतावत तुम नँदलाला ॥
तिनको नामलेत हम पाहीं ❀ जो हम सपने देख्यो नाहीं ॥
कहां तुरंगम गज हम पाये ❀ कब हम कंचनकलश गढाये ॥
मानसरोवर हंस रहाहीं ❀ चमर धनुष शर कहा कहाहीं ॥
ये सब हम पै कहा बतावो ❀ जहाँ होय तहँ दान चुकावो ॥
इतनो सबै तुम्हारे पाहीं ❀ करि विचार देखो मनमाहीं ॥
अपने सब अँग अंग निहारो ❀ यौवन रूप और है न्यारो ॥

दो०—करहु निबेड़ो बेग सब, काहे करत अबेर ।
कहो तुम्हें कछु हम कहैं; घरको जाहु सबेर ॥

सो०—दीजै दान चुकाय, अब जान्यो अपनो वणिज ।
कहौं फेरि समुझाय, जो कछु धोखो होय चित ॥

चमर चिकुर[१] भ्रू[२] धनुष सँभारे ❀ शर कटाक्ष मृग दृग[३] कजरारे ॥
कंठ कपोत कोकिला बानी ❀ रद[४] हीरा शुक नाक बखानी ॥
अधर सधर विद्रुम सो जानो ❀ है मयूर घूँघटपट मानो ॥
कंचन कलश उरोज[५] निहारो ❀ यौबनमदसों भरो विचारो ॥
कटि[६] केहरिके रूप सुहाई ❀ हंस गयंद चालछबि छाई ॥
सौरभ[७] अंग सुगंध सुहायो ❀ यौवन रूप न जात बतायो ॥
इतनो है सब वणिज तिहारो ❀ होय अंश सो देहु हमारो ॥
खरी किये निबहोगी कैसे ❀ लेहौं दान देहुगी जैसे ॥
यह सुनि हँसि बोलीं ब्रजनारी ❀ अब समुझी हरि बात तुम्हारी ॥
मांगत ऐसो दान कन्हाई ❀ जानि परी प्रगटी तरुणाई ॥
याही लालच अंक भरतहौ ❀ पुनि पुनि गहि आंचर झगरतहौ ॥
अपनी ओर देखि तो लीजे ❀ तापाछे बरियाई कीजे ॥

दो०—याही लालच फिरत हौ, सखा लिये बन संग ।
घेरतहो युवतीनको, प्रगट्यो अंग अनंग[८] ॥

१ बार । २ भौंह । ३ नेत्र । ४ दांत । ५ स्तन । ६ कमर । ७ सुगन्ध । ८ कामदेव ।

सो०-बैठि रहौ घर जाय, यह मति चितमें मति धरौ ।
घटि मर्यादा जाय, ऐसी बातन सों लला ॥

यह सुनि बिहँसि कह्यो वनमाली ❋ कत हमपर रिस करत गुवाली ॥
सूधे हम इक बात बखानी ❋ तुम कत शोर करत अनखानी ॥
कबहुँ घटावति हौ मर्यादा ❋ कबहुं जोइ सोइ करत विवादा ॥
प्रातहिं ते झगरत बिन काजे ❋ दाननिबेर जात नहिं साजे ॥
हरि यों कबते भये सयाने ❋ उलटहिं तुम हम पर सतराने ॥
बेटी बहू बडे घरकी हौ ❋ कत विलंब वनमें करती हौ ॥
बूझिय तुमसों हम जो बखाने ❋ सो तुम कह आगे सतराने ॥
कहिये मोहन बात विचारी ❋ कहवावत सर्वज्ञ विहारी ॥
परगट ऐसो दान सुनावत ❋ हमरो ब्रज उपहास करावत ॥
परै बात महराने जाई ❋ तुमहिं लाज कै हमहिं कन्हाई ॥
ब्रजमें जो ये बात सुनैंगे ❋ जाति पांतिके लोग हँसैंगे ॥
जान देहु अब हमहिं गोपाला ❋ कहियो प्रात फेरि नँदलाला ॥

दो०-बोलि उठ्यो इक सखा तब, सुनहु ग्वालिनी बात ।
प्रीति करत नँदलालसों, कत बावरी लजात ॥

सो०-हरि सँग करहु विहार, नवल श्याम नवला तुमहुँ ।
हँसनदेहु संसार, भलो मनावो कान्हको ॥

सुनि बोलीं ब्रजयुवति रिसाई ❋ कहवावत यह बात कन्हाई ॥
आपुन यौबन दान बनावत ❋ तापर जोइसोइ सखन सिखावत॥
वनमें सखन घेरि बैठाई ❋ करत श्याम तुम अति लँगराई ॥
भूलिगये वे दिवस कन्हाई ❋ घर घर माखन खात चुराई ॥
खीझतही दृग नीर चुचाते ❋ ढेरडारत घरको भजिजाते ॥
बांधे ऊखल जबहिं यशोदा ❋ हमहिं छुडाय लिये तब गोद ॥
अब भये बडे बडी चतुराई ❋ ताते यौबनदान सुना[illegible]रे ॥
लरिकाईकी बात बखानैं ❋ कैसी भई कहा हम जा[illegible]र ॥

१ ढिठाई । २ हृदय । [illegible] हीरा ।

कब धौं खायो माखन चोरी ❀ मैया धौं बाँध्यो कब डोरी ॥
नेकहु ताकी सुधि नहिं जाने ❀ मान अमान न तब हम माने ॥
भले बुरेको ज्ञान न होई ❀ अपनो पर कछु समझ न कोई ॥
खेलत खात हर्ष हियमाहीं ❀ बालपनेके दिवस बिहाहीं ॥
दो०-अपनी सूरति करत नहिं, न्हात यमुनके तीर ।
कदम चढाये सबनके, जब मैं भूषण चीर ॥
सो०-जलमें रहीं छिपाय, बिना बसन नाँगी सबै ।
पुनि पुनि हहा कराय, दिये बसन मैं सबन तब ॥
बिना बसन बाहर सब आईं ❀ हाथ जोरि मोहिं विनय सुनाई ॥
कैसी भांति भई तब सबकी ❀ सो सुधि भूलि गई अब तबकी ॥
मोको कहति चोरि दधि खायो ❀ ऊखल सों हम जाय छुडायो ॥
भेद वचन जब कहे बिहारी ❀ सुनिकै हँसि सकुचीं ब्रजनारी ॥
कहत भये अति निलज कन्हाई ❀ ऐसी कहत न सकुचत राई ॥
जाहु चले लोगनके आगे ❀ झूठी बात बनावन लागे ॥
करत हँसी तुम सबन सुनाई ❀ निज निज गृह सब कहिहैं जाई ॥
झूठी बात कहा हम जानैं ❀ हम तो सांची सदा बखानैं ॥
जैसी भांति भजै मोहिं कोई ❀ मानत मैं ताको तै सोई ॥
जो झूठो मोको तुम जानौ ❀ तौ कत मेरे हित तप ठानौ ॥
जो तुम अपने मन ये ठानी ❀ मैं अन्तरयामी सब जानी ॥
अब क्यों इतौ निठुर मन कीन्हों ❀ काहे दान जात नहिं दीन्हों ॥
दो०-दान सुने रिस होतिहै, यह नहिं हमैं सुहाय ।
भली बुरी अरु जो कहो, सो सहि लेहिं कन्हाय ॥
सो०-छांडि देहु सब जाहिं, सुनिये मोहन लाल अब ।
भई बेर वनमाहिं, मात पिता खिझिहैं हमैं ॥
काहे को तुम करत अबारी ❀ दधि बेंचहु घर जाहु सवारी ॥
मैं कह करौं तुम्हैं यह भावत ❀ लेखो करि नहिं दान चुकावत ॥
शुद्धस्वभाव समुझि सबकोई ❀ लेखो करिदेहो मोहिंजोई ॥

तब सोइ तुमसों मैं लैलेहौं ❋ तबहीं तुम्हें जान पुनि देहौं ॥
काहेको हम सों हरि लागत ❋ जानि न परत कहा तुम मांगत ॥
बातन कछू जनावत नाहीं ❋ लेखो कहा करत हम पाहीं ॥
निपटहिं परे हमारे ख्याला ❋ इन बातन कह पावत लाला ॥
अब तुम निपटकरी बहुताई ❋ सुनि हँसिहैं व्रजलोग लुगाई ॥
मारग जनि रोकहु हम जाहीं ❋ घरते लीजो दान उगाहीं ॥
अबलौं यहकीन्हों तुम लेखो ❋ हम तुम्हरो विचार सब देखो ॥
मोको ऐसी बुद्धि सिखावत ❋ कर कंकण दर्पणहिं दिखावत ॥
तुम्हरी बुद्धि दान हमलेहैं ❋ काहे न तुम्हें जान हम देहैं ॥

दो०-आपभई हौ चतुर सब, मोको करति गँवार ।
उगहत फिरिहैं दान हम, ठाढे ह्वै हैं द्वार ॥

सो०-तुम्हें देहुँ घर जान, फेरि कहो पाऊं कहां ।
जो नहिं पैहौं दान, नृपहि ज्वाब कहदेउँगो ॥

भली भई नृप मान्यो तुमहूं ❋ चलिहैं कंसहिपै अब हमहूं ॥
तबते लैन कहत हैं दानहिं ❋ नन्दमहर की करिकरि आनहिं ॥
हम हूं अबलौं ऐसी जानी ❋ भये श्याम घरही ते दानी ॥
अब जान्यो तुम कंस पठाये ❋ नृपते दान पहिरि तुम आये ॥
सुनि हरि ये गोपिनके बयना ❋ हँसे कछू तिरछे करि नयना ॥
सो छबि निरखि कहत सबनारी ❋ कहा हँसे मुखमोरि मुरारी ॥
सोई कहो मनहिं जो आई ❋ तुमको यशुमति महरि दुहाई ॥
और सौंह तुमको गोधनकी ❋ सांची बात कहो तुम मनकी ॥
हँसे कहा हम सों कछु रीझे ❋ कैधौं कछु मनहीमन खीझे ॥
यह सुनि अधिक हँसे गोपाला ❋ कहत सुदामासों नँदलाला ॥
यह अचरज इनको तुम हेरो ❋ कहत कहा तुम हँसि मुखफेरो ॥
ऐसी बातन सौंह दिवावत ❋ ताते अधिक हँसी मोहिं आवत ॥

दो०-तब श्रीदामा तियनसों, बोलि उठ्यो मुसकाय ।

हँसत श्याम तुम समझिकै, बूझत सौंह दिवाय ॥
सो०-हम न दिवावैं आन, हँसहु तुमहु निज संग मिलि ।
यहै आन सी बान, थोरेमें खिसियात तुम ॥
सहज हँसत नाहिन सकुचैये ❀ नाहिन लोगन सौंह दिवैये ॥
वे हैं दानी प्रभु सबहीके ❀ देहु दान मांगत कबहीके ॥
हम जानत वे कुँवरकन्हाई ❀ प्रभु तुम्हरे मुख अब सुनिपाई ॥
होति नहीं प्रभुता इहिं भांती ❀ दही महींके भये जगाती ॥
वे ठाकुर तुम्हरी सेवकाई ❀ जाने प्रभु अरु सब प्रभुताई ॥
दधि खाये अरु भूषण तोरे ❀ छांडि देहु अब दई निहोरे ॥
जो कछु बचो सोऊ अब लीजे ❀ वेगिहि जान हमें घर दीजे ॥
तब हँसि बोले श्याम सुजाना ❀ तुम घर जाहु देइ कै दाना ॥
आयो हौं पठयो मैं जाको ❀ देउँ कहा लैके पुनि ताको ॥
अबहीं पठवै मोहिं बुलाई ❀ तब ताके सन्मुख को जाई ॥
तुम सुख करो जाय घरमाहीं ❀ नृपकी गारि मारको खाहीं ॥
जब नृपवर मोको अटकावै ❀ तब पुनि तुम बिन कौन छुडावै ॥
दो०-लेत नाम मुख नृपतिको, जा मुख निदरयो जाहि ।
आपुन तो नृप नृपनके, अब कह समुझे ताहि ॥
सो०-लियो कंसको नावँ, ऐसी तुम्हैं न बूझिये ।
भले श्याम बलिजावँ, जिहिंनिंदियेतिहिंवंदिये ॥
जब हम कंस दुहाई दीन्ही ❀ तबतो नृपपर अतिरिस कीन्ही ॥
अबै कहा नृपकी सुधि आई ❀ जो तुम ऐसे डरे कन्हाई ॥
कहाकह्यो कछु जान न पायो ❀ कब हम कंसहि शीश नवायो ॥
कब हम नाम कंस को लीन्हो ❀ कंस त्रास कब धौं हम कीन्हो ॥
निपट भई तुम ग्वारि गवांरी ❀ बसत हमारे गांव मँझारी ॥
कितक कंस जाको हम जानैं ❀ कहा त्रास ताको उर आनैं ॥
तुम्हरे मने बात यह आवत ❀ कंस नृपति के हम कहवावत ॥
तो तुम कहौ कौन नृप जाके ❀ आपुन कहवावत हौ ताके ॥

ताको नाम हमहु सुनिपावैं ❋ हमहूं पुनि ताके कहवावैं ॥
या संसार लोक त्रय माहीं ❋ दूजो कंस नृपति ते नाहीं ॥
सो नृप बसत कहां सोउ जानैं ❋ तौ हम सब ताहीको मानैं ॥
यह सुनि हम अब अति डरपायो ❋ कैधौं झूठहि हमहिं डरायो ॥

दो०—जा नृपके हमहैं अरी, को नहिं जानत ताहि ।
जड चेतन नर नारि सब, तिहूं भुवन वश जाहि ॥

सो०—बसत सुमनपुर[1] माहिं, कहँ लगि तिन्हैं प्रशंसिये[2] ।
सब मानतहैं जाहि, तिन पठयो मुहिं पानदै ॥

सुनत गूढ मोहन की बानी ❋ बोलीं ब्रजसुन्दरी सयानी ॥
जाति तुम्हारे नृपकी पाई ❋ अब लौं राखी कहूं छिपाई ॥
जैसे तुम तैसे वोऊ हैं ❋ एक रूप गुणके दोऊ हैं ॥
यह अनुमान कियो मनमें हम ❋ एकै दिन जन्मे दोऊ तुम ॥
जैसी प्रजा तैसई राजा ❋ बन्यो भलो अब संग समाजा ॥
चोरी ठगी निपुण गुण दोऊ ❋ यापटतर को और न कोऊ ॥
बोलत नाहिंन बात सँभारी ❋ ठगति फिरति ठगनी[3] तुम सारी ॥
भई ढीठ नहिं नेकु बिचारो ❋ आवत मुख सोई कहि डारो ॥
अपने गुण औरन पर डारी ❋ जाति जनावत दै दै गारी ॥
हम भईं ठगिनी अरु बटपारी ❋ तुम भये कान्ह सुधर्मी भारी ॥
अपने नृपको यहै सुनावो ❋ ऐसिय चुगुली जाय लगावो ॥
राजा बडे जान यह पाई ❋ ल्यावहु हम पर धौंस चढाई ॥

दो०—तुम तो ठग आछे बने, बनमें रोंकी नारि ।
हमैं कहौ काको ठग्यो, को हम डारचो मारि ॥

सो०—तुमही जानत श्याम, यंत्र मंत्र टोना ठगी ।
ठगतफिरत सब वाम, आपनढंग औरन कहत ॥

मौन गहौ बातैं सब पाई ❋ यहै जानि हम पर चढि आई ॥
जो चाहो सोई कहि डारो ❋ हम नहिं मानहिं बिलग तिहारो ॥

१ पुष्पपुर । २ बडाईकरिये । ३ नारी ।

तुम मोहींको दोष लगायो ❁ मैं तो नृपको पठयो आयो ॥
यौवनरूपलिये तुम इतहीं ❁ आवत हौ इहिं मारग नितहीं ॥
लोचन दूतन जाय सुनायो ❁ तब नृप रिस करि मोहिं बुलायो ॥
शैशंवमहलनते नृप राई ❁ बैठ्यो सिंहासन तरुणाई ॥
तुरतहिं मोहिं दान पहिरायो ❁ दे बीरा तुम पास पठायो ॥
तिनको नाम अनंग भुवाला ❁ उनको दान देहु ब्रजबाला ॥
तिनकी आनि कहत हौं कीन्हें ❁ पैहो जान दानके दीन्हें ॥
सुनि यह मोहनकी मुखबानी ❁ प्रेमसिंधु युवती मगनानी ॥
कामनृपति की फिरी दुहाई ❁ अटक्यो यौवन रूपहि आई ॥
को हम कहां रहति कहँ आई ❁ यह सुधिबुधि तनु दशा भुलाई ॥
दो०–त्रसित भइ डर मदनके, नयन मूंदि धरि ध्यान ।
कहत कान्ह अब शरण हम, लीजै सरबसदान ॥
सो०–ऐसे कहि मन माहिं, देह दशा भूली सबै ।
लेहु श्याम बलि जाहिं, यह धन तुमहित संचियो ॥
यौवनरूप नाहिं तुम लायक ❁ सकुचत तुम्हें देत ब्रजनायक ॥
नवल किशोर रूप गुणआगर ❁ अहो श्याम सुन्दर वर नागर ॥
यह यौवन धन तुमढिग ऐसे ❁ जैलधि निकट जल कणिका जैसे ॥
ध्यानमग्न इहिं विधि ब्रजनारी ❁ मनहीं मन बिनवति बनवारी ॥
अंतरयामी हरि सब जानैं ❁ मनहीं की करणी सब मानैं ॥
मनहीं सबन मिले सुखदाई ❁ तनुकी सुरति सबन तब आई ॥
खुलि गये नैन ध्यान ते तबहीं ❁ देखे मोहन सन्मुख सबहीं ॥
तब जान्यो हम बनमें ठाढी ❁ सकुचि गई अति अचरज बाढी ॥
कहति परस्पर आपस माहीं ❁ कहां हती हम जानत नाहीं ॥
श्यामबिना यह चरित करै को ❁ ऐसी विधि करि मनहिं हरैको ॥
रहीं चकित सी सब ब्रजनारी ❁ बोलि उठे तब कुंजबिहारी ॥
कहा ठगीसी हौ ब्रजबाला ❁ पर्‌यो कहा उर शोच विशाला ॥
दो०–करयो दान लेखो कछू, रहीं जहां तहँ शोच ।

१ बालकअवस्था । २ कामदेव । ३ समुद्र ।

प्रगट सुनावो सो मुहीं, दूरि करौ संकोच ॥
सो०-बहुरि न रोकै कोय, या बनमें कोऊ तुम्हैं ।
निशिबासर भय खोय, सुखसों आवहु जाव नित ॥
हमें और रोकै सो को है ❋ रोकनहार सुवन नँदको है ॥
टोना डारत शीश हमारे ❋ आप रहत ठाढेह्वै न्यारे ॥
जाके काम नृपतिको जोरा ❋ ठगत फिरत युवतिन बरजोरा ॥
सुनहु श्याम बूझिय नहिं ऐसी ❋ तुमको बानि परी यह कैसी ॥
कैसेहू अब कृपा करो हरि ❋ जाहिं सबै अपने अपने घरि ॥
दान मान घरको सब जाहू ❋ बहुरिन मैं रोकौंगो काहू ॥
मैंहू जानत हौं कछु लेखो ❋ तुमहूं आप समुझि मन देखो ॥
पिछिलो देहु निबेर आज सब ❋ आगे पुनि दीजो जानो जब ॥
अब मैं भली कहतहौं तुमको ❋ जो मानौ ग्वालिनि तुम हमको ॥
को जानै हरि चरित तुम्हारे ❋ अहो रसिकवर नंददुलारे ॥
हमरो सर्वस मन अपनायो ❋ अजहूं दान नहीं तुम पायो ॥
लेखो करि लीजो मन भायो ❋ खाहु कछू दधि हम सुखपायो ॥
दो०-सदमाखन लाई तुम्हैं, सखनसहित मिलि खाहु ।
सुख पावैं हम देखिकै, लीजै दान उगाहु ॥
सो०-अब दधिदानी नाउँ, तुम्हरो प्रकट बखानिहैं ।
खाहु दही बलि जाउं, ल्याई हम तुम्हरे लिये ॥
तब हरि हँसि सब सखन बुलाई ❋ बैठे रचि मंडली सुहाई ॥
दोना बहु पलाशके लाये ❋ शोभित सबके करन सुहाये ॥
सुन्दर हरि सुन्दर सब ग्वाला ❋ सुन्दर दधि परसति ब्रजबाला ॥
भक्त भावके हाथ बिकाने ❋ ग्वालन संग खात रुचिमा... ॥
निज निज मटुकिनते सब ग्वारी ❋ देति करति उर आनँदभा... न ॥
श्याम पतूकिनमो मुखनावैं ❋ निरखि निरखि ग्वालिनि सुखप... ती ॥
धन्य धन्य आपुनको जान्यो ❋ सफल जन्म सबहिन करिमा... वैं ॥
कहत धन्य यह दधि अरु माखन ❋ खात कान्ह जाको अभिला... यो ... वन ॥

१ कृष्ण । २ ढाक । ३ हाथन ।

जो हम सोंध करत ही मनमें ❀ सो सुख पायो हरिसँग बनमें ॥
अति आनंदमगन सब ग्वारी ❀ नंदनँदन पर तनमनवारी ॥
प्यारीसों माखन हरि मांगत ❀ देखों तुम्हरो कैसो लागत ॥
औरनकी मटुकीको खायो ❀ तुम्हरे दधिको स्वाद न पायो ॥
दो०-श्रीवृषभानुकुमारि तब, दधि ल्याई मुसकाय ।
अपने कर अधरन परस, दीन्हों बिहँसि खवाय ॥
सो०-प्यारीको दधि खाय, अलपचितै मोहनबिहँसि ।
मधुरे कह्यो सुनाय, मीठोहै यह सबनते ॥
गोपिनके हित माखन खाहीं ❀ प्रेमविवश नहिं नेक अघाहीं ॥
वैसिय गोरस भरी कमोरी ❀ परसत सबै होत नहिं थोरी ॥
ग्वालन सहित श्याम दधि खाहीं ❀ परम हर्ष सबके मनमाहीं ॥
हँसत परस्पर सखा सयाने ❀ मीठो कहि कहि स्वाद बखाने ॥
हरि हँसि सबके चितहिचुरावैं ❀ परमानंद सबन उपजावैं ॥
विलसत ब्रजविलास बनवारी ❀ दधिदानी प्रभु कुंजविहारी ॥
सुरगण तियन सहित नभ माहीं ❀ निरखि निरखि मनमाहिं सिहाहीं ॥
धनि धनि ब्रजकी युवति सभागी ❀ खात ब्रह्म जिनते दधि मांगी ॥
जाकारण शिव ध्यान लगावैं ❀ शेष सहसमुख जाको गावैं ॥
मन बुधि वचन अगोचर जोई ❀ जाको पार न पावै कोई ॥
नारदादि जाके गुण गावैं ❀ निगम नेति कहि अंत न पावैं ॥
गुणातीत अविगति अविनाशी ❀ सो प्रभु ब्रजमें प्रकट बिलाशी ॥
छंद-प्रकटेसोप्रभुब्रजमेंविलासी, जाहिमुनिजनध्यावहीं ।
योग जप तप नेम संयम, करि समाधि लगावहीं ॥
रूप रेख न वरण जाके, आदि अंत न पाइये ।
भक्तवश सो ब्रह्म पूरण, गोपवल्लभ गाइये ॥
कोटि कोटि ब्रह्मांड जाके, रोमप्रति श्रुति गावहीं ।
कीट ब्रह्मप्रयंत जल थल, आप सब उपजावहीं ॥

१ इच्छा ।

आप कर्त्ता आप हर्त्ता, आपही पालन करैं ।
खात सो प्रभु दान दधि लै, गोपिकनके मन हरैं ॥
धन्य ब्रज धनि गोप गोपी, धन्य वन पावन मही ।
धन्य मोहन दान मांगत, दूध दधि माखन मही ॥
धन्यब्रज यकपलकको सुख, औरयहत्रिभुवननहीं ।
कहत सुर मुनि हरषिपुनि पुनि सुमन सुंदर बर्षहीं ॥
कान्ह गोपी ग्वाल द्वैनाहिं, एकही बहुतनधरे ।
भक्तजनहित विरद जाको, अमित लीला विस्तरे ॥
ब्रजबिलासहुलास हरिको, नित्य निगमागम कहै ।
दास ब्रजवासी सदा यह, गाय आनँद पद लहै ॥

दो०-दानचरित गोपालको, अतिविचित्र रसखान ।
वेद भेद पावे नहीं, कवि किमि करै बखान ॥

सो०-गावत सुनत सुजान, दधिदानी लीला रुचिर ।
प्रेमभक्तिको दान, ब्रजवासी जन पावहीं ॥

ब्रजललना यों हरिहि सुनावैं ❋ दूध दही माखन अरु लावैं ॥
मटुकिनते लैलै हम देहैं ❋ खाहु श्याम तुम हम सुख लैहैं ॥
गोरस बहुत हमारे घरघर ❋ लीजै दान पाछिलो भरभर ॥
यह गोरस जो तुमने खायो ❋ सो तो दान आजको आयो ॥
लेहु सबै अपनो करि लेखो ❋ फिर न पायहो मांगे सेखो ॥
श्याम कही अब भई हमारी ❋ मनहिं भई परतीत तुम्हारी ॥
प्रीति भई हमसों तुमसों अब ❋ लैहैं मांगि चाहिहैं जबत
निधरक अब बेचहु दधि जाई ❋ घाट बाट कछु डर नहिं र ॥
ग्वालिनि भईं श्यामवश माहीं ❋ घरको जात बनतहै ना
चकित रहीं सब ब्रजकी नारी ❋ कहत एकसों एक विच ॥
सुनहु सखी मोहन कहकीन्हों ❋ दान लियो कै मन हरि ली
यह तो हम नहिं वदी सयानी ❋ बूझो धौं इनसों यह ई ॥

दो०-बूझनको उमँगीं सबै, मोहनसों यह री ॥

१ पृथ्वी । २ माठा । ३ फूल ।

निकट जात रहि जाति पुनि, सकुच मगन ह्वै जात ॥
सो०-मनहीं मन सकुचात, कहिये कैसे श्यामसों ।
कहन बनत नहिं बात, प्रेमविवश तरुणीसबै ॥
सुनो बात मोहन इक हमसों ❀ ढीठो बहुत कियो हम तुमसों ॥
क्षमा करो सो चूक हमारी ❀ अहो श्याम हम दासि तुम्हारी ॥
हँसि हँसि कही कटुक हम बानी ❀ तुम्हैं खिझावन हित मनमानी ॥
कछू हमारे उरसों नाहीं ❀ अति आनँद तुमसों मनमाहीं ॥
दधिको दान और जो जान्यो ❀ सबै तुम्हारो कर हम मान्यो ॥
कहो श्याम तुम यह कह कीन्हों ❀ दानलियो कै मन हरि लीन्हों ॥
हम तुमसों कछु भेद न राख्यो ❀ कीन्हों सबै तुम्हारो भाख्यो ॥
यह करणी तुमहीं अब जानो ❀ भली बुरी जो कछु करि मानो ॥
जो जासों अंतर नहिं राखै ❀ सो तासों क्यों अंतर भाखै ॥
नँदनंदन तुम अन्तरजानी ❀ वेद उपनिषद साखि बखानी ॥
सुनहु बात युवती सब मेरी ❀ तुम हित करिराख्यो महि घेरी ॥
तुमते दूर होत मैं नाहीं ❀ रहत तुम्हारे निकट सदाहीं ॥
दो०-तुम कारण वैकुण्ठ तजि, प्रगटतहौं ब्रज आय ।
वृन्दावनतुम्हरोमिलन, यह न बिसारयो जाय ॥
सो०-एक प्राण द्वैदेह, अंतर कहूं न जानिहो ।
यह न नयो अब नेह, कत भूतल ब्रजबास बसि ॥
अब घर जाहु दान मैं पायो ❀ जानत यह लेखो निपटायो ॥
हँसि हँसि जो भावत बनवारी ❀ कहत भई तब ब्रजकी नारी ॥
घरतनमनहिं विना कित जाई ❀ करत कहा मोहन चतुराई ॥
सब तन पर मनहीं है राजा ❀ जो कछु करै होय सो काजा ॥
सो तो मन राख्यो तुम गोई ❀ घरको जान कौनविधि होई ॥
इन्द्रियगण मनके आधीना ❀ चलत नहीं पग नैनविहीना ॥
जो तुम प्रीति करी मनमोहन ❀ तो दुविधा क्यों लाई गोहन ॥
यह तो तुम जानी ब्रजनाथा ❀ घर हम जाहिं देहु मन साथा ॥

मन भीतरमें बास बनायो ❋ तुमहींले मोहिं तहां छिपायो ॥
कहत कहा यह दोष तुम्हारो ❋ अजहूं तजौ होहुं मैं न्यारो ॥
लेहु आपनो मन घर जाहू ❋ लोक लाज डर जो पछिताहू ॥
तौ अबहमें छांडि किन देहू ❋ हम करिहैं अंतर निज गेहू ॥
दो०-जाते घटती होय निज, तजि दीजै सो बात ।
दीन्हों मनमें बास तब, अब मनको पछितात ॥
सो०-जब मन दीन्हों मोहि, तबहीं लीन्हों मोहि तुम ।
जो लेहौ मन खोहि, तौ मैंहूं जैहौं अनत ॥
सुनहु श्याम ऐसी नहि कहिये ❋ सदा हमारे मनमें रहिये ॥
तुमहिं बिना धृकमनअरुधृकघर ❋ तुमबिनधृक कुलकानलाजडर ॥
धृक तुम प्रेमविना पितुमाता ❋ तुमविहीनधृक सुत पितु भ्राता ॥
धृक जीवन तुमबिन संसारा ❋ धृक सुख तुमाबिन नंदकुमारा ॥
धृक रसना तुम गुण नहिं गावै ❋ धृक श्रुति तुम्हरी कथा न भावै ॥
धृक लोचन जिन तुम न निहारे ❋ धृक विचार जो तुम न विचारे ॥
धृक दिन रात तुम्हें बिन जाई ❋ धृक श्वासा तुम बिना बिहाई ॥
सो सब धृक जामें तुम नाहीं ❋ तन मन धन तुमाबिना वृथाहीं ॥
ऐसे कहि तनु दशा बिसारी ❋ भई सनेह मगन सब ग्वारी ॥
कबहूं घरतन जान विचारैं ❋ कबहूं हरिकी ओर निहारैं ॥
दधिभाजन लै शिरपर धारैं ❋ कबहूं धरणी फेर उतारैं ॥
रीती मटुकिनमें कछु नाहीं ❋ कबहुं विचार रहत मनमाहीं ॥
दो०-बिहँसि कह्यो तब साँवरे, जाहु घरन व्रजनारि ।
सकुचत पिछिले दान को, मैं लेहौं निरवारि ॥
सो०-ऐसे वचन सुनाय, सखन सहित हरि वनग[illegible] ।
लैगये चित्तचुराय, युवतिन दान मनाय[illegible] ॥
इति श्रीब्रजविलासे ब्रजवासिदासकृते पूर्वार्द्धं समाप्तम् ॥

१ जीभ । २ कान ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ ब्रजविलास--उत्तरार्द्धम्.

गोपिनके प्रेमकी उन्मत्त अवस्थालीला ।

रीती मटुकी शिरपर धारी ❀ चलीं सबै उठि गोपकुमारी ॥
एक एकको सुधि कछु नाहीं ❀ जानति नहीं कहां हम जाहीं ॥
जड चेतन कछु नहिं पहिचानैं ❀ बन गृह कछू विचार न मानैं ॥
लोक वेद मर्यादा दोऊ ❀ आप सहित भूलीं सब कोऊ ॥
बेंचत दधि वनहींमें डोलैं ❀ लेहु दही कबहूं कहि बोलैं ॥
कहति द्रुमन बोलत क्यों नाहीं ❀ लेहो दधिकै हम फिरि जाहीं ॥
तरु तरु सों पूँछत यहि भांती ❀ वनमें फिरति प्रेमरस माती ॥
मिलत परस्पर विवश निहारी ❀ कहति फिरत क्यों वनमें नारी ॥
तिन्हें कहति अपनी सुधि नाहीं ❀ सो कछु नहिं समुझत मनमाहीं ॥
दधि भाजन रीते शिरधारैं ❀ भरी प्रेम तनुदशा बिसारैं ॥
कबहूं यमुनाके तट जाहीं ❀ फिरति कबहुं कुंजनके माहीं ॥
कबहूं वंशीवट तट आवैं ❀ ठाढी ह्वै तहँ हरिहिं बुलावैं ॥

दो०--लीजै गोरसदान हरि, कहँ धौं रहे छिपाय ।
डरन तुम्हारे जात नहिं, तुम दधि लेत छिनाय ॥

सो०--लेहु आपनो दान, पुनि रिस करि उठि धायहो ।
हमैं न देहो जान, वनमें हम ठाढी सबै ॥

बैठि गई मटुकीधरि सबहीं ❀ जानति घरसे आई अबहीं ॥
सखा संग लीन्हें हरि ऐहैं ❀ दधि माखनको दान चुकैहैं ॥
दधिहि दुरावत अंचर तरिकै ❀ दीठि गई मटुकिनमें परिकै ॥
रीती मटुकी सबन निहारी ❀ गईं भभरि उरमें सब नारी ॥
जहां तहां कहि उठीं गुवाली ❀ गोरस ढरकायो कहुँ आली ॥
कोउ कोउ कहत कान्ह ढरकायो ❀ कोउ कहै सखन संग हरि खायो ॥
भई सुरति कछु तब तनु माहीं ❀ गई घरहि हम तबते नाहीं ॥

सकुच भई कछु गुरुजन डरते ❀ प्रातहिंते हम आई घरते ॥
रही कहां तबते वन माहीं ❀ यहतो सुरत हमैं कछु नाहीं ॥
जब हरि सखनसंग दधि खाई ❀ गये बहुरि बन कुवँर कन्हाई ॥
तबलौंकी तो सुधि हम पाहीं ❀ भई कहा पुनि जानति नाहीं ॥
जानिपरी हमको तो यौंरी ❀ डारिगये शिर श्याम ठगौरी ॥
दो०-श्याम बिना यहको करै, लायो दधिको दान ।
तनु सुधि भूली तबहिते, वाकी मृदु मुसक्यान ॥
सो०-मन हरिलीन्ह्यो श्याम, ताबिन निबहैं कौनविधि ।
ऐसे कहि सब बाम, घरको चलन विचारहीं ॥
मन हरिसों तन घरहि चलावै ❀ ज्यों गज मत्त चलन छबि पावैं ॥
श्यामरूप रसमदसों भार्यो ❀ कुलमर्याद महावत टार्यो ॥
करमनेहबंधन सों तोर्यो ❀ मुरै न लाज कुंजको मोर्यो ॥
गुरुजन अंकुश जो सुधि आवै ❀ तब तनु घरको पाँव चलावै ॥
ऐसे गईं सदन ब्रजबाला ❀ नहिं भावत क्षण बिन नँदलाला ॥
बूझत गुरुजन जब कछु जिनसों ❀ औरै बात बतावति तिनसों ॥
गारी देत सुनत नहिं कोऊ ❀ श्रवण शब्द हरि पूरे दोऊ ॥
मात पिता बहु त्रास दिखावैं ❀ नेक नहीं सो उरमें ल्यावैं ॥
बार बार जननी समुझावति ❀ काहेको तुम हमहिं हँसावति ॥
जहां तहां काहे तुम जाओ ❀ नहिं अपनी कुलकानि लजाओ ॥
दधिबेंचौ घर सूधे आवो ❀ काहे इतनो बिलम लगावो ॥
बूझे ज्वाब देति तुम नाहीं ❀ बसी कहा तुम्हरे मन [illegible]ब ॥
दो०-ऐसे सिखवत मात पितु, सो न करति कछु क[illegible]ाई ॥
लागतहैं तिनके वचन, उरमें बाण सम[illegible]हीं ॥
सो०-तिन्हैं कहत मन माहिं, धृक धृक इनकी बुद्धि[illegible]री ॥
जिन्हैं श्याम प्रिय नाहिं, तिन्हैं बनै त्यागे [illegible]न्हीं ॥
जिनको हरिकी प्रीति न भावै ❀ तिनको मुख जनि विधि [illegible]ानी ॥
[illegible]बात ।

१ गोपी । २ घर ।

ऐसे विनय करति विधिपाहीं ❀ गुरु जनको निंदति मनमाहीं ॥
नेक नहीं घरसों मन लागत ❀ बिसरत श्याम न सोवत जावत ॥
नयन श्याम दरशन रस अटके ❀ श्रवण वचन रसते नहिं मटके ॥
रसना[1] श्याम बिना नहिं बोलै ❀ मन चंचल संगहि सँग डोलै ॥
नासा अंग सुगंध लुभानी ❀ सुरत श्यामके रूप समानी ॥
चरण चलन चाहत दिशि तेही ❀ जिहिदिश सुंदर श्यामसनेही ॥
लोक लाज कुल कानि मिटाई ❀ रँगी श्यामके रंग सुहाई ॥
प्रात चली दधिलै ब्रज माहीं ❀ इंद्रियगण मन बुधि वश नाहीं ॥
तनुलै निकसीं बेंचन गोरस ❀ रसनासों अटक्यो हरिको यस ॥
दधिको नाम भूलि गइँ बाला ❀ कहत लेहु कोऊ गोपाला ॥
भीजिरह्यो मनमोहन को रस ❀ व्यापि गई उर माहिं दिशादस ॥

दो०—फँसी सबै खग[2] वृन्दज्यों, हरि छबि लटकनजाल ।
तरफरात तामें परी, निकसि सकति नहिं बाल ॥

सो०—बोलत मुख न सँभार, पान किये जिमि वारुणी[3] ।
बिथुरी अलक लिलार, पग डगमगजित तितपरैं ॥

दधि बेंचत ब्रजबीथिन डोलैं ❀ अलबल बचन वदन ते बोलैं ॥
गोरस लेन बुलावत जोई ❀ तिनकी बात सुनत नहिं कोई ॥
क्षण कछु चेत करत मन माहीं ❀ गोरस लेत आज कोउ नाहीं ॥
बोलि उठत पुनि लेहु गोपालहिं ❀ अटकि रह्यो मनवा हरिख्यालहिं ॥
लेहु लेहु कोऊ वनमाली ❀ गलिन गलिन यों बोलति ग्वाली ॥
कोउ कह श्याम कृष्ण वनवारी ❀ कोउ कह लाल गोवर्द्धनधारी ॥
कोउ कह उठति दान हरि लायो ❀ कबहूं भई कि तुमहिं चलायो ॥
देह गेहकी सुरति बिसारी ❀ फिरति शीश मटुकी दधिधारी ॥
जाहि देहकी सुधि कछु होई ❀ दधिको नाम लेत तब सोई ॥
इहिं विधि बेंचतही सब डोलैं ❀ आप बिकानी बिनहीं मोलैं ॥
श्याम बिना कछु और न भावै ❀ कोऊ कितनो कहि समुझावै ॥

१ जीभ । २ पक्षीसमूह । ३ मदिरा ।

हरि दरशनबिन मति भई भोरी ❀ अंतर लगी सुरतकी डोरी ॥

दो०–पकरचो पूरण नेह उर, जित देखैं तित श्याम ।
समुझाई समुझत नहीं, सिख दै थाक्यो ग्राम ॥

सो०–ज्यों दीपक घर माहिं, बाहर नहिं देख्यो परै ।
गुप्त होत सो नाहिं, जब तृण छू दावा भयो ॥

इहिंविधि मगन सकल ब्रजनारी ❀ कृष्ण प्रेम रस मद मतवारी ॥
सकल प्रेमकी मूरति पूरी ❀ कोऊ तिनमैं नाहिं अधूरी ॥
एकदशा सबहीकी जानो ❀ कहँलगि सबको प्रेम बखानो ॥
तिनमें श्रीवृषभानुदुलारी ❀ सकल शिरोमणि हरिकी प्यारी ॥
नेक नहीं हरिते सो न्यारी ❀ तिनकी कथा कहत विस्तारी ॥
दधिभाजन माथेपर धारै ❀ लेहु श्याम कहि वचन उचारै ॥
बूझति तिन्हैं और ब्रजनारी ❀ बेंचति कहा फिरत तू ग्वारी ॥
प्रातहिं ते लीन्हें दधि डोलै ❀ मुखते नाम कान्हको बोलै ॥
कहा करत यह हमें बतावो ❀ कछु हमको निजबात सुनावो ॥
उफनत तक्र चुवत अँग माहीं ❀ ताकी सुरति तोहिं कछु नाहीं ॥
इतते उत उतते इत जाई ❀ बुधि मर्यादा सबै मिटाई ॥
मैं जानी यह बात बनाई ❀ तेरो मन हरि लियो कन्हाई ॥

दो०–तिन्हैं कहति मुहिं नंदघर, कहाँ सु देहु बताय ।
जहाँ बसत वह सांवरो, मोहन कुवँर कन्हाय ॥

सो०–है धौं याही गाँव, कैधौं कहुँ अन्तर बसत ।
कान्हर जाको नाँव, मैं खोजत वाको फिरौं ॥

बहुत दूर ते हौं मैं आई ❀ मोहिं देहु नँदनंदन बताई ॥
नंदहिके द्वारे पर ठाढी ❀ बूझत अति संभ्रमता बाढी ॥
लोक लाज कुलकी सब नासी ❀ मन बँधि गयो प्रेमकी फांसी ॥
तब यक सखी परम हितकारी ❀ हरिकी प्यारीकी अति प्यारी ॥
प्यारीको निज ढिग बैठाई ❀ शिक्षा वचन कहत समुझाई ॥

१ दावानल । २ छाँछ । ३ घर ।

अहो राधिका कुवँरि सयानी ❋ क्यों ऐसी अब भई अयानी ॥
ऐसे प्रगट प्रेम नहिं कीजै ❋ देखि विचारि धीर उर दीजै ॥
हँसिहैं लखि सब ब्रज नरनारी ❋ एकहि बार लाज तैं डोरी ॥
ऐसे कहा फिरत वितताली ❋ मात पिता गुरुजनहिं भुलानी ॥
जो पै कृष्ण प्रेम धन पैये ❋ राखिय गुप्त न प्रगट जनैये ॥
ऐसी तोहिं बूझिये नाहीं ❋ समुझ देख अपने मनमाहीं ॥
अजहूं चेत बात सुन मेरी ❋ कहते कुवँरि तेरे हितकेरी ॥
दो०-कृष्ण प्रेम धन पायकै, प्रगट न कीजै बाल ।
राखिय उर यों गोय[२]कै, ज्यों मणि राखत व्याल[३] ॥
सो०-तू अति तागरि नारि, पायो नागरनेह जो ।
तौ कत देति उघारि, कहिहैं तोहिं गवाँरि सब ॥
मैं जो कहति सुनतिकै नाहीं ❋ दैहै ज्वाब कछू मो पाहीं ॥
कहिहै वचन कि मौनहिं रैहै ❋ घर अपने जैहै किन जैहै ॥
लोगन मुख सुनिहैं पितु माता ❋ ब्रजमें प्रगटी है यह बाता ॥
मानैंगी मम वचन कि नाहीं ❋ कै फिरिहै ऐसहि ब्रजमाहीं ॥
जो यह प्रीति श्याम सों जोरी ❋ लाज किये ह्वै है कह थोरी ॥
ध्यान श्यामको धरि उर माहीं ❋ लाज छांडि कत भ्रमत वृथाहीं ॥
मुख तौ खोल सुनहुँ तुम बानी ❋ केसी कहति परै कछु जानी ॥
कहा कहत मोसों तुव आली ❋ मन मेरो लीन्हो वनमाली ॥
तबते मोको कछु न सुहाई ❋ जित देखौं तित कुवँर कन्हाई ॥
अबलौं नहिं जानत मैं को ही ❋ कहा कहत है अब तैं मोही ॥
कहां गेह को पितु अरु माता ❋ कहँ दुरजन को गुरुजन भ्राता ॥
कहां लाज कहँ कानि बडाई ❋ तू कह कहति कहांते आई ॥
दो०-बार बार तू कहति कह, मैं नहिं समुझति बात ।
मेरे मनमें घर कियो, वा यशुमतिके तात ॥
सो०-रहत न मेरी आन, अपनी सों मैं कर थकी ।

१ छोडदीनी । २ छिपायके । ३ सर्प ।

तूतो बडी सुजान, कहा देति सखि दोष मोहिं ॥

मेरे हाथ नहीं मन मेरो ❀ सुनै कौन सखि सिखवन तेरो ॥
इन्द्रियगण मनकी अनुगामी ❀ सब इन्द्रिनको मन यह स्वामी ॥
सो मन हरिलीन्हों ब्रजनाथा ❀ इन्द्रिय गईं सबै मन साथा ॥
अब मेरे वशमें कोउ नाहीं ❀ रहीं जाय सब हरिके पाहीं ॥
नयन दरशके लोभ लुभाने ❀ श्रवण शब्दके माहिं समाने ॥
अब ये फिरत न मेरे फेरे ❀ कहा होत सिखये सखि तेरे ॥
मेरे हाथ हाथमें नाहीं ❀ कौन करै घूंघुटपट छाहीं ॥
अब तो प्रकट भई जग जानी ❀ वा मोहनके हाथ बिकानी ॥
मन मान्यो मोहन सों मेरो ❀ जग उपहास करै बहुतेरो ॥
मेरे मन अब बस्यो कन्हाई ❀ कै लघुता कै होहु बडाई ॥
मैं अपनो मन हरिसों जोरचो ❀ नाच कछचो तब घूंघुट छोरचो ॥
अब तो मेरे मन यह मानी ❀ मिल्यो श्याम सों ज्यों पयपानी ॥

दो०-मेरो मन हरि सँग बस्यो, लोक लाज कुलत्याग ।
और ताहि सूझै नहीं, भो जहाजको काग ॥
सो०-ऐसे सखिहि सुनाय, मौन गही पुनि नागरी ।
देह दशा बिसराय, मगन भई रस श्यामके ॥

जाय परचो मन वाही ख्यालहिं ❀ बोलि उठी कोउ लेहु गोपालहिं ॥
कहत सखीसों तू को आली ❀ कहँ वह दधिदानी वनमाली ॥
नंदसदन सखि मोहिं बताओ ❀ नंदनँदन प्रिय वेगि मिलाओ ॥
विरहविवश अतिव्याकुल बाला ❀ मन हरि लीन्हों नँदके लाला ॥
दधि मटुकी लीन्हें शिर डोलै ❀ द्वारे आय नंदके बोलै ॥
इत उत जाय ताहीं फिरि आवै ❀ लेहु कान्ह दधि टेरि सुनावै ॥
भ्रम भ्रम विवश भई सब ग्वाली ❀ चलीं वनहि खोजन वनमाली ॥
वंशीवट यमुनातट जाई ❀ कहति दान दधि लेहु कन्हाई ॥
फिरत विकल वनवन दधि लीन्हें ❀ तन मन हरिको अर्पण कीन्हें ॥

१ कान । २ तुच्छता । ३ दूधपानी ।

कीन्हों दिनकर¹ प्रेम प्रकाशा ❀ लोकलाज डर तम² कर नाशा ॥
तनुकी दशा वरणि नहिं जाई ❀ रोम रोममें रहे कन्हाई ॥
प्रेम अधिक ब्रज गोपकुमारी ❀ गावत वेद पुराण पुकारी ॥

दो०—कृष्ण राधिकाके चरित, अति पवित्र सुखखान ।
कहत सुनत भव³भयहरण, रसिकजननके प्रान ॥

सो०—रसिक शिरोमणिराय, गोपीजन मनके हरण ।
कहौं सु अब सुखदाय, रसलीला जो ब्रज करी ॥

देखि दशा राधाकी ग्वाली ❀ शिक्षा करति हती जो आली ॥
चकित रही मन मांझ विचारी ❀ या शिर श्याम ठगौरी डारी ॥
गई सखी सो हरि पै धाई ❀ कहइ सुनहु प्रभु कुँवर कन्हाई ॥
ढूंढति फिरति तुम्हें इक नारी ❀ अति सुन्दरी नवल सुकुमारी ॥
पहिरे नीलाम्बर अति सोहै ❀ मुखद्युति चंद्र निरखि मनमोहै ॥
प्रातहिंते लीन्हें दधि डोलै ❀ लेहु गोपाल वदनते बोलै ॥
भ्रमत भ्रमत अति विकल भईहै ❀ वंशीवटकी ओर गई है ॥
मन वच कर्म जान मैं पाई ❀ तुममें वाको प्राण कन्हाई ॥
ताहि मिलो कबहूँ सुखदाई ❀ कहत सखी करिकै चतुराई ॥
तुमबिन विरहविकलअति बाला ❀ मिलहु वेगि ताको नँदलाला ॥
सुनत श्याम मन हर्ष बढायो ❀ सांची प्रीति जानि सुखपायो ॥
हरि हँसि विदा सखीको कीन्हों ❀ आप दरश प्यारीको दीन्हों ॥

दो०—परम हर्ष दोऊ मिले, राधा नंदकुमार ।
कुंजसदन मोहत मनो, तनु धरि छबि शृंगार ॥

सो०—श्यामा अरु घनश्याम, कोटिकामरतिद्युतिहरण ।
ब्रजवासी उर धाम, युगल किशोर बसो सदा ॥

सोहत कुंज कुटी सुखरासी ❀ प्रिय घनश्याम बाम चपला⁴सी ॥
विरहताप तन दूर निवारी ❀ बोली मोहन सों तब प्यारी ॥
कहा कहौं तुम सों सुन्दर घन ❀ कहत लजात बाम मनहीं मन ॥

१ सूर्य । २ अन्धकार । ३ संसार । ४ बिजुरीसी ।

होत चवाव सकल ब्रजमाहीं ❀ सुनत श्रवण सहि जात सु नाहीं ॥
जा दिन तुम गैया दुहि दीन्हीं ❀ हाहा करि दुहनी मैं लीन्हीं ॥
सहज गही बहियां तुम मेरी ❀ मैं हँसि तनक वदन तन हेरी ॥
तादिनते गृह मारग जित तित ❀ करत चवाव सकल ब्रजजननित ॥
यहै कहैं ब्रजमें सब कोऊ ❀ राधा कृष्ण एक हैं दोऊ ॥
यह सुनि घर गुरुजन दुख पावैं ❀ कटुक[1] वचन कहि त्रास दिखावैं ॥
निकसत द्वार जबहिं तुम आई ❀ रहत सबै तब देखि लुगाई ॥
निंदत तुमको मोहिं सुनाई ❀ सो मोपै हरि सह्यो न जाई ॥
कहत मनहिं सबको तजि दीजै ❀ इन विमुखनको संग न कीजै ॥

दो०–धृक धृक ते नर नारि हरि, जिन्हैं न तुम पदप्रेम ।
हित करि तुम जाने नहीं, कहा निबाहै नेम ॥

सो०–मैं लीन्हों दृढ नेम, सुनहु श्यामसुन्दर सुखद ।
तुम पदपंकज प्रेम, यहै पतिव्रत पारिहौं ॥

हरि तुम विन यह कासों कहिये ❀ ब्रजवसि कोक बोल न सहिये ॥
ताते विनय करति तुम पाहीं ❀ वा पैंडे तुम आवहु नाहीं ॥
जो आवो तो मुहिं न जनावो ❀ मुरली धुनि मोको न सुनावो ॥
मुरली धुनि सुनि सुनहु कन्हाई ❀ बिन देखे मुहिं रह्यो न जाई ॥
प्रेमाकुल सुनि प्रियकी बानी ❀ बोले विहँसि श्याम सुखदानी ॥
सांच कहत ब्रजके नरनारी ❀ तुम नेकहु मोते नहिं न्यारी ॥
कहन देहु गुरुजन कह जाने ❀ वै अपने सब सुरत भुलाने ॥
प्रकृति पुरुष एकै हम दोऊ ❀ तुम मोते कछु भिन्न न कोऊ ॥
उभय देह लीला हित ठानी ❀ घटहै भेद नहीं कछु पानी ॥
जल थल जहाँ तहाँ तनु धारो ❀ तुम तजि कहूं रहत नहिं न्यारो ॥
देह धरेको यहै विचारा ❀ मानिय कुल कुटुम्ब व्योहारा ॥
लोकलाज गृह छाँड़ि न दीजै ❀ मात पिता गुरुजन डर कीजै ॥

१. कडुए ।

दो०-प्रीति पुरातन राखि उर, जाहु प्रिया अब धाम ।
प्रगट न कीजै बात यह, कहत विहँसि कै श्याम ॥
सो०-सुनत श्यामके बैन, हर्ष भई मन नागरी ।
भयो हिये अति चैन, प्रीति पुरातन जानि जिय ॥
अति आनन्द भई मन प्यारी ❀ तब जान्यो हरि पति मैं नारी ॥
भूलि गई काहे पछितानी ❀ यह महिमा हरिकी जियजानी ॥
युग युग प्रभु लीला विस्तारी ❀ जान लई वृषभानु दुलारी ॥
हरि मुख अलंप चितै मुसकानी ❀ रही परम आनँद उर मानी ॥
कहत सुनहु प्रिय अन्तर्यामी ❀ तुम कर्त्ता हो जगके स्वामी ॥
मात पिता गुरुजन हित भाई ❀ कहा नाथ यह नई सगाई ॥
जो कर्त्ता औरे सुनि पाऊं ❀ तौ हौं प्रभु तिनको पतियाऊं ॥
अरु परतीत जगतकी जानौं ❀ तौ परमित छूटत डर मानौं ॥
जो जाको सो ताहिको जानै ❀ कैसे औरनको मन मानै ॥
अब नहिं तजौं कमलपद पासा ❀ मन मधुकर कीन्हों जब बासा ॥
यह सुनि हरि प्यारी उर लाई ❀ बहुविधि करि प्रबोध समुझाई ॥
तनु धरि लोक वेद विधि कीजै ❀ प्रीति रीति उरमें धरि लीजै ॥
दो०-कहत श्याम अब जाहु घर, तुमको भई अबार ।
प्रीति पुरातन गोय उर, करिये जग व्यवहार ॥
सो०-परम प्रेम उरलाय, घर पठई हरि भावती ।
चली संग सुख पाय, फिर फिर चितवत श्याम ॥
चली संग सुख लूट किशोरी ❀ लसत अंग मरगजी पटोरी ॥
गज[3]गति जाति भवन सुखपाई ❀ रहे रीझि छवि निरखि कन्हाई ॥
प्यारीमन आनंद बढाये ❀ सुख भर चली लूटसी पाये ॥
मनहिं कहत अति उमँग उछाहू ❀ यह धन प्रगटकरौं नहिं काहू ॥
सखियनहू नहिं भेद जनाऊं ❀ कृष्णप्रेमधन गुप्त दुराऊं ॥
श्याम कह्यो सोई उर धरिहौं ❀ प्रीति पुरातन प्रगट न करिहौं ॥

१ मंद । २ भौंरा । ३ हाथीकीचाल ।

ऐसे मनहिं विचारति जाहीं ❀ तहँ इकसखी मिली मगमाहीं ॥
अंग अंग छबि लखि मुसकानी ❀ कहति बिहँसि प्यारी सों बानी ॥
कह फूलीसी आवति राधा ❀ आज रूप कछु अंग अगाधा ॥
बदन सिकोरति मोरति भौं हैं ❀ कहति कछू मनहीं मन मोहैं ॥
देखियतकछू अंग रसभीने ❀ सुलभ मनोरथ हरिसँग कीने ॥
हम सों सो सब बात उघारो ❀ दुरत न गंध दुरावन हारो ॥

दो०-फिरतहती व्याकुल अबहिं, जिनके दरशन लाग ।
कहां मिले नँदनंद सो, धनि धनि तेरो भाग ॥

सो०-नहिं पावतहैं जाहि, योगी जन जप तप किये ।
वश करि पायो ताहि, तैं कैसे कहु नागरी ॥

कहा कहति सखि भई बावरी ❀ करन कछू चाहत चवावरी ॥
तू हँसि कहत सुनो जो कोऊ ❀ सो तो सांचि मानिहै सोऊ ॥
चकित होति सुनि अचरज तेरो ❀ है चवाव पुनि घर कहुँ मेरो ॥
ऐसो होय कहति तू जैसे ❀ गुरुजनमें निबहौं पुनि कैसे ॥
कहा भेद कछु तोसों मोसों ❀ मैं दुराव करिहौं सखि तोसों ॥
को नँदनन्द कहति तू जिनको ❀ मैं कबहूं देख्यो नहिं तिनको ॥
कै गोरे कै बरण सांवरे ❀ रहत ब्रजहिं के अनत गांवरे ॥
मैं ता नहिं जानति वै जैसे ❀ तू बहुबात मिलावति कैसे ॥
जाहि चली जानी मैं तोको ❀ कहा भुरावति है तू मोको ॥
अबहीं फिरति हती बौराई ❀ आजहि पढिलीन्हीं चतुराई ॥
याही ब्रज हम तुम अरु वोऊ ❀ दूर नहीं जो है कहुँ कोऊ ॥
परिहौ कबहूं फंद हमारे ❀ करिहैं तबहिं जुहार तुम्हारे ॥

दो०-निपुण भई उनके मिले, वह सुधि गई भुलाय ।
आवतिहैं वन कुंजते, बातैं कहति बनाय ॥

सो०-रीझे श्याम सुजान, कहे देति अँगकी पुलक ।
मोसों करत सयान, सगिबँगि रही सनेहजल ॥

हँसत कहत कै धौं सत बानी ❀ तेरी सौं मैं कछू न जानी ॥

१ सफल । २ मणाम । ३ चतुर । ४ भीजरही ।

कह्यो कहा मुहिं बहुरि सुनावै ❁ तोहिं सोंह मेरी जु दुरावै ॥
कबहूं कछू भाव यह पायो ❁ तैंदेख्यो कै किनहु सुनायो ॥
ऐसी कहत और जो कोऊ ❁ सुनती मोपै उतर न सोऊ ॥
बूझत मोहिं लगावत ताही ❁ सपनेहूं देख्यो नाहिं जाही ॥
ऐसी मोहिं कहौ जिन कोई ❁ झूठी बातनिपर दुखहोई ॥
उचटाये पैहै कछु मोसों ❁ बहुरि नहीं बोलोंगी तोसों ॥
तोते और काहि हितपैहों ❁ जाते हितकी बात जनैहौं ॥
यह परतीत न तोको होई ❁ मैं राखति तोते कछु गोई ॥
चतुरसखी मनमें जबजानी ❁ मोतें तौ कछु नाहिं छिपानी ॥
त्रास भई याके मनमाहीं ❁ ताते बातकहति यह नाहीं ॥
तब यह कही हँसत मैं तोसों ❁ जिन मनमें दुख मानै मोसों ॥

दो०-मानी तेरी बात अब, कह तू कहँ वे श्याम ।
हमहुँ उन्हें जाने नहीं, बसत कौन धौं गाम ॥
सो०-हम आगेकी आइ, भई सयानी लाडिली ।
हँसत कह्यो घर जाइ, तैंनहिं हरि कबहूं लखे ॥

सकुच सहित वृषभानु दुलारी ❁ गई सदन गुरुजनडर भारी ॥
जननी कहत कहां हति प्यारी ❁ डोलति फिरति अजहुं है बारी ॥
घर तुहिं तनक देखियत नाहीं ❁ दधि लै जात फिरत वन माहीं ॥
श्याम संग बैठति है जाई ❁ आज तोहिं फिरवत हो भाई ॥
काहे को उपहास करावति ❁ दधिहि बेंचि सूधे किन आवति ॥
वृथा करति मैया रिस मोसों ❁ को अब बात कहै री तोसों ॥
ऐसी को बहिगई विधाता ❁ श्यामसंग फिरि है सुनि माता ॥
कौने बात कही यह तोसों ❁ ताको नाम लेहि किन मोसों ॥
धन्य भ्रात धनि धनि तू माई ❁ ऐसी बात कहति मुहँ लाई ॥
तू पर घर क्षण क्षण कित जाई ❁ मैं बरजति नहिं नेकु डराई ॥
श्यामा श्याम सकल ब्रज माहीं ❁ ह्वै रहे लाज लगति तुहि नाहीं ॥

वडे महरिकी सुता कहावति ❀ काहेको पितु मात लजावति ॥
दो०—खेलनको मैं जाउँ नहिं, कहा कहति री मात ।
मोपै जात सही नहीं, यहै अनोखी बात ॥
सो०—घर घर खेलन जात, गोपनकी सब लरकिनी ।
तू मोहीं रिसियात, तिनके मात पिता नहीं ॥
मनहीं मन समुझति महतारी ❀ अवहीं तो मेरी है वारी ॥
कहा भयो तनु वाढ भई है ❀ लरिकाई अवहीं न गई है ॥
झूठहिं वात उडी यह सारी ❀ श्यामा श्याम कहत नर नारी ॥
खेलत देखि कहत सब कोऊ ❀ अवहीं तो बालक हैं दोऊ ॥
सुनत सुता मुख रिसकी बानी ❀ मनही मन कीरति[1] मुसक्यानी ॥
तव गहि उर लाई चुचकारी ❀ परबोधति उरसों रिस टारी ॥
खेलहु संग लरिकिनिन माहीं ❀ खेलनको मैं वरजत नाहीं ॥
श्याम संग सुनि होत दुखारी ❀ झूठहि लोग लगावत गारी ॥
जाते कुलको दूषण होई ❀ सुनि प्यारी कीजे नहिं सोई ॥
अव राधा तू भई सयानी ❀ मेरी सीख लेहि जिय मानी ॥
जननीके मुखकी सुनि बानी ❀ श्रीवृषभानु सुता मुसकानी ॥
मन मन विनय करत हरि पाही ❀ सुनहु श्याम तुम सब घट माहीं ॥
दो०—मात पिता मानत मनहिं, लोकलाज कुलकान ।
नहिं जानत तुमको सुखद, जगत ईश भगवान ॥
सो०—लेत तुम्हारो नाव, सकुचति हौं इनके निकट ।
यह समुझत पछताव, तुम बिमुखनमें क्यों रहौं ॥
तुम मोहिं कह्यो कानि कुल राख्यो ❀ क्यों विषखाय सुधा[2] जिनचाख्यो ॥
जिन्हें नाथ तुम पद दृढ प्रेमा ❀ कैसे तिनसों निबहत नेमा ॥
अहो श्याम मैं मन क्रम बानी ❀ नाथ तिहारे हाथ विकानी ॥
ऐसे कृष्ण हृदयमें आनी ❀ बोली जननी सों हँसि बानी ॥
तू अव कहति कहा मोंको री ❀ अकथ बात है माँ कछु तोरी ॥

१ कीरतिके । २ अमृत ।

अब हरि संग न खेलौं जाई ❋ जा कारण तू मोहिं सुगाई ॥
आवनदे बाबा घर माहीं ❋ यह सब बात कहौं उन पाहीं ॥
देति गारि म्वाहिं श्याम लगाई ❋ ऐसे लायक भये कन्हाई ॥
रोंकी मोको कालिह गलीमें ❋ सखिनसंगमें जाति चली मैं ॥
लगे कहन बँसुरिया मेरी ❋ तू लैगई चुराय सो देरी ॥
छठि आठें मौसोंहै जिनसों ❋ मोहिं लगावतिहै तू तिनसों ॥
सुन सुन कर राधाकी बानी ❋ मुखनिरखत जननी मुसकानी ॥
दो०—कहति मनहिं मन अबहिंलौं, नहीं गई लरिकाय।
बारेहीके ढँग सबै, अपनी टेक चलाय ॥
सो०—अब जैहै मचलाय, कापै जाय मनाय पुनि।
हारि मानि रहि माय, बालकबुधि जिय जानिकै ॥
बोलि लई हँसिकै दुलराई ❋ पुनि पुनि कहि मेरी रिसहाई ॥
कंठ लगाय लई अति हितसों ❋ रही चकित शोभा लखि चितसों ॥
चतुर शिरोमणि हरिकी प्यारी ❋ परम चतुर वृषभानु दुलारी ॥
बातनहीं माता बहराई ❋ नीके राखि लई चतुराई ॥
कृष्णप्रेम धन पाय छिपायो ❋ संग सखी तिनहूं न जनायो ॥
जैसे कृपण महाधन पावै ❋ धरत दुराय न प्रगट जनावै ॥
सखी मिली जो मारग माहीं ❋ कह्यौ जाय तिन सखियन पाहीं ॥
सुनहु सखी राधाकी बातैं ❋ कैसी आज करी उन घातैं ॥
वृन्दावन ते अबहीं आई ❋ हर्ष सहित मैं लखि मगं पाई ॥
औरै भाव अंग छबि छाई ❋ श्यामहिं मिली भई मनभाई ॥
मोको देखतही हँसि दीन्हों ❋ मैंहूं हर्ष मनहिंमन कीन्हों ॥
जब मैं कही मिले हरि तोसों ❋ तब रिसकरि फेरचो मुख मोसों ॥
दो०—मोसों तब लागी कहन, को हरि काको नांव।
कै गोरे कै सांवरे, बसत कौनसे गांव ॥
सो०—मैं तो जानत नाहिं, लेत नाम तू कौनको।

१ सूम। २ छिपाय। ३ मार्ग।

लखे न सपनेहुँमाहिं, सांच कहति कै हँसति मुहिं ॥
ऐसे कहि टेढी करि भौंहैं ❋ चितई नेकु न मोतन सौंहैं ॥
वह निधरक मैं सकुच गईरी ❋ और कहौं तौ करत खईरी ॥
तब मैं यह कहि घर पठईरी ❋ मैं झूंठी तू सांच भईरी ॥
दोऊ एक भये अब आई ❋ हमहूं सों यह बात दुराई ॥
घर धौं जाय कहा अब कैहै ❋ कैसी धौं तहँ बुधि उपजैहैं ॥
सुनिकै बात सखी मुसुकानी ❋ प्यारिहि देखनको अतुरानी ॥
कहत सबै जबहीं हम जैहैं ❋ तबहीं जाय प्रगट करिदैहैं ॥
कहारहै यह बात छिपानी ❋ दूध दूध पानी सो पानी ॥
आंखिन देखतही लखि जैहै ❋ कैसे हमसों बात छिपैहै ॥
आपनो भेद नहीं वह कैहै ❋ सुनिहौं कैसे गाल बजैहै ॥
लखहु चरित्र जाय तुम वाको ❋ राधा कुवँरि नामहै जाको ॥
मैं बूझ्यो करि बहु चतुराई ❋ नेकहु थाह न वाकी पाई ॥
दो०–बडे गुरूकी बुधि पढी, कहू नहीं पतियात ।
एकौ बात न मानि है, सौ सौ सौंहैं खात ॥
सो०–रहिहैं सब पछिताय, सुनत वचन वाके वदन ।
अब जैहै रिसियाय, बातन बैर बढाइहौ ॥
कहा बैर हमसों वह करिहै ❋ बातन कैसे हमहिं निदरिहै ॥
औरनसों जो करती टारी ❋ तो हम हूं जानती सयारी ॥
वाकी जाति भले हम पाई ❋ हमहीं सों यह बात चुराई ॥
परिहै जब मेरे फँद आई ❋ दूरि करौं वाकी लँगराई ॥
जो नहिं हमसन भेद कहैगी ❋ तौ पुनि कैसेकै निबहैगी ॥
हमसों बैर किये कह पैहै ❋ बहुरि लिये मटुकी शिर ऐहै ॥
चलो सबै देखें घर ताको ❋ है निधरक कैधों डर वाको ॥
बूझे बात कहा धौं कैहै ❋ हम सों मिलिहै कै दुरि जैहै ॥
रिसकरिहै कै धौं हँसिबोलै ❋ बात छिपावै कै धौं खोलै ॥

१ छिपा ।

सहज स्वभाव किधौं गरवानी ❀ यह कहि चलीं अली सब स्यानी ॥
गइ निकट राधेके जबहीं ❀ जान गई नागरि मन तबहीं ॥
ये सब मोपर रिस करि आईं ❀ तब इक मनमें बुद्धि उपाई ॥
दो०—काहूको कीन्हों नहीं, आदर करि चतुराइ ।
मौन गही बोलत नहीं, बैठि गई निठुराइ ॥
सो०—लखि सब सखी सुजान, बैठि गईं ढिग आपई ।
औरै बात बखान, आपसमें लागीं करन ॥
राधा चतुर चतुर सब आली ❀ चतुर चतुरकी भेंट निराली ॥
उन तो गही मौन निठुराई ❀ इन लखि लई तासु चतुराई ॥
मुहांचहीं आपसमें कीन्हीं ❀ याकी बात सबै हम चीन्हीं ॥
कहा भेद हमसों यह भाखै ❀ उलटे हमहीं पर रिस राखै ॥
बूझहु याहि खुनट करि कोई ❀ कहा आज इन मौन लयोई ॥
हमसों कहा ओट इन लीन्हीं ❀ साठ सई हमहीं कर दीन्हीं ॥
एकसखी तब विहँसि सुनायो ❀ कहो मौन ब्रत किन सिखरायो ॥
धनि वह गुरू मंत्र जिन दीन्हों ❀ कान लगतही ऐसो कीन्हों ॥
काल्हि और परभातहिं औरै ❀ अबहिं भई कछु और कि औरै ॥
सुनि यह बात सबै हम धाईं ❀ चकित भईं देखन तोहिं आईं ॥
कहा मौन को फल अब कहिये ❀ सुनें कछू तो हमहूं गहिये ॥
इकसँग सबै भई तरुणाई ❀ मंत्र लियो तब हम न बुलाई ॥
दो०—अब तुमहींको हम करैं, गुरू देहु उपदेश ।
हमहूं राखैं मौनब्रत, करैं तुम्हैं आदेश ॥
सो०—हमको कियो अजान, चतुर भई तू लाडिली ।
कहँ सीख्यो यह ज्ञान, ऐसी बिधि लागी करन ॥
रहत एक सँग हम तुम प्यारी ❀ आजहिं चटक भई तू न्यारी ॥
कहा भयो तोहिं किनहिं सिखाई ❀ नई रीति यह कहां चलाई ॥
हम तो तेरे हित की करिहैं ❀ और कहै तासों सब लरिहैं ॥

सुनत कुँवँरि सखियन की बानी ❋ बोली करत सबै यह जानी ॥
गुणअगार[१] नागरी सयानी ❋ बोली सहित निठुरई बानी ॥
तुम प्रीतम के बैरिनि मेरी ❋ बूझति तुम्हैं कहो सखि हेरी ॥
वाको कहति जु गैल मिलेरी ❋ नहीं कही उन मोहिं भलीरी ॥
कह्यो मोहिं तुम श्याम मिलेरी ❋ मैं चकरही सौंह मोहिं तेरी ॥
मेरे अँग छबि और बताई ❋ तब मैं भई बहुत दुखदाई ॥
जिनको मैं सपने नाहिं जानो ❋ फिरिफिरि तिनकी बात बखानो ॥
मेरो कछु दुराव है तुमसों ❋ तुमही कहौ सखी सब हमसों ॥
कहां रहति मैं कहां कन्हाई ❋ घर घर करत चवाव लुगाई ॥

दो०—और कहैं तो मोहिं कछु, नहिं व्यापहि मनमाहिं ।
तुमहीं कहौ जो बात यह, तौ दुख होयकि नाहिं ॥

सो०—तुमपर रिसमो गात, ताते आदर नहिं कियो ।
सुन प्यारीकी बात, रहीं सबै मुख तन चितै ॥

बोली एक सखी तिनमाहीं ❋ हमतौ तोहिं कह्यो कछु नाहीं ॥
ताही पर होती रिस आई ❋ जिन यह तोसों बात चलाई ॥
प्रथमहिं हमैं प्रगट यह करती ❋ हमहूं ताहीसों सब लरती ॥
क्यों सखि प्यारिय दोष लगावै ❋ झूठी बातन बैर बढावै ॥
तेरे श्याम कहां इन देखे ❋ काहेको सपने हू पेखे ॥
भेदहिं भेद कहत सब बातैं ❋ दै दै सैन करत सब घातैं ॥
प्यारी सबके मनकी जानैं ❋ सबसों रूखे वचन बखानैं ॥
कौन कौन को मुख सखि गहिये ❋ जाको जो भावै सो कहिये ॥
मनते गढि गढि बात बनावै ❋ झूठीको सांची ठहरावै ॥
बिना भीतहीं चित्रित केरो ❋ बातन गहि आकाशहि फेरो ॥
नेक होय तौ सबही सहिये ❋ झूठी सबै सुनत उर दहिये ॥
आवत बोलि न सुनि सुनि बातैं ❋ रहियत मौन सबनते तातैं ॥

दो०—बृथा झेर मोसों करत, कहि कहि झूठी बात ।

१ गुणको घर ।

भलो नहीं उपहास यह, मैं सकुचत दिन रात ॥
सो०-मिलै सखी जो श्याम, और कहा याते भली।
सुनियतहै अभिराम, नंदमहरको सुवन¹ अति ॥
कैसे हैं वे कुवँर कन्हाई ❋ जिनको नाम लेत यह माई ॥
नयनन भरि मैं देखे नाहीं ❋ सुनियत सदा रहत व्रजमाहीं ॥
कहति लजाति बात इक तुमको ❋ इक दिन मोहिं दिखावहु उनको ॥
देखहुँ धौं कैसेहैं तिनको ❋ तुम सब मोहिं कहति हौ जिनको ॥
सुनि वृषभानुसुताकी बानी ❋ हँसीं सबै गोपिका सयानी ॥
सुनु प्यारी तैं सीख हमारी ❋ कहन देहि कहि करैं कहारी ॥
तोको झूठ कहे कह पैहैं ❋ आपनको वै पाप कमैहैं ॥
यह काहू पै जात छपायो ❋ नेक सुगन्ध न दुरत दुरायो ॥
तैं काहेको कान्हहि देख्यो ❋ खरक दुहावनहूं नहिं पेख्यो ॥
सुनहु सखी राधाकी बानी ❋ कहत कछू यह अकथ कहानी ॥
रहति सदा ब्रज गाँव मँझारी ❋ इन नहिं देखे री गिरिधारी ॥
जो हम सुनी रही सो नाहीं ❋ ऐसेहि बाँयु³ बही व्रजमाहीं ॥
दो०-सुनु प्यारी अब तोहि हम, दिखरै हैं नँदनन्द ।
तब वदिहैं यह राखिहौ, देखि उन्हें छलछन्द ॥
सो०-जब ऐहैं इत श्याम, तब हम तोहिं बतायहैं ।
ताहि देखिहैं बाम, है उनहूं अभिलाष अति ॥
तब तू चीन्हि लीजियो उनको ❋ कहति नहीं देखे मैं जिनको ॥
हैं कैसे कारे कै गोरे ❋ सुन्दर चतुर किधौं अति भोरे ॥
तोहिं देखि ओऊ सुख पैहैं ❋ तेरे हित बांसुरी बजैहैं ॥
नाना भाव करेंगे जबहीं ❋ हम सब तोहिं कहैंगी तबहीं ॥
तुमहो चतुर राधिका जैसे ❋ वेऊ² श्याम चतुरहैं तैसे ॥
हँसति कहति सब गोपकिशोरी ❋ चिरजीवहु यह सुंदर जोरी ॥
कबहूं तौ फँद परिहौ आई ❋ तबहीं देहिं चिन्हाय कन्हाई ॥

१ सुन्दर । २ पुत्र । ३ पवन ।

सुनत व्यंग्य सखियनकी वानी ❁ मन मन विहँसत कुवँरि सयानी ॥
चतुराई नीके गहि राखी ❁ सखियनसों हँसि ऐसे भाखी ॥
जो तुम जियमें औरे जानी ❁ मेरी बात प्रतीत न मानी ॥
जो अब मोहिं श्यामसँग पावो ❁ तब कीजो अपनो मन भावो ॥
कान्ह पीतपट बेसर मेरी ❁ लीजो छोरि तबहिं गहि एरी ॥
दो०–यह सुनिकै सब हँसि उठीं, प्यारी बदन निहारि ।
आईही अति गर्ब करि, चलीं सखी घर हारि ॥
सो०–कहति परस्पर जात, निडर भई अति राधिका ।
कबहूँ तौ हम घात, परिहैं दोऊ आयकै ॥
तीसहुदिन जो चोर चोरैहै ❁ साहहु पकरि केहु दिन पैहै ॥
बोली एक सखी तब तिनसों ❁ भेद लियो चाहति तुम उनसों ॥
दूर धरो मनते यह भाई ❁ बैठि रहो अपने घर जाई ॥
अति बर बोल गई कह कीन्हों ❁ कैसी निठुरभई कछु चीन्हो ॥
वह नाहिं फन्द तुम्हारे आवै ❁ छन्द बन्द वाके को पावै ॥
वह सबहिनमें बडी सयानी ❁ मेरी बात लेहु तुम मानी ॥
बोली अपर सखी सुन मोसों ❁ लीक खैंचि भाषत मैं तोसों ॥
फेरफार देखो हम धरिहैं ❁ ऐसे कैसे हमहिं निदरिहैं ॥
अब तो भेद कियोहै प्यारी ❁ हमहूंको यह रिसहै भारी ॥
तबलगि मनमें धीर न लैहैं ❁ जबलग चोरी पकरि न पैहैं ॥
निशिवासर अब हम सब कोऊ ❁ श्यामा श्याम देखिहैं दोऊ ॥
ताही दिन तिनसों हम लरिहैं ❁ जादिन नीके पकरि निदरिहैं ॥
दो०–सब ब्रज गोपिनके बसी, बात यहै मन आन ।
हरि राधा दोऊ मिलैं, निशिवासर यह ध्यान ॥
सो०–सबहिन मुख यह बात, और कछू चरचा नहीं ।
नन्दमहरको तात, सुता महर वृषभानुकी ॥
यहै चवाव करति सब गोपी ❁ हमसों बात राधिका लोपी ॥

१ साँची । २ दूसरी । ३ बेटी ।

लरिकाईते हम सब जाने ❀ कीन्ही प्रीति श्याम सों याने ॥
तब सतभाव न हती झुठाई ❀ अब हरिसंग सिखी चतुराई ॥
आज मौन धरि कियो दुराऊ ❀ सदा होत किहिंभांति बचाऊ ॥
दिन द्वैचार भोर अब टारो ❀ रहौ स्वभाव शोर जिनि पारो ॥
करन देहु इनको लँगराई ❀ आपुहि बात प्रगटह्वै जाई ॥
तब इकसखी कही यों बानी ❀ कहा कहत तुम बात अयानी ॥
तुम जु कहति वह जानति नाहीं ❀ हैं हम सब वाके नखमाहीं ॥
सात बरसते प्रीति लगाई ❀ तुम तो आज जानि है पाई ॥
वाकी चतुराई किन जानी ❀ मीन कबहिं धौं पीवत पानी ॥
हरिके ढंग सिखी सब वोऊ ❀ हैं बारहबानी वै दोऊ ॥
देखहु काल्हि केहु पतियानी ❀ फिरि आई हम सब खिसियानी ॥

दो०–ऐसे सब ब्रज सुन्दरी, मिलिकै करति चवाव ।
राधा हरि उरमें बसे, और न बात सुहाव ॥
सो०–यह रस जान अनूप, ब्रजवासी प्रभु प्रेमको ।
करिकै कृष्ण स्वरूप, होय रहीं ब्रजकी तरुणि ॥

श्रीराधा प्रातहिं तहँ आई ❀ जहांजुरी सब सखिन अथाई ॥
आवति लखि सब रहीं चुपाई ❀ पेखत[1] बदन गईं संकुचाई ॥
करति हुती उनहीं की बातें ❀ सकुचि गईं तरुणी सब तातें ॥
अति आदर करिकै बैठारी ❀ कही कहां तू आई प्यारी ॥
कहा हमारी सुधि तैं लीन्हीं ❀ बडी कृपा कछु हम पर कीन्हीं ॥
मैं कह आज अनोखे आई ❀ तुम जु करति आदर अधिकाई ॥
पहुनी करि करिये पहुनाई ❀ मैं तो आवति जाति सदाई ॥
कैसी कहति बात तू प्यारी ❀ बैठनको नहिं कहैं कहा री ॥
तू आई करि कृपा हमारे ❀ हमहूं कहा मौनब्रत धारे ॥
तब हँसि बोली कुवँरि सयानी ❀ करी तर्क मोसों तुम जानी ॥
तादिनको बदलो यह कीन्हों ❀ मोसों दाँव आपनो लीन्हों ॥

१ देखत ।

यह सुनि हँसीं सकल ब्रजनारी ❀ कहन लगीं सब सुनु री प्यारी ॥

दो०-दांव घात जानति तुमहिं, हमतौ शुद्धस्वभाव ।
तोहिं मान आई सदा, तैसे मानति भाव ॥

सो०-तुम राखी मन लाय, तादिन बात भई जु वह ।
हम डारी बिसराय, मानलई तेरी कही ॥

चोर सबै चोरी करि जानै ❀ ज्ञानी सब मन ज्ञानहिं मानै ॥
सुनि यह कुँवरि मनहिं मुसकानी ❀ कह्यो सखी यह सांच बखानी ॥
जैसी जाके मनमें होई ❀ बात कहति मुख तैसी सोई ॥
मैं तो सांच कही तुम पाहीं ❀ कैसे धौं हरि जानत नाहीं ॥
हरषि सखिन तब उर सों लाई ❀ कहत कहा तू रिस भरि आई ॥
हँसति कहति तोसों हम प्यारी ❀ तू मतिमानैं बिलग कहारी ॥
तुमहीं उलटी पुलटी भाखो ❀ तुमहीं रिसकरि उरमें राखो ॥
तुमहीं हरिको नाम बखानौ ❀ तबमें सुन्यों कछू तुम मानौ ॥
जब हरिसंग मोहिं कहुँ लहियो ❀ तब मनभावै सो कछु कहियो ॥
अब कैसेहुं अस्नान चलौगी ❀ कै मोसों कछु फेरि लरौगी ॥
वहे बात गठिबन्धन कीन्हीं ❀ नहिं भूलिहो जानिमैं लीन्हीं ॥
गहि गहि सबकी भुजा उठाई ❀ चलहु न्हान कबकी मैं आई ॥

दो०-यहिविधि हास हुलासकरि, सखिनसंग सुकुमारि ।
चली न्हान यमुना नदी, श्रीवृषभानु कुमारि ॥

सो०-सकल रूपकी रास, नवनागरि मृगलोचनी ।
भरी अनंद हुलास, कृष्ण प्रेममें एक मति ॥

अथ स्नानलीला.

चलीं यमुन सब नवलकिशोरी ❀ कनकवरण तनु कोमल गोरी ॥
करत परस्पर सब सुकुमारी ❀ हास विलास कुतूहलभारी ॥
गईं यमुनतट गोपकुमारी ❀ सँग सोहति वृषभानु दुलारी ॥
देखि श्याम जल लहरि सुहाई ❀ पैठीं सलिल न्हान अतुराई ॥

१ सुवर्ण । २ घुसीं ।

श्यामासहित न्हात सब नारी ❋ विहरत जलविहार सुखकारी ॥
कण्ठप्रमाण नीरमें ठाढीं ❋ छिरकत जल अतिआनँद बाढीं ॥
करति विविधविधि हासविलासा ❋ एक एक गहि करति हुलासा ॥
लै लै कर सों नीर उछारैं ❋ निरखि परस्पर मुखपर डारैं ॥
मानौं शशि सेनासजि आये ❋ लरत जलज जलअस्त्र बनाये ॥
सुनि तहँ श्याम युवतिमनरंजन ❋ आये कोटिकामद्युतिभंजन ॥
निरखत तट ठाढे छबि भारी ❋ यमुनाजल विहरत ब्रजनारी ॥
कबहुँ मधुर कल वेणु बजावैं ❋ नान्हे सुरन माहिं कछु गावैं ॥

दो०-काछे नटवर भेषबर, चित्रित चन्दन अंग ।
ठाढे उमँगि कदम्बते, कीन्हें अंग त्रिभंग ॥

सो०-तन घन सुन्दर श्याम, ब्रजतियमन चातकसुखद ।
नखशिख अतिअभिराम, ध्यान कामपूरण सकल ॥

पदनख इन्दु[1]प्रभा द्युतिहारी ❋ चरण कमल शीतल सुखकारी ॥
जानु जंघ अति सुभग सुहाई ❋ करभ रम्भ[2] लखि रहत सहाई ॥
कटि पटपीत काछनी काछे ❋ केशर कमल न पटतर आछे ॥
क्षुद्रावली कनकछबि छाई ❋ नाभि गँभीर वरणि नहिं जाई ॥
मनहुं मराल[3]बालकी श्रेनी[4] ❋ सर[5] समीप सोहति सुखदेनी ॥
बडे बडे मोतिनकी माला ❋ बिच रोमावलि झलक विशाला ॥
मनहुं गंगबिच यमुना आई ❋ चलीं धार मिलि तीन सुहाई ॥
बाहुदंड दोउ तट कमनीया ❋ चन्दन अंग रेत रमनीया ॥
बनमाला तरु तीर सुहाये ❋ फूलि रहे पचरँग छबि छाये ॥
कम्बु[6]कण्ठ त्रयरेख सुहाई ❋ तीनिभुवन शोभा जनु छाई ॥
चिबुक[7] चारु गाढे मन मोहै ❋ मुखछबि सिन्धु भँवर जनु सोहै ॥
अधर दशन द्युति वरणि न जाई ❋ तडित[8] बिम्ब[9] कहँ वह छबिछाई ॥

दो०-शुक[10] नाशा खंजन नयन, भ्रुकुटि काम कोदंड ।

---

१ चंद्रप्रभा । २ केला । ३ हंस । ४ पाँति । ५ सरोवर । ६ शंख ।
७ ठोडी । ८ बिजुरी । ९ कुँदुरू । १० तोता ।

मणिकुंडल रवि छबि हरत, सोहत शीश शिखंड१ ॥
सो०--उपमा गई लजाय, निरखि श्यामको रूप बर ।
जहँ तहँ रही छिपाय, पटतरको पहुँची नहीं ॥
उपमा हरितन देखि लजानी ❀ दुरी भूमि कोउ बन कोउ पानी ॥
कोटि मदन अपनो बलहारे ❀ मुकुट लकुट भ्रूमटक निहारे ॥
कुंडल निरखि भ्रमत रवि रहहीं ❀ तपन हृदय क्षण धीर न गहहीं ॥
अलक नासिका करपद नयनन ❀ अलि२शुक कमल मीन खंजनगन ॥
लखि सकुचाय रहत वनमाहीं ❀ कहत हमैं कवि कहत वृथाहीं ॥
दशनदमक दामिनी लजानी ❀ क्षण प्रगटत क्षण रहत छिपानी ॥
समुझत सधर अधर अरुणाई ❀ विद्रुम३ बंधू४ बिम्ब५ लजाई ॥
गगन६ रह्यो शशि वदन निहारी ❀ घटत घटत नित शोचत भारी ॥
चारु कंठ लखि अति सकुचानो ❀ रहत शंख जलमांझ छिपानो ॥
बाहु देखि अँहि७ विवर समाने ❀ केहरि८ कटि लखि वनहिं पराने ॥
गज गति गुल्फ निरखि शरमाई ❀ ऊंची आंख न सकत उठाई ॥
निज इच्छा छवि हरि बपु धारी ❀ दीन्हीं पटतर मेटि मुरारी ॥
दो०--अनुपम छबि कवि क्यों कहै, बिन उपमा आधार ।
ब्रजतिय मोहन मनहरण, सुन्दर नंदकुमार ॥
सो०--अधर मनोहर बैन, मन्द मन्द बाजत मधुर ।
उपजावत मन मैन, ब्रजसुन्दरि नव नागरिन ॥
जलविहार करि गोपकिशोरीं ❀ निकरि चलीं तटको सब गोरीं ॥
जानु जंघ जललौं सब आईं ❀ चुवत नीर अचरन छविछाईं ॥
परे दृष्टि मोहन तटमाहीं ❀ ठाढे कदम विटपकी छाहीं ॥
प्यारी निरखत रूप लुभानी ❀ पंगु भई मति गति बहरानी ॥
इतहि लाज सखियनकी आई ❀ दरशन हानि न उत सहिजाई ॥
मनहिं ज्ञान करि यह अनुमानी ❀ लैहैं आज सखी सब जानी ॥

१ मोरपक्ष । २ भौंरा । ३ मूंगा । ४ दुपहरियाको फूल । ५ कुँदुरू ।
६ आकाश । ७ सर्प । ८ सिंह ।

जानिगई यह अली सयानी ❋ जानि बूझि सब भई अयानी ॥
बहुरो न्हान लगीं सब पानी ❋ रहीं इतै करि आनाकानी ॥
प्यारी कबहुँ श्यामतनु हेरैं ❋ कबहूं दृष्टि सखिनते फेरैं ॥
जानी सबै न्हात जलमाहीं ❋ मेरी दिशि चितवत कोउ नाहीं ॥
तब मनमें यह बात विचारी ❋ देखिलेहुँ अब छवि गिरिधारी ॥
यह दरशन कब धौं फिरि होई ❋ ललकि लगीं अँखियां हठिदोई ॥

दो०—निरखति श्यामा श्यामछबि, पार निमेषन मोर ।
नैन बदन शोभित मनो, द्वै शशि चारि चकोर ॥

सो०—करत मुदित दोउ पान, रूप माधुरी अमियरस ।
तृप्त न क्योंहूं मान, विवश भये मन दुहुँनके ॥

यद्यपि सकुच सखिनकी गाढी ❋ तद्यपि रुकी न चितवन बाढी ॥
उमँगि गई सरिताकी नाहीं ❋ सन्मुख श्याम सिंधुके माहीं ॥
भरी सलिल अनुराग अथाहा ❋ भवँर मनोरथ लहर उछाहा ॥
कुलमर्याद करार ढहाये ❋ लोकसकुचतरु तीर बहाये ॥
धीरजनाव गही नहिं जाई ❋ रहे थकित पलपाथिक डराई ॥
इकटक घोर अखंडित धारा ❋ मिली श्यामछबि सिंधु अपारा ॥
कहति सखी सब आपसमाहीं ❋ नयनसैन दे दे मुसकाहीं ॥
देखहुरी प्यारी उत अटकी ❋ ना जानिये कौन अँग लटकी ॥
कालिह हमहिं कैसे निदरी है ❋ मेरे चित अब खुटक परी है ॥
बात कहत मेलै मुख तुलसी ❋ देखहु अब देखत किमि हुलसी ॥
सुंदरि पियके रूप लुभानी ❋ वे बातें अब सबहि भुलानी ॥
इकटकरही नेक नाहिं मटकी ❋ को जानै काहूके घटकी ॥

दो०—भई भाव भोरे कछू, देखतही सुखदाय ।
चित्रपूतरी सी रही, देहदशा बिसराय ॥

सो०—उत वे रहे लुभाय, नागर नवलकिशोर बर ।
प्यारीमुख दृग लाय, नैन नहीं मटकत कहूं ॥

१ अमृत । २ नदी ।

औरै भाव भई सखि प्यारी ❀ बढ्यो प्रेमअंकुर तरु भारी ॥
गई तासु जर सतपताला ❀ पहुँच्यो अंतर शिखर विशाला ॥
वचनपत्र अवलोकन शाखा ❀ सब जग छांह छई अभिलाखा ॥
गुण विधि सुमन सुगंधि निकाई ❀ लगी जाइ आनंद सुहाई ॥
पूरण आसन बनि भरभारा ❀ फल लाग्यो बर नंदकुमारा ॥
रहे रीझि तन मन धन वारैं ❀ अरस परस दोउ खूब निहारैं ॥
तब इक सखी कह्यो मुसकाई ❀ प्यारी देखे कुवँर कन्हाई ॥
वेई हैं सुन्दर सुखदाई ❀ जिनकी ब्रजमें होत बडाई ॥
हमें कहतही मोहिं दिखावहु ❀ देखिलेहु अब मन सुखपावहु ॥
बहुत लालसाही मन तेरे ❀ ताहीते हरि आये नेरे ॥
पूजी आश दरश अब पाये ❀ हमहीं इनको बोलि पठाये ॥
राखौ चीन्हि इन्हें अब नीके ❀ ये मनभावनहैं सबहीके ॥

दो०-भले शकुन आई इहां, भयो तुम्हारो काज ।
अब कछु हमको देहुगी, मिले तुम्हें ब्रजराज ॥

सो०-भयो नागरिहिशोच, सुनि सुनि सखियनकेवचन ।
कहत करी मैं पोच, इन जानी अब बात सब ॥

मैं हरितन लखि रूपलुभानी ❀ सो ये देखि सबै मुसकानी ॥
कालिह कही इनसों मैं वैसे ❀ देखी आज मोहिं इन ऐसे ॥
इन आगे मोबात नशानी ❀ अब ये करत मोहिं बिनपानी ॥
मोहीं पर मेरी चतुराई ❀ परी उलटि उर अति सकुचाई ॥
कहत सखिनसों ज्वाब न आयो ❀ तब मनमें हरि पियको ध्यायो ॥
अहो श्यामसुन्दर सुखदानी ❀ मैंप्रभु तुम्हरे हाथबिकानी ॥
अब सहाय सुंदर तुम कीजे ❀ मेरी बात नाथ रखलीजे ॥
ऐसो उत्तर देहु जनाई ❀ जति मेरी पति रहिजाई ॥
ऐसो हरिको सुमिरि सयानी ❀ तब इक बात मनहिं मन ठानी ॥
उरमें भयो बुद्धिपरकाशा ❀ तब कीन्हों मनमाहिं हुलासा ॥

१ वृक्ष ।

सखिन कह्यो अब घरचलु प्यारी ❀ भई यमुनतट बहुत अबारी ॥
कबकी न्हान इहां हम आई ❀ ऐसे कहि कहि सब पछिताई ॥
दो०—कियो दरश तुम श्यामको, घर चलिहौ कै नाहिं ।
चीन्हिरहौ मिलियो बहुरि, यह कहि सब मुसुकाहिं ॥
सो०—तब सखियनके साथ, चली संदनको नागरी ।
उरमें धरि ब्रजनाथ, प्रेममगन बोली नहीं ॥
हँसि बूझति इक गोपकुमारी ❀ कहो श्याम कैसेहैं प्यारी ॥
भाये री तेरे मनमाहीं ❀ हैं सुन्दर कछु कैधौं नाहीं ॥
कै हमसों फिरि बात लुकहौ ❀ कै अब मनकी सांच जनैहौ ॥
हम वरणो जैसे तुहिं पाहीं ❀ कछु तैसे हरि हैं कै नाहीं ॥
कहति मनहिं वृषभानुदुलारी ❀ मेरे ख्याल परीं सब ग्वारी ॥
बातन बातन करति उघारो ❀ ये चाहति अबहीं निरवारो ॥
मोहूं ते ये चतुर कहावैं ❀ मोको बातन मांझ भुलावैं ॥
ऐसे इनसों बचन बखानो ❀ इनको चातुरता गहिमानो ॥
मेरे शिर समरत्थ कन्हाई ❀ कह करिहैं मोसों चतुराई ॥
प्यारी पियके गर्वगहेली ❀ अङ्ग अङ्ग सुख पुंज भरेली ॥
मन्द मन्द गति हंस सुहाई ❀ पग द्वै चलत ठिठुकि रहिजाई ॥
मगन श्यामरस मुख नहिं बोलै ❀ धरणी चरण नखन करि छोलै ॥
दो०—चितवत सूधे नेक नहिं, काहू तन अनखाय ।
रही गर्व पियश्यामके, गरबीली गरबाय ॥
सो०—सखिन कह्यो मुसकाय, क्यों प्यारी बोलत नहीं ।
कै हमसों अनखाय, लियो मौनब्रत आज पुनि ॥
कै कछु बात कही नहिं जाई ❀ कै तेरो मन हरचो कन्हाई ॥
कबहुँ जान पहिचान न तेरी ❀ देखतही द्दग तिनहिं ढरेरी ॥
सांची बात कहौ अब प्यारी ❀ शोचपरचो मन तोहि कहा री ॥
कहा रहीही हरिहि निहारी ❀ इकटकनैन निमेष बिसारी ॥

१ घर । २ छिपावोगी ।

सुनि सुनि सब सखियनकी बानी ❋ बोली हरिभावती सयानी ॥
कहा कहति तुम बात अलेखे ❋ मोसों कहति श्याम तुम देखे ॥
मैं देखे कैधौं नहिं देखे ❋ तुमतौ बार हजारक पेखे ॥
तुमहीं हरिको रूप बतावो ❋ मो आगे सब कहि समुझावो ॥
कैसे बरण भेष हैं कैसे ❋ अंग अंग वरणौ तुम तैसे ॥
तव इक सखी कह्यो मुसकाई ❋ हमतौ ऐसे लखे कन्हाई ॥
छंद बंद कछु हमहिं न आवै ❋ सांची बात सबनको भावै ॥
देखे हम नँदनंदन जैसे ❋ वरणि बतावहुं तुमको तैसे ॥

दो०–श्याम सुभग तनुपीतपट, चटकीलो द्युतिकारि ।
शोभित घन पर दामिनी, मनु चपलई बिसारि ॥

सो०–मंद मंद सुखदात, गरजत मुरली मधुर धुनि ।
चितवत अरु मुसकात, बरषत परमानंद जल ॥

विविध सुमन¹दल उरमें माला ❋ इंद्रधनुष मनु उदित विशाला ॥
मुक्तावली बीच मनमोहैं ❋ बाल मराल पांति जनुसोहैं ॥
अंग अंग छबि रूप सुहाई ❋ कदमतरे ठाढे सुखदाई ॥
देखत मोहनवदन विभागा ❋ उपजत है अँखियन अनुरागा ॥
लोचन न²लिन नये छबि छाजैं ❋ तामधि पुतरी श्याम बिराजैं ॥
मनहु युगल अलि भाग निवारे ❋ पियत मुदित मकरंद सुखारे ॥
तामहँ चितवनमें जु सुहाई ❋ गूढ भाव सूचित सुखदाई ॥
अधर विम्ब जनु दाडिमदाना ❋ शुक नासिका देखि ललचाना ॥
भृकुटी धनुष तिलक शिरधारी ❋ मानहुँ मदन करत रखवारी ॥
मोर चंद्र शिर सुमँ³न सुहाये ❋ कामशरन मनु पक्ष लगाये ॥
गडत आनि युवतिन मन माहीं ❋ निकसत बहुरि निकासे नाहीं ॥
बारिजबदन मनोहर बानी ❋ बोलनि मनहुँ सुधारससानी ॥

दो०–कुंडलझलक कपोलछबि, श्रम शीकरके दाग ।
मानहुं मनसिज मकरमिलि, क्रीडत सुधातडाग ॥

---

१ पुष्पदल । २ कमल । ३ पुष्प ।

सो०-भरे रूप रस राग, ऐसे शोभाके उदधि[१]।
बिन अँखियन[२] को भाग, अवलोकत हरिको बदन॥
अंग अंग सब छबिके जाला ❀ हम देखे इहिं भांति गोपाला॥
कछु छल छिद्र नहीं हम जानैं ❀ जो देखैं सो सांच बखानैं॥
सांचहि झूंठ करै जो कोई ❀ तौ वह झूंठ आपही होई॥
हम इतननिमें नहीं दुराऊ ❀ कहत यथारथ सब सतभाऊ॥
यामें जो कोउ झूंठी मानैं ❀ ताकी बात विधाता जानैं॥
हम तौ श्याम निहारे ऐसे ❀ तोहिं लगैं प्यारी कहु कैसे॥
तुम देखे मैं सांच न मानौं ❀ अपनी सी गति सबकी जानौं॥
जिनको वार पार कछु नाहीं ❀ द्वै अँखियन देखे किमि जाहीं॥
जो तुम सब अँग अंग निहारे ❀ धनि धनि तो ये नैन तिहारे॥
मैं तौ लखि इक अंग भुलानी ❀ भरि आये दोउ आँखिन पानी॥
कुंडल झलक कपोलन छाहीं ❀ रही चकित उतनेके माहीं॥
रूंधे नीर नैन टकलाई ❀ पहिचाने नाहिं नेक कन्हाई॥
दो०-मैं तबते अपने मनहिं, यहै रही पछिताय।
देखनको छबि श्यामकी, चहियत नयननिकाय॥
सो०-अतिछबिअँखियांदोय,उमँगिचलततापरसलिल।
कैसे दरशन होय, सखी श्यामके रूपको॥
द्वै लोचन तुम्हरे द्वै मेरे ❀ तुम देखे हरि मैं नहिं हेरे॥
तुम प्रतिअंग[३] विलोकन कीन्हों ❀ मैं नीके एकौ नहिं चीन्हों॥
काहू को षटरस नहिं भावे ❀ कोऊ भोजन को दुखपावे॥
अपने अपने भाग्यनिकाई ❀ जो बोवै सोइ लुने बनाई॥
जैसे रंक तनक धन पाये ❀ होत निहाल आपने भाये॥
मोहिं तुम्हैं अंतर है भारो ❀ धनि तुम सब हरि अंगनिहारो॥
तुम हरि की संगिनि ब्रजबाला ❀ ताते दरश देत नँदलाला॥
सुनहु सखी राधा चतुराई ❀ आपहि निंदति हमहिं बडाई॥

१ समुद्र। २ नेत्र। ३ प्रत्येकअंग।

आपुन भई रंक हरि धनको ❋ हमें कहति धनवंत सबनको ॥
हम हरिकी संगति सब ग्वारी ❋ आपुहि निर्मल होत नियारी ॥
धनि धनि धनि लाडिली पियारी ❋ धृक धृक धृक धृक बुद्धि हमारी ॥
तू पूरण हम निकट अधूरी ❋ हमहिं असंत संत तू पूरी ॥

दो०-धनि धनि तेरे मात पित, धन्य भक्ति धनि हेत ।
तैं पहिचान्यो श्यामको, हम सब ग्वारि अचेत ॥

सो०-धनि यौवन धनि रूप, धनि धनि भाग सुहाग तव ।
तू मोहन अनुरूप, चिरजीवहु जोडी अचल ॥

जैसे तैं हरिरूप बखान्यो ❋ है तैसोई यह हम जान्यो ॥
देखन को हरिरूप उजेरी ❋ आंखि चाहिये जैसी तेरी ॥
तैं जु कहत लोचन भरि आये ❋ सो हरि तेरे नयन समाये ॥
अति पुनीत अस्थल शुभ जानी ❋ करी श्याम अपनी रजधानी ॥
कियो बास हरि तुव दृगमाहीं ❋ और बात दूजी कछु नाहीं ॥
ऐसे श्यामसंग ब्रजबाला ❋ कहति परस्पर गुण गोपाला ॥
तहां अचानक हरि पुनि आये ❋ कटिकछनी नटभेष बनाये ॥
मुरली अरुणअधरपर राजै ❋ कल धुनि मन्द मनोहर बाजै ॥
आप गये तिरछे मगमाहीं ❋ भावाधीन सकत रहि नाहीं ॥
तरुतमाल तनु तरुण कन्हाई ❋ ठाढे भये आय सुखदाई ॥
थकित भई सब ब्रजकी बाला ❋ लगीं विलोकन नँदको लाला ॥

दो०-रत्नजटित पग पांवरी[1], नूपुर मन्दरसाल ।
चरण कमलदल निकट मनु, बैठे बाल मराल[2] ॥

सो०-उदितचरणनखचंद, जनुमणि[3]व्योमप्रकाकशरि ।
सुरनर शिव मुनि वृन्द, विरहताप ब्रजतियहरण ॥

जानु काम शत छवि न सँवारे ❋ युवतिनकरि मन बुद्धि विचारे ॥
युगल जंघ छवि परम पुनीता ❋ रंभा[4]खंभ मनहुं विपरीता ॥

१ पनही । २ हंस । ३ सूर्य । ४ केरा ।

ठाढे धरणि एकपग लाये ❀ कंचन दण्ड एक लपटाये ॥
तन त्रिभंगकी लटक सुहाई ❀ अटकिरही युवतिन मनभाई ॥
व्रजयुवती हरिपद मनलाये ❀ निरखति मुनि दुर्लभ सचुपाये ॥
कुंलिशांकुश ध्वजचिह्न निकाई ❀ इकटक रहीं चितै चितलाई ॥
अरुण तरुण पङ्कज दल चारू ❀ मानहुँ सुखमा करत बिहारू ॥
कटिकेहरिकी कटिहि लजावै ❀ सूक्षम सुभग कहति नहिं आवै ॥
तापर कनकमेखला सोहै ❀ मणिनजटित सुन्दर मन मोहै ॥
मनहुं बालकन सहित मराला ❀ बैठे पंगति जोरि रसाला ॥
कि धौं मदनके सदन सुहाई ❀ बांधी बंधनवारि बनाई ॥
व्रजतिय निरखि निरखि सुख लेहीं ❀ नैनन पलक परन नहिं देहीं ॥

दो०-शोभित नाभि गँभीर अति, मानहुँ मदनतडाँग ।
रोमावलि तटपर लसत, रस शृँगारको बाग ॥

सो०-व्रजतिय रहीं निहारि, शोभा नाभि गँभीर की ।
मन नहिं सकति निवारि, परचो जाय गहरे खसकि ॥

उदर उदार वरणि नहिं जाई ❀ रोमावलि तापर छबि छाई ॥
रही अटकि छबि तासु निहारी ❀ परखत वन तन निरखत नारी ॥
कोऊ कहति कामकी सरनी ❀ कोऊ कहति योग नहिं बरनी ॥
कहति एक अलि बालक पांती ❀ जुरि बैठे सब एकहि भांती ॥
कोउ कहै नीरद नील सुहाई ❀ सूक्षम धूम धार छबि छाई ॥
एक कहति यह रविकीजाई ❀ मरकतगिरि उर ते प्रगटाई ॥
उदर भूमि शोभित सोइ धारा ❀ जाति नाभि ह्रद अगम अपारा ॥
दुहुंदिशि फेन स्वातिसुतमाला ❀ उपजत सुखमय लहर विशाला ॥
शोभा वरणि सकति व्रजनारी ❀ रहीं विचारि विचार विचारी ॥
उर मुक्तनकी माल विराजै ❀ तामधि कौस्तुभमणि छबि छाजै ॥
निर्मल नभ मानहुं उडुराजी ❀ शशिहि घेरि बैठी छबि साजी ॥

१ वज्र । २ अंकुश । ३ कंधनी । ४ ताळाब । ५ बादर । ६ यमुना । ७ मोती । ८ तारागणनकी पंक्ति ।

आपुन भई रंक हरि धनको ❀ हमें कहति धनवंत सबनको ॥
हम हरिकी संगति सब ग्वारी ❀ आपुहि निर्मल होत नियारी ॥
धनि धनि धनि लाडिली पियारी ❀ धृक धृक धृक धृक बुद्धि हमारी ॥
तू पूरण हम निकट अधूरी ❀ हमहिं असंत संत तू पूरी ॥
दो०-धनि धनि तेरे मात पित, धन्य भक्ति धनि हेत ।
तैं पहिचान्यो श्यामको, हम सब ग्वारि अचेत ॥
सो०-धनि यौवन धनि रूप, धनि धनि भाग सुहाग तव ।
तू मोहन अनुरूप, चिरजीवहु जोडी अचल ॥
जैसे तैं हरिरूप बखान्यो ❀ है तैसोई यह हम जान्यो ॥
देखन को हरिरूप उजेरी ❀ आंखि चाहिये जैसी तेरी ॥
तैं जु कहत लोचन भरि आये ❀ सो हरि तेरे नयन समाये ॥
अति पुनीत अस्थल शुभ जानी ❀ करी श्याम अपनी रजधानी ॥
कियो बास हरि तुव दृगमाहीं ❀ और बात दूजी कछु नाहीं ॥
ऐसे श्यामसंग ब्रजबाला ❀ कहति परस्पर गुण गोपाला ॥
तहां अचानक हरि पुनि आये ❀ कटिकछनी नटभेष बनाये ॥
मुरली अरुणअधरपर राजै ❀ कल धुनि मन्द मनोहर बाजै ॥
आप गये तिरछे मगमाहीं ❀ भावाधीन सकत रहि नाहीं ॥
तरुतमाल तनु तरुण कन्हाई ❀ ठाढे भये आय सुखदाई ॥
थकित भई सब ब्रजकी बाला ❀ लगीं विलोकन नँदको लाला ॥
दो०-रत्नजटित पग पांवरी[1], नूपुर मन्दरसाल ।
चरण कमलदल निकट मनु, बैठे बाल मराल[2] ॥
सो०-उदितचरणनखचंद, जनुमणि[3]व्योमप्रकाकशरि[4] ।
सुरनर शिव मुनि वृन्द, विरहताप ब्रजतियहरण ॥
जानु काम शत छवि न सँवारे ❀ युवतिनकरि मन बुद्धि विचारे ॥
युगल जंघ छवि परम पुनीता ❀ रंभाखंभ मनहुं विपरीता ॥

१ पनही । २ हंस । ३ सूर्य । ४ केरा ।

ठाढे धरणि एकपग लाये ❋ कंचन दण्ड एक लपटाये ॥
तन त्रिभंगकी लटक सुहाई ❋ अटकिरही युवतिन मनभाई ॥
व्रजयुवती हरिपद मनलाये ❋ निरखति मुनि दुर्लभ सचुपाये ॥
कुंलिशांकुंश ध्वजचिह्न निकाई ❋ इकटक रहीं चितै चितलाई ॥
अरुण तरुण पङ्कज दल चारू ❋ मानहुँ सुखमा करत विहारू ॥
कटिकेहरिकी कटिहि लजावै ❋ सूक्षम सुभग कहति नहिं आवै ॥
तापर कनकमेखला सोहै ❋ मणिनजटित सुन्दर मन मोहै ॥
मनहुं बालकन सहित मराला ❋ बैठे पंगति जोरि रसाला ॥
कि धौं मदनके सदन सुहाई ❋ बांधी बंधनवारि बनाई ॥
व्रजतिय निरखि निरखि सुख लेहीं ❋ नैनन पलक परन नहिं देहीं ॥

दो०—शोभित नाभि गँभीर अति, मानहुँ मदनतडाग ।
रोमावलि तटपर लसत, रस शृँगारको बाग ॥

सो०—व्रजतिय रहीं निहारि, शोभा नाभि गँभीर की ।
मन नहिं सकति निवारि, परयो जाय गहरे खसकि ॥

उदर उदार वरणि नहिं जाई ❋ रोमावलि तापर छबि छाई ॥
रही अटकि छबि तासु निहारी ❋ परखत वन तन निरखत नारी ॥
कोऊ कहति कामकी सरनी ❋ कोऊ कहति योग नहिं बरनी ॥
कहति एक अलि बालक पांती ❋ जुरि बैठे सब एकहि भांती ॥
कोउ कहै नीरद नील सुहाई ❋ सूक्षम धूम धार छबि छाई ॥
एक कहति यह रविकीजाई ❋ मरकतगिरि उर ते प्रगटाई ॥
उदर भूमि शोभित सोइ धारा ❋ जाति नाभि ह्रद अगम अपारा ॥
दुहुंदिशि फेन स्वातिसुतमाला ❋ उपजत सुखमय लहर विशाला ॥
शोभा वरणि सकति व्रजनारी ❋ रहीं विचारि विचार विचारी ॥
उर मुक्तनकी माल विराजै ❋ तामधि कौस्तुभमणि छबि छाजै ॥
निर्मल नभ मानहुं उडुराजी ❋ शशिहि घेरि बैठी छबि साजी ॥

१ वज्र । २ अंकुश । ३ कंधनी । ४ तालाब । ५ बादर । ६ यमुना । ७ मोती । ८ तारागणनकी पंक्ति ।

भृगुपद देखि श्याम उर माहीं ❀ मनहुं मेघ भीतर शशि छाहीं ॥

दो०—पीत हरित सित अरुण रँग, चटकीली वनमाल ।
प्रफुलित ह्वै छबिकी बँवरि, मानहुँ चढी तमाल ॥

सो०—छबि बरणी नहिं जाय, कंबुकंठ मणि कंठकी ।
ब्रजतिय रहीं लोभाय, हरि उरबर शोभा निरखि ॥

वृषभ कंध भुजदण्ड सुहाई ❀ निंदत अहि गजशूँडि निकाई ॥
करपल्लवन मुद्रिका सोहै ❀ बाहु विभूषण लखि मन मोहै ॥
जनु शृंगार विटपकी डारी ❀ फूलि रही उपजत छवि भारी ॥
हरिमुख निरखत गोपकुमारी ❀ पुनि पुनि प्रणम करति बलिहारी ॥
कहति परस्पर अति मनलोभा ❀ देखहु सखी मदनकी शोभा ॥
चिबुक चारु अधरन अरुणाई ❀ पान रेख तापर छबिछाई ॥
मंद हँसन द्युति दशन निकाई ❀ उपमा कापै जात बताई ॥
अनुपम छबि चित लेत चुराये ❀ जगमोहनी हमारे भाये ॥
गोल कपोल अमोल नवीने ❀ मानहुं मुकुर नीलमणि कीने ॥
बाजत मुरली करकी फेरन ❀ चंचल नयन चपल को हेरन ॥
मणिनजटित कुंडलकी डोलन ❀ प्रतिविम्बत सबमुकुर कपोलन ॥
सो छबि कापै जात बखानी ❀ लखि ब्रजतिय बिनमोल बिकानी ॥

दो०—सुभगनासिका चपलदृग, कुटिल भृकुटिकीरेख ।
जनु युग खंजन बीच शुक, उडि न सकत धन देख ॥

सो०—घुँघुरारे कच श्याम, वारिजँसुख ढिग भ्रमर जनु ।
शीश मुकुट अभिराम, कोटि काम शोभाहरण ॥

रूप सुधानिधि बदन विराजे ❀ दुहुँ कर अधर मुरलिका बाजै ॥
मानहुं युगल कमरु पद माहीं ❀ लेत भराय सुधा शशि पाहीं ॥
हरिमुख निरखत नयन भुलाने ❀ इकटक रहे तृपति नहिं माने ॥
घोप कुमारि लखति नँदनन्दन ❀ श्याम सुभगतनु चित्रितचन्दन ॥
कनक वरण पटपीत विराजे ❀ देखि सखी उपमा यह राजै ॥

१ शंख । २ सर्प । ३ वृक्ष । ४ दर्पण । ५ तोता । ६ बार । ७ कमल । ८ छाजै ।

निर्मल गगन शरद बनमाला ❀ तापर अस्थित दामिनिजाला ॥
अंग अंग छबिपुंज सुहाये ❀ निरखति युवती जन मन लाये ॥
कोऊ भाल तिलकछबि अटकी ❀ मुकुटलटकछबिपर कोउलटकी ॥
कोऊ अलक लखति चितलाई ❀ कोउलखि भ्रुकुटि सुरति बिसराई ॥
कोऊलोचनछबि लखिललचानी ❀ चितवनमें कोऊ उरझानी ॥
कोऊ कुंडलझलक लुभानी ❀ कोउकपोलद्युतिनिरखिबिकानी ॥
कोउ नासा कोउ अधर निकाई ❀ कोउ रदचमकनि मांझ लुभाई ॥

दो०-कोउबोलतिकोउमृदुहंसति, कोउमुरलीधुनिलीन।
कोउ मुरलीपर ग्रीव कोउ, लटकन पर आधीन ॥
सो०-चारु चिबुक दर ग्रीव, कोऊ गडि तामें रहीं।
हरिमुख शोभा सींव, थकीं निरखि जहँ सो तहां ॥

कोउ सुंदर उर बाहुविशाला ❀ निरखि थकीं कोउ भूषण बाला ॥
कोउ कटि कोउ पटपीत निहारी ❀ जंघ गुलुफपर कोउ बलिहारी ॥
युगुल कमलपद नखकी शोभा ❀ ब्रजबासी जन मनकी लोभा ॥
हरि प्रतिअंग निरखि ब्रजनारी ❀ देहगेहकी सुरति बिसारी ॥
अति आनंद मगनमन भूली ❀ शशिमुखलखिजनुकुमुदिनिफूली॥
किधौं चकोर रहे टकलाई ❀ पियत सुधा छबि शीतलताई ॥
कै रवि कुंडल छबिहि निहारी ❀ विकसत कमल मदन बरनारी ॥
कै चकईगण मन सुखमानी ❀ निरखिरहीं अति रति हर्षानी ॥
कै धौं नव घन तन छबि देखी ❀ भई चातकी मुदित बिशेखी ॥
कि धौं मृगी मुरलीधुनि मोही ❀ श्याम लखति युवती द्रुम सोही ॥
हरि छबि अरुझनिमें अरुझानी ❀ सुरझ न सकति युवतिबिततानी ॥
रूपराशि सुखराशि कन्हाई ❀ प्रेमराशि जनके सुखदाई ॥

दो०-छबि सागर सुखकी अवधि, गुणमंदिर रसखान।
मोहि लियो मन तियनको, रसिकनरेश सुजान ॥
सो०-मुरली मधुर बजाय, प्यारी प्यारी नाम कहि।

१ दांत।

अनुपम छबि दरशाय, गये सदन आनंद घन ॥
रहीं ठगीसी गोपकुमारी ❀ मन हरि लेगये नवल बिहारी ॥
पुनि पुनि कहतिभईं सुख मानी ❀ धनि धनि राधा कुवँरि सयानी ॥
बडभागिनि तोसों नहिं प्यारी ❀ तेरेही वश री गिरिधारी ॥
धनि धनि श्याम धन्य तू श्यामा ❀ धनि जोरी धनि प्रीतिललामा ॥
एक प्राण द्वै देह तुम्हारे ❀ तुमविन रहि न सकत हरि न्यारे ॥
तोको देखि बहुत सुखपावैं ❀ मुरलीमें तेरे गुणगावैं ॥
तेरी प्रीति सांच हरि जाने ❀ ताते तेरे हाथ बिकाने ॥
मन वच क्रम निर्मल तू प्यारी ❀ दुराचारिनी हम सब नारी ॥
जैसे घट पूरण नहिं डोलै ❀ होय अवधिलौं सो ढकढोलै ॥
परमसुजान नारि तैं धीरा ❀ राख्यो परखि हृदय हरि हीरा ॥
धनी न अपने धनहिं बतावै ❀ धरत छिपाय न प्रकट जतावै ॥
धन्य सुहाग भाग तुव प्यारी ❀ कृष्ण सदा पति तू है नारी ॥
दो०-सुनि सुनि वाणी सखिनकी, प्यारी जिय अनुराग ।
पुलकि रोम गदगद हियो, समुझि आपनो भाग ॥
सो०-वचन कह्यो नहिं जाय, प्रीति प्रगट चाहत कियो ।
हरि उर रहे समाय, बाहर करत प्रकाश नहिं ॥
सुनहु सखी तुम करति बडाई ❀ सुनि सुनि मेरो मन सकुचाई ॥
मोहिं कहति श्यामहिं तैं जान्यो ❀ हरिको भले परखि पहिचान्यो ॥
तबते यही शोच मनमाहीं ❀ कैसे हरि पहिचाने जाहीं ॥
नयन दोय छबि अमित अगाधा ❀ तापर पलक करतिहै बाधा ॥
क्षणहीमें भरिआवत पानी ❀ श्याम स्वरूप परै किमिजानी ॥
मरू करम अँग लखिये कोई ❀ पलक परत औरै छबिहोई ॥
क्षण क्षणमें शोभा पलटावै ❀ कहो सखी उर कैसे आवै ॥
देखनको दृगं अति अकुलाहीं ❀ प्रगट लखत पहिचान न जाहीं ॥
यह सखि नहीं परति कछु जानी ❀ बिरह सँयोग लाभ के हानी ॥

१ खोटी । २ दय । ३ नेत्र ।

के दुख सुख कै समरस होई ❀ मुहिं समुझाय कहो सखि सोई ॥
घृतते होम अग्नि रुचि जैसे ❀ मिटति नहीं नयननिगति तैसे ॥
उत छबि खानि नई छबिवाने ❀ इत लोभी दृग तृप्ति न माने ॥

दो०–विन पहिंचाने कौन विधि, करौं श्याम सों प्रीति ।
नहिं वह रूप न भाव वह, क्षण क्षण औरै रीति ॥

सो०–यह जानी मैं बात, हैं आनँदकी खानि हरि ।
पहिचाने नहिं जात, कहा करौं द्वै लोचननि ॥

बडो क्रूर विधना यह आली ❀ समझपरी देखत वनमाली ॥
कर पद उदर ग्रीव कटि कीनी ❀ मुख रद श्रुति नासा शुभ दीनी ॥
भाल शिखर नख केश बनाये ❀ अधर जीव अरु वचन सुहाये ॥
रचि पचि रुचिर अंग सब कीने ❀ रोम रोम प्रति नयन न दीने ॥
जो ब्रज दीनो जन्म हमारो ❀ देखन को मनमोहन प्यारो ॥
तौ कत नयन दिये शठ दोऊ ❀ विधि ते निठुर और नहिं कोऊ ॥
जो विधिना को वशकरि पाऊं ❀ तौ अब पद्धति और चलाऊं ॥
रोम रोम प्रति नैन बनावैं ❀ इकटकरहैं पलक नहिं लावैं ॥
तौ कछु बनै कह्यो सखि तेरो ❀ होय मनोरथ पूरण मेरो ॥
हरिस्वरूप लखि जानि न जाई ❀ वह छबि द्वै लोचन न समाई ॥
मैं पचिहारि रही बहुतेरो ❀ एकहु अंग न नीके हेरो ॥
जो देखों तौ प्रीति करोरी ❀ देखनहीकी साधन गोरी ॥

दो०–दुरत दुराये कौन विधि, सखि तुम सों यह बात ।
देखे विन नँदनन्दके, धीरज धरत न गात ॥

सो०–उड्यो फिरत दिनरात, इन नयननके सँग लगे ।
क्षण नाहिं मग ठहरात, आकरुई जिमि वात वश ॥

सुनु री सखी दशा यह मेरी ❀ जब ते हरिसूरति मैं हेरी ॥
संगहि फिरौं दरश नाहिं पाऊं ❀ मनहीं मन पुनि पुनि पछिताऊं ॥
जब मैं अपने जिय यह आनो ❀ निकट जाय हरि छबि पहिचानो ॥
तब प्रतिबिंब मेरोई आई ❀ होत तहां मोको दुखदाई ॥

मेरे मन हरिमूरति भावै ❀ सन्मुख दृष्टि तहां यह आवै ॥
मेरिये देह होत मुहि वैरी ❀ कितौ दुरावति दुरत न हैरी ॥
मैं अंतर तजि लखत कन्हाई ❀ यह अति अंतर देत बढाई ॥
सखी दोष नाहिं काहू केरो ❀ करत श्याम यह सब झकझेरो ॥
नीके दरश न कबहूं देहीं ❀ नइ नइ छबिकरि मन हरि लेहीं ॥
चपलाहू ते चपल बनेरी ❀ दर्शनचमक चौंधत है एरी ॥
कबहूं अंगन मुकुर बनावैं ❀ कबहूं कोटि अनंग लजावैं ॥
कैसे सब छवि देखि जु पइये ❀ कौन भांति यह साध पुरइये ॥

दो०-मगन दरशरस लाडिली, पुनि पुनि पुलकितगात ।
तृप्त मान तिय देखि छबि, कहत लखे नहिंजात ॥

सो०-लीन्हों सखियन जान, हरिरँगराती लाडिली ।
सुंदर श्याम सुजान, रोम रोम याके रमे ॥

कहति धन्य प्यारी बडभागी ❀ नीके तू हरिसँग अनुरागी ॥
तू है नवल नवलहरि ओऊ ❀ रूप अगाध सिंधु तुम दोऊ ॥
हम जानी यहबात अगाधा ❀ तू हरिकी अर्द्धंगिनि राधा ॥
मिले तोहिं करिकृपा कन्हाई ❀ दिये सकल दुख दूरि मिटाई ॥
कहु प्यारी हमसों अब सांची ❀ कहेबने यहबात न कांची ॥
छांडिदेहु अब यह चतुराई ❀ कहां मिले कहु तोहिं कन्हाई ॥
खरकमिले कै कुंजन माहीं ❀ कै दधिबेंचन जात जहांहीं ॥
कै जब उरग डसनते बाची ❀ कहु कैसे तू हरिरँग राची ॥
सुनि सखियनकी बात सयानी ❀ बोली परम नागरी बानी ॥
कब री श्याम मिले नहिं जानौं ❀ सुनहु सखी मैं सांच बखानौं ॥
गृह बन कुंज सुरति नाहिं मोहीं ❀ दधिबेंचन के खरक बिमोहीं ॥
आजकि काल्हि कहौं कह आली ❀ कियो वास उरमैं बनमाली ॥

दो०-नयननते क्षण टरत नहिं, नीके लखे न जात ।
कहा कहौं तुमसों सखी, यह अचरजकी बात ॥

१ दांत । २ दर्पण । ३ काम । ४ सर्प ।

सो०-मिले मोहिं जब श्याम, सुनो सखी तुमसों कहौं।
करि कै उरमें धाम, तबते मन मेरो हरचो॥
मैं यमुनाजल भरन सिधाई ❀ औचक हरि तहँ परे लखाई॥
मोतन चितै रहे मुसकाई ❀ कहा कहौं सखि नैन निकाई॥
जीत आपने बल जनुकीनी ❀ शरदसरोजनकी छबिहीनी॥
जीते सकल रूप गुण जाती ❀ नील कोकनद अरु सतपाती॥
पै निशिं मुद्रित दिवस प्रकाशे ❀ क्षणप्रति होत मलिन द्युतिनाशे॥
वे आनंद कंद सुखमूले ❀ रहत दिवस निशि छबिसों फूले॥
निरखि नयनमें दशा भुलाई ❀ उन मुसकान मोहनी लाई॥
शिथिल अंग भे जैसे पानी ❀ तबहीं ते उन हाथ बिकानी॥
सूधे मारग गई भुलाई ❀ ज्योंत्यों करि पहुँची घरआई॥
तादिनते आँखियां ये मेरी ❀ सुखदुख भूलिगईं हरिचेरी॥
बसी जाय वा चितवनमाहीं ❀ अब वह छबि क्षण बिसरत नाहीं॥
कै इन नैननि आय समानी ❀ यह चितवन कछु जात न जानी॥
दो०-नहिंजानत हरि कह कियो, मंदमधुर मुसकाय।
मन ससुझत रीझत नयन, सुख कछु कह्यो न जाय॥
सो०-तबते कछु न सुहाय, कासों कहिये बात यह।
अमल परचो दृग आय, अवलोकन हरि बिधु वदँन॥
निकसे सखी एकदिन आई ❀ द्वार हमारे कुवँर कन्हाई॥
मैं ठाढीही अजिरैं अकेली ❀ देखि रही छबि यह अलबेली॥
चंचल नयन चितै चितचोरै ❀ सुभग भ्रुकुटि बिवबंक मरोरै॥
कोटिमदन तनुद्युति सँगवाहीं ❀ फेरत कमल कमलकर माहीं॥
मो हितलागि भये तहँ ठाढे ❀ कियो भाव कछु आनँद बाढे॥
लेकर कमल भाव सों लायो ❀ पीताम्बर निजशीशफिरायो॥
मैं गुरुजन उर शंका आनी ❀ बोलि न सकी कछू मुखबानी॥
प्रेमसहित तेरे हरि आये ❀ वैसहि उनको फेरि पठाये॥

१ शरदको कमल। २ रात्रि। ३ चंद्रवदन। ४ आँगन।

तू तौ चतुरहुती अति नारी ❀ सेवा कछू करी नहिं प्यारी ॥
गुप्तभाव तोसों हरि कीन्हों ❀ बातनभुरे नहीं क्यों लीन्हों ॥
काहे कमलभाव सों छायो ❀ काहे पीताम्बरहिं फिरायो ॥
मैं कछु उत्तर तिन्हैं जनायो ❀ घरआये केहि विधि बिसरायो ॥
दो०—कहाकरौं गुरुजन सखी, भये मोहिं दुखदाय ।
सकुचि रही तिनकी सकुच, सुखकछु वचनबनाय ॥
सो०—इतनो कियो सयान, मैं तब बैठी कर पराशि ।
उरलाई हित मान, सन्मुख करि करि आरसी ॥
अन्तर्यामी चतुर कन्हाई ❀ जानि लई मेरी चतुराई ॥
आपन हँसि उत पाग सँवारी ❀ रहे कमल हिरदयपर धारी ॥
रहे चितै अतिहित चितलाई ❀ मोते सखी न कछु बनि आई ॥
कहा करौं कछु दोष न मेरो ❀ नयो नेह उत गुरुजन घेरो ॥
रही देखि मन आनँद धरिकै ❀ दियो कमल उर आसन करिकै ॥
आंचर फेरि निछावरि कीनों ❀ अर्घ्य सलिल आंखिन सों दीनों ॥
उमँगि कलशकुच प्रगट भयेरी ❀ टूटि टूटि कुचबंद गयेरी ॥
अब मन होत लाज अति भारी ❀ सखी समुझि करणी वह सारी ॥
ऐसी मेरी मति अज्ञानी ❀ प्रभु सों मंगल करि मैं मानी ॥
अति सुख मान गये सुखदाई ❀ तबते मोमन कछु न सुहाई ॥
कहति सखी राधा सुनि मेरी ❀ सेवा मान लई हरि तेरी ॥
अब काहे पछितात अनेरी ❀ तोहित श्याम जात करि फेरी ॥
दो०—नीके कीन्हे भाव सब, तू अति नागरि वाम ।
उन लीन्हे सब जानिकै, चतुरशिरोमणि श्याम ॥
सो०—भावहिको सनमान, गुरुजनके मधि चाहिये ।
गये श्याम हित मान, अब प्यारी चाहति कहा ॥
तेरे वशहि भये दधिदानी ❀ हम यह बात भले करि जानी ॥
तैं बेंदी उन पाग सवाँरी ❀ उनको तुम उन तुमहिं जुहारी ॥
मिली आरसी में तुम उनको ❀ उन उरधरी कमल मिस तुमको ॥

१ बढेनमें । २ प्रणाम ।

जानै कहा भेद यह कोऊ ❀ एकप्राण है तनु तुम दोऊ ॥
सुनहु सखी मोहन सुखरासी ❀ अँखियां रहति दरशकी प्यासी ॥
निकसत जब सुन्दर इत आई ❀ कमलनयन करवेणु सुहाई ॥
ना जानिये सखी तिहिं काला ❀ सबतनु श्रवण विलोचन जाला ॥
सुरत शब्द प्रति रोमनमाहीं ❀ नखशिखज्यों चखदेख्योचाहीं ॥
इतने पर समुझत नहिं बैना ❀ चितै रहत ज्यों चित्रित मैना ॥
सुनहु सखी यह सांचाकि सपनो ❀ कै दुखसुख कै संभ्रम अपनो ॥
कहा करौं गुरुजन डर मानो ❀ मन मेरो उन हाथ बिकानो ॥
जबते द्वार दरश मोहिं दीन्हों ❀ तबते मन अपनो करि लीन्हों ॥

दो०–भाग्य दशा आये सदन, मेरे श्याम सुजान ।
मैं सेवा नहिं करिसकी, गुरुजनको डरमान ॥

सो०–यहै चूक जिय जान, मोहन मन हरि लै गये ।
अब लागी पछितान, फेरि कौन विधि पाइये ॥

जबते प्रीति श्याम सों कीन्हीं ❀ तबते नींद दृगंन तजि दीन्हीं ॥
फिरत सदा चितचक्र चढचोसो ❀ रहतहिये अति शोच बढचोसो ॥
मिलहिं कवनविधि कुँवर कन्हाई ❀ यहै विचार विचारत जाई ॥
यह दुख सखी कौनसों कहिये ❀ पशु वेदन ज्यों आपहि सहिये ॥
सुन प्यारी तू हरिरँगराची ❀ बात कहैं तोसों हम साची ॥
तोते चतुर और नहिं कोऊ ❀ तुम अरु श्याम एकभये दोऊ ॥
बाकी नहीं कछू अब बांची ❀ कहौं बात मैं रेखाखांची ॥
ऐसी भई आप तू भोरी ❀ उनको मन तैं नाहिं लियोरी ॥
तैं उनको मन प्रथम चुरायो ❀ तब उन तेरोहू अब पायो ॥
अब कोहको करत सयानी ❀ नंदनँदन वर तू पटारानी ॥
तोसी और कौन बडभागी ❀ तेरे संग श्याम अनुरागी ॥
विलसौ श्यामसंग सुख मानी ❀ अब कत वृथा रहत बौरानी ॥

दो०–श्याम करी मोहिं बावरी, मन करि लियो अधीन ।

१ नेत्र ।

बनसी ज्यों वाकी पलक, अटके मो दृग मीन ॥
सो०-अब मोहिं कछु न सुहाय, मन मेरो मेरो नहीं ।
लियो श्याम अपनाय, रूप ठगोरी डारि शिर ॥
बार बार मैं तोहिं सुनाई ❀ तेरे मन यह बात न आई ॥
अपनीसी बुधि जानत मेरी ❀ मैं पाई इतनी कहँ एरी ॥
देखतही हरि रूप लोभानी ❀ मोते सुधिबुधि सबहि हिरानी ॥
ऐसे कहि प्यारी अनुरागी ❀ गद्गद वचन श्यामरसपागी ॥
पुनिपुनि कहति यहै मुख बानी ❀ मन हरिलियो छैल दधिदानी ॥
तब इक सखी सखीसों बोली ❀ तू कत होति जानकै भोली ॥
यह पुनि पुनि मनको निदरानी ❀ गुप्त बात तिन प्रगट बखानी ॥
तुम जानत श्यामा है छोटी ❀ है यह ज्ञान बुद्धिकी मोटी ॥
रहत सदा हरिके सँग माहीं ❀ हमसों कहत करति सो नाहीं ॥
किये रहति हमसों हठ ओटी ❀ बात कहत मुख चोटी पोटी ॥
भये श्याम याहीके वश अब ❀ देखि छकैं बेंदी छोटी छब ॥
भली बनी सुन्दर अब जोटी ❀ वे खोटे उनते यह खोटी ॥
दो०-कहति सखी यह कहा तू, निपट गवाँरी बात ।
को प्यारी सम दूसरी, जाकेवश बलभ्रात ॥
सो०-रूप शील गुण धाम, यह सबमें ब्रज आगरी ।
दृढ व्रत लीन्हों श्याम, धन्य न याते और कोउ ॥
प्रीति गुप्त हा की है नीकी ❀ कहो बात सखि अपने जीकी ॥
मैं रीझी या पर अति भारी ❀ क्यों खोटी जो कृष्णपियारी ॥
जो हरि कोटिमदनमन मोहैं ❀ सो मोहन याको मुख जोहैं ॥
जैसे श्याम नारि यह वैसी ❀ भेद करै सो सखी अनैसी ॥
नागरि नवल नवलके नागर ❀ सुन्दर यह जोरी छबिसागर ॥
सुनहु सखी ऐसे पै राजैं ❀ एकप्राण द्वैतनु सुखकाजैं ॥
एकहु पलक कबहुं नहिं न्यारे ❀ सोवत जागत जान हमारे ॥

१ लोहको कांटो जासों मच्छी पकरैं है । २ कृष्ण ।

पूरब नेह नयो वह नाहीं ❀ देखहु सखी समुझि मनमाहीं ॥
मेरो कह्यो मानि यह लीजै ❀ इनसों भाव प्रीति करि कीजै ॥
इनकी प्रीति प्रीतिके माहीं ❀ विना प्रीति ये जान न जाहीं ॥
जब लग इनसों प्रीति न मानै ❀ तब लग इनकी प्रीति न जानै ॥
इनकी प्रीति लख्यो जो चाहौ ❀ तौ करि इनसों प्रीति निबाहौ ॥

दो०—सखी वचन सुनि सखिनके, भयो हिये अति चैन।
धन्य धन्य ताको सबै, कहति सप्रेम सुबैन ॥

सो०—धनि धनि तेरो ज्ञान, तैं इनको जान्यो भले।
हम सब निपट अजान, बात कहत औरै कछू ॥

हम इनको ऐसे नहिं जाने ❀ ये ब्रज आय गुप्त प्रगटाने ॥
श्यामा श्याम एक हैं एरी ❀ तैं इतने उपहास सहेरी ॥
वे दोउ एक दूसरी तूरी ❀ तेरिहु प्रीति श्यामसों पूरी ॥
इनसों तेरी प्रीति पुरानी ❀ तब ते प्रीति पुरातन जानी ॥
धन्य श्याम धनि धनि तुव श्यामा ❀ हम सब वृथा भई बिन कामा ॥
श्याम राधिका सहज सनेही ❀ सहज एक दोऊ हैं देही ॥
सहज रूप [illegible] हृदय पूरणकामी ❀ सुन्दर सहज सहजबन धामी ॥
देखि दुहुँनकी [illegible] विशाला ❀ भई विवश सब ब्रजकी बाला ॥
श्यामा श्याम रंग रस पागीं ❀ सोवत ते मानहुँ सब जागीं ॥
उपजी प्रीति दुहुँनकी सांची ❀ दूरि गई दुविधामति कांची ॥
भई युगल रस वश सब गोपी ❀ लाज शंक मर्यादा लोपी ॥
सबके [illegible] रूप रस अटके ❀ श्रीश्यामावर नागरनटके ॥

छंद०—नवल नागर श्याम श्यामा, प्रेममन सबके फँसे।
नयन नासा श्रवण रसना, अंग प्रति दोऊ बसे ॥
उठत बैठत चलत सोवत, जगतनिशिवासर घरी।
नहीं बिसरत ध्यान कबहूं, सकल ब्रजकी सुन्दरी ॥

दो०—गई सकल निजनिज सदन, युगल प्रेमरस लीन।

---

१ राधा कृष्णके। २ रात–दिन।

बिछुरत नाहिं एकौ घरी, जैसे जल अरु मीन ॥
सो०-रहे श्याम उर छाय, बिन देखे दृग कल नहीं ।
गृहकारज न सुहाय, गुरुजन त्रास न सुरति कछु ॥
वे कछु कहैं करैं कछु औरैं ❁ सासु ननँद तब मारन दौरैं ॥
कहैं यहै पितु मात सिखायो ❁ ऐसोई ढँग तुम्हैं बतायो ॥
कहा तुम्हारे मन यह आई ❁ अपनी सुधि बुधि कहां गँवाई ॥
तुम कुलवधू लाज नहिं आवै ❁ कहँ लगि कोउ तुम्हें समुझावै ॥
कबकी यमुना न्हान गई हो ❁ ऐसी अब तुम निडर भई हो ॥
तुम राधाको संग करति हो ❁ हरिके पाछे वही फिरति हो ॥
बडे महरकी सुता कहावै ❁ यह सब बात उन्हें बनिआवै ॥
उनको सब उपहास उठावत ❁ ब्रज घर घर प्रति यही कहावत ॥
ऐसे तुमहूं नाम धरै हौ ❁ ब्रज लोगनमें हमैं हँसैहौ ॥
हम अहीर ब्रजपुरके वासी ❁ ऐसे चलो होय नहिं हाँसी ॥
लोकलाज कुलकानिहिं करिये ❁ फूंकि फूंकि धरणी पग धरिये ॥
ऐसे कहि गुरुजन समुझावैं ❁ लाज काज मर्याद सिखावैं ॥
दो०-सुनि युवतीगुरुजनवचन, विहँसि गवैंधारि मौन ।
हरि राधा उपहासकी, महिमा जानै कौन ॥
सो०-कहत तैसिये बात, जैसी मति जाके हिये ।
सुख उलूकहि रात, रविको तेज न मनहीं ॥
विषको कीट विषहि रुचि मानै ❁ कहास्वादरसस्वादहि जानै ॥
ये अहीर इनको प्रिय गोधन ❁ नन्दनँदन सुर श्रुतिशिवप्रियमन ॥
तिनकी महिमा कह ये जानैं ❁ जिनके गुण मुनि गर्ग बखानैं ॥
धनि धनि राधा कुँवरि सयानी ❁ श्यामहिं मिली कर्म मन बानी ॥
श्याम कामके पूरणहारैं ❁ पूरण करि तिनको उर धारैं ॥
धन्य धन्य श्यामा बनवारी ❁ यह रस लीला ब्रज विस्तारी ॥
ऐसे गोपी गण करि ध्याना ❁ करत श्याम श्यामा गुणगाना ॥

१ घुघुआ ।

इयाम रूप इयामा अनुरागी ❀ रोम रोम ताही रँग पागी ॥
गई सदँन मन लागत नाहीं ❀ मनमोहन बिन क्षण युग जाहीं ॥
मनहीं मन गुरुजन पर खीजै ❀ इन विमुखनको संग न कीजै ॥
कौन भाँति करि इनसों छूटौं ❀ क्यों वह दरश सरस सुख लूटौं ॥
बार बार जिय अति अकुलाई ❀ कैसेहु हरिबिन रह्यो न जाई ॥
दो०-धृक गुरुजन कुलकानि धृक, धृक लज्जा धृकधाम ।
धृक जीवन बहु दिननको, बिनु सुन्दर घनश्याम ॥
सो०-पलक कलप सम जाय, ब्रजबासी प्रभु दरशबिन ।
सदन अनेक सुहाय, मन हरि लीन्हों साँवरे ॥

अथ बाटमिलनलीला.

श्रीवृषभानु कुँवरि वर गोरी ❀ कृष्ण प्रेम उनमत्त किशोरी ॥
तनु विह्वल मन हरिके पासा ❀ दुरत न हृदय प्रेम परकासा ॥
चली यमुनजल आप अकेली ❀ रूपराशि गुणराशि नबेली ॥
दृगन इयाम दरशनकी आसा ❀ मनहीं मन यह करति हुलासा ॥
चितको चोर अबहिं जो पाऊं ❀ तौ उरको संताप नशाऊं ॥
राखौं बांधि हृदय सों लाई ❀ भुजकी दृढ करि दाम बनाई ॥
जैसे लियो चोरि मन मेरो ❀ तैसे लेउँ छोरि उनकेरो ॥
छाँडौं नाहिं करै जो कोरी ❀ ऐसे जान विचारति गोरी ॥
इतते प्यारी यमुनहिं जाई ❀ उतते आवत घरहिं कन्हाई ॥
नीलजलदतन शोभित आछे ❀ नटवर भेष काछनी काछे ॥
दूरिहिते देखतही जान्यो ❀ जीवन प्राण तुरत पहिंचान्यो ॥
रही मनोहर वदन निहारी ❀ कोटि मदन जापर बलिहारी ॥
दो०-मन आनँद हुलस्यो हियो, रोम पुलक दृग बारि ।
बोली गदगद वचन मुख, तनु विह्वल संभारि ॥
सो०-चित चोरे कहँ जात, मैं ढूँढति तबते तुम्हें ।
कहँ सीखी यह बात, अहो नंदके लाडिले ॥

१ घर । २ रस्सी । ३ मेघ ।

जानत जैसे माखन चोरी ❋ तब वह बात हती कछु ओरी ॥
बालकहते कान्ह तब तुमहूं ❋ भोरी सहज हुती मन हमहूं ॥
मुख पहिचान मान मुख लेती ❋ यशुमति कान जान तब देती ॥
बसो बास सब ब्रज इक ठोरी ❋ गोरस काज कान नहिं तोरी ॥
अब भये कुशल किशोर कन्हाई ❋ भई सजग हम सब तरुणाई ॥
माखन ते अब चितकी चोरी ❋ लागे श्याम करन बरजोरी ॥
नखशिख अँग चित चोर तुम्हारो ❋ लीन्हों मनधन छीनि हमारो ॥
सो अब जात कहां तुम लीन्हें ❋ भुजा पकरि ठाढे हरि कीन्हें ॥
तुमको नीके करि हम चीन्हें ❋ बनिहै अब मेरो मन दीन्हें ॥
ब्रजमें ढीठ भये तुम डोलत ❋ मोसों सूधे वचन न बोलत ॥
अब तौ मोहिं बूझि घर जैहौ ❋ विना दिये मन जान न पैहौ ॥
प्यारी यों झगरति पिय पाहीं ❋ देहगेहकी सुधि कछु नाहीं ॥

दो०-बीच करी कुल लाज तब, सन्मुख आई धाय ।
बखसि नागरी चूक यह, मोहिं कह्यो समझाय ॥

सो०-चितलै गयो चुराय, चूक परी हरि ते बडी ।
छाँडि देहु डरपाय, बडे महरिकी कुँवारि तुम ॥

कुलकी लाज अकाज कियोरी ❋ कहा करौं अति जरत हियोरी ॥
तब यों कहति पीयसों प्यारी ❋ सुनहु प्राणपति गिरिवरधारी ॥
देखे विना तुमहिं दुख पाऊं ❋ सो यह तुम बिन काहि सुनाऊं ॥
गुप्त रहन मोको तुम भाख्यो ❋ सो आयसु मैं शिर धरि राख्यो ॥
नहिं सुहात तुम बिन दिन राती ❋ प्राणनाथ तुमहित सब भांती ॥
तुमते विमुख जननके माहीं ❋ रह्यो जात मोपै प्रभु नाहीं ॥
मात पिता अति त्रास दिखावैं ❋ निंदत मोहिं नेक नहिं भावैं ॥
भवन मोहिं माटीसो लागै ❋ इक क्षण शोच नाहिं उर त्यागै ॥
कहँ लगि अपनी विपति बताऊं ❋ तुम बिन सुखको अंत न पाऊं ॥
सुंदर श्याम कमल दललोचन ❋ करहुकुसंगतिको दुखमोचन ॥

अब यह विनय श्याम सुनिलीजै ❋ चरणनते न्यारी नहिं कीजै ॥
कुलकीकानि कहां लगि मानो ❋ यह मन मोहन तुमहिं लुभानो ॥
छं०—मन लुभानो तुमहिं मोहन, और तेहिभावै नहीं ।
विनलखे गिरिधरण सुंदर, कहूं सुख पावै नहीं ॥
लोकडरकुललाजगुरु जन, कानि कहँलौंकीजिये ।
सिंहशरणकृपालु जंबुक, त्रासक्योंसहिलीजिये ॥
दो०—निरखि श्याम प्यारी वदन, सुनि कैवचनासिहाय ।
प्रेम अधीन विलोकि अति, हर्षि लई उरलाय ॥
सो०—शीतल पंकज पान, परशहरचो तनु विरह दुख ।
प्रेम विवश भगवान, बोले प्यारीसों हरषि ॥
कत दुख पावतिहौ तुम प्यारी ❋ यह लीला तुमहित विस्तारी ॥
बसत सदा मैं तुम मन माहीं ❋ तुम मम उरते बाहर नाहीं ॥
श्रीवृन्दावन घन सुखकारी ❋ है विहारथल तुम्हरो प्यारी ॥
शीतल सघन कुंज छवि धामा ❋ हम तुम संगमिलैं तहँ भामा ॥
दीजो सैन मोहिं कहँ आई ❋ तब तुमपै ऐहौं मैं धाई ॥
अब गृह जाउ आइहै कोऊ ❋ यों संकेत बढचो हित दोऊ ॥
ब्रज यमुना मग बिच दोउ ठाढे ❋ प्रेम सकोच अतिहिं मन बाढे ॥
बिछुरत बनत न रहत तहांहीं ❋ चितवत सखिन चपल चहुघाहीं ॥
तबहिं युवति ब्रजते कछु आई ❋ कछु यमुनाते ब्रजमें जाई ॥
दुहुँदिशि तरुणिन आवत जानी ❋ मनही मन राधिका लजानी ॥
चले तुरत हँसि कुँवर कन्हाई ❋ मिले हांकदै ग्वालन जाई ॥
रहे कहां तबते सब ग्वाला ❋ ऐसे टेरि कह्यो नँदलाला ॥
दो०—गये भाव करि श्याम यह, लियो नागरी जान ।
कहि हौं यहै सखीन सों, कीन्हों यह अनुमान ॥
सो०—देखि सखी मोहिं संग, अबहिं आय सब बूझिहैं ।
जानति इनको रंग, मन मन शोचति लाडिली ॥

१ स्यार । २ टेर ।

उन युवतिन मोहनको देख्यो ❀ जात राधिका ढिगते पेख्यो ॥
कहन लगीं आपसमें बातैं ❀ देखहु सखि प्यारीकी घातैं ॥
बात करति मिलि संग विहारी ❀ हमहिं लखत दीन्हें हैं टारी ॥
बूझतही कछु बुद्धि उपैहै ❀ सांची एकहु नाहिं जनैहै ॥
इतहु उतहुते आई नारी ❀ कहति कहां तू जाति पियारी ॥
अबहिं लखे तुवढिग वनवारी ❀ कहां गये पछितात कहारी ॥
कहा दुराव बनत अब कीन्हे ❀ हमहूंते तबहीं लखि लीन्हे ॥
कान्ह कहा बूझतहैं तुमको ❀ सांची बात कहो तुम हमको ॥
मन लै गये तुम्हारे चोरी ❀ सो पायो अपनो तुम गोरी ॥
श्यामहिं मिलि अपनो मन लीन्हों ❀ देखत हमैं टारि क्यों दीन्हों ॥
सदा चतुरई फवतिउ नाहीं ❀ अबतौ आइपरी फँद माहीं ॥
हमहिं बहुत तुम निदरि रहीहौ ❀ कहाँ रहत हरि कित निबहीहौ ॥

दो०–कहत रही जबतबहिं तुम, हरिसँग देखहु मोहि ।
तब कहियो जो भावही, लीन्हों बेसरि खोहि ॥

सो०–अब हम लेहि छिनाय, बेसरि देहौ कै नहीं ।
की करिहौ चतुराय, और कछू हमसों अबहुँ ॥

तब हँसि कह्यो नागरी प्यारी ❀ तुम सब भई अजान कहा री ॥
मैं मूरख तुम चतुर बडेरी ❀ ऐसहि बेसरि लैहौ मेरी ॥
यही कहन मोको तुम आई ❀ इतउतते मिलि उठि तुम धाई ॥
बेसरि एक लेहुगी को को ❀ पीताम्बर दिखरावहु मोको ॥
पीताम्बर अरु बेसरि लीजै ❀ प्रगट जाय तब ब्रजमें कीजै ॥
तारी एक बजति कर दोऊ ❀ इतनो ज्ञान करो सब कोऊ ॥
सुनु राधा तोसों हम हारी ❀ धन्य धन्य तेरी महतारी ॥
तेरे चरित कहा कोउ जानैं ❀ बश कीन्हों घनश्याम सुजानैं ॥
अबही रारि बढायो तिनको ❀ हम देखे तेरे ढिग उनको ॥
तापर निदरति है तू हमसों ❀ कहत न बनत हमैं कछु तुमसों ॥

१ शोभित ।

अँग अँग विरचि कपट चतुराई ❋ निज कर विधना तोहिं बनाई ॥
इतनी बुद्धि श्यामके नाहीं ❋ जितनी है प्यारी तोहि माहीं ॥
दो०–श्याम भले अरु तुम भली, राज करहु घरजाय ।
बेसरि छोरति हैं सखी, बिन काजै उठि धाय ॥
सो०–जान्यो तुम्हरो ज्ञान, दौरि परीं मोपर सबै ।
जो तुम हती सुजान, गहती बाँह दुहूनकी ॥
कहु प्यारी सांची अब हमसों ❋ कछु तौ श्याम कहत हैं तुमसों ॥
हाहा बात कहो सो प्यारी ❋ भेद करो तो सौंह हमारी ॥
तुव ढिगते मोहन हम हेरत ❋ गये उतै ग्वालनको टेरत ॥
तू क्यों ठिठुकिरही मगमाहीं ❋ कहा कह्यो मोहन तुवपाहीं ॥
सहज होय हमसों यह भाखो ❋ उर में कछू रोष मति राखो ॥
मैं यमुना तट जात रही री ❋ ब्रजते आवत तुम्हें लखी री ॥
परखन लगी तुमहिं मगमाहीं ❋ तिरछे आय गये हरि पाहीं ॥
मैं तुमहीं तन रही निहारी ❋ उन पूछो म्वहिं ग्वाल कहाँ री ॥
मैं सुनि सन्मुख दीठिं न खोली ❋ हां नाहीं कछु मुख नहिं बोली ॥
ग्वालन टेरत गये कन्हाई ❋ तुम मेरी बेसरि को धाई ॥
सुनि यह बात युवति सकुचानी ❋ कछु तो परति सांचसी जानी ॥
ग्वालन टेरत गये कन्हाई ❋ यह तो हमहुँ श्रवण सुनि पाई ॥
दो०–तब हँसिकै सखियन कह्यो, सुनु लाडिली सुजान ।
हम मानी तेरी कही, तू मति रिस जिय आन ॥
सो०–लीन्हीं कण्ठ लगाय, अति निर्मल तू लाडिली ।
झूठहि करत चवाय, ब्रज घर घर तेरो सबै ॥
अब चलिये यमुनाके धामा ❋ संग चलैं हम हूं सब श्यामा ॥
चूक परी हम सों यह तेरी ❋ नाम लियो बेसरि को एरी ॥
अहो सखी तुम निपट अनैसी ❋ जानति हौ मोहिं आपहि जैसी ॥
झूंठहि धाई दोष लगावन ❋ अब लागीं मोको दुलरावन ॥

१ क्रोध । २ दृष्टि । ३ प्यार ।

क्षणक बुद्धि तुम्हरी धौं कैसी ❀ हौ तुम बडी पेटकी जैसी ॥
यह सुनि हँसत चलीं ब्रजनारी ❀ गई यमुनते गृहको प्यारी ॥
ऐसे सखियनको वहरायो ❀ कृष्ण सनेह न प्रगट जनायो ॥
नागरि श्यामाश्याम सनेही ❀ चतुर श्याम श्यामाके तेही ॥
श्यामा श्याम बसत तनु माहीं ❀ बसत श्यामश्यामामनमाहीं ॥
नंदसँकेत भये घर दोऊ ❀ मात पिताकछु जान न कोऊ ॥
कैसे हूं करि दिवस बितायो ❀ निशिन घटैं रस बिरह सतायो ॥
अति आतुर दोऊ मनमाहीं ❀ क्यों हूँ नींद परति है नाहीं ॥

दो०–विरहनदी निशितम सलिल, पैरत थके निहारि ।
बूड्यो मणि तमचर कह्यो, मिल्यो पार भिनसारि ॥
सो०–सुनि तमचर की टेर, अति आनंद दुहून मन ।
अतिही उठे सबेर, लगी चटपटी मिलनकी ॥

अथ संकेतमिलनकीलीला.

श्याम उठति लखि जननी जागी ❀ हरिमुखकमल निरखि अनुरागी ॥
बूझति मात जाउँ बलि प्यारे ❀ आज कहा तुम उठे सवारे ॥
उत्तम जल भरि दीनी झारी ❀ अति आतुर हरि करी मुखारी ॥
विवश श्याम प्यारी रस छाके ❀ मगन ध्यान वृषभानु सुताके ॥
उत वृषभानुसुता सुकुमारी ❀ उठी प्रात वह भाव विचारी ॥
श्रीवासों मोती लर तोरी ❀ आंचर बांधि मातकी चोरी ॥
यहै व्याज अपने उर धारयो ❀ कुंजधामवन जान विचारयो ॥
आंगन गई भवन फिरि आई ❀ गई भवनते फिरि अँगनाई ॥
जात बनै न रह्यो नहिं जाई ❀ इत उत फिरत भवन विततांई ॥
मनहिं कहत कब मिलहु कन्हाई ❀ काल्हि गये वनधाम बुलाई ॥
मात कह्यो क्यों उठी सँवारी ❀ जाति कहां प्रातहि तू प्यारी ॥
आज कहा इत उत तू डोले ❀ मुखते कछू वचन नहिं बोलै ॥

१ कृष्णराधिका । २ पानी । ३ मुर्गा । ४ यशोदा । ५ दँतून । ६ राधिकाजी ।
७-८ सबेरे । ९ टहलत ।

दो०–अति नागरि[1] मोती लरी, राखी प्रथम दुराय[2] ।
ताहीमिसि करिकै सकुच, बोलति नहीं डराय ॥
सो०–पुनि पुनि चितई मात, लखी ग्रीव भूषण बिना ।
तब जानी यह बात, खोई कहुँ मोती लरी ॥

जननी[3] भई तबहिं रिसहाई ❋ कंठलरी तैं कहाँ गँवाई ॥
मोतिनको गजरा छबिछायो ❋ बडे मोलको परम सुहायो ॥
तेरे लिये महर[4] बनवायो ❋ मैं तोको हित करि पहिरायो ॥
कौने लियो कहाँ तैं गेरयो ❋ काल्हिहि तेरे तौ गर हेरयो ॥
बूझे तोहिं जवाब न आवै ❋ कह शोचति किन बेग बतावै ॥
सुनि राधिका मातकी बानी ❋ मन बिहँसत ऊपर भय मानी ॥
बोलति नहीं हृदय हरषाई ❋ कहति भली बुधि मोको आई ॥
अबहीं मोको खोज पठै है ❋ यामिसि जानि श्यामपै ह्वै है ॥
कहत मातसों तब भय मानी ❋ मोहिं नहीं सुधि कहां हिरानी ॥
काल्हि सखिनसँग यमुना न्हाई ❋ तहां कहूं धौं तिनहिं चुराई ॥
कैधौं गिरी कतहुँ जलमाहीं ❋ यह तौ मैं कछु जानति नाहीं ॥
काल्हिहिते शोचति पछिताई ❋ तेरे डरते कह्यो न जाई ॥

दो०–नेकु नींद नहिं निशि परी, तेरी सौं सुनि मात ।
याही डरते आज हौं, उठी बडे परभात ॥
सो०–सुनत सुता के बैन, महरि चकितमुख लखिरही[5] ।
कृष्णप्रिया[6] गुणऐन[7], कोऊ पार[8] न पावई ॥

तब जननी करि क्रोध कहीरी ❋ मैं बरजति तोहिं हार रहीरी ॥
फिरति नदी बन डगरन माहीं ❋ काहूकी शंका तोहिं नाहीं ॥
बहुत तात तोहि लाडलडाई ❋ नोखी सुता महरकी जाई ॥
बरजति मैं जु करति तू सोई ❋ भली करी मोतिनलर खोई ॥
एक एक नग परम सुहायो ❋ लाखटकादै मैं जु मँगायो ॥

---

१ अतिचतुर । २ छिपाय । ३ माता । ४ पितावृषभानु । ५ देखरही ।
६ राधिका । ७ गुणोंकागृह । ८ थाह ।

जाके हाथ परोसो दैहै ❋ घरबैठे निधि पाय गँवैहै ॥
भरि भरि नयन लेति है माता ❋ मुखते कछू न आवति बाता ॥
रीतो गरो निहारति जबहीं ❋ हियो उमँगि आवत है तबहीं ॥
कहा करों जो खोइ गईरी ❋ तू कित खीजत विकल भईरी ॥
लैहौं और मँगाय बवासों ❋ देति नहीं क्यों और डबासों ॥
करिहै कहा सैंति जो राखै ❋ तादिन तोहिं कित कधौं माखै ॥
रोवति कहा औरहै नाहीं ❋ दे निकासि पहिरों गर माहीं ॥
दो०-सुन राधा तेरो नहीं, अब पतियारो मोहिं ।
चौकी हार हमेल कछु, नहिं पहिराऊं तोहिं ॥
सो०-लाखटकाकी हानि, करी आज तैं लाडिली ।
अब नहिं देहों आनि, जबलौं वह लावै नहीं ॥
अब तौ घर बैठन जब पैहो ❋ जलज सरोज खोजलै ऐहो ॥
जाधौं देखि कहूं जो पावै ❋ तबहीं तोहिं भलाई आवै ॥
यमुना गई संग तब कोही ❋ बूझति नहीं जाय किन ओही ॥
कौन कौनको तोहिं बताऊं ❋ कहँ लग सबके नाम गनाऊं ॥
चद्रावलि ललतादिक नारी ❋ हतीं सकल ब्रज गोपकुमारी ॥
देखहु जाय यमुन तट हेरी ❋ जहां राखि मैं न्हाति रहेरी ॥
युवती एक रही टकलाई ❋ पूछि देखिहौं वाको जाई ॥
जैहै कहां जलजलरि मेरी ❋ तिनहीं लई भली सुधि एरी ॥
आज अबेर लगेगी मोहीं ❋ ढूँढोंगी ब्रज घर घर ओहीं ॥
ऐसे करि माता मति भोरी ❋ हरषि चली वृषभानुकिशोरी ॥
निरधक चली सदन ते प्यारी ❋ मन अटक्यो बन कुंजविहारी ॥
मनहीं मन यों शोचति जाई ❋ कैसे हरि सों देहु जनाई ॥
दो०-बार बार नँदनंद इत, आतुर जोहँत राह ।
प्यारी मुख शशि उदैकी, नैन चकोरन चाह ॥
सो०-भरे विरहरस माहिं, क्षणमें घर द्वारे क्षणक ।

१ कौन । २ हार । ३ बहलाकर । ४ राधिका । ५ गृह । ६ कृष्ण । ७ देखत ।

फिर फिर आवहिं जाहिं, लगी चटपटी प्रेमकी ॥
जननी करति रसोई आतुर ❋ लखि लखिजातश्यामघनचातुर ॥
कहा अबेर करति तू मैया ❋ भूख लगी मोहिं कहत कन्हैया ॥
यशुमति कह्यो तात बलिजाई ❋ अब विलंब नहिं बैठहु आई ॥
सखा संग सब लेहु बुलाई ❋ बोलि लेहु अरु हलधर भाई ॥
सादर कह्यो श्याम बल भइयो ❋ दाऊजी जेंवनको अइयो ॥
मोको अबहिं नहीं रुचि भैया ❋ सखन संग तुम खाहु कन्हैया ॥
संग सखन लै तब मनमोहन ❋ जेंवनको बैठे सब गोहन ॥
षटरस व्यंजन सरस सँवारे ❋ पराशि धरे रोहिणि पनवारे ॥
श्याम सखनको आयसु दीन्हों ❋ आपुनहूं कर कौरहि लीन्हों ॥
तबहीं कोकिलके समबानी ❋ बोलि उठी राधा सुखदानी ॥
नंद महर पिछवारेहिं आई ❋ झूठहि ललिताको गुहराई ॥
वृन्दावन मग जाति अकेली ❋ आवहु वेगि तुमहुँ सँग हेली ॥
दो०-बिन जेंये मोहन उठे, करते कौर गिराय ।
जेंवतही छांडे सखा, चले बनहि अतुराय ॥
सो०-देखि चकित दोउ मात, चौंकि रहे सिगरे सखा ।
कहति कहा चले जात, अति आतुर गोपाल तुम ॥
अबहीं ग्वाल गयो कह मोही ❋ वनमें गाय बियानी लोही ॥
मैं जेंवन बैठो बिसराई ❋ सो सुधि मोहिं अबहिं ह्वै आई ॥
तुम जेंवहु मैं देखहुँ जाई ❋ करी श्याम तिनसों चतुराई ॥
लोही मेरी गाय बियानी ❋ यह कहि चले हर्ष उर आनी ॥
हँसत सखा सब मन मन माहीं ❋ नहीं गाय बछरा ह्वाँ नाहीं ॥
है प्यारी रानी ह्वाँ राधा ❋ हम जानी यह बात अगाधा ॥
जननी नहीं कछू यह जानी ❋ बार बार कहिकै पछितानी ॥
भूखे श्याम गये उठि धाई ❋ राज करौ यह गाय बियाई ॥
दई सैन है वन श्रीश्यामा ❋ पहुँचे जाय तहां घनश्यामा ॥

१ भोजनकरने । २ बडीदुस्तर--अथाह ।

देखत हर्ष भये मन दोऊ ❀ फूले अंग समात न कोऊ ॥
मिलि धाय गहि अंकम माला ❀ कनक बेलि जनु लगी तमाला ॥
मिलि बैठे दोउ कुंज सुहाई ❀ कोटि काम रति छबिहि लजाई ॥
दो०–नवल कुंज नवनागरी, नव नागर नँदनन्द ।
प्रेमसिंधु मर्याद तजि, मिले उमँगि आनन्द ॥
सो०–विलसत मदन विलास, कोटिमदन गणकेमथन ।
युगलरूपकी रास, नित्य विलास विलासनिधि ॥
नागर श्याम नागरी श्यामा ❀ शोभित कुंज कुटी छबि धामा ॥
चितवत दुर दुर नैन लजोहैं ❀ सो छबि वरणिसकै कवि कोहैं ॥
रीझे श्याम नागरीछबिपर ❀ नागरि निरखत श्यामसुभगवर ॥
देह दशाकी सुरति बिसारैं ❀ अरस परस दोउ रूप निहारैं ॥
शोभित बदन महा छबि छाये ❀ शिथिल अंग श्रमबिंदु सुहाये ॥
इंद्रिय वर राजीव कमल जनु ❀ फूलि रहे मकरन्द भरे मनु ॥
बैठे कुंजद्वार सुखदाई ❀ कोमल किसलय सेज सुहाई ॥
लटकति चहुँदिशि कुसुमितबेली ❀ फूलि रही तरुडार नवेली ॥
हरित भूमि छबि वरणि न जाई ❀ बहत समीर सुखद पुरवाई ॥
आये उमडि मेघ सुखकारी ❀ परत बूंद शीतल श्रमहारी ॥
भीजत सुरँग चूनरी सारी ❀ मन सकुचत लखि रसिकबिहारी ॥
बूंद बरावत मोहन पातन ❀ हँसि हँसि करत प्रेमकी बातन ॥
दो०–भीजे रस रँग प्रेम सुख, जल भीजे दोउ गात ।
भीजे अम्बर कुंज गृह, श्यामा श्याम सुहात ॥
सो०–यह अचरजकी गाथ, को मानै को कहिसकै ।
गोपसुताके साथ, रमत ब्रह्म द्रुम कुंजतर ॥
इहविधि करि विलास बन माहीं ❀ कह्यो श्याम श्यामाके पाहीं ॥
अब गृह जाहु सांझ नियराई ❀ मात पिता करिहैं दुचिताई ॥
यह रस रीति गुप्तकी नीकी ❀ तुम प्यारी अति मेरे जीकी ॥

१दौरकर-पकड़।२ कामदेव-रति।३सुख आगर। ४मस्वेदकण।५रस।६ वायु।७ राधिका।

करते कौर डारि मैं आयो ❀ तुम्हरो बोल सुनत उठि धायो ॥
मेरे प्राण बसत तुम पाहीं ❀ इक क्षण तुमको बिसरत नाहीं ॥
सुनि सुनि बातें पियकी प्यारी ❀ करति मनहिं मन आनँद भारी ॥
अति सनेह बोली सकुचाई ❀ सुनहु प्राण प्रियतम सुखदाई ॥
कहा करौं पग जात न घरको ❀ मन अटक्यो नहिं मानत डरको ॥
दृगे तुमको देखत सुख पावें ❀ गृह गुरुजन मोहिं नेकु न भावें ॥
बरजहु अपनी चितवन तुम हरि ❀ और मन्द मुसकान मनोहरि ॥
तुम्हरी नेकु सहज यह बानी ❀ सहियत हैं हम सर्वसयानी ॥
वशीकरन हैं इनके माहीं ❀ विवश भयो मन मानत नाहीं ॥

दो०– ऐसी विधि परगट करत, दंपति निज अनुराग ।
भये परम आनन्द रस, वदत आपने भाग ॥

सो०–श्याम लई उरलाय, प्रिया बोधि पठई घरहिं ।
चले आप सुख पाय, सुन्दर घन सुखके सदन ॥

करति जननि अवसेर विशाला ❀ पहुँचे सदन श्याम तिहिंकाला ॥
लीन्हे धाय लाय उर मैया ❀ कहति लालकी लेहुं बलैया ॥
करते कौर डारि उठि भागे ❀ सुनत गाय व्यानी अनुरागे ॥
लोही गाय आपनी व्यानी ❀ ताते प्रीति अधिक उर आनी ॥
वह तो नाहिंन मेरी गैया ❀ बृन्दावन भरम्यों सुन मैया ॥
गोवर्द्धन यमुना तट सारो ❀ बृन्दावन ढूंढत सब हारो ॥
कोऊ सखा संग तहँ नाहीं ❀ फिरचों अकेलो वनके माहीं ॥
युवती एक मिली धौं कोही ❀ सो पहुँचाय गई घर मोही ॥
सुनि यशुदा मन अति अकुलानी ❀ धोये पदलै ताती पानी ॥
तुरत श्यामको भोजन दीन्हों ❀ निरखि मुखारविंद सुख लीन्हों ॥
लीलासागर कुँवर कन्हाई ❀ सदा सदा भक्तन सुखदाई ॥
ब्रजवासी प्रभु सब गुण आगर ❀ नन्दनँदन सुन्दर सुखसागर ॥

दो०–अति श्रीकीरति नंदनी, रूपराशि गुण खान ।

१ हाय । २ तुम्हारे प्रेममें लगरह्यो । ३ आंख । ४ प्रिया प्रियतम । ५ राधिका ।
६ रूपकासमूह–अत्यंतरूपवती ।

चली श्याम सुखदै भवन, नागरि नवल सुजान ॥
सो०-लई खोलिकै हाथ; आंचरते मोती लरी ।
सखी मिली यक साथ, बूझत कहँ तू लाडिली ॥
तासों व्योरा कहि समुझायो ❀ गई हती यह काज बतायो ॥
कह्यो सखी तब सुनरी प्यारी ❀ ऐसी निधरक भई कहारी ॥
ब्रज घर घर तू फिरति अकेली ❀ संग नहीं कोउ सखी सहेली ॥
मोको संग बोलि नहिं लीनी ❀ ऐसी तैं करनी यह कीनी ॥
प्रातहि गई अबहिं तू आई ❀ बीतो दिवस निशानियराई ॥
पायो हार किधौं पुनि नाहीं ❀ देखहुं मोहिं साध मनमाहीं ॥
चतुर सखी मनमें यह जानी ❀ मिलवति है यह झूठी बानी ॥
यह तौ गई श्यामके पासा ❀ आवतिहै करि भोग विलासा ॥
कह प्यारी किन हार चुरायो ❀ कैसे जाय कहाँते पायो ॥
ब्रजयुवतिन सबहिन मैं जानौं ❀ कहौ तौ सबके नाम बखानौं ॥
ताको नामलेहि किन लीन्हों ❀ प्यारी तेरे गुण मैं चीन्हों ॥
चोर तुम्हारो कुवँर कन्हाई ❀ तिनसों जाय विलँस तू आई ॥
दो०-रस बस कीन्हें श्यामतें, कहा बनावति बात ।
कहे देत रस रँग भरे, अरु सोहैं सब गात ॥
सो०-कह बहँकावति मोहिं, कहाँ हार कहँ ग्वालिनी ।
तबतें जानति तोहिं, जबतें तैं हरिसँग कियो ॥
इन बातनि कछु पावति हैरी ❀ तोहिं यहै नित भावति हैरी ॥
देखति मोहिं अकेली जबहीं ❀ नई बात उपजावति तबहीं ॥
विनही देखे झूंठ लगावै ❀ नाहक मोसों बैर बढावै ॥
सौंहँ दिये बूझति मैं तोहीं ❀ जोर कहति कै देख्यो मोहीं ॥
जब जानी प्यारी विरुझानी ❀ तब वह चतुर सखी मुसकानी ॥
तब हँसि कह्यो जाहु घर प्यारी ❀ तू जीती मैं तोसों हारी ॥
चली भवन वृषभानुदुलारी ❀ अति अवसेरं करत महतारी ॥

१ व्यवस्था । २ रमी । ३ सौगन्ध । ५ अनखानी । ५ चिंता ।

गई प्रात राधा नाहिं आई ❀ दिवस गयो निशियामैं[1] विहाई ॥
हार काज मैं त्रासै[2] दिखाई ❀ ताते रूसिरही कहुं जाई ॥
ह्वै है धौं काके घरमाहीं ❀ कहां जाउँ मैं ढूंढन ताहीं ॥
जाहु हार यह कहि पछिताई ❀ सुता सनेह अधिक अकुलाई ॥
सुनिहै बात महर[3] कहुँ जबहीं ❀ मोपर अतिरिस करिहै तबहीं ॥

दो०-शोचति जननी विकलअति, मननलहतिविश्राम ।
उर डराति ताही समय, गई कुँवरि निज धाम ॥

सो०-देखतही उठि धाय, हराषि लई उर लायकै ।
सुता माय उरलाय, शोच मिटचो धीरज भयो ॥

लैरी मात हार मैं पायो ❀ जाकारण मोहिं त्रास दिखायो ॥
मनहीं मन कीरति सकुचाई ❀ पोच करी मैं याहि रिसाई ॥
अति पुनीतै[4] राधिका प्रवीनी[5] ❀ कृष्णमिलनहित यह मति कीनी ॥
अगम अगोचर[6] है प्रभु जोई ❀ ब्रजवनितन वशकीन्हें सोई ॥
जो प्रभु शिव सनकादिक ध्यावैं ❀ ब्रजगोपिनसँग सो सुख पावैं ॥
हरिकी कृपा अगोचर सारी ❀ निगमनहूंते अगम न भारी ॥
प्रीति विवश सबते गिरिधारी ❀ राजा रंक पुरुष कह नारी ॥
देवकि उदर प्रीतिवश आये ❀ प्रीतिहिते यशुमति पय प्याये ॥
प्रीतिविवश वन धेनु चराई ❀ प्रीति विवश नँद कुँवर कान्हाई ॥
प्रीतिहिके वश दही चुरायो ❀ प्रीति विवस ऊखल बँधवायो ॥
प्रीतिविवश गोवर्द्धन धारी ❀ प्रीति विवस नटवर वनवारी ॥
प्रीति विवश गोपिनसँगकामी ❀ प्रीति विवस वृन्दावन धामी ॥

दो०-श्याम सदा वश प्रीतिके, तीन भुवन विख्यात ।
विना प्रीति नहिं पाइये, नंद महरको तात ॥

सो०-प्रीति करहु चित लाय, ब्रजबासी प्रभुपदकमल ।
कहत सुनत श्रुँति[7] गाय, प्रभु रीझत हैं प्रीतिको ॥

---

१ एकपहररात्रि। २ डर। ३ वृषभानु। ४ पवित्र। ५ चतुर। ६ जाननेयोग्यनहीं-अदेख। ७ वेद।

अथ प्यारीके घरमिलनेकी लीला.

भये श्याम नागरिवश ऐसे ❀ फिरति छांह संगहि सँग जैसे ॥
बदन कमलरस रूप लुभाने ❀ रहत मिली मुख जो मडराने ॥
वचन नादरस मृग जो गीधे ❀ नैन कटाक्ष वंक शरबीधे ॥
कबहुँ श्याम यमुना तट जाहीं ❀ विन प्यारी देखे अकुलाहीं ॥
कबहुँ कदमचढि मगं अवलोकैं ❀ कबहुं जाय वन कुंजविलोकैं ॥
गृह वन लगत कहूं मन नाहीं ❀ मिलन प्रकार चहत चितमाहीं ॥
तव वृषभानुपुरा तन आवैं ❀ मुरली मधुर बजावैं गावैं ॥
प्यारी प्रगट श्याम गति देखी ❀ मनहीं मनहिं सिहात विशेखी ॥
अति अनुराग भरे दोउ नागर ❀ गुणसागर रस रूपउजागर ॥
अरस परस दोउ चाहत ऐसे ❀ शशि चकोर अंबुज अँलि जैसे ॥
चली यमुन वृषभानुदुलारी ❀ शोभित संग नवल ब्रजनारी ॥
देखे नंदसुवन तेहि खोरी ❀ व्याकुल प्रेम विकल मति भोरी ॥

दो०–सखिनसंग लखि नागरी, मन डरपी सकुचाय ।
श्यामपरे फँद कामके, कौन कहै समुझाय ॥

सो०–सखियनके संकोच, बोलि सकत नहिं मुखवचन ।
हृदयभयोअतिशोच,देखिविरहव्याकुलहरिहि ॥

इतहि सखिनसों बात बनावै ❀ उतहि श्यामको भाव जनावै ॥
मुख मुसकाय सकुच पुनिलीने ❀ सहज अलक निरवारनकीने ॥
एक सखी यमुनासों आवति ❀ ताहि भेंटि यों वचन सुनावति ॥
मेरे सदन आइयो आली ❀ हर्षभये यह सुनि वनमाली ॥
प्यारी गुप्तभाव जो कीनो ❀ श्याम सुजान जान सो लीनो ॥
हरषि गये तव निज गृह मोहन ❀ प्यारी चली सखिनके गोहन ॥
चतुर सखिन मनमें लखि लीनों ❀ भांवकछू हरिसों इन कीनो ॥
हरुवै आपुसमें बतरानी ❀ हरितनलखि कछुयहमुसकानी ॥

१ राधिका । २ हरिण । ३ रस्ता । ४ देखें । ५ प्यार । ६ कमल । ७ भौंरा । ८ लाज । ९ साथ । १० प्रेम ।

पुनि मुसकाय कमलमुख फेरचो ❀ सदन बुलाय सखी को टेरचो ॥
गये श्याम उत हर्ष बढाई ❀ ये अति चतुर करी चतुराई ॥
और भाव कैसो गन कोऊ ❀ आज रैं[२]नि मिलिहै ये दोऊ ॥
लै यमुनाते जल अतुराई ❀ सखिन संग प्यारी घर आई ॥
दो०–भाव दियो निशि आयहैं, मेरे मोहन आज ।
अति हर्षित अंगन सजित, भूषण वसन समाज ॥
सो०–सहज रूपकी खान, अंग शृँगारत लाडिली ।
को करिसकै बखान, त्रिभुवनपतिहरिवल्लभा ॥
अंगशृँगार कियो हरिप्यारी ❀ बेणी रचि निजपाणि सँवारी ॥
मोतिन संग जराऊ टीको ❀ कियो बिंदु वंदनको नीको ॥
लोै[३]चन अंजनरेख बनाई ❀ श्रवणन तरवनकी छबि छाई ॥
नाँ[४]सा नथ अतिही छबि छाजै ❀ नागवेलरँग अ[५]धरन राजै ॥
सुभग अंग सब नोसत साजैं ❀ सुरँग सुगंध वसन शुभ भ्राजैं ॥
मनमोहनको पंथ निहारैं ❀ कबहुंकि उत्कंठा जिय धारैं ॥
भयो बालशशि अस्त निहारी ❀ कहति आज ऐहैं गिरिधारी ॥
आवन पैहैं कैधौं नाहीं ❀ कै आवत ह्वैहैं मगमाहीं ॥
कै धौं तात मात भय करिहैं ❀ कै आवत मेरे घर डरिहैं ॥
आवैं गे कैधौं हरि नाहीं ❀ यों शोचति प्यारी मन माहीं ॥
कबहू रचि रुचि सेज सँवारी ❀ हरि ऐहैं मन हर्ष बिचारी ॥
सुमन[६] सुगंध सेजपर धारै ❀ पुनि पुनिकर अभिलाष निहारै ॥
दो०–आवैं कबहुँ अचानकहुँ, जो मोगृह[१] घनश्याम ।
डारति अति अनुराग भरि, सुभग पांवडे धाम ॥
सो०–प्रगटे कृपानिधान, यों अभिलाषा करतहीं ।
को करिसकै बखान, भयो जु सुखलखिदुहुँनमन ॥
वह छबि कापै जाति बखानी ❀ वहरस झिझक मंद मुसकानी ॥
वह मृदु मधुर मंद मुसकानी ❀ वह संयोग प्रेम सकुचानी ॥

१ गृह । २ रात्रि । ३ नयन । ४ नाक । ५ ओष्ठ । ६ फूल ।

वह शोभा वह चितवन बाँकी ❃ वह रस प्रेम सुभग दुहुँबाँकी ॥
वह सुख श्रीराधा माधवको ❃ जो कहिसकै आहि जग कविको ॥
जाकी महिमा वेद न जाने ❃ कवि ताको केहिभांति बखाने ॥
श्यामा श्याम सेजपर सोहैं ❃ अरसपरस दोऊ मन मोहैं ॥
गुणआगर छविसागर दोऊ ❃ कोटि काम रतिसम नहिं सोऊ ॥
मत्त प्रेमरस विवस बिहारैं ❃ युगल परस्पर अंग सँवारैं ॥
लटपटित पाग सँवारति प्यारी ❃ अलक सुधारत श्रीगिरिधारी ॥
रसविलास दोऊ अनुरागे ❃ आलिंगन चुंबन रस पागे ॥
हास विलास विविध रसरीती ❃ इह सुखरैनि यामत्रय बीती ॥
अतिरसमत्त युगल अलसाने ❃ पुनि पौढे दोऊ लपटाने ॥

दो०—निशिनिघटीतमतामिटी, उडगणज्योतिमलीन ।
गये कुसुमकुम्हिलायके, भई दीपछबि छीन ॥
सो०—बिकसे सरस सरोज, भयो पवन शीतल सुरभि ।
धरी उतारि मनोज, पनच आपने धनुषते ॥

सरसवचन बोली तब प्यारी ❃ जागहु प्राणनाथ बनवारी ॥
भयो प्रातको समय कन्हाई ❃ प्राची दिशि पीरी परिआई ॥
चंदन मलिन चिरइ चुहचानी ❃ अलि छूटे कुमुदिन सकुचानी ॥
बोले तमचर जहँतहँ बानी ❃ मिले कोक कोकी सुखमानी ॥
उठहु प्राणपति सदन सिधारो ❃ है ब्रज घरघर घेर हमारो ॥
लगीं रहति परखति ब्रजनारी ❃ जागहिं जिन गुरुजन भय भारी ॥
सुनत उठे मोहन मुसकाई ❃ चले सदन अपने अतुराई ॥
गृहतें निकसत सखियन जानी ❃ देखि दरश तनुदशा भुलानी ॥
प्रगट दरशदै गये कन्हाई ❃ यह उनकी मनसाध पुराई ॥
शीश मुकुट मोतिनकी माला ❃ पीत वसन कटि नैन विशाला ॥
श्याम बरन तनु सुन्दरताई ❃ अंग अंग छबि बरणि न जाई ॥

१ संसार । २ हिलमिल । ३ दोनों । ४ तीनमहररात्रि । ५ नक्षत्रगण ।
६ फूले । ७ कमल । ८ भौंरा । ९ मुर्गा ।

देखि रूप मन रह्यो लुभाई ❀ निकसि गये गृह कुवँर कन्हाई ॥
दो०-बार बार जिय लाडिली, यह शोचति पछितात ।
गये श्याम आलस भरे, नेकु न सोये रात ॥
सो०-देखे जिन सखि कोय, श्याम गये मोसदनते ।
मैं राखो है गोय, अबलगियहरससखिनसों ॥
देखौं जाय पँवरिहै प्यारी ❀ जहां तहां ठाढी ब्रजनारी ॥
सकुचि गई चिंता उपजाई ❀ बार बार मन मन पछिताई ॥
हरिसों प्रीति गुप्तही मेरी ❀ सो इन आज प्रगटकरि हेरी ॥
निकसे श्याम हमारे घरसों ❀ इन जान्यों ह्वै है अटकरसों ॥
नितही नित बूझति ये आई ❀ मैं निदरच्यो इनको सतराई ॥
अब तौ श्याम प्रगट इन देख्यो ❀ करिहैं मोसों बहुत परेख्यो ॥
यह तौ दाँव भलो इन पायो ❀ अब कैसे करि जाय छिपायो ॥
अबहीं बूझहिंगी सब आई ❀ कह करिहौं उनसों चतुराई ॥
प्रगटकरों तो होय अनीती ❀ राखन गुप्त कह्यो हरि प्रीती ॥
शोच परच्यो कछु बात न आवै ❀ बार बार मन प्रभुहि मनावै ॥
प्राणनाथ हरि होउ सहाई ❀ जाते मेरी पति रहिजाई ॥
जैसे बोधं सखिन को होई ❀ दीजै नाथ बुद्धि अब सोई ॥
दो०-ऐसे शोचति लाडिली, कबहूं प्रभुहि मनाय ।
कबहूं प्रभुको सुख समुझि, प्रेममग्न ह्वैजाय ॥
सो०-भयो बोध उर आय, सुमिरतही मनभावनो ।
कैहिहौं सखिन बुझाय, मन मन हरषी नागरी ॥
परम कुशल राधे हरि प्यारी ❀ रच्यो सखिनको बोध विचारी ॥
अति आनंद पुलकि तन आयो ❀ शोच मोह उरंते बिसरायो ॥
जो छबि सुन्दर कुवँर कन्हाई ❀ गये प्रात सखियन दरशाई ॥
उनसों सोई रूप बखान्यों ❀ यह बिचार प्यारी उर आन्यों ॥
प्यारी पियके गर्व गहेली ❀ अंग अंग छबि पुंज भरेली ॥

१ छिपाय । २ ज्ञान । ६ हृदय । ४ देखाय ।

बैठी सदन विराजत रूरी ❀ श्याम सनेह सुधारस पूरी ॥
कहति परस्पर सखि परिहासा ❀ कहति चलौ राधाके पासा ॥
ह्वैहै निधरक घरमें बैसी ❀ देखहिं चलौ बदनछवि कैसी ॥
कैसे अंग अभूषण कैसे ❀ कछु बदले कैधौं हैं वैसे ॥
आज रैनि हरि सों रति मानी ❀ कहि है कहा सुनैं चलि बानी ॥
राधागृह गवनी ब्रजनारी ❀ गई जहां वृषभानुदुलारी ॥
देखि नागरी मुख नहिं बोली ❀ जान्यों आई करत ठठोली ॥
दो०–सहज रही बोली नहीं, कछू बदन सों बैन ।
निकट बुलायो सखिनको, नयननहीकी सैन ॥
सो०–इत लीनों इन जान, परम चतुर आली सबै ।
यह कछु रच्यो सयान, देख हमैं बोली नहीं ॥
अपनो भेद कछू नहिं दैहैं ❀ कहा बोध रचिकै धौं कैहैं ॥
अपनि जांघ बल चीर चुरावैं ❀ कैसेहुं प्रगट न काहु जनावैं ॥
निधरक भई श्यामसँग पाई ❀ भूलहु मति याकी लरिकाई ॥
निरखौ भ्रुकुटी त्योर निहारी ❀ कहै कहा धौं बात सँवारी ॥
राखति गर्व तुमहुं सब कोऊ ❀ देखहु बोल नहीं किन कोऊ ॥
कह्यो विहँसि तब इक ब्रजनारी ❀ सुनौ अहो वृषभानुकुमारी ॥
आज कहा मुख मूँद रहीहै ❀ कापर रिस करि मौन गहीहै ॥
हमसों कहति नहीं सो एरी ❀ हम तौ संगसखी हैं तेरी ॥
कै देवनको ध्यान धरोरी ❀ कै सुभाव कछु यहै परयोरी ॥
जब आवति हम तेरे प्यारी ❀ तब तब यहै धरन है धारी ॥
तुम दुराव कित राखति हमसों ❀ हमहूं कछु राखति हैं तुमसों ॥
ऐसो शोच कहा मन माहीं ❀ जो जबाव तोहिं आवत नाहीं ॥
दो०–कछु दिन ते तेरी प्रकृति, अरी परी यह कौन ।
निठुर भई हमसों रहति, जब तब साधे मौन ॥
सो०–अपने मनकी बात, कछु हमसों भाषति नहीं ।

१ मुख । २ सखी । ३ मत । ४ चुपसाधीहै । ५ स्वभाव । ६ कहाति ।

ऐसे कहि मुसकात, प्यारीसों सब नागरी ॥
मनही मन जानति सब प्यारी ❋ मोसों हँसी करति ब्रजनारी ॥
परमप्रवीन सकलगुणखानी ❋ बोली मधुर मनोहर बानी ॥
सुनहु सखी बूझत कह हमसों ❋ कहा बुझाय कहौं मैं तुमसों ॥
आज प्रात इक चरित नयोरी ❋ जात इतै कछु दृगेन लह्योरी ॥
नीके नेकु न देखन पाई ❋ तबहींते मन रह्यो लुभाई ॥
कै घनश्याम कि श्याम कन्हाई ❋ यहै शोच उर रह्यो समाई ॥
बकपंक्ती कै हैं गजमोती ❋ पीतदकूलकि दामिनि ज्योती ॥
इन्द्रशरासन कै बनमाला ❋ शीश मुकुट कैधौं अरि ब्याला ॥
मन्द मधुर जलधरकी गाजन ❋ कैधौं पगनूपुरध्वनि बाजन ॥
देखे आज श्याम जबहींते ❋ परयो यहै धोखो तबहींते ॥
कहा कहौं हरिकी चपलाई ❋ ऐसो रूप गयो दरशाई ॥
भरी श्यामरस कुवँरि सयानी ❋ कहति सखिनसों निधरकबानी ॥
दो०–सखी कहति सब आपुसैं, सुनहुँ न याकी बात ।
प्रगट करन आईं जु हम, आपुहि प्रगटति जात ॥
सो०–हम देखे जिय श्याम, तैसेही इनहूं लखे ।
दोष देति बिन काम, यह सूधी हमही कुटिल ॥
इतनेहिरहौ और जिन भाखौ ❋ जो चाहौ अपनी पति राखौ ॥
इनसों तुम चाहतिहौ जीतो ❋ मनते गर्व करो यह रीतो ॥
यह हरिकी प्यारी पटरानी ❋ को याकी बुधि सकै बखानी ॥
हम याकी दासीसरि नाहीं ❋ देखहु सखी समुझि मनमाहीं ॥
हम देखत कछु और सुभाऊ ❋ यह देखति हरिको सतभाऊ ॥
याकी अस्तुति कहा बखाने ❋ इनहीं भले श्याम पहिचाने ॥
तब हँसि कह्यो सखिन सुनिप्यारी ❋ तैं जो लखे सो हैं बनवारी ॥
प्रातहि ते जो आज निहारे ❋ गये कान्ह वे मेघ न कारे ॥
मोरमुकुट शिर मोर न होई ❋ कटि पटपीत न दामिनि सोई ॥

परम चतुर । २ आंखन । ३ कालेबादल । ४ श्रीकृष्ण । ५ बिजली । ६ धनुष ।

मुक्तमाल बनमाल सुवेशू ❀ नहिं बकपांति न धनुष सुरेशू ॥
पगनूपुरध्वनि गरजन नाहीं ❀ मत राखौ धोखो मनमाहीं ॥
देखे तैं प्रातहिं गिरिधारी ❀ काहेको शोचत मन प्यारी ॥
दो०—धनि धनि ब्रजकी नागरी, हरिछबि लखतिअनूप ।
मोहिं होत धोखो तबहिं, जब देखति वह रूप ॥
सो०—तुम देखति हरि गात, कैसे दृग ठहराय सब ।
मोपै लख्यो न जात, करिहारी केतो जतन ॥
तुम दरशन पावति री कैसे ❀ मोहूँ श्याम दिखावहु तैसे ॥
वे तौ अतिछबि चपल कन्हाई ❀ तुम कैसे देखति ठहराई ॥
कैसो रूप हृदयमें राखो ❀ मोसों सखी सांच सब भाखो ॥
मैं देख न पावति हरि नीके ❀ रहति सदा अभिलाषा जीके ॥
धनि धनि तू वृषभानुदुलारी ❀ धनि तुमपिता धन्य महतारी ॥
धनि सोदिवस रैनि सो वारा ❀ जबतैं लीन्हेंारी अवतारा ॥
धनि तेरे वश कुंजविहारी ❀ धनि तैं वशकीन्हे गिरिधारी ॥
भावभक्ति मति रति धन सोऊ ❀ एक सुभाव धन्य तुम दोऊ ॥
तोहिं श्याम हम कहा दिखावैं ❀ तू हरिको हरि तोको भावैं ॥
एक जीव द्वै देह तुम्हारी ❀ वे तोमें तू उनमें प्यारी ॥
उनकी पटंतरको तू दीजे ❀ तेरी पटतर उनको लीजै ॥
सुधा सुधागुण क्यों बिलगाई ❀ गूंगेको गुरु कह्यो न जाई ॥
दो०—तू उनके उरमें बसी, वे तेरे उरमाहिं ।
अरस परस ज्यों देखिये, दरपण दरपण छाहिं ॥
सो०—कही कौनपै जाहिं, तुम दोउ निर्मलगात अति ।
वे तेरे रँग माहिं, तू उनके रँगमें रँगी ॥
नीलाम्बर श्यामा छबि तेरे ❀ तुम छबि पीतवसन उनकेरे ॥
घनं भीतर दामिनी बिराजै ❀ दामिनि घनके चहुंदिशि राजै ॥

१ उपमारहित । २ चतुर । ३ समानता । ४ हृदय । ५ शीशा । ६ पीलवस्त्र ।
७ बादल । ८ बिजुली ।

तुम अनूप दोऊ समजोरी ❀ नंदनँदन वृषभानुकिशोरी ॥
सुनि सुनि सखियनकी मुखबानी ❀ बोली राधाकुँवरि सयानी ॥
सुनि ललिता सांची कहि मोसों ❀ मैं बूझति सकुचतहौं तोसों ॥
मोसों मानत नेह कन्हाई ❀ मेरीसों कहि मोहिं सुनाई ॥
तुम तौ रहत श्यामसँग नितही ❀ मिलति जाय उनसों जित तितही ॥
उनके मनकी सब तुम जानौ ❀ हाहा मोसों साँच बखानौ ॥
सुनि राधा इतरात कहा री ❀ तोते और कौन है प्यारी ॥
तेरे वश नँदनन्दन ऐसे ❀ रहत पवन पंखावश जैसे ॥
ज्यों चकोर शशिके वशमाहीं ❀ है शरीरके वश परछाहीं ॥
नादविवश मृग देखिय जैसे ❀ मनमोहन तेरे वश तैसे ॥

दो०-मिली खरिक तू श्यामको, दई धेनु दुहि तोहिं ।
तेरे बश हरि तबहिंते, कहा भुरावति मोहिं ॥

सो०-वरणौं कहा सनेह, नेकहु तुम न्यारे नहीं ।
हौ तुम एकहि देह, वे दक्षिण तुम वाम अँग ॥

अथ गर्वव्याजविरहलीला.

सुनि प्यारी ललितामुखवानी ❀ मैं ऐसी जियमें यह आनी ॥
और नहीं कोऊ मो सरिकी ❀ हौं राधा आधा अँग हरिकी ॥
अपनेही वश पियको करिहौं ❀ अनत जात देखहुँ तौ लरिहौं ॥
ऐसे गर्व कियो जिय प्यारी ❀ घर घर गईं सकल ब्रजनारी ॥
इहि अन्तर आये गिरिधारी ❀ गर्व विभंजन जन सुखकारी ॥
हरि अन्तर्यामी अविनासी ❀ जानी प्यारी गर्वउदासी ॥
उझकि झाँकि प्यारी तन हेरयो ❀ प्यारी देखतही मुख फेरयो ॥
कह्यो कान्ह तुम मानत नाहीं ❀ उझकत फिरत घरन ब्रजमाहीं ॥
मिसही मिस युवतिनको हेरो ❀ नेक नहीं छांडत घन घेरो ॥
कोउ जैसे तैसे अपने घर ❀ तुम आवत मानत नाहीं डर ॥
ऐसे प्रेमगर्व करि प्यारी ❀ प्राणनाथ तन नाहिं निहारी ॥

जान्यो द्वारे लगे कन्हाई ❀ बैठिरही अभिमान[1] जनाई ॥
दो०—हृदय श्याम मुख धाममें, राख्यो गर्ब बसाय ।
ठौर तहां पायो नहीं, रहे श्याम सकुचाय ॥
सो०—जहां रहत अभिमान, तहां बास मेरो नहीं ।
सो राधा उरजान, आप लगे पछितान हरि ॥
तुरतहि गमन तहांते कीन्हों ❀ नहीं दरश प्यारीको दीन्हों ॥
चकित भई प्यारी मनमाहीं ❀ यहां श्याम आये क्यों नाहीं ॥
आपन आप द्वार पुनि देख्यो ❀ तहां नाहिं नँदलालहि पेख्यो ॥
झांकतही फिरिगये कन्हाई ❀ मनहीं मन श्यामा पछिताई ॥
मोतें चूकपरी अति भारी ❀ ताते मोहन मोहिं बिसारी ॥
इक तो बैठि रही गर्वानी ❀ दूजे मैं हरिसों झहरानी ॥
मेरी बुद्धि जानिकै हीनी ❀ मोसों श्याम निठुरता कीनी ॥
वे बहुनायक कुंजविहारी ❀ मो सी उनके कोटिकनारी ॥
कासे कहों हरिहि को लावै ❀ को अब मोको हरिहि मिलावै ॥
भई विरहव्याकुल अकुलाई ❀ वदनसरोज गयो कुम्हिलाई ॥
तब आपुनको निठुर कहावै ❀ सुमिरि प्रीति उर भरि भरि आवै ॥
नेकु नहीं धीरज उर धारै ❀ नैनसरोजनसों जल ढारै ॥
दो०—भई बिकल अति नागरी, विरह व्यथाकी पीर ।
खान पान भावैं नहीं, सुधि बुधि तजी शरीर ॥
सो०—घर बाहर न सुहाय, सुख सब दुखदायक भये ।
रह्यो शोच उरछाय, ब्रजबासी प्रभु मिलनको ॥
राधासदन सखी पुनि आई ❀ देखि दशा मन अति भरमाई ॥
अति व्याकुल तन वदनमलीना ❀ नीर[2]विहीन मीन[3] जिमि दीना ॥
कर गहि गहि बूझति ब्रजनारी ❀ कहा भयो तोकहँ री प्यारी ॥
ऐसे विवश भई तू जाहे ❀ हमें सुनाय कहत नहिं काहे ॥
अति प्रसन्न देख्यों तोहिं तबहीं ❀ क्यों मुरझाय गई री अबहीं ॥

---

१ घमंड । २ पानी । ३ मछरी ।

बहुरि लखे धौं कतहुँ कन्हाई ❋ उनहूं तोहिं ठगौरी लाई ॥
श्याम नाम सुनि श्रवणन जागी ❋ जान्यो हरि आये अनुरागी ॥
आतुर सखी कंठ लपटानी ❋ चूक परी मोते कहि बानी ॥
अब अपराध क्षमो रिसत्यागी ❋ करुणा करि मोहिं करहुसभागी ॥
चकित रहीं सब ब्रजकी नारी ❋ रहीं शोचि राधिकहि निहारी ॥
शीतल जलसों मुख पखरायो ❋ पोंछि आँचरन वचन सुनायो ॥
आज भई कैसी गति तेरी ❋ परम चतुर ब्रजमें तू हैरी ॥

दो०-भयो अलिँनके वचन सुनि, कछू चेत उर आय ।
तब जानी एतो सखी, गई हृदय सकुचाय ॥

सो०-क्यों तुम वदन मलीन, काहे तू ऐसी भई ।
कहु प्यारी परवीन, बार बार बूझति सखी ॥

बोली तब सखियन सों प्यारी ❋ तुमसों कहो दुराव कहा री ॥
मैंतो हरिके हाथ बिकानी ❋ उन मोहिं तजी कुटिलमति जानी ॥
अपनी कथा श्यामकी करनी ❋ प्रगट कहों तुमसों सब बरनी ॥
बैठीही मैं सदन अकेली ❋ झांके आय द्वार हरि हेली ॥
मैं मनमें कछु गर्व बढायो ❋ आदर करि नहिं भवन बुलायो ॥
उन मेरे मनकी सब जानी ❋ अन्तर्यामी शारँगपानी ॥
कमलनैन वे गर्वप्रहारी ❋ जाति रहे सखि मोहिं बिसारी ॥
तबसे बिरहविकल अतिकीनो ❋ अहंकार यह फल मोहिं दीनो ॥
चित न रहै कितनो समझाऊं ❋ अब कैसे करि दरशन पाऊं ॥
भयो भर्वन वन मोकहँ आली ❋ नहीं सुहात बिना वनमाली ॥
सुनहु सखी लागति मैं पाऊ ❋ अब हरि मिलैं सो करहु उपाऊ ॥
बिन मनमोहन कुँवर कन्हाई ❋ भये सुखद सब मोहिं दुखदाई ॥

दो०-गिरिकन्यापतितिलककर, दाहत अनँलसमान ।
शिवसुतबाहन भखनभख, भयो हलाहलपान ॥

---

१ कानन । २ धुलायो । ३ सखिन । ४ वर । ५ कृष्ण । ६ महादेव । ७ अग्नि ।

सो०-जलधि सुतासुत हार, भयो इंद्रआयुध सखी ।
मलयज मनहुँ अँगार, शाखामृगरिपु वसनवर ॥
सखी दशा मेरी यह हेरी ❀ भयो काम अब मोको बैरी ॥
वारिजभवसुतप्रियकी चाली ❀ अब नहिं हरिसों करिहौं आली ॥
ऋतु बिचारि जो मानहिं करिये ❀ सोउ जरिजाहु न उरमें धरिये ॥
अब सुभाव रहिहौं हरि साथा ❀ मोहिं मिलावहु सखि ब्रजनाथा ॥
सुनि राधे करनी यह तेरी ❀ हमसों भेद कियोतैं एरी ॥
उनके गुण जैसे नहिं जाने ❀ अबहीं ते ऐसे ढँग ठाने ॥
एकहि बार मिली तू धाई ❀ नहिं राखी मर्याद बडाई ॥
तैंहीं उनको मूंड चढायो ❀ तब नहिं हमको भेद जनायो ॥
भवन विपिनसँग डोलन लागी ❀ वे बहुतरुणिरमण अनुरागी ॥
निज कर अपनो महत गँवायो ❀ परवश परि कौने सुखपायो ॥
मेरो कह्यो अजहुँ मनमाहीं ❀ हित करि मानेगी धौं नाहीं ॥
धीरज धरि कत मरत वृथाहीं ❀ तूहू मान करति क्यों नाहीं ॥
दो०-बात आपनी आपने, कर है देखु विचार ।
भई कहा ऐसी विवश, एरी एकहिबार ॥
सो०-पुरुष भँवर जिय जान, भोगी बहुत प्रसून को ।
बिना किये बहु मान, कौने पिय निज वशकिये ॥
कहति सखी तुमतो यह बाता ❀ कंप होत सुनि मेरे गाता ॥
मैंतो मान श्यामसों कीनो ❀ ताते इतनो दुख मोहिं दीनो ॥
अबतो भूलि मान नहिं करिहौं ❀ श्याम मिलहिं तो पायँन परिहौं ॥
विनती करि करि उनहिं सुनाऊं ❀ यह अपनो अपराध क्षमाऊं ॥
चूकपरी मोते में जानौं ❀ उनको यह अपराध न मानौं ॥
वे आवतिहैं मेरे नीके ❀ मैंहीं गर्वधरचो सखि जीके ॥
मेरे गर्वते कहा सरचोरी ❀ मिट्यो हृदयसुख दुःख भयोरी ॥
जाते हानि आपनी होई ❀ कहौ सखी कीजै क्यों सोई ॥

१ मोती । २ अस्त्र । ३ चंदन । ४ बंदन । ५ गर्व ।

मानविना नहिं प्रीति रहैरी ❋ प्रगट देखि मोहिं कहा कहैरी ॥
धाय मिलेकी गति तेरीसी ❋ भई अधीन फिरति चेरीसी ॥
अपनो भेद उन्हें तैं दीन्हों ❋ तब दुराव हमहूं सों कीन्हों ॥
भयविन प्रीति होति नहिं प्यारी ❋ सच मानहिं सखि सीख हमारी ॥
दो०-पुनि पुनि सिखवतितुम सखी, मानकरनकोमोहिं ।
मनतौ मेरे हाथ नहिं, मान कौन विधि होहिं ॥
सो०-उमगभरत दिनरात, श्यामगुणनअभिलाषकरि ।
मन नहिं मानत बात, मानसजौं कैसे सखी ॥
मन मोसों अब बाम भयोरी ❋ कहा करौं हरि संग गयोरी ॥
अब अपनो हित उनहिं न जानौं ❋ मृदित मूढ अपमान न मानौं ॥
इन्द्रिय सब स्वारथ रस पागी ❋ गईं संग मनहीके लागी ॥
घर फूटे क्यों रह्यो परैरी ❋ मनहिं विना को मान करैरी ॥
अब कोऊ मेरे सँग नाहीं ❋ रही अकेली मैं तनमाहीं ॥
तापर भयो काम अब वैरी ❋ विरहै अग्नि तनु जारत हैरी ॥
इतने पर तुम मान करावति ❋ कहौ कौन सखि यह कहनावति ॥
मैं तौ चूक आपनी मानी ❋ मोहिं मिलावहु श्यामहिं आनी ॥
अबतौ क्योंहूं मान न करिहौं ❋ ऐसी बात कहे तिहि लरिहौं ॥
आली मोहिं नँदनंदन भावै ❋ सोइ हितू जो आनि मिलावै ॥
अबजो मिलहिं श्याम बडभागी ❋ फिरति रहौं संगहि सँग लागी ॥
ऐसे कहि प्यारी अनुरागी ❋ दारुण विरह व्यथा उर जागी ॥
दो०-देखि दशा सहि नहिं सकी, अली उठी अकुलाय ।
हम राधाकी प्रिय सखी, रचिये बेगि उपाय ॥
सो०-कहैं श्यामसों जाय, ऐसी चूक परी कहा ।
दीजै याहि मिलाय, झुरि झुरि अति पीरी परी ॥
सखिन कह्यो तब सुनरी प्यारी ❋ मतिहि होय व्याकुल सुकुमारी ॥
अबहिं जाय हम श्यामहिं लावैं ❋ नेकु धीर धरु तोहिं मिलावैं ॥

१ देह । २ बिछोहव्यथा । ३ मुर्झाय ।

पटसों पोंछि बदन बैठाई ❋ तरक बात बहु भाषि सुनाई ॥
नेकु नहीं धीरज उर धारैं ❋ बार बार मुख कान्ह उचारैं ॥
सावधानकरि सखी सयानी ❋ दौरि गई यहै अतुरानी ॥
लखि हरिमुख ललता मुसकानी ❋ हरि लखि हँसे दुहूं मन जानी ॥
तब हरि ललितासों मुसुकाई ❋ बूझत चितवत नैन चुराई ॥
अति आतुर आई कत धाई ❋ काहे बदन गयो मुरझाई ॥
बोली ललिता तब मुसुकाई ❋ सुनहु चतुर नँदनंद कन्हाई ॥
आज एक अचरज लखिपायो ❋ परमविचित्र न जात बतायो ॥
अतिही अद्भुत रचना जाकी ❋ वर्णत बनत भांति नाहिं ताकी ॥
रीझिरही मैं ताहिं निहारी ❋ रीझौगे लखि कुंजविहारी ॥

दो०-मैं आई तुमसों कहन, चलहु दिखाऊं नैन।
देखि परम सुख पायहौ, जो मानौ मोबैन ॥

सो०-एक अनूपम बाग, स्वर्ण वर्ण नहिं जाय कहि।
उपजत लखिअनुराग, अतिविचित्रबानकबन्यों ॥

युगल कमल अति अमल विराजे ❋ तापर राजहंस छबि छाजे ॥
द्वै कदलीतरु तापर सोहैं ❋ विनदल फल उलटे मन मोहैं ॥
तापर मृगपति करत बिहारू ❋ मृगपति पर सरवर इकचारू ॥
द्वै गिरिवर सरवर पर राजे ❋ तिनपर एककपोत विराजे ॥
निकट सनाल कमल द्वैफूले ❋ शोभित ते अधदिशिको झूले ॥
फूल्यो पुनि कपोतपर नीको ❋ एक सरोज भावतो जीको ॥
तापर एक अमीफललाग्यो ❋ कीर एकतापर अनुराग्यो ॥
तहां एककोयल द्वैखंजन ❋ तिनपर धनुर्ष सुभग मनरंजन ॥
धनुपर शशि द्वैनागिनकारी ❋ मणिधारि एक नागिनीभारी ॥
ऐसो अनुपम बाग सुहायो ❋ घटत नेहजल कछु कुम्हिलायो ॥
चलि घनश्याम सींचि सो दीजै ❋ शोभा देखि सफलदृग कीजै ॥

---

१ अद्भुत। २ जिसकीउपमानहोय। ३ प्यार। ४ माण। ५ छाती।
६ गला। ७ कमल। ८ भ्रुकुटी।

करि विचार देखो मनमाहीं ❋ बनी ललित सब अंगनि मांही ॥

दो०-सुनहु श्याम सुंदर नवल, छैल छबीले श्याम ।
तुम्हैं मिलनको नवल वह, अति व्याकुल है बाम ॥

सो०-कहा भयो जो मान, कियो प्रेमके लाडते ।
अति सुंदरी सुजान, प्यारी जीवन जीयकी ॥

वरणौं श्रीवृषभानुदुलारी ❋ चित दै सुनौं लाल गिरिधारी ॥
कहौं प्रथम वेनी रुचिराई ❋ ललित पीठ पाछे छबि छाई ॥
अहिनी मनहुं कुटिल गति त्यागी ❋ शशिमुख सुधा चुरावनलागी ॥
रेखा अरुण सिंदूर सुहाई ❋ शोभित शीश न जाति बताई ॥
मानहुं किरण लाल रविकेरी ❋ तिमिरसमूह बिदारि उजेरी ॥
शोभित कुटिलभ्रुकुटि अतिनीकी ❋ मन हरिलेति भावतीजीकी ॥
जगत जीत करि निजवशचोरी ❋ मनहुं मदन धनुधरे उतारी ॥
केसर आड ललाट सुहाई ❋ मनहुँ रूपकी पाड़ बँधाई ॥
चपल नैन बिच नाक सुहाई ❋ शोभित अधरनकी अरुणाई ॥
मनौ युगल खंजन शुक शोभा ❋ देखि एकबिंबाफल लोभा ॥
दशन कपोल चिबुक दरग्रीवा ❋ वरणि न जाति महाछबिसीवा ॥
सुभग अंग सब भूषण सोहैं ❋ कोटिकामतियनिरखत मोहैं ॥

दो०-अति कोमल सुकुमार तन, सकल सुखनकीसीर ।
तुम विन मोहनलाल पिय, व्याकुल अधिक शरीर ॥

सो०-भरिभरिलोचननीर,श्यामश्याममुखकहिउठति ।
चलहु हरहु यहपीर, मैं आई लखि धाय कै ॥

प्यारी बिकल सुनत सुखदाई ❋ सहि नहिं सके उठे अकुलाई ॥
चले बिहँसि ललिताके साथा ❋ प्रेमहिके वश श्रीव्रजनाथा ॥
प्रेम विवस प्यारी पहँ आये ❋ देखि दशा मन अति पछताये ॥
परी बिकल तनुदशा बिसारी ❋ प्यारी मुख देखत गिरिधारी ॥
नीलांबर निज करते टारी ❋ लीन्हो सन्मुख बदन सुधारी ॥
जलदपटल मानहु बिलगाई ❋ दियो चंद निकलंकदिखाई ॥

१ राधिका । २ कुंदुरू । ३ व्यवस्था ।

भयो चेत परसत पियपानी ❀ सन्मुख दृष्टि परतसकुचानी ॥
लई उमँगि भरिअंक कन्हाई ❀ विकल देखि अँखियां भरिआई ॥
युगल परस्पर लखि सकुचाये ❀ इतनेहि विरह दोउ मुरझाये ॥
कंचन बेलि तमाल सुहायो ❀ मनहुं प्रेमवश सुधा सिचायो ॥
हरषि दुहूंदिशि मुसकन फूले ❀ परमानंद फलन करिझूले ॥
मुरछन विरह तुरत बिसराई ❀ लखि यह मिलन सखी हरषाई ॥
दो०-वह चितवन वह हँसिमिलन, वह शोभा सुखभार ।
भई बिवश ललता निरखि, इकटकरही निहार ॥
सो०-रहे परस्पर देख अति, आतुर दोऊ छबिहिं ।
परन न देत निमेख, तृप्ति न क्योंहूं मानहीं ॥
ललिता कहत सखिनसों बानी ❀ देखहु सखि राधा अतुरानी ॥
कैसे अंग अंग छवि देई ❀ मिले श्याम मन धीर न लेई ॥
तृषावंत जिमि अँचवत नीरा[1] ❀ सोऊ तौ धारत पुनि धीरा ॥
यह आतुर छबिले उर धारे ❀ नेक नहीं दृग इत उत टारे ॥
ज्यों चकोर चंदहि टकलावै ❀ याकी सरि सोऊ नहिं पावै ॥
होम अग्नि घृत गति है जैसी ❀ याकी दशा देखिये तैसी ॥
यदपि श्याम श्यामा सँग प्यारी ❀ छवि निरखत अति आनँदभारी ॥
हाव भाव करि पिय मन मोहै ❀ विविध विलास वदन छविसोहै ॥
विरह विकल मति तदपि भ्रमावै ❀ मिलेहु प्रतीति न उरमें आवै ॥
तृषा मध्य जिमि सलिलहि देखी ❀ उपजति अधिकै प्यास विशेखी ॥
चितवत चकित रहत चितमाहीं ❀ स्वप्नकि सत्य ईश यह आहीं ॥
बुधि वितर्क[2] बहु भांति बनावैं ❀ देखहु अनदेखे ठहरावैं ॥
दो०-कबहुँ कहति हौं कौनहौं, को हरि करत विचार ।
यह सुख भावत कौनको, सचकित रहत निहार ॥
सो०-निपट अटपटी बात, समुझि परत नहिं प्रेमकी ।
उरझि सुरझि उरझात, उरझनहीं में सुरझआति ॥

१ पानी । २ खंडन मंडन ।

उत हरि रूप इतै दृग प्यारी ❀ लखि सखि मनहुं करतहै रारी ॥
अति अहँकार भरे भट दोऊ ❀ नेकहु हारि न मानत कोऊ ॥
इत सुदृष्टिकरि कामसुहाई ❀ सेना साजि साजि दृगन चलाई ॥
उत अति भूषण जाल अपारा ❀ अंग अंग रचि व्यूहसँवारा ॥
इतहि कटाक्ष बाण अति चोखे ❀ बारहिं बार हनत रणरोखे ॥
उतनहिं वदन व्यथा अतिशूरे ❀ पुलकि अंग मानहुँ सारि पूरे ॥
इत अनुराग उतहि छवि छाई ❀ क्षणक्षणअधिकअधिकअधिकाई ॥
छबि तरंग सरिता अधिकानी ❀ लोचन जलनिधि तृप्ति न मानी ॥
उत उदार छबि अंग श्यामके ❀ इतलोभी अति नैन बामके ॥
ललिता संग सखिनको लीन्हें ❀ दंपति सुख देखत दृग दीन्हें ॥
लखि यह मिलन सखी अनुरागी ❀ कहतिकिधनिधनिदोउबडभागी ॥
धन्य नवल नवला यह जोरी ❀ धनि धनि प्रीति नहीं रुचि थोरी ॥

दो०-धन्यमिलनधनियहलखन, धनिधनिधनिअनुराग।
धनि सुख लूटत परस्पर, धनि धनि भाग सुहाग ॥
सो०-धनिधनि पुनि भाषि, हरखि चलीं सिगरीअली।
युगल रूप उर राखि, एकहि थल राखे युगल ॥

अथ परस्परअभिलाषलीला.

शोभित श्याम राधिका जोरी ❀ अरस परस निरखत तृणतोरी ॥
हरिरीझे प्यारी छबि देखी ❀ भये विवश उर हर्ष विशेखी ॥
कबहुँ पीतपट डारत वारी ❀ कबहुँ मुरलि वारत गिरिधारी ॥
कबहुँ माल मुक्तनकी वारें ❀ कबहूं तनमन वारि निहारें ॥
कबहुँ सिहात देखि मनमाहीं ❀ राधा सम शोभा कहुँ नाहीं ॥
इनको पलक ओट नहिं कीजे ❀ रूप सुधा नैननिपुट पीजे ॥
कबहुँ निरखि मुख हरि सकुचाहीं ❀ कोटि काम जिनके वश माहीं ॥
चपल नैन दीरघ अनियारे ❀ हाव भाव नानागति भारे ॥
कोटि कुरंग कमल बलिहारी ❀ खंजन मीन डारिये वारी ॥

१ मोतियोंकी माला । २ सकुचत । ३ तीखे ।

लोचन नहिं ठहरात श्यामके ❀ काहू अँग मुख रंग बामके ॥
भये श्याम प्यारी वश ऐसे ❀ फिरति गुडी डोरी वश जैसे ॥
इकटकनैन अंग छबि सोहै ❀ भये विवस लखि रूप विमोहै ॥

दो०-उठे उठत हैं तुरतही, बैठे बैठत पास ।
चले चलत सँग वामके, ज्यों तनु छांह बिलास ॥

सो०-रही सुरति कछु नाहिं, देहदशा भूली सबै ।
अभिलाषा मन माहिं, प्यारीहीके रूपकी ॥

मगन श्याम श्यामा रसमाहीं ❀ निजस्वरूपकी सुधि कछु नाहीं ॥
राधारूप देखि सुख पावैं ❀ पुनि पुनि मन अभिलाष बढावैं ॥
मांगिलेति भूषण प्रिय पाहीं ❀ अपने अंग सँवारत जाहीं ॥
साजि तरवन कुण्डलहि उतारैं ❀ बेसरलै नासापर धारैं ॥
बेनी गूँथि मांग पुनि करहीं ❀ शीश फूल अपनेशिर धरहीं ॥
बेंदी भाल सँवारत तैसी ❀ शोभित है प्यारीकी जैसी ॥
प्यारी दृगतें अंजनलेहीं ❀ अति हित करि अपने दृग देहीं ॥
भूषण वसन सजत सब वैसे ❀ प्यारीअंग विराजत जैसे ॥
प्यारीको पियकी छबि भावै ❀ हाहा करि यों वचन सुनावै ॥
कुण्डल मुकुट पीतपट पाऊं ❀ मैं पिय तुम्हरो रूप बनाऊं ॥
हँसतहि हँसत मांगि सब लीन्हों ❀ पियको भेष नागरी कीन्हों ॥
गोरे कान्ह साँवरी राधा ❀ निरखि परस्पर पूरत [illegible] ॥

दो०-कबहुँ मुरलिलै नागरी, अधर धरति मुसकाय ।
मंद मंद पूरति स्वरन, रिझवति पियहि बजाय ॥

सो०-कबहुँ बजावत श्याम, अरस परस अधरन धरत ।
पूरत हैं मन काम, सकल काम पूरण युगल ॥

हरिको अपने रूप निहारी ❀ आपहि हरि स्वरूप लखि प्यारी ॥
यह अभिलाषा उर तब धारी ❀ कहति सुनो पिय गिरिवर धारी ॥
तुम बैठो मानिनि दृढ ह्वैकै ❀ तुमहिं मनाऊं मैं पद छ्वैकै ॥

१ राधा । २ नथुनी । ३ नासिका ।

दो०–तुमहुँ कुशल येहू कुशल, क्योंन प्रीति दृढ होय।
जानेहौं चलि जाहु वन, आप स्वारथी दोय॥
सो०–दंपति कियो बिचार, सुनि चंद्रावलिके वचन।
यासों नाहिं उबार, हर्षि मिले उरलाय तब॥
चले कुंजगृह हरषि विशाला ❋ उभय बाम बिच मदनगुपाला॥
वाम भाग प्यारीको लीन्हें ❋ दक्षिण भुजा सखी पर दीन्हें॥
दिवि दामिनिबिचनवघन मानौं ❋ रतिसमेत लखि मदन लजानौं॥
कैधौं कंचनलता सुहाई ❋ ललित तमाल बिटप लपटाई॥
गये कुंजवन घन छबिछाई ❋ सुमन पुंज अलि गुंज सुहाई॥
वर्ण वर्ण कुसुमित[२] तरु नाना ❋ करती कोकिल मंगल गाना॥
बहत समीर[३] त्रिविधि सुखदाई ❋ पावन मंगलभूमि सुहाई॥
लखि छवि पुंज कुंज अनुरागे ❋ सहचरि सहित युगल बड़भागे॥
नव दल कुसुम तुल्य कमनीया ❋ बैठे नवल रमण रमणीया॥
करत बिलास विविध मन माने ❋ कोटि कोटि रति काम लजाने॥
शोभित गौर श्याम शुभ जोरी ❋ निरखत छबिहि सखी तृण तोरी॥
सने रसिक दोऊ[१] रसकाई ❋ बसे निशा[४] बनकुंज सुहाई॥
दो०–तैसोइ विपिन सुहावनो, तैसिय पवन सुगन्ध।
तैसिय निर्मल चांदनी, तैसोइ सुख संबन्ध॥
सो०–तैसोइ कुंज निवास, तैसोई यमुनापुलिन।
सकल सुखनकी रास, तैसेइ रँगभीने युगल॥
बनहिं धाम सुख रैनि बिहाई ❋ उठे प्रात दोउ छबि अधिकाई॥
बैठे युगल रंग रस भीने ❋ आलस युत अंगन भुज दीने॥
अरस परस दोउ छबिहि निहारैं ❋ रीझि परस्पर तन मन वारैं॥
अरुण नैन नख रेख सुहाई ❋ बिन गुण माल हृदय छबि छाई॥
लटपटि पाग रसमसी भौंहैं ❋ कुंडल झलक कपोलन सोहैं॥
प्रिया बदनछबिश्यामनिहारत ❋ उरझी लट मुक्तन निरवारत॥

१ दोनों। २ फूलेहुए। ३ वायु। ४ राति।

आलस नैन सुरति रस पागे ❀ नंद नँदन पिय सँग निशि जागे ॥
टूटे हार मरगजी सारी ❀ नखशिखसुन्दर पिय अरु प्यारी ॥
चले कुंज ते युगल विहारी ❀ ब्रजबासी लखि लखि बलिहारी ॥
सुन्दर श्याम सुन्दरी श्यामा ❀ जीते सुन्दर रतिपति[1] कामा ॥
सुन्दर अवलोकनि मृदुबोलनि ❀ सुन्दर चालि डगमगी डोलनि ॥
सब विधिसुन्दरसुखनिधिदोऊ ❀ सुन्दर उपमाको नहिं कोऊ ॥

दो०—अति विचित्र नँदलालकी, लीला ललित रसाल ।
जो सुख दुर्लभ शिव सनक, सोबिलसत ब्रजबाल ॥

सो०—गयेयुगलब्रजधाम, सखीसहितनिशिरसबिलसि ।
बसत प्रिया उर श्याम, श्याम हृदयप्यारी सदा ॥

अथ श्रृंगारभूषणवर्णनलीला.

बैठी भवन श्रृँगार किशोरी ❀ बहुरो अंग श्रृँगारत गोरी ॥
मानहुँ सबन देति पहिराये ❀ रति रणजीति पियासों आये ॥
कटि तटकिंकिणिबसन नवीने ❀ बाजूबंद भुजनको दीने ॥
कर कंकण उर हार सुहाये ❀ तरुवनि चारु श्रवण पहिराये ॥
नकबेसर[2] अंजन दृग दीनो ❀ बेंदी ललित भाल पर कीनो ॥
रची मांग सम भाग सुहाई ❀ तामधिरेख सिंदूर बनाई ॥
प्रभु सों बिमुख जानिकै कादर ❀ बांधति कुच मनु किये निरादर ॥
दियो बिहँसि अधरनको बीरा ❀ सन्मुख रहे प्रहारसधीरा ॥
शोभित सदन श्रृँगार सुहाई ❀ श्रीवृषभानुकुँवरि छबि छाई ॥
नखशिखकुसुमबिशिखकीसैना ❀ किये कान्ह वश पंकजनैना ॥
शीशफूलशिरअतिछबिछाजै ❀ मनहुँ भाग मणि प्रगट बिराजै ॥
सुभी जराव फूल अरुणाई ❀ हरति प्रात रविकी दृगल ताई ॥

दो०—चंद्रवदन मृगशिशुनयन, भ्रूकुटी[3] कुटिल प्यारी ... क ।
अलकझलकछबिदेति जनु, शोभित रजनी ध... अंक ॥

सो०—कुन्द कली समदाँत, तिलप्रसून[4] नासा रहै ... भग ।

१ कामदेव । २ नथुनी । ३ भौंह । ४ तिलपुष्प ।

जीवबन्धुकी भाँत, अधर अनूपमचिबुकतिल ॥
लखि कलकंठ कपोतलजाहीं ❋ पीकलीक झलकति जेहिमाहीं ॥
बाहु मृणाल लाल छबि छाये ❋ कोमल पाणि सरोज सुहाये ॥
कुचयुग चक्रवाक जनु नीके ❋ लसत रोमावलि तट तट नीके ॥
त्रिबली तरल तरंग सुहाई ❋ अति गति नाभि मनोहरताई ॥
कृशकटि किंकिणियुत छबिछाई ❋ पृथु नितंब शोभा अधिकाई ॥
रंभेखंभ युग जंघ निकाई ❋ पग नूपुर झनकार सुहाई ॥
चाल विलोकि काम गज लाजैं ❋ मधुर मधुर ध्वनि पायलबाजैं ॥
वरणै को पदपंकजशोभा ❋ हरिमन भ्रमर रहत जहँ लोभा ॥
निगम नेति नित गावत जाको ❋ राधावश कीनोहो ताको ॥
ज्यों चकोर चंदाको आतुर ❋ त्यों नागरिवश गिरिधर चातुर ॥
देखे विन क्षण रह्यो न जाई ❋ सदा प्रेमवश त्रिभुवनराई ॥
उझकि झरोखा झांके आई ❋ करति शृँगार प्रिया मन भाई ॥
दो०–अंग अंग भूषण वसन, रुचि रुचि सकल शृँगारि ।
लै दर्पन देखति छबिहि, श्रीवृषभानुदुलारि ॥
सो०–दीठ झरोखा लाय, रहे श्याम इकटकनिरखि ।
उर आनंद बढाय, देखत प्यारीकी छबिहि ॥
इककर दर्पण इककर अँचरा ❋ पुनि पुनि दृगन सवाँरतकजरा ॥
कबहुँ शीशके फूल सँवारैं ❋ कबहूं कुटिल अलक निरवारैं ॥
कबहूं आड रचति केसरिकी ❋ कबहूं छबि देखति बेसरिकी ॥
कबहूं रचति सुमन सों वेणी ❋ कबहुं मांग मुक्तनकी श्रेणी ॥
कबहूं रिसकरि भौंह सिकोरै ❋ कबहूं नैन नैन सों जोरै ॥
इकटक दर्पण ओर निहारैं ❋ नेकु बदन इत उत नहिं टारैं ॥
निरखि आपनी छबि सुकुमारी ❋ रही विवस प्रतिबिंबैं निहारी ॥
अति आनंद भई मतिभोरी ❋ बिसरी सुरति देहकी गोरी ॥
कहति मनहिं मन अतिसकुचाई ❋ यह सुंदरी कहांते आई ॥

१ कबूतर । २ केला । ३ आंखन । ४ छाया ।

करते मुकुर दूरि नहिं टारैं ❋ कछू रोषकरि हृदय विचारैं ॥
कहूं श्याम देखैं जो याहीं ❋ तुरत होयँ याके वशमाहीं ॥
जो मोहन यासों अनुरागे ❋ कहा चले मेरी या आगे ॥
दो०-यह आई किहिं लोकते, अति सुंदर बर नारि ।
ब्रजमें तौ ऐसी नहीं, कोऊ गोपकुमारि ॥
सो०-कोऊ ल्यायो याहि, कैधौं आई आपही ।
सो वैरी मम आहि, जो लाई याको ब्रजहि ॥
सुनी कहूं इन हरिकी शोभा ❋ आई है ताहीके लोभा ॥
जैसे सुन्दर कुवँर कन्हाई ❋ तैसी सुन्दरि यह ब्रज आई ॥
मनहीं मन पुनि पुनि पछिताई ❋ पूंछति प्रतिबिंबहि सकुचाई ॥
तूहै कौन कहाँते आई ❋ यहां कौन तोको लै आई ॥
नाम कहाहै सुन्दरि तेरो ❋ तुम जहँ रहत कौन सो खेरो ॥
कहौ न मुख से वचन सुनाई ❋ मति सकुचौ कहि सौंह दिवाई ॥
हम तुम दिनेन एक हैं गोरी ❋ तू कछु रूप अधिकनाहिं थोरी ॥
इहां अकेली तू क्यों आई ❋ काहू संग और नहिं लाई ॥
सुन्यो नहीं अन्याय इहांको ❋ ऐसे कहि डरपावति ताको ॥
करत कान्ह ब्रजमें बरजोरी ❋ लेत तियनके भूषण छोरी ॥
जो अपनी पति चहत सयानी ❋ तौ घर जाहु मानि मम बानी ॥
लेहु बसंनते अंग छिपाई ❋ देखैं नहिं कहुँ श्याम कन्हाई ॥
दो०-तेरे हितकी कहति हौं, मान चहै मति मान ।
आईहै ब्रज आजही, तू उनको कह जान ॥
सो०-ऐसो ढीठ न आन, त्रिभुवनमें कोऊ कहूं ।
जैसो ब्रजमें कान्ह, मनभायो सबसों करत ॥
नेक नहीं काहू डरमाने ❋ मथुरापति जेहि रहति सकाने ॥
उनके गुण नीके मैं जानों ❋ तोसों अपनी दशा बखानों ॥
हम मथुरा दधि बेंचन जाहीं ❋ घेरि लई उन मगके माहीं ॥

मेरा । २ आयु । ३ वस्त्र । ४ व्यवस्था ।

गोरस लियो छोरि बरिआई ❀ हार तोरि दीन्हें बगराई ॥
हम अनेक तू एक किशोरी ❀ तातें जाहु बेगि गृह गोरी ॥
सुनि सुनि श्याम प्रियाकी बानी ❀ मनही मन विहँसत सुखमानी ॥
प्यारी चकित रूप निज देखी ❀ श्यामचकितसुनिबचनविशेखी ॥
जानि दूसरी तिय प्रिय पाहीं ❀ जात निकट मोहन सकुचाहीं ॥
पुनि पुनि दृग ठहराय निहारै ❀ बोलत नहिं उर हर्ष बिचारै ॥
देखत मुकुर[1] प्रिया कर माहीं ❀ अंकम[2] लेबेको ललचाहीं ॥
प्यारी के रसबस गिरिधारी ❀ लेतिदृगनभर भर छबि भारी ॥
सुनि सुनि वचन हृदय सुख पावैं ❀ पुलकि अंग आनंद बढावैं ॥

छं०-वचनसुनआनंदअतिमन, निरखिछबिसुखपावहीं।
धनि धन्य राधा रूप धनि, हरि नैन इकटकलावहीं ॥
धन्य वह प्रतिबिंब धनि छबि, धन्य मुकुर निहारहीं।
धन्य भ्रम धनि प्रेम पूरण, धन्य तन मन वारहीं ॥
धन्य सुख जेहि लागि राधा, कान्ह ब्रज तनु धारहीं।
रमा सहित बिलास नित, बैकुंठ वास बिसारहीं ॥
मिलन बिछुरन सुख विरह रस, क्षणहिं प्रति उपजावहीं।
ब्रज विलास हुलास हरिको, नितनयो श्रुति गावहीं ॥

दो०-नवल प्रीति नित नवल सुख, नित नवरूपरसाल।
नित नवरस बिलसत नवल, श्रीराधानँदलाल ॥

सो०-कहत रसीली बात, ज्यों ज्यों तिय प्रतिबिंबसों।
त्यों त्यों सुनि हरषात, ब्रजवासी प्रभुरस भरे ॥

प्यारी निज प्रतिबिंब निहारे ❀ भई विवश नहिं सुरत सँवारे ॥
बारबार पछति ता पाहीं ❀ क्यों सुन्दरि तू बोलति नाहीं ॥
हँसे हँसति हेरति है हेरे ❀ फेरति भौंह भौंहके फेरे ॥
करति परस्पर हम सों हांसी ❀ अपनो नाम न कहत प्रकासी ॥

१ दर्पण। २ गोद।

परम चतुर तुमको मैं जानी ❋ हम सों तुम कछु करत सयानी ॥
अतिही सुन्दर रूप तिहारो ❋ देखि होत मन मुदित हमारो ॥
शोभित बेसरि नाक सुहाई ❋ अति अनूप अधरन अरुणाई ॥
दशनदमकदामिनिहिं लजावति ❋ चिबुकनीलकणअतिछबिपावति ॥
काहे ऐसे मुख की बानी ❋ हमें सुनावति नाहिं सयानी ॥
कहौ वचन काकी हौ घरनी ❋ काकी सुता सहज मनहरनी ॥
कै रिस कै रस कै इत हेरति ❋ मेरे सन्मुख लोचन फेरति ॥
कछु रिस कछु धरको मनमाहीं ❋ धीर धरत नागरि जिय नाहीं ॥

दो०—यह तौ बोलतिहै नहीं, अति गरबीली वाम ।
देखत ही यहि रीझिहैं, छैल छबीले श्याम ॥

सो०—भई सौति यह आय, अब हरि याके वश भये ।
यों वियोग उपजाय, उपजायो उर विरह दुख ॥

रही दीठि दर्पणहिं लगाई ❋ टरति नहीं छबिकी अधिकाई ॥
उरमें भयो विरहदुख भारी ❋ देखि दशा रीझे गिरिधारी ॥
कबहुँ चलत तियढिगहि कन्हाई ❋ कबहुं रहत लखि छबिहि भुलाई ॥
औचकि पाछे ते सुखदाई ❋ मूंदे नयन कमल कर आई ॥
चौंकि चकित भइ मनमें प्यारी ❋ जाने आये छैलविहारी ॥
डरतिरही मनमें मैं जाको ❋ मिले आय सुंदर हरि ताको ॥
तब कछु सुरति भई मनमाहीं ❋ वह तो है मेरी परछाहीं ॥
सकुच दुराव करति पिय पाहीं ❋ मनहीं मन दोऊ मुसकाहीं ॥
जान बूझके पिय घनश्यामहिं ❋ लेति विपुल सखियनके नामहिं ॥
श्याम प्रिया लोचन करि लायो ❋ अति हित बेंनी कर परसायो ॥
शोभा कहा कहै कवि कोऊ ❋ मेचक मणि सुमेर अँग दोऊ ॥
ताबिच मनहुँ पन्नगी आई ❋ रही कनकगिरिसों लपटाई ॥

दो०—वेष्टित भुज मूंदे करन, दीरघ खंजन नैन ।
मन भख लीन्हों धाय अहि, नहिं समात फणिऐन ॥

१ उपमारहित । २ दांत । ३ स्त्री । ४ छिपाव । ५ सर्पिणी । ६ सुवर्णकांत ।

सो०--करति सखिन सों रोष, मन हर्षत खीझत वदन ।
भरी चतुरई कोष, लूटति मनकामन फलन ॥
अति आनंद भरे दोउ राजें ❀ उपमा कहत कवीश्वरलाजें ॥
मरकत मणि कुंदन सँग मेली ❀ किधौं लिये घन तडित अकेली ॥
कैशोभा सुख तनु धरि सोहै ❀ ब्रजवासी भक्तन मन मोहै ॥
कोमल कर तिय नैन कन्हाई ❀ रहे मूंदि छबि वरणि न जाई ॥
अतिहि विशाल चपल अनियारे ❀ नाहिं समात प्रिय पाणिपसारे ॥
क्षण खोलत क्षण ढकतबिहारी ❀ मुख रिस मन मुसकातपियारी ॥
ज्यों मणिधर मणि प्रगटकन्हाई ❀ फिरिफिरि फणतर धरत छिपाई ॥
श्याम उँगरियन अंतर माहीं ❀ चंचल नैन दुरे दरशाहीं ॥
मरकतमणि पिंजरामें मानौं ❀ तरफरात बिब खंजन जानौं ॥
करकपोल ढिग तरलतरोना ❀ शोभा सहज सुभाय करोना ॥
मनुयुगकमल मिलनशशि आये ❀ बिवरविषंग सहायक लाये ॥
कुँवरि नागरी नागर नायक ❀ उपमा काहि कहों को लायक ॥
दो०--अपने कर प्रिय कर पकरि, लीन्हें नैन छुडाय ।
रवि शशि चार सरोज जनु, द्वैचकोरमिलिभाय ॥
सो०--कीन्हें सन्मुख आन, पाणि पकरिकै लाडिली ।
भले भलेजू कान्ह, मैं सखियन धोखे रही ॥
भले आय औचक बिन जाने ❀ मूंदि रहे दृग अतिहि पराने ॥
कैसे दौरि पैठि गृह आये ❀ नेकहु आवत जानि न पाये ॥
तुमहौ तियमनहरन कन्हाई ❀ तुम्हरी गति कछु जानि न जाई ॥
तब हरि हर्षि प्रिया उरलाई ❀ मुकुर कथा सब भाषि सुनाई ॥
सुनि नागरि हरि तन मुसकानी ❀ चितैनयन कछु मनहिं लजानी ॥
मैं तो अपने मन्दिर माहीं ❀ सहज लखत दर्पणमें छाहीं ॥
तुम्हरी महिमा पिय को जाने ❀ इक सुंदर अरु परम सयाने ॥
हँसत चले तब कुँवर कन्हाई ❀ रसिकपुरंदर जनसुखदाई ॥

१ राधिका । २ मभाव ।

हर्षित गये सदन नँदलाला ❀ इत नागरि उर हर्ष विशाला ॥
जब प्रतिबिंब सुरत जिय आवे ❀ समझ सुदृष्ट सकुंच तब पावे ॥
तिहि अंतर सँग सखिन लिवाई ❀ चंद्रावलि राधा ढिग आई ॥
लखि प्यारी अति आदर कीन्हों ❀ तुरत सबनको बैठक दीन्हो ॥
दो०–सादर सनमानी सबै, दिये हर्षि कर पान ।
पियसँग सुखचाहतकरन, रहतिसकुचपुनिमान ॥
सो०–गदगद स्वर मुख बैन, बारबारभाषति हरषि ।
झलक प्रेम ज़ल नैन, पुलकि गात पूरे सबै ॥
कहति सखी सुन राधा गोरी ❀ आज कहा अति हर्षकिशोरी ॥
हम तेरे नितही प्रति आवैं ❀ इतनो आदर कबहुँ न पावैं ॥
पायो आज परयो कछु तैरी ❀ कैधों मिले श्याम कहुँ हैरी ॥
उमग्यो प्रेम हर्ष उर माहीं ❀ हमैं सुनावति है क्यों नाहीं ॥
सुनि सखियनके वचन सयानी ❀ बोली प्रिया हर्षिकै बानी ॥
आये आज सखी हरि मेरे ❀ कहे जात नहिं गुण उन केरे ॥
जैसी भांति मिले हरि हमसों ❀ सो हित कहौं सुनहु सखि तुमसों ॥
मैं अपने सब अंग शृँगारति ❀ लिये मुकुरकर वदन निहारति ॥
पाछे आनि भये हरि ठाढे ❀ चतुराशिरोमणि छबिसों बाढे ॥
भाव एक भोरे मैं साजा ❀ ताहि कहत सखि आवतलाजा ॥
लखि अपनो प्रतिबिंब भुलानी ❀ जानि और तिय मनहिं डरानी ॥
पाछे ते यह जानि कन्हाई ❀ मूंदे नैन औचकहि आई ॥
दो०–तबहि चौंकि चक्रित भई, मैं समझी निज भोर ।
लगी देन उरहन तुम्हैं, भई फिरतिहौ चोर ॥
सो०–सुनि राधा मुख बात, हिय हर्षी सब गोपिका ।
पुलकि प्रफुल्लित गात, कहत धन्य तू लाडिली ॥
श्याम संग सुख लूटति हैरी ❀ अब उनसों नहिं छूटति हैरी ॥
श्याम भये तेरे अनुरागी ❀ भली भई तू हरिरस पागी ॥

१ घर । २ लज्जा । ३ हाथमें दर्पणलिये । ४ गद्गद । ५ प्रेमी ।

अब हरि तोते अति रति मानें ❀ तेरो अन्तर हित पहिचानें ॥
आवत जात रहत घर तेरे ❀ क्षण नहिं रहत तोहिं बिनहेरे ॥
चतुर रूप गुण तुम दोउ नीके ❀ परमभावते हौ सबहीके ॥
आज लाल मेरे गृह आये ❀ बडे भाग मैं हितकरि पाये ॥
देख दरश नैनन सुख पायो ❀ करौ आज आनंद बधायो ॥
यह उपकार तुम्हारो आली ❀ मोहिं मनायदिये वनमाली ॥
तुरत लाय हरि मोहिं मिलायो ❀ मैं अपने अपराध क्षमायो ॥
नंदनँदन पिय नैन समाये ❀ भावत नहीं नेक बिसराये ॥
सुनि यह राधाकी रसबानी ❀ देति अशीष सखी हरषानी ॥
नंदनँदन वृषभानुकिशोरी ❀ चिरजीवहु सुन्दर यह जोरी[1] ॥

दो०–प्रेम भरे छबिसों भरे, भरे अनंद हुलास ।
युगल माधुरी रस भरे, ब्रजमें करत विलास ॥

सो०–करत अनेक विहार, रूपरसिक गुणनिधियुगल ।
राधा नंदकुमार, ब्रजवासी जन सुख करन ॥

अथ नयन अनुरागलीला.

हरि अनुराग भरीं ब्रजनारी ❀ लोक सकुच कुलकानि बिसारी ॥
सासु ननँद गारी दै हारी ❀ सुनत नहीं कोउ कहत कहारी ॥
सुत पति नेह जगत यह छोरचो ❀ ब्रज तरुणिन तिनुकासम तोरचो ॥
वेद लोक मर्यादा डारी ❀ ज्यों अहिकेंचुरि फिरत निहारी ॥
ज्यों जलधार परै तृणमाहीं ❀ जैसे नदी समुद्रहि जाहीं ॥
जैसे सुभट खेत चढि धावै ❀ जैसे सती बहुरि नहिं आवै ॥
जैसे भजे नन्दनन्दनको ❀ नेकहु डर पुनि नाहिं गुरुजनको ॥
तैसइ प्रेमविवश गिरिधारी ❀ ज्यों गज पंकज[3] सकहिं निहारी ॥
ब्रजवनितामन नहिं बिसरावैं ❀ क्षणप्रति तिन्हैं देखि सुख पावैं ॥
आये पुनि तेहि ओर बिहारी ❀ सखिन सहित बैठी जहँ प्यारी ॥
भीर देखि सकुचे[2] मनमाहीं ❀ ताते निकट गये हरि नाहीं ॥

१ श्रीकृष्ण--राधिका । २ लाज । ३ कमल ।

ताही मग निकसे सुखदाई ❁ सुन्दर नटवर रूप दिखाई ॥

दो०–शीश मुकुट कुंडल श्रवण, उर चटकीली माल।
पीतवसन कटिकाछनी, तनद्युति श्यामतमाल ॥

सो०–चलत लटकनी चाल, बंक विलोकनिमृदुहँसनि।
अंग अंग छबिजाल, रसिक नवलनागरिछयल ॥

औचक देखि श्याम ब्रजनारी ❁ भई चकित तनुदशा बिसारी ॥
जात चले ब्रज खोरि अकेले ❁ कोटि कामकी छवि परहेले ॥
पगद्वै चलत बहुरि फिरिहेरैं ❁ कमल सनाल कमल कर फेरैं ॥
मृगमद तिलक अलक घुंघरारी ❁ तन वनधातु चित्र रुचिकारी ॥
मृदु मुसकाय मरोरत भौंहैं ❁ नैन सैन दैदै मन मोहैं ॥
निरखत ब्रजयुवती विथकानी ❁ दुखसुखव्याकुल मनअकुलानी ॥
गये कलपतरु छांह कन्हाई ❁ रूपठगोरी तियन लगाई ॥
लागीं कहन परस्पर वानी ❁ लोचन मन अनुराग कहानी ॥
सुनहु सखी यह नंददुलारो ❁ हठ करि यह मनलेत हमारो ॥
क्षण क्षण प्रति छबि और बनावै ❁ शोभा कछू कहत नहिं आवै ॥
मनतौ इनहीं हाथ बिकानो ❁ हम सखि यहकछु भेद न जानो ॥
नैननिशाट करी नैननिसों ❁ कियो मोल सैननि बैननिसों ॥

दो०–बेंचि दियो मन आपुही, मृदु मुसकन धन पाय।
परी रही हौं बीचही, नयना बड़ी बलाय ॥

सो०–भये श्यामको जाय, अब रुचि मानी मनहिं मन।
मैं पचिहारि बुलाय, फेरि नहीं इतको फिरे ॥

अब मनहित हरिहीसों कीन्हों ❁ भेद हमारो सब कहि दीन्हों ॥
मनतो गयो नैनहैं मेरे ❁ तिनहूं बोलि किये हरिचेरे ॥
अब यह रहत वहां सब जाई ❁ सोई करत जु कहत कन्हाई ॥
जितहि चलत वे तितही जाहीं ❁ हरिके सन्मुख रहत सदाहीं ॥
भये वे जाय गुलाम श्यामके ❁ रहे न काहू और कामके ॥

१ टेढी। २ कस्तूरी। ३ बालोंकी लट। ४ थकितभई।

ताको कछु अपमान न जाने ❀ फूले रहत अधिक सुखमाने ॥
जग उपहास सुनत बहुतेरो ❀ लाज शंक दीन्हों सब डेरो ॥
आरजपथ मर्याद बडाई ❀ लोकवेद कुलकानि गँवाई ॥
मैं समुझाय रही बहुतेरो ❀ नेकहु कह्यो सुनत नहिं मेरो ॥
ललित त्रिभंगी छबिपर अटके ❀ मोसों तोरि सगाई सटके ॥
हरि अब छोडत तिनको नहीं ❀ बैठे रहत आप तिन माहीं ॥
राखे बांधि अलक की डोरी ❀ भाजि जाहिं मति कबहुंक दौरी ॥

दो०–अब ये लोचन श्यामके, सखी हमारे नाहिं ।
बसे श्याम रस रूपये, श्याम बसे इन माहिं ॥

सो०–कहा करैं सखि श्याम, नैननहीको दोष यह ।
हठ करि भये गुलाम, तनक मंद मुसकानपर ॥

बोली अपर एक ब्रजनारी ❀ सखिलोचन लोभी अतिभारी ॥
जबहिं लखत कमनीय कन्हाई ❀ तबहिं संग लागत उठि धाई ॥
मेरो हटक्यो नेकु न मानैं ❀ लखत जाय वह छबिललचानैं ॥
ज्यों खेग छूटत फंद बधिकंते ❀ भागिचलत उडि वेग अधिकते ॥
पाछो फेरि न फिरत डराई ❀ जाय सघन वन मांझ समाई ॥
त्यों दृगमोते छूटि पराने ❀ हरि छबि विन घनजाय समाने ॥
अब वे इतको नाहिं निकारैं ❀ वह छबि निरखि हरषि उरधारैं ॥
यदपि सुधा छबि पियत अघाई ❀ तदपि तृप्ति नहिं मानतराई ॥
भई सखी नैनन गति ऐसी ❀ भरे भवन तस्करकी जैसी ॥
देखि श्याम छबितन अधिकाई ❀ अति लालची रहे ललचाई ॥
लेत न बनै तजो नहिं जाई ❀ चकितभये निजसुधि बिसराई ॥
रहे विचारहि मांझ भुलाने ❀ नहिं कछु लियो न त्याग पराने ॥

दो०–नैंन चोर हरि मुख सदन, छबि धन भांति अनेक ।
तजतबनतनहिं एकहू, लेत बनत नहिं एक ॥

सो०–सखि ये नैना चोर, हरिमुखछबि चोरन गये ।

१ दूसरी । २ पक्षी । ३ बहेलिया । ४ गह्वर । ५ सर्ववस्तुपूर्णगृह । ६ चोर ।

बांधे अलकनिडोर, हरिकी चितवन पाहरू ॥
भली भई हरि इनहिं बँधायो ❋ निदरि गये तैसो फलपायो ॥
ये नाहिं मानत कह्यो हमारो ❋ सखि इनहीं सब काज बिगारो ॥
कहति और यक गोपकुमारी ❋ सखि ये नैन किधौं वेटपारी ॥
कपट नेह हमसों करि भारी ❋ करी हमें गुरुजनते न्यारी ॥
श्याम दरश लाडू कर दीनो ❋ हमें आपने वश करलीनो ॥
प्रेमठगोरी शिरपर छाई ❋ फिरति संगही संग लगाई ॥
विरहफांस गरडारि हमारे ❋ करी विकल नहिं अंग सँभारे ॥
कुललज्जा संपदा हमारी ❋ सो इन लूटि लई सखि सारी ॥
कहँरति परी मोह बनमाहीं ❋ लगन गांठ दृग छूटत नाहीं ॥
क्योंहूँ नेह जीव नाहिं जाई ❋ सुनिरि नैन गुण मन पछिताई ॥
कासों कहैं सखी यह बाता ❋ भये नैन हमको दुखदाता ॥
हमको विरह दुसह दुख देहीं ❋ आप सदा दरशन सुख लेहीं ॥
दो०—इहिविधि निदरति दृगनको, भरी प्रेम ब्रजनारि ।
होत मग्न सुख विरह रस, नयननि श्यामनिहारि ॥
सो०—यही भजन यह ध्यान, श्याम रूप रस गुणकथा ।
नाहिं जानति कछु आन, निशिदिन ब्रजकी सुंदरी ॥
कोऊ कहति नैन खग मेरे ❋ फँसे अलकफंदा हरि केरे ॥
छविकण चारा लखि ललचाने ❋ फंदि गये चितवन लपटाने ॥
हरि छवि अँकि परे दृग आई ❋ अतिहि विलाप भये बिवसाई ॥
रहत दीन सन्मुख टकलाये ❋ दुख सुख समुझ सबै बिसराये ॥
कहवावत हैं बडे सयाने ❋ वह छवि लेन गये अतुराने ॥
सो तो कछू हाथ नाहिं आयो ❋ आपन यों इन जाय बँधायो ॥
ऐसोको त्रिभुवन जो जाई ❋ आवै सखी समुद्र अथाई ॥
हार जीत ये नैन न जानैं ❋ मानपमान कछू नहिं मानैं ॥
परे रहत शोभाके द्वारे ❋ नेकहु लाज नहीं उर धारे ॥

१ ठग । २ बेचैन । ३ तलफाति । ४ अड़ ।

जाकी बानि परी सखि जैसी ❀ धरी टेक उरमें तिन तैसी ॥
इन अँखियन यह टेक परीरी ❀ लुब्ध तज्यो कमलन भ्रमरीरी ॥
जो शुक नलिनीके वश आई ❀ जिमि कपिमुठी छोडिनहिंजाई ॥
दो०-लोभै वश जिमि मीन मृग, आप बँधावत आय।
रूपलालची नैन तिमि, भये श्यामवश जाय ॥
सो०-सकै न काहू छिंधु, लोक लाज कुलकानिगिर।
श्याम सलोने सिंधु, मिले त्रिबेनीह्वै नयन ॥
सखी नैन अब हरिसँग लागे ❀ मन क्रम बच उनसे अनुरागे ॥
सन्मुख रहत सदा सुखपाये ❀ भूलि गये मग दहने बाये ॥
ज्यों मणि देखि उरग सुखपावैं ❀ ज्यों चकोर चंद्रहिं टकलावैं ॥
मुदित रंक जैसे धन पाई ❀ तैसी इनकी गति अब माई ॥
अब ये नैन फिरत नाहिं फेरे ❀ किये सखी हम यत्न घनेरे ॥
देखे सुभग श्याम इन जबते ❀ निठुर भये हमसों ये तबते ॥
जब मैं घूंघट पटहि धरेरी ❀ तब ये शिशुकी अरन अरेरी ॥
हरिअँग संग लागि उठि धाये ❀ मनहुं उनहिं प्रतिपालकराये ॥
मृदु मुसकन रस पाय मिठाई ❀ क्षणहीमें मतिगति बिसराई ॥
अति हठ परे न नेक बिसारैं ❀ निमिष रुदन बल धीर न धारैं ॥
लाज लकुट उरमें डरपाये ❀ वे सखि एकहु डर न डराये ॥
फिरे न मैं बहु भांति बुलाये ❀ गये तनक हरिके फुसलाये ॥
दो०-अब हम तलफत उन बिना, मरत यही अफसोस।
गथ खोटो सखि आपनो, कहा पारखिहि दोस ॥
सो०-प्रेम बिवस त्रिय वृन्द, ऐसे दोषतिं दृगनको।
तबहिं छैल ब्रजचन्द, टेर सुनाई बांसुरी ॥

अथ मुरलीलीला.

कृष्ण प्रेमरस पूरण तातें ❀ करत हुती नयननकी बातें ॥
परी श्रवण इहिं अंतरजाई ❀ हरिकी मुरली टेर सुनाई ॥

१ लोभित। २ भौंरी। ३ मछली। ४ हरिण। ५ कान।

भई चकृत सुनि सब ब्रजगोरी ❁ परी आय मनु शीश ठगोरी ॥
भूलिगई सुधि अँखियन केरी ❁ ह्वैगईं मानौ चित्र लिखेरी ॥
दुख सुख मनको वरणि न जाई ❁ इकटकरहीं पलक बिसराई ॥
देहदशा सब तुरत भुलानी ❁ स्वेद चल्यो बहि मानहुँ पानी ॥
भई विवश मतिकी गति भूलीं ❁ प्रेमहिंडोर गोपिका झूलीं ॥
कबहूं सुधि कबहूं सुधि नाहीं ❁ कबहूं मुरली नाद सुनाहीं ॥
कछुक सँभारि धीर उरधारी ❁ कहति परस्पर गोपकुमारी ॥
अँखियनते मुरली हरिप्यारी ❁ भै बैरिन यह सौत हमारी ॥
ब्रजमें धौं कितते यह आई ❁ भई कठिन हमको दुखदाई ॥
आवतही ऐसे ढँग जाके ❁ भये श्याम तुरतहि वश ताके ॥

दो०–जारसको हम तप कियो, षटऋतु सब ब्रजवाम ।
सोरस मुरलीलेति अब, सहजहि वशकरि श्याम ॥

सो०–गावत मीठी तान, मुरलीसँग अधरन धरे ।
अब याके वश कान्ह, औरन विवश करी वही ॥

ऐसी त्रिभुवन कौन सयानी ❁ जो न मोह सुनि याकी बानी ॥
यह तौ भली नहीं ब्रज आई ❁ नई सौति हरिके मनभाई ॥
अब याके वश गिरिवरधारी ❁ नेक अँधरते करत न न्यारी ॥
याहीके अब रंग रँगेरी ❁ मधुर वचन सुनिरीझिगयेरी ॥
करपल्लवन माहिं बैठाई ❁ रहत ग्रीवँ तापर लटकाई ॥
बारहि बार अधररस प्यावै ❁ तासों अति अनुराग जनावै ॥
देखहु री याकी अधिकाई ❁ पियत सुधारस हमहिं दिखाई ॥
परी रहत बनमें धौं कैसी ❁ भई ढीठ आवतही ऐसी ॥
दिनही दिन अधिकात जात री ❁ सखी नहीं यह भलीबात री ॥
आवतही हमरो धन लीनो ❁ चाहत और कहा धौं कीनो ॥
मैं जो कहत सुनौ री गोरी ❁ सजग रहौ सब नवलकिशोरी ॥
मुरली दूरिकराये बनिहै ❁ कछू दिननमें हमें न गनि है ॥

१ आपसमें । २ चतुर । ३ ओष्ठ । ४ अँगुरी । ५ गर्दन ।

दो०-फिरि हैं याके सँगलगी, लोक लाज गृह त्यागि।
जब जब जहँ यह बाजिहै, मोहनके मुँह लागि॥
सो०-करिहै नानारंग, यह जानति टोना कछू।
या मुरलीके संग, देखहु हरि कैसे भये॥

यह सुनि कहत एक ब्रजनारी ❀ सखी बात यह कहति कहारी॥
अब यह दूरि होतिहै कैसे ❀ जाके वश नँदनन्दन ऐसे॥
एक पाँय ठाढे ता आगे ❀ रहत त्रिभंग अंग अनुरागे॥
अधर सेजपर शयन कराई ❀ करपल्लवन पलोटतपाई॥
कबहुँक मिलि गावतहैं तासों ❀ होति विवश पुहुमी सब जासों॥
मुरली अति मोहनको भावै ❀ ताके गुणन सखीको पावै॥
जानत रागरागिनी जेते ❀ हरिसँग मिलि गावति हैं तेते॥
नाना विधिकी गतिन बजावैं ❀ तानतरंग अमित उपजावैं॥
जैसेही रीझत मनमोहन ❀ तैसिय भांति रिझावत गोहन॥
रहति सदा मुखहीसों लागी ❀ अधर पियूष स्वाद रसपागी॥
मधुर मधुर कलवचन सुनाये ❀ पुनि पुनि हरिके मनहिं चुराये॥
ऐसो को अब हरिके करते ❀ दूरकरै याको निज वरते॥

दो०-अब मुरली छूटै नहीं, याके वश भये श्याम।
प्रगट कियो सब जगतमें, मुरलीधर निजनाम॥
सो०-हरिको करि वश माहिं, मुरली लूटत अधररस।
उर डर मानति नाहिं, हम सबते बोलति निठुर॥

निठुर वचन अब हमहिं सुनावै ❀ हरि को मन हमते उचटावै॥
आरजपथ कुल कानि छुडावै ❀ हम सबहिनको निलज करावै॥
ऐसे ढँग मुरलीके आली ❀ हमते निठुर किये वनमाली॥
यह तौ निठुर काठकी जाई ❀ प्रगट किये अपने गुण आई॥
अपनोही स्वारथ यह जानै ❀ कपट राग हरिके सँग गानै॥
मुरली निठुर किये बनवारी ❀ मुरली ते हरि हमहिं बिसारी॥

१ नींद। २ कठोर।

बनकी व्याधि कहां यह आई ❀ ऐसे कहि कहि तिय तछिताई ॥
कहा भयो मोहन मुख लागी ❀ अपनी प्रकृति नहीं इन त्यागी ॥
एक सखी बूझतभइ ऐसे ❀ मुरली प्रगट भई यह कैसे ॥
कहां रहत काकीहै जांई ❀ कौन जाति कैसे इत आई ॥
मात पिताहैं याके कैसे ❀ जैसी यह तेऊहैं ऐसे ॥
बोली अरु इक तिया सयानी ❀ अबलों तुम यह बात न जानी ॥

दो०-सखि तुम अबलों नहिं सुन्यों, मुरलीको कुलधर्म ।
सुनो सुनाऊं मैं तुम्हैं, याकि जाति अरु कर्म ॥

सो०-तुमसों कहौं बखान, मैं जानति याके गुणन ।
सुनि सुख पैहौ कान, या मुरलीकी कुल कथा ॥

वनमें रहति बांस कुल जाई ❀ यह तौ याकी जाति सुहाई ॥
जलधरपिता धरणि है माता ❀ तिनके गुणन करौं विख्याता ॥
बनहूंते तिनको घर न्यारो ❀ निपटहि जहां उजाड़ अपारो ॥
गुणन एकते एक उजागरि ❀ मातपिता अरु मुरली नागरि ॥
पर अकाज विश्वास न जानैं ❀ येहैं इनके कुलहि बखानैं ॥
ना जानिये कौन फल आली ❀ कृपा करी या पर बनमाली ॥
सुनहु सखी याके कुल धर्मा ❀ प्रथम कहौं मेघनके कर्मा ॥
वे वर्षत जल सब जगमाहीं ❀ गिरि बन सर सारिता सब ठाहीं ॥
चातक सदा रहत करि आसा ❀ एक बूँदको मरत पियासा ॥
धरणी सबहीको उपजावै ❀ आपन सदा कुमारि कहावै ॥
उपजत पुनि विनशत जाहीमें ❀ सो कछु छोह नहीं ताहीमें ॥
ताकुल सुता मुरलिका जानौं ❀ अब आगे गुण प्रगट बखानौं ॥

दो०-तनुहींते प्रगटत अनल, ऐसी याकी झार ।
प्रगट भई जा वंशमें, करति जारि तिहिं छांर ॥

सो०-ऐसे गुणकी आहि, यह मुरली सखि बांसकी ।

१ स्वभाव । २ पैदा की है । ३ स्वातीका । ४ लड़की । ५ आग्नि । ६ राख ।

आई निज कुल दाँहि, और कौन याते निठुर ॥
याकी जाति श्याम नहिं जानी ❀ बिन जाने कीन्हीं पटरानी ॥
कहिये चलौ श्यामसों जाई ❀ सुनत तजैंगे कुँवर कन्हाई ॥
सखी कहा यह बात बखानो ❀ श्यामहिं कहा भलो तुम जानो ॥
निज कुल जारत बिलम न लाई ❀ ह्वै है तासों कौन भलाई ॥
जाको हम षट ऋतु तप कीन्हों ❀ सोफल तुरत मुरलि यह दीन्हों ॥
जे सन्मुख ते बिमुख कहावै ❀ बिमुख तुरत उत्तम फल पावैं ॥
घरके वन वनके घर कीन्हें ❀ कपटी परम श्यामको चीन्हें ॥
एक अंगकी प्रीति हमारी ❀ वे कपटी बहुतरुण बिहारी ॥
ज्यों चकोर चन्दा हित मानैं ❀ चन्द्र नहीं नेकहु उर आनैं ॥
जलके तीर मीन तनु त्यागै ❀ जलको तनक दया नहिं लागै ॥
ज्यों पतंग उड जोति जरैरी ❀ जोति नहीं कछु कृपा करैरी ॥
चातक एक मेघको जानैं ❀ वह कछु ताकी प्रीति न मानैं ॥
दो०–इन सबहिनते हरि निठुर, तैसियमिली सहाय ।
अब मुरली अरु श्यामकी, जोरी बनी बनाय ॥
सो०–ये अहीर वह वैन, काहे न प्रीति बढावहीं ।
दुहुँअनको मन ऐन, जैसे वे तैसी वहू ॥
मुरलीने हरिको पहिचान्यो ❀ हरिको मन मुरली सों मान्यो ॥
निठुर निठुर मिल बात बनावैं ❀ याहीके बल धेनु चरावैं ॥
वाहीकी लकुटी कर धारी ❀ वाही की वंशी अति प्यारी ॥
हम सों बैर सदा हरि कीनो ❀ दधिले मारगजान न दीनों ॥
पुनि भेदहि मन हरचो हमारो ❀ कीनो कुल कुटुंबते न्यारो ॥
बहुरि बोलि अँखियनको लीनी ❀ तापर सौति मुरलिया कीनी ॥
सुनि सजनी विन काज जरौरी ❀ कर्म करे सो कोउ न करौरी ॥
यह महिमा करता सब करई ❀ कौने विधि धौं कापर परई ॥
हम तपकर इतनो पचिहारी ❀ सो घर कुलते भई नियाँरी ॥

१ जराय । २ छड़ी । ३ अलग ।

वनकी घास इतो सुख पावै ❀ श्याम अधर शिर छत्र धरावै ॥
भये नृपति हरि मुरली रानी ❀ और नारि हरिको न सुहानी ॥
वनते लाय सुहागिनि कीन्ही ❀ जाति पांति कुल कछू न चीन्ही ॥

दो०–तप तीरथ जो पूरवहि, कठिन किये हरि हेत ।
अब मुरली ता कष्टको, बैठि अधर फल लेत ॥

सो०–मेटत पिछलो दाग, जो तपकरि तायो तनहिं ।
धनि धनि मुरलीभाग, अब गरजतिअधरन चढी ॥

मुरली कौन सुकृतफल पायो ❀ सब कलंक हरि परशि गँवायो ॥
तनु कठोर मन जड़ रस हीनी ❀ अंतर सूनो सार बिहीनी ॥
लघुता अंग न कछु गरुवाई ❀ बाँस वंश कछु नाहिं निकाई ॥
छिद्र विशाल विपुल तन छाये ❀ हरिहि परशि सब भये सुहाये ॥
विधिते प्रबल भई यह मुरली ❀ हरिमुख कमल वरासन जुरली ॥
चार बेद विधि श्रुति मति भाखे ❀ नीति सहित जड चेतन राखे ॥
आठ बदन मुरली कहि नादा ❀ उलटि दई हरिकी मर्यादा ॥
जड़चेतन चेतन जड़कीने ❀ थिर चर कर चर थिर करदीने ॥
एकवार श्रीपति सिखरायो ❀ तबते ज्ञान विधाता पायो ॥
याके तो नँदसुवन कन्हाई ❀ लगे रहत हैं कान सदाई ॥
याते को अरु प्रबल प्रवीना ❀ कियो सकलजग निजआधीना ॥
कहिये काहि औरको ऐसी ❀ भई श्यामसँग मुरली जैसी ॥

दो०–अतिसुरनरमुनिसूरशशि, खगमृगसलिलसमीर ।
या मुरलीके वश सबै, धुनि सुनि धरत न धीर ॥

सो०–रही विश्वभर जीति, मोहन मुख लगि बांसुरी ।
मेटि सकल श्रुति नीति, रीति चलावति आपनी ॥

सखि मुरली को दोष न देहों ❀ करि विचार अपने मन लेहों ॥
हरि हित इन श्रमकीनों जोई ❀ सो श्रम और कौन पै होई ॥

१ उत्तमकर्म । २ पाप । ३ देहकड़ी । ४ मूढ । ५ अल्पदेह । ६ शब्द ।
७ निर्जीवको सजीव । ८ सजीवको निर्जीव । ९ चल । १० अचल ।

जो अकुलीन तऊ बड भागी ❋ कियो कठिनव्रतहरिहित लागी ॥
जब अतिदृढ याको हरि जान्यो ❋ तब वन भीतरते गृह आन्यो ॥
जब याकी करतूति सुनोगी ❋ तब धनि धनि करि याहि गनोगी ॥
जनमत हीते करमति गाढी ❋ वनमें रही एक पग ठाढी ॥
शीत उष्ण वर्षा सहिलीनी ❋ नेकहु मनसा मलिन न कीनी ॥
कसकी नहीं नेक जब काटी ❋ पत्र मूल शाखा जब छांटी ॥
राखी डार धाममें आनी ❋ शोच शोच सबदेह सुखानी ॥
मुरचो न मन तन अंग दगाये ❋ विधे बेहँ अँग अँग करवाये ॥
ताय सुलाखि पराखि हरि लीन्हीं ❋ तब मुरली पटरानी कीन्हीं ॥
मुरली सही इती कठिनाई ❋ तब पाई ऐसी ठकुराई ॥

दो०-मुरली तप फल भोगवै, वृथा करत तुम आर ।
निज गुण रिझये श्याम उन, गुणियन गुणीपियार ॥

सो०-तुम ते यह नहिं होय, जो करनी मुरली करी ।
ताकी सम नहिं कोय, अति श्रम करि हरि वश करे ॥

परम पुनीत प्रीति जब जानी ❋ तब मुरली हरिके मन मानी ॥
देखहु री याकी अधिकाई ❋ कहँलगि याकी करहिं बडाई ॥
जबहीं श्याम अधर को परसै ❋ तब अति हर्षि नादरस बरसै ॥
तान तरंग रंग उपजावै ❋ अति आनँद सब जगत जनावै ॥
जियत श्याम अधरामृत पाई ❋ छूटत मौन रहत मुरझाई ॥
क्यों नहिं श्याम करैं हित ताको ❋ अधरामृत जीवन है जाको ॥
मुरली जो हरि हित तप कीन्हों ❋ परम चतुर पूरण तप लीन्हों ॥
तब लगि हरिको नहिं पतियानी ❋ सहे कष्ट बोली नहिं बानी ॥
जब लग जीवन करि नहिं पायो ❋ अधरामृत रस मनको भायो ॥
जब हरि सों वांछित फल पायो ❋ तब सबपर अधिकार जनायो ॥
या सम और चतुर को आली ❋ जिनवश किये श्याम वनमाली ॥
क्यों नहिं त्रिभुवनको मन मोहै ❋ जाके वश पति त्रिभुवनको है ॥

१ छिद्र । २ तपस्या ।

दो०-मुरलीकी सर मत करौ, कह्यो हमारो मान ।
धनि धनि ताहि बखानिहै, सुन ताको यश कान ॥
सो०-अधरामृत करि पान, अमर भई अब मुरलिका ।
तिहुँ पुर होत बखान, शारदादि यशगावहीं ॥
हमहुं सब मिलके तप कीन्हों ❀ ताको फल हम को हरि दीन्हो ॥
लीन्हें भूषण वसन चुराई ❀ युवतिन लाज छुडाय बुलाई ॥
तब अंम्बर दे धन्य बखानो ❀ हम भोरी इतनोइ सुखमानो ॥
अपनो अपनो भाग्य दिखौरी ❀ मुरली सों विनकाजखिजौरी ॥
अब मुरली सों हेतैं करौरी ❀ नहिं जीतौगी मतहि लरौरी ॥
मुरली हम ते तप अधिकाई ❀ मुरलीके वश कुवँर कन्हाई ॥
तनक आश दर्शनकी हैरी ❀ सोऊ पुनि करते जैहैरी ॥
हैं बहुतेरी रमण कन्हाई ❀ यहू मिलि इक तिनमें आई ॥
मुरलीको जिन डाह करौरी ❀ तुम नहिं अपने प्रेम टरौरी ॥
प्रेमहिते हरि मानरहैंगे ❀ वे सुजान सब जानि रहैं गे ॥
सब तजि भज्यो जन्मते ताही ❀ तज्यो जात कैसे अब वाही ॥
मुरली सों कहकाज हमारो ❀ जीवहु मोहन नन्ददुलारो ॥
दो०-हमहित कीन्हों श्यामसों, मेटि लोक कुल कान ।
ताही सों हित चाहिये, जासों है पहँचान ॥
सो०-हमको है वह आश, वैहैं अंतर्यामि हरि ।
करिहैं नाहिं निराश, उर अंतरकी जानिकै ॥
कहा भयो मुरली हरि राखी ❀ अपने कर सों ताहि सुलाखी ॥
गुणके काज क्षणक दुख पाई ❀ दै अधरामृत तुरत जिवाई ॥
हम ते अधिक कियो उन नाहीं ❀ करि विचार देखहु मनमाहीं ॥
वर्ष पांच सातक के जबते ❀ कियो सनेह श्याम सों तबते ॥
पुनि षट् ऋतु तपसों मन लायो ❀ अबलौं विरहानल तनु तायो ॥
कैसे ये सब फलन फलैंगे ❀ क्यों नहिं हमसों श्याम मिलैंगे ॥

१ वस्त्र । २ प्रीति । ३ विरहकी अग्नि ।

तब यों कह्यो एक ब्रजनारी ❀ मुरली श्याम अधरपर धारी ॥
जो अवगुण हो तो या माहीं ❀ तो याको हरि छुवते नाहीं ॥
सुनो सखी यहहै इहलायक ❀ अतिही भलीश्रवण सुखदायक ॥
तुमहो कहति बृथा जोइ सोई ❀ जैसी यह ऐसी नहिं कोई ॥
जो यह भली बुरी गुण केरी ❀ तो याको ढरि श्याम मिलेरी ॥
काहिन प्रीति करे हरि ऐसी ❀ है यह तिहूं भुवनमें जैसी ॥

दो०—एक युवति अरु गुण भरी, बोलति मधुरे बैन ।
श्रवण सुधा प्यावततहूं, क्यों हरि अधर धरैन ॥

सो०—हरि बरजो मतिकोय, देहु बजाबन बांसुरी ।
विरह विरससे होय, रसकीने रस होत है ॥

आप भले तो जगत भलोई ❀ नातर सखी भलो नहिं कोई ॥
मुरली लगी श्यामके मुखरी ❀ तौहूं है हमसों सन्मुखरी ॥
सुनहु कान दे कहति कहारी ❀ श्रीराधा श्रीराधा प्यारी ॥
तुम जानति हरि हमहिं बिसारी ❀ तुम हरिसों नहिं नेक नियारी ॥
जब जब मुरली श्याम बजावैं ❀ तब तब नाम तुम्हारोइ गावैं ॥
मुरली भई सौति जो आई ❀ तो हरितेरिहि टहल कराई ॥
तू अर्द्धंगिनि वह है दासी ❀ मेरे मन यह बात प्रकासी ॥
मुरली तुम्हरो नाम बतावैं ❀ वाके मुखहरि तुमहिं बुलावैं ॥
तुमं प्यारी हरि हरि तुम प्यारे ❀ मुरली यह यश कहत पुकारे ॥
हर्षीं सकल सुनत यह वानी ❀ हम मुरली ऐसी नहिं जानी ॥
वृथा वैर यासों हम मान्यो ❀ याको शील अब हम जान्यो ॥
मुरलीसों ऐसे सुखपाई ❀ करति सकल ब्रजनारि बडाई ॥

दो०—धनि धनि वंशी बांसकी, धनि याके मृदुबोल ।
धनि ल्याये गुणयाँचिकै, बनते श्याम अमोल ॥

सो०—धनि धनि याको वंश, धनि मुरली हरिमुख लगी ।
सखिन सहित परशंस, श्रीमुख श्रीराधा कह्यो ॥

१ योग्य । २ मधुरवचन । ३ परख । ४ जिसकी कीमत नहीं।

मुरली श्री मुरलीधर केरी ❀ महिमा कापै जात निबेरी ॥
जाको यश गुण गंध्रव गावैं ❀ वेद भेद जाको नहिं पावैं ॥
सुनत नाद त्रिभुवन मन मोहै ❀ देव दनुज नर खग मृग जोहै ॥
वाणी ललित श्रवन सुखदाई ❀ बाजति हरि मुख लाग सुहाई ॥
ब्रह्मादिक मनमोह करावै ❀ शिव सनकादि समाधि भुलावै ॥
माया योग कृष्णकी जोई ❀ शोभित अधर मुरलिका सोई ॥
हरिकी श्वास जासुकी बानी ❀ ताके गुण को सकै बखानी ॥
जब मुरली नँदनंद बजावैं ❀ ब्रज ललना सुनिकै सुख पावैं ॥
चकृत होत तनु दशा भुलावैं ❀ प्रेमविवश सुधि बुधि बिसरावैं ॥
जकी थकी जहँ तहँ रह जाहीं ❀ मानहुँ लिखी चित्रकी आहीं ॥
कबहूं दुख कबहूं सुख मानैं ❀ कबहूं निंदहिं कबहुं बखानैं ॥
ऐसी दशा होत घर घर की ❀ बाजति मुरली जब नटवरकी ॥

छं०-जबहिं मुरली श्यामकरगहि, अधरराखिबजावहीं ।
तरलतानतरंग अगणित, गति अमित[3] उपजाहीं ॥
रहत सुनि धुनि मगनजलथल, जीवजहँसोतहँसहीं ।
कहत ब्रह्मानंद जासों, पाय सँग पूजत नहीं ॥
सब सयानसमान ज्ञान, गुमानतबहींलै अहैं ।
लोक वेद मर्याद पतिव्रत, चार फल जबलौं चहैं ॥
तबहिंलौं मन चपलबुधिबल, सकलरुचिधन धामकी ।
सुनी स्वप्नेहु नाहिं जबलौं, श्रवण मुरली श्यामकी ॥

दो०-धनि धनिते नरनारि जग, धनि धनि तिनकेभाग ।
ब्रजवासी प्रभु बाँसुरी, जिनके मनमें लाग ॥

सो०-राखत है यह आस, जन ब्रजवासी दासहूं ।
करहु हिये मम वास, मुरलीधर मुरली धरे ॥

१ शब्द । २ मुरली । ३ अपार ।

अथ रासलीला.

वंदौं युगेलचरण सुखदायक ❀ श्रीरस रास नायका नायके ॥
नन्दनँदन वृषभानुनन्दनी ❀ सुर नर मुनि ब्रह्मादि वन्दनी ॥
रास रसिक रस रास बिलासी ❀ नित्य धाम वृन्दावन बासी ॥
रूपराशि आनन्दनिधाना ❀ मंगलप्रद सुन्दर भगवाना ॥
बहुरि रासपतिपद शिर नाऊं ❀ रास चरित मंगल अब गाऊं ॥
वेदव्यास जो रास बखानो ❀ सो गन्धर्व व्याह विधि जानो ॥
ब्रजगोपिन हरिहित तप कीन्हो ❀ श्याम होयँ पति यह व्रत लीन्हो ॥
नन्दनँदन तिनको वर दीन्हो ❀ चीरहरण लीला तब कीन्हो ॥
करिहैं तुम्हरे मनकी भाई ❀ शरदरैनि शुभलग्न धराई ॥
सो जब शरद सुखद ऋतु आई ❀ राका रजनी परम सुहाई ॥
भक्तमनोरथ पूरणकारी ❀ गावत बिरद विदित श्रुतिचारी ॥
गये श्याम बृन्दाबन माहीं ❀ जहँ बसंत ऋतु रहत सदाहीं ॥

दो०–श्री बृन्दाबन धामकी, शोभा परमपुनीत ।
बरणिसकैकविकौनविधि, मनबुधिवचनअतीत ॥

सो०–सब चैतन्य स्वरूप, भूमिलता द्रुम गुल्म तृण ।
धारि रह्यो जड रूप, सुन्दर श्याम विहार हित ॥

जाकी महिमा शिव मुनि गावैं ❀ ब्रह्मादिकरज छुवन न पावैं ॥
जाकी महिमा श्रीमुखवानी ❀ संकर्षण प्रति श्याम बखानी ॥
चिंतामणि मय भूमि सुहाई ❀ कोमल विमल रम्य सुखदाई ॥
सकल सुमंगल की जननीसी ❀ कृष्णचरण पंकज रमनीसी ॥
फिरत श्याम जहँ नांगे पायन ❀ चरणचिह्न अंकित सब ठायन ॥
पावनहूकी पावनकारी ❀ ब्रजबासी प्रभुकी अति प्यारी ॥
वर्ण वर्ण वर विटप सुहाये ❀ परम अनूप न जाहिं गनाये ॥
सदा सुमन फल संयुत सोहैं ❀ अमित सुगंध स्वाद मन मोहैं ॥
नव पल्लव दल परम सुहाये ❀ जगमगात नगज्योति लजाये ॥

१ दोनोंचरण । २ श्रीकृष्ण-राधिका । ३ शरदपूर्णिमाकी निर्मलरात्रि । ४ अत्यंतपवित्र ।
५ बलदेवजी । ६ वृक्ष । ७ पुष्प । ८ नवीनपात-डार ।

विपुलकांति शोभित बहु रंगा ❁ अति विचित्र छबि उठति तरंगा ॥
परम प्रकाश दशहु दिशि माहीं ❁ कोटि सूर शशि पटतर नाहीं ॥
पत्रपत्र प्रतिबिंब श्यामको ❁ मोहत लखि मन कोटि कामको ॥

दो०—ठौर ठौर शोभित परम, तैसिय लता बितानि ।
वृन्दाबन तरु बेलि सब, नखशिख छबिकी खानि ॥

सो०—और सकल सुख धाम, वैकुंठादिक श्यामके ।
यह विहार बिश्राम, ताते अति सुन्दर सुखद ॥

विपुल कुंज मंजुल छबि छाई ❁ जिन्हें सँवारत काम सदाई ॥
बहत समीर धीर सुखदाई ❁ शीतल परम सुगंध सुहाई ॥
चित्र विचित्र विहँगं मृग नाना ❁ बोलत डोलत विविध विधाना ॥
गुंजत भृंग लुब्ध मकरंदा ❁ अति छबि पुंज मंजु वनवृंदा ॥
तैसिय यमुना परम सुहाई ❁ पुलिन पुनीत बरणि नहिं जाई ॥
देति महा छबि झलकनरेती ❁ मानहुं परम कांतिकी खेती ॥
फूले बनज विपुल बहु रंगा ❁ गुंज करत मधुमाते भृंगा ॥
श्रीवृन्दावन छबि समुदाई ❁ सम्यंक बरणि कौंन पै जाई ॥
जाकी पटतरको नाह आनां ❁ वन अनूप अद्वैत बखाना ॥
ऐसी कछू परतहै हेरी ❁ है अस्थूलवपुषँ प्रभुकेरी ॥
गोपी जन इंद्रियगण तामें ❁ है चैतन्य आप हरि जामें ॥
नित्य धाम ताही ते गायो ❁ यह पटतर मेरे मन भायो ॥

दो०—सुखनिधि रसनिधि रूपनिधि, वृन्दाविपिनउदार ।
शारद नारद शेष शिव, वरणत विधि श्रुति चार ॥

सो०—सुखद न कोऊ आन, वृन्दावन सम दूसरो ।
सकल विश्वसुखदान, सुखपावत मोहन जहां ॥

तहँ विस्तृतइक शंख सुहायो ❁ मणिमय सुभग श्रुतिनमेंगायो ॥
तापर अद्भुत कमल बिराजै ❁ षोडशपत्र चक्रसम राजै ॥

१ समान । २ पक्षी । ३ भौंरा । ४ पु-प । ५ सम्पूर्ण । ६ दूसरा । ७ देही । ८ विचित्र ।

योजन पंच तासु परमाना ❀ रास स्थान सुबेद बखाना ॥
मध्य करणिका अति रमणीया ❀ बैठे तहां कान्ह कमनीया ॥
शोभा अमितनेति श्रुति बानी ❀ ताते गिरा कहति सकुचानी ॥
कोमल श्यामल अंग सुहाये ❀ निरखि कोटि शत काम लजाये ॥
नटवर वेष साज सब साजे ❀ अंग अंग भूषण छबि छाजे ॥
सखीशिखंड मनोहर माथे ❀ बीच बीच मुक्तामणि गाथे ॥
जलजमाल वनमाल सुहाई ❀ कुंडल अलक झलक छबि छाई ॥
कटि पट पीत काछनी काछे ❀ ललित शृँगार सुभगतनु आछे ॥
मणिन जटित नूपुर पग नीके ❀ चरण कमल भावत जन जीके ॥
रवि शशि आदिक द्युतिधर जेते ❀ नख उपमा पूजतनाहिं तेते ॥

दो०—अति अद्भुत लावण्यनिधि, श्री वृन्दाबन चन्द ।
निगम नेति किमि वरणिये, रसिक नवल नँदनन्द ॥

सो०—जेहि गावत श्रुति चार, ब्रह्म पूरणानन्द हरि ।
सोपूरण अवतार, वृन्दावन रस रास पति ॥

देखि श्याम बनधाम कन्हाई ❀ तैसिय शरदरैनि छबिछाई ॥
प्रफुलित कुमुदिनि वन चहुँपासा ❀ ललित मालती करत सुवासा ॥
जैसोइ यमुना पुलिन सुहायो ❀ तैसोइ पूरणशशि छबि छायो ॥
तैसिय जगमग ज्योति द्रुमनकी ❀ तैसिय ललितसुगंध सुमनकी ॥
लखि बनसुख समुदाय कन्हाई ❀ हर्षि रास रुचि मन उपजाई ॥
तब कर लई सकल गुण जुरली ❀ ललित योगमायासी मुरली ॥
नादब्रह्मकी उत्पति जासों ❀ निगम अगम उपजैं पुनि तासों ॥
विश्वविमोहन मंत्र कलासी ❀ हरिमुखकमललसतिकमलासी ॥
राग रंग रस रास बिलासी ❀ सकल गुणनिमें आनँदरासी ॥
श्याम अधर धरि ताहि बजाई ❀ त्रिभुवन मनमोहन ध्वनि छाई ॥
धरणि पताल जीव सब मोहे ❀ नभ सुरगण सुर सुनत विमोहे ॥
चकित चंद मृग मारग भूले ❀ बरषतअमृत कणक अनुकूले ॥

१ चंद्र । २ वृक्ष । ३ पुष्प ।

दो०—शिवविरंचिसनकादिमुनि, तजितजिब्रह्मसमाधि ।
भये नाद मुरली मगन, चकित श्रवण रहे साधि ॥
सो०—रहे सबै मन भूल, सिध चारण गंधर्व सुर ।
तन सुधि रही न मूल, सुनि मुरली नँदनन्दकी ॥

थकित पवन गति गवन भुलानी ❀ रह्यो प्रवाह नादिन थाकि पानी ॥
झरना झरहिं पषाण कठोरा ❀ नाचि उठे चहुँदिशि वन मोरा ॥
थकितविलोकत मृग सब ठाढे ❀ खग रहे मौन मनहुँ लिखि काढे ॥
रही धेनु तृण गहि मुख माहीं ❀ थकित वत्स पय पीवत नाहीं ॥
सरकि सकतनहिं अहिध्वनि मोहैं ❀ उठके विटप हरित सब सोहैं ॥
तरुँवेली सब चंचल पाता ❀ नव अंकुर दल प्रफुलित गाता ॥
सुनि धुनि शेष नाग अकुलाने ❀ नाग सकल सोवतते जाने ॥
जड चेतन गति भइ विपरीता ❀ हरि मुख मुरली सुनत पुनीता ॥
जो नर नारि तिहूं पुर माहीं ❀ भये नाद वश तनु सुधि नाहीं ॥
सुनि धुनि चकित भई अतिभारी ❀ जे ब्रजसुन्दरि गोपकुमारी ॥
यदपि मुरलिध्वनित्रिभुवन परशी ❀ तदपि यथाविधि तिनहीं दरशी ॥
यारसकी तेई अधिकारी ❀ नंदनँदन प्रियकी अति प्यारी ॥

दो०—सुनतहि बौरीसी भई, बिसरी सबी सयान ।
लगी ठगौरीसी मनहुँ, मुरलीकी ध्वनि कान ॥
सो०—रह्यो न उरमें धीर, बाजी बाजी कहि उठीं ।
आकुल विकल शरीर, सुनि मुरली ब्रजकी तरुणि ॥

षट्दशसहस गोपिका गोरी ❀ मुरली सुनत भई सब भोरी ॥
कोउ धरणी कोउ गगन निहारैं ❀ कोउ मनहींमन बुद्धि विचारैं ॥
घर घर तरुणि सबैं बिततानी ❀ आरजपथ गृह काज भुलानी ॥
लै लै तिनके नाम बजावैं ❀ मुरलीमें हरि सबन बुलावैं ॥
रहिनसकीं ध्वनि सुनि अकुलाईं ❀ जो जैसे तैसेइ उठिधाईं ॥

१ चलना । २ पत्थर । ३ देखत । ४ हरिण । ६ पक्षी । ६ दूध । ७ वृक्षवेल ।
८ निर्जीवसजीव । ९ सोरेहजार १० आकाश ।

लोक लाज गुरुजन डर डारचो ❀ चलींसकल गृहकाजबिसारचो ॥
काहू दूध उफनते छांडे ❀ काहू दधिहि जमावत भांडे ॥
काहू करति रसोई त्यागी ❀ कोऊ पतिहि जिमावत भागी ॥
बालक गोद सँभार न लीनो ❀ दूध पियावतही तजि दीनो ॥
कोउ शृंगार करति उठि धाई ❀ उलटे भूषण वसन बनाई ॥
बाजूबंद पगनसों बांधे ❀ लै मंजीर उरनमें सांधे ॥
किंकिणि डारि लयी गरमाहीं ❀ हार लपेटत करसों जाहीं ॥

दो०-शीश फूल काननधरे, करणफूल धरेंभाल ।
चलीं सकल मुरली सुनत, भ्रमतें ब्रजकी बाल ॥

सो०-अंजन करि दृग एक, रह्यो एक अंजन बिना ।
रह्यो न कछू विवेक, भई विवश मुरली सुनत ॥

मुरलीसों हरि टेर बुलाई ❀ उपजी प्रीति सकल उठि धाई ॥
मुरलीध्वनि मारग गहि लीनो ❀ और कछू डर शोच न कीनो ॥
प्रेम स्वरूप सकल ब्रजनारी ❀ पंचभूत अवगुण ते न्यारी ॥
रोंकि रहे सुत पति पितु माता ❀ ते किमि रुकहिं अगम यह बाता ॥
चलीं ध्यान धरि हरि उर माहीं ❀ गृह वन कुंज रुकीं कहुँ नाहीं ॥
जो प्रारब्ध कर्म वश कोई ❀ राखी रोकि पतिन गृह सोई ॥
भयो विरहदुख तिनको ऐसो ❀ कोटिन जन्म कर्म फल जैसो ॥
पुनि धरि ध्यान हरिहि उर लायो ❀ कोटि स्वर्ग फल मानहुँ पायो ॥
यों करि भोग त्याग तनु बाला ❀ दिव्य देह धरि मिलीं गुपाला ॥
इहि विधि वन सब चलीं किशोरी ❀ लोक वेद मर्यादा तोरी ॥
आतुर निकसि चलीं सब ऐसे ❀ जरत भवन तजियत हैं जैसे ॥
एक एककी सुधि कछु नाहीं ❀ झुंडन चलीं श्याम पहँ जाहीं ॥

दो०-गृह गुरुजनतजिलाजताजि, ब्रजसुन्दरी निकाय ।
मुरली ध्वनि रस रँगरलीं, मिलींश्याम वनजाय ॥

१ वस्त्राभूषण । २ ज्ञान । ३ रस्ता । ४ देह । ५ समूह ।

सो०–नटवरवपु गोपाल, अधरसधर मुरलीधरे।
सन्मुख सब ब्रज बाल, देखि श्याम आनँदभरी॥
ब्रजयुवतिन लखि मुदितविहारी ❀ मोर मनहुँ छबि घटा निहारी॥
कनक वर्ण शशि मुख सब बाला ❀ पहुंचीं निकट जाय नँदलाला॥
विपिन सुहावन अति छबि बाढी ❀ भई जाय सन्मुख सब ठाढी॥
रहे चकित हरि छबि अवलोकी ❀ अटपट तनु शृंगार विलोकी॥
अद्भुत रूप देखि सुख पायो ❀ मनहीं मन अति हर्ष बढायो॥
अति आदर करि कुँवर कन्हाई ❀ बोले मंद मधुर मुसकाई॥
वाके वचन प्रेमरससाने ❀ प्रेम प्रतीत कसौटी माने॥
कहो अहो तिय ब्रज कुशलाई ❀ निशिकाहे वनको उठिधाई॥
अर्द्धराति कछु डर नाहिं कीन्हों ❀ ऐसो कहा काज मन दीन्हों॥
यह कछु भली करी तुम नाहीं ❀ निजपति तजि धाई वनमाहीं॥
वेदपंथ निदरचो तुम भारी ❀ जाहु अजहुँ घर बेगि सवारी॥
यह सुनिकै गुरुजन दुख पैहैं ❀ बहुरौ तुमको त्रास दिखैहैं॥
दो०-निज पति तजि परपतिभजै, तियकुलीननहिंहोय।
मरे नरक जीवत जगत, भलो कहै नहिं कोय॥
सो०–युवतिनको पति देव, कहत वेद हमहूं कहत।
करहु तिनहिंकी सेव, जो तुम चाहो सुख लह्यो॥
और कछू जियमें जिन राखो ❀ करिये वेद वचन जो भाखो॥
तजिकै कपट करहु पतिसेवा ❀ तियको पति तजि और न देवा॥
क्रूर कुपूत भाग बिन रोगी ❀ वृद्ध कुरूप कुबुद्धि वियोगी॥
ऐसेहु पतिको तिय जो त्यागै ❀ बडो दोष ताके शिर लागै॥
ताते मानहुँ कही हमारी ❀ जाहु सकल घरको ब्रजनारी॥
मात पिता तुम्हरे धौं नाहीं ❀ ऐसे कहि कहि हरि पछिताहीं॥
कैसे उन तुम आवन दीनी ❀ कैसी धौं यह विधि तुम कीनी॥
कै धौं कहि आई उन पाहीं ❀ कै धौं वे जानत हैं नाहीं॥
नव यौवन तुम सब सुकुमारी ❀ निशि बसिबो वन अनुचित भारी॥

जो यह बात सुनै ब्रज कोऊ ❀ हमैं तुम्हैं दूषण दिशि दोऊ ॥
अब ऐसी कीजो मति कबहूं ❀ करि विचार देखौ मन तुमहूं ॥
बार बार युवतिन भरमाई ❀ ऐसे सबसों कहत कन्हाई ॥
दो०-निठुर वचन सुनि श्यामके, युवतिउठींअकुलाय ।
चकित भई मन गुनिरहीं, मुख कछु वचन न आय ॥
सो०-बदन गयो मुरझाय, जनु तुषार कमलनपरो ।
शोच रहीं शिर नाय, खोई निधिं जनु पाइकै ॥
विरह विकल चिंता अति बाढी ❀ रहीं चित्र पुतरीसी ठाढी ॥
कपट खेल यह गिरिधर ठान्यो ❀ प्रेम विवश युवतिन नहिं जान्यो ॥
मनही मन विहँसत नँदलाला ❀ भई विरहव्याकुल ब्रजबाला ॥
सहि नाहिं सकीं दुसह यह पीरा ❀ बोलीं गद्गद गिरा अधीरा ॥
सुनहु श्याम सुंदर वर नायक ❀ यह जिन कहो नाहिं तुम लायक ॥
कोमल सुभग कमल मुख तातें ❀ कैसे कहत कटुक यह बातें ॥
लैलै नाम बुलायो सबको ❀ धर्म सिखावतहो अब हमको ॥
छांडि देहु पिय यह चतुराई ❀ करहु हेत जेहि भांति बुलाई ॥
कर्म धर्म श्रुति ताहि बखाने ❀ जो कोउ कर्म धर्म विधि जाने ॥
हम तो लोक वेद विधि त्यागी ❀ चरणकमल तुम्हरे अनुरागी ॥
सकल धर्ममय चरण तिहारे ❀ बसत सदा सो हृदय हमारे ॥
कहवावत हो अन्तर्यामी ❀ काहे यह समुझत नाहिं स्वामी ॥
दो०-अब यहतुमकोउचित नहिं, सुनहुश्यामसुखराश ।
मन हमरो अपनायकै, हमको करत निराश ॥
सो०-पाप पुण्य कह नाथ, यह तो हम जानैं नहीं ।
बिकी तुम्हारे हाथ, अधरामृतके लोभलागि ॥
अरु यह मृदु मुसकान तुम्हारी ❀ सकल धर्मकी मोहनहारी ॥
ऐसी को तिय ब्रजके माहीं ❀ जाको मन इन मोह्यो नाहीं ॥
जैसिय मुरली मिली सहाई ❀ जिन विधिकी मर्याद मिटाई ॥

१ पाला । २ अधीरवाणी ।

अब तो मृदु मुसकन मन मोहै ❀ पाप पुण्य जानति नहिं कोहै ॥
हमतो पति इक तुमको जानैं ❀ धृक जो और दूसरो मानैं ॥
कोटि करो अब भवनं न जाहीं ❀ तुम तजि हमहिं और प्रिय नाहीं ॥
जानत हो सब अन्तर्यामी ❀ काहे यह समुझत नहिं स्वामी ॥
मन बच कर्म तुम्हारी दासी ❀ मृदु मुसकान तुम्हारी प्यासी ॥
जरत सकल विरहानल ज्वाला ❀ सींचहु अधरामृत नँदलाला ॥
दीन कृपानिधि नाम तुम्हारो ❀ हमते दीन न और विचारो ॥
मृदु मुसकान दान अब दीजै ❀ दारुण बिरह दूर पिय कीजै ॥
जो नहिं मानत विनय हमारी ❀ तो यह तनु करि हैं बलिहारी ॥
दो०-विरह विकल लखिगोपिकन, कृपासिंधु भगवान ।
उमँगि उठे दृग भरि लिये, दीन बचन सुनि कान ॥
सो०-धनि धनि धनिब्रजबाल, कहतमनहिंमनहर्षिहरि ।
सदय हृदय गोपाल, बोले दुहुँ कर जोरि तब ॥
बोले प्रभुता डारि गोपाला ❀ धन्य धन्य तुम ब्रजकी बाला ॥
तुम सन्मुख मैं विमुख तुम्हारे ❀ दूर करो यह दोष हमारे ॥
मैं निर्दय बहु वचन बखाने ❀ तुम अपने जिय एक न आने ॥
मो कारण गृह कुटुँब बिसारो ❀ धनि धनि धनि यह नेम तुम्हारो ॥
लोकलाज शंका सब त्यागी ❀ मनवचक्रम मोसों अनुरागी ॥
यों कहि विहँसि मिले नँदलाला ❀ अंकम भरिलीनी सब बाला ॥
यदपि अकाम सदा सुखरासी ❀ तदपि भये रस प्रेम विलासी ॥
एकहि बार युवति सब भेंटी ❀ दुसह ताप विरहानल मेटी ॥
कह्यो विहँसि सबसों गिरिधारी ❀ करहु रासरस मिलि सुखकारी ॥
कृपादृष्टि अवलोकत नयनन ❀ हँसिहँसि सींचत अमृत बयनन ॥
चहुंदिशि हर्ष भरीं सब ग्वारी ❀ मध्य श्याम सुन्दर बनवारी ॥
विहरत बन विहार सुखदाई ❀ नवल गोपिका नवल कन्हाई ॥
दो०-हँसत करत बहुरस चरित, युवति वृन्दं लिये संग ।

१ घर । २ विरहाग्नि । ३ गोपियोंके झुंड ।

गये यमुन तट श्याम तब, क्रीडत कोटि अनंग ॥
सो०-सोहति अतिकमनीय, कोमल उज्ज्वल रेत तहँ ।
करी परम रमणीय, यमुनाजी निज पाणि रचि ॥
बहत समीर त्रिविधि सुखदाई ❀ कुसुम धूरि धूंधरि छबि छाई ॥
उडत सुगंध लपट चहुँओरा ❀ गुंजत भँवर चारुचितचोरा ॥
बैठे तहां श्याम सुखसागर ❀ कोटि काम मनमथन उजागर ॥
करत बिलासहास रसलीला ❀ कोटि अनंग रंग सुखशीला ॥
परिरंभन चुंबन कुच परसत ❀ हिय हुलास आनँदरस बरसत ॥
कामभाव गोपिन हरि ध्यायो ❀ कियो सबनके मनको भायो ॥
अस अद्भुत रस प्रेम बढायो ❀ बहुरि रासरस रँग उपजायो ॥
सुनि पिय वचन सकल अनुरागीं ❀ भूषण बसन सँवारन लागीं ॥
लखि उलटे भूषण सकुचानी ❀ निरखि परस्पर तिय मुसकानी ॥
नवशत साजि भई सब ठाढी ❀ परम प्रेम आनँद रस बाढी ॥
वंशीबट छबि धाम अनूपा ❀ कोटि कल्पतरुसम सुखरूपा ॥
तहां रच्यो रस रास कन्हाई ❀ भइ कपूरमय भूमि सुहाई ॥

छं०-भई भूमिकपूरमयरज, बरषि जलकुमकुमसिंची ।
परम कोमल सुभग शीतल, ज्योति मणिकञ्चनखिंची ॥
हर्षि तहँ घनश्याम सुंदर, रास मंडल विधि रची ।
वर्णिकापैंजायसो छबि, निरखि शारदगतिलची ॥
एक एकहि युवतिके बिच, मधुर मूरति श्यामकी ।
तिन मध्यजोरी रासनायक, राधिका घनश्यामकी ॥
एक रूप अनेक वपुधरि, सबनिके बिच राजहीं ।
करी यह लीला प्रगटप्रभु, मरम कोउ न जानहीं ॥
भई मंडल जोरि ठाढी, जात नहिं मुख छबि भनी ।

---

१ कामदेव । २ ठंढी, मंद, सुगंधवायु । ३ सरस्वती । ४ भेद ।

सहस बत्तिस उदित मानौ, मध्य घन दामिनि बनी ॥
दो०—तेहि अवसर ललना सहित, आये सुर मुनि सर्व ।
देवनटी किन्नरवधू, तुंबुरादि गंधर्व ॥
सो०—देखत चढे बिमान, हर्षि हर्षि बर्षत सुमन ।
करत मुदित मनगान, धन्य धन्य ब्रजयुवति कह ॥
सुरगण सब बाजंत्र बजावैं ❋ निरखत ब्रज संदर छवि पावैं ॥
नूपुर कंकण किंकिणि बाजैं ❋ मन्दमधुर मुरलीसुर गाजैं ॥
ताल मृदंग बीन मुँहचंगा ❋ सुरमंडल सारंग उपंगा ॥
तंत्र अनेक विविध गति साजैं ❋ मिले एक सुरसों सब बाजैं ॥
निर्तत पियसँग चंचल बाला ❋ जनु क्रीडत घन दामिनिजाला ॥
बिच बिच श्याम बीच ब्रज गोरी ❋ मरकत मणि कंचनकी जोरी ॥
सुभग तमाल तरुण नँदलाला ❋ कनकलतासम सबब्रजबाला ॥
करसों कर जोरे छवि छाजैं ❋ कोटि काम छवि निरखत लाजैं ॥
वृन्दावन उर मनहुँ विशाला ❋ लसत रासमंडलकी माला ॥
हरि ब्रजनारि परस्पर सोहैं ❋ कोटि काम रति को मनमोहैं ॥
मटक चलन गति नागर नटकी ❋ लटकन मुकुट लटक घूँघटकी ॥
जनु वन घन दामिनी वरूथा ❋ निरख नचत मोरनके यूथा ॥
छं०—नचत मानौ मोरयूथंन, मुकुट लटकन यों फबै ।
चलत गतिलै नागरिन संग, श्याम नटनागर जबै ॥
धरंणिपगपटकनिझंटकिकर, भौंहमटकनिकहिपरे ।
ग्रीव चालन हलन कुंडल, कर जु फेरन मनहरे ॥
मणि कंठ मुक्तामाल उर, बनमाल चरणन लौंबनी ।
वदनपंकज अलक श्रमकण, झलकछबिसकै को भनी ॥
पटपीत फरकनकाछनी, कटिलालकिंकिणिसोहई ।

१ नाचत । २ झुंड । ३ गोपिकाओंको । ४ पृथ्वी । ५ प्रस्वेदबिन्दु । ६ करिहांव ।

मलय[1] चित्रित बाहुभूषण, श्याम तन मन मोहई ॥
लखि रहत नँदलाल तियछबि, विविधविधिवेणीगुही ।
सुभग पाटी माँग मुक्ता, शीश फूलनि छबि रही ॥
जटित माल जरावबेंदी, उदित द्युति भ्रुवबंककी ।
ललित बेसरिनाक अंजन, नैन श्रुतिताटंककी ॥
अधर दशन कपोल चिबुकन, कंठ भूषणअतिबने ।
करत रास विलास अद्भुत, हरत मनमोहन मने ॥
दो०–कबहुँललितगतिलै चलत, नवल सुघर नँदनन्द ।
निरखि हर्षि तैसेइ चलत, नवलनागरीवृन्द ॥
सो०–कबहुँ विचक्षण वाम, लटकिलेतिनूतन गतिहिं ।
रीझि रसिक घनश्याम, तापर तन मन वारहीं ॥
नृत्यत अरस परस पियप्यारी ❋ बोलत बलिहारी बलिहारी ॥
कोउ कलध्वनि[2] पियके गुणगावै ❋ कोउ अभिनयकरि भाव बतावै ॥
कोउ संगीत कला गुण धारी ❋ कोउ उघटत चटकत करतारी ॥
निर्तत ताल भेद गति लीना ❋ सुघर एकते एक प्रवीना ॥
जात रसिकपियबिकि बिन मोलें ❋ जब थेइ ता थेइ ताथेइ बोलैं ॥
तान तरंग रंग उपजावैं ❋ लेत उपजअतिरस बरषावैं ॥
कबहुंक उघटत छैल कन्हाई ❋ फिरत लुब्ध जिमि बाल सुहाई ॥
गिरत मणिनके भूषण तनते ❋ झरत फूल जनु रूप लतनते ॥
लटकि लटकि नृत्यत अलबेली ❋ ग्रीव ग्रीव मंजुल भुजमेली ॥
कोउ पियके सँग मिल करि गावै ❋ कोउ मुरली को छीन बजावै ॥
काहू श्यामलेत भुज भरिकै ❋ तजैं कमलमुख चुंबनकरिकै ॥
रमत रास पियसंग छबीली ❋ परम प्रेम रसरंग रँगीली ॥
छं०–रस रँगरँगीली प्रेमके वश, रास रस पिय सँगकरैं ।

१ चंदन । २ नवीन । ३ मनोहरवाणी ।

निरखि देव प्रसून वरषहिं, हरषि उर आनँद भरैं ॥
धन्य ब्रज धनि बाल ब्रजकी, धन्य वन पुनि पुनि कहैं ।
करत रास विलास पूरण, ब्रह्म जहँ परगट अहैं ॥
शंभु अज सनकादि नारद, मुदित गुण गण गावहीं ।
निरखिछबिनिधिश्यामश्यामा, ब्रह्मसुखबिसरावहीं ॥
देव नारि बिसारि पतिगति, परस्पर कहि शोचहीं ।
ब्रजवधू विधि हमनकीनी, निरखि सुखमन लोभहीं ॥
कह भयो जो ऊरधबसी, अरु अमरपदवी जो लहीं ।
करत सुख जो श्याम सँग, ब्रजनारिसोत्रिभुवननहीं ॥
बार बार मनाय विधना, कहति यह वर दीजिये ।
होय दासी ब्रज वधुनकी, कृष्णपदरति कीजिये ॥
दो०-धनिधनिकहिबरषहिं सुमन, मुदितसकलसुरनारि ।
धनि मोहन धनि राधिका, धनि ब्रजगोपकुमारि ॥
सो०-धनि धनि रास बिलास, धनि सुंदरता धन्य सुख ।
धनि वृन्दावनवास, सुरललना विथकी कहत ॥
रमत रासरस गोपकुमारी ❀ नन्दनँदन पियकी सब प्यारी ॥
करति मान कोकिला लजावें ❀ हाव भावकरि पियहि रिझावें ॥
राग रागिनी समय सुहाये ❀ सहज बचन जिनके मनभाये ॥
गति सुगंध नितंत सब गोरी ❀ सहज रूपनिधि नवलकिशोरी ॥
महिपग पटकि भुजनलटकावें ❀ फंदा करन अनूप बनावें ॥
निरखिलेत उपजत छबिभारी ❀ रीझरहत लखिछवि गिरिधारी ॥
वेनी छुटी लटें बगराहीं ❀ अलकें बेसरसों उरझाहीं ॥
श्रमजलबिंदु बदन द्युतिकारी ❀ मनहुं सुधाकण चंदमँझारी ॥
अति बशहोत निरखि मनमोहन ❀ फिरत सबनके गोहनें गोहन ॥

---

१ ब्रह्मा । २ प्रसन्न । ३ बिथुरी । ४ अमृतबिन्दु । ५ साथ साथ ।

नारि नारि प्रति रूप प्रकासे ❀ एकहि रूप सबनको भासे ॥
अद्भुत कौतुक प्रगट दिखायो ❀ कियो सबनके मनको भायो ॥
नृत्यत अंग थकित भईं नागरि ❀ रूप प्रेमगुण परम उजागरि ॥

छंद०–भईं नितत थकित तरुणी, रूप गुणन उजागरी ।
उमँगि तब उरलाय लीनी, श्याम लखि नवनागरी ॥
गिरत डरते हार टूटे, निरखि प्रभुाह जनावहीं ।
लेति बीचहि गहि तिन्हैं, [१]महिमांझ परन न पावहीं ॥
अतिप्रीतिश्रमजलपीतपटसों, पोंछि पवन डुलावहीं ।
उरझि बेसरिसों रही लट, कमल कर सुरझावहीं ॥
देखि विह्वल गात भूषण, शिथिल अंग सँवारहीं ।
कहिकहिवचनमृदुपरस्पर, निज[२]पाणिश्रमहिंनिवारहीं ॥

दो०–ऐसी विधि ब्रज सुंदरिन, देत परम सुख श्याम ।
लखि पति गति स्वाधीन अति, भईं गर्विता वाम ॥

सो०–परम प्रेमकी खानि, रूप शील गुण आगरी ।
क्यों न करें अभिमान, जिनके वश त्रिभुवनधनी ॥

कहति भईं निज निज मन माहीं ❀ हमसम अरु न युवति जग माहीं ॥
अब गिरिधर हमवश करिपाये ❀ करत हमारे मनके भाये ॥
अब हमते नहिं ह्वैहैं न्यारे ❀ रहिहैं सदा समीप हमारे ॥
जोइ जोइ हम कहिहैं सोइ करिहैं ❀ सदा हमारे संग बिचरिहैं ॥
कोउ पिय अंस भुजनको दीन्हो ❀ कहति वचन यों गर्वहि लीन्हो ॥
सुनो श्याम मैं अतिश्रम पायो ❀ अब तो मोपै जात न गायो ॥
एक कहति मम पाँय पिराहीं ❀ मोपै नृत्य होत अब नाहीं ॥
एक कंठ भुजमेलि सयानी ❀ रही लटकि बोलत नहिं बानी ॥
ऐसे भाव गर्वके कीन्हें ❀ अंतर्यामी हरि सब चीन्हें ॥

---

१ धरती । २ हस्त ।

गर्व देखि मोहन मुसकाने ❋ मैं अवगति मोको नहिं जाने ॥
करत सदा भक्तन मन भाई ❋ एक गर्व श्यामहिं न सुहाई ॥
सो युवतिनके मनमें जानी ❋ दूरि करन हित यह जिय आनी ॥
दो०—प्रेम अभूषण कनकसम, मलिन गर्व ते होय ।
विरह अग्नि ताये विना; निर्मल होय न सोय ॥
सो०—यह विचार जिय आन, लेवृषभानुकुमारि सँग ।
ह्वैगये अन्तर्द्धान, ब्रजबासी प्रभु संगते ॥

अथ अन्तर्द्धानलीला.

प्रेम बढावनहित सुखदाई ❋ अन्तर कर वन दुरे कन्हाई ॥
गोपिन जब हरि देखे नाहीं ❋ चकित भई तब सब मन माहीं ॥
कहति एक कित कुँवर कन्हाई ❋ उठी सकल जहँ तहँ अकुलाई ॥
भई विकल कछु मरम न पायो ❋ पाय महाधन मनहुँ गवाँयो ॥
खोजत जहँ तहँ दृष्टि पसारैं ❋ अति आतुर चहुँ ओर निहारैं ॥
तब सबहिन मिलिकैं यह जानी ❋ लैगइ हरिको कुँवरिसयानी ॥
कछू हर्ष कछु रिस उर धारी ❋ देति भई हँसि रसकी गारी ॥
इन समान कपटी कोउ नाहीं ❋ करत सदा दुविधा हम पाहीं ॥
चलहु खोज कुंजनमें लैहैं ❋ जान कहां हमते वन पैहैं ॥
ढूंढन चलीं सकल वन माहीं ❋ चरणचिह्न खोजत सब जाहीं ॥
देखति जहँ तहँ फिरत अधीरा ❋ कोउ वन घन कोउ यमुना तीरा ॥
कोउ कुंजन कोउ पुंजन हेरैं ❋ श्याम श्याम करि कोऊ टेरैं ॥
दो०—इहि विधि सब खोजत फिरैं, विरहातुर ब्रजबाल ।
भई विकलपावत नहीं, कछु खोजत नँदलाल ॥
सो०—यदपि कियो हरि ख्याल, नेक दुरे वन कुंजमें ।
तदपि भई बेहाल, युवतिश्याम देखे विना ॥
पलकांतरविधिको दिन जिनको ❋ वन अंतर अतिबडदुख तिनको ॥

१ सोना । २ चौकन्ना । ३ राधिका । ४ पुकारैं । ५ बेचैन । ६ पलकमात्रब्रह्माकादिनसा ।

भई विरहव्याकुलचित जबहीं ❀ हरिपद चिह्न लखति भइँ तबहीं ॥
कुलिश[१]कमल ध्वज अंकुश जामें ❀ जगमगात बन थन महि तामें ॥
निकट चिह्न प्यारी चरणनके ❀ अरुणकमल दल सुभग वरनके ॥
वन्दन करन लगीं रज जोई ❀ शिव विरंचि याचतहैं सोई ॥
कछुयक धीरधरयो मन माहीं ❀ खोजलेति ताही मग जाहीं ॥
कुँवर कान्ह प्यारी सँगलीने ❀ फिरत सकल कुंजन रसभीने ॥
कबहुं कुसुम वनमाल बनावें ❀ निरखि हर्षि प्यारिहि पहिरावें ॥
कबहूं सुमन सवाँरत वेणी ❀ परम सुभग शोभाकी श्रेणी ॥
कबहुँ सरोज सुगंध सुँघावें ❀ नागरिमन अभिलाष बढावें ॥
कंठ कंठ भुज दोऊ जोरें ❀ वनदामिनि छूटति नहिं छोरें ॥
अति प्यारीके रसबसमोहन ❀ भौंह निहारत डोलत गोहन ॥

दो०-पतिहित लखिअनुकूलअति, हरषि लाडिलीहिय[२]।
तातें उपज्यो गर्व जिय, मैं अति प्यारी पीय ॥

सो०-एक प्राण द्वै देह, तहां गर्व कहँ पाइये।
यामें नहिं सन्देह, देहधरेको भाव यह ॥

तब प्यारी के मन यह आई ❀ मेरे ही वश कुँवर कन्हाई ॥
मेरे हित बाँसुरी बजाई ❀ मेरे हित सब तियन बुलाई ॥
मेरे हित रस रास उपायो ❀ सबहिन तजि मोसों मन लायो ॥
मो सम सुंदर चतुर उजागरि ❀ और नहीं युवती कोउ नागरि ॥
ऐसे गुणति मनहिं मनमाहीं ❀ ठिठुकि रहति गहि पियकी नाँही ॥
बैठि जात कबहूं मग माहीं ❀ कहति कि मेरे पाँय पिराहीं ॥
चलन कहत तुम जहां कन्हाई ❀ मोपै पगन चल्यो नहिं जाई ॥
नृत्य करत मैं अतिश्रम पायो ❀ तातें पग नहिं जात उठायो ॥
सुनहु मित्र मोहन सुखदाई ❀ कंध लेहु पिय मोहिं चढाई ॥
ऐसे तिय जब वचन बखाने ❀ गर्व जानि गिरिधर मुसकाने ॥
जहां गर्व तहँ रहत न कबहीं ❀ अंतर्द्धान भये हरि तबहीं ॥

१ वज्र। २ हृदय।

तुरतहि विकल भई अति प्यारी ❀ देखत दुरे चरित गिरि धारी ॥

दो०–चकित भई तब नागरी, गये कितै तजि श्याम ।
मनहीं मन पछितात अति, भूलीं तनसुधि वाम ॥

सो०–मैं कीनो अभिमान, नारि बुद्धि ओछी सदा ।
वे पिय परम सुजान, जान लई मो जीवकी ॥

भई विकल समुझत निज करनी ❀ सो वह दशा जाय नहि वरनी ॥
बिरहव्यथा बाढी अति तनमें ❀ परम अकेली रोवति बनमें ॥
नैनसलिल भीजत तनु सारी ❀ क्वासि क्वासि पिय कहति पुकारी ॥
हाहा नाथ अनाथ न कीजे ❀ वेगि श्याम मोहिं दर्शन दीजे ॥
मैं तुम कृपा पाय गरवानी ❀ ताते सकी सँमरि नहिं वानी ॥
सो अपराध क्षमा प्रभुकीजे ❀ यह दूषण मन माहिं न लीजे ॥
वेगि कृपा करि मिलहुदयाला ❀ अहो कमलदल नयनरसाला ॥
विरहविकल यों बदत अकेली ❀ रोवत सुनि खग मृग द्रुमबेली ॥
तहँ खोजति आई सब नारी ❀ दूरिहि ते देखी तिन प्यारी ॥
मुख शशि ज्योति रूपकी रासी ❀ जनु घन ते बिछुरी चपलासी ॥
द्रुम शाखा अविलंबिन ठाढी ❀ रुदन करति विरहा दुख बाढी ॥
व्याकुल चकित चहूँदिशिजोवै ❀ कमलचरण नख भूमि करोवै ॥

दो०–जिततितते धाई सब, ब्रजसुंदरि अकुलाय ।
व्याकुल अति लखिलाडिली, लीन्हीं कंठ लगाय ॥

सो०–कहां गये गोपाल, बार बार बूझति सबै ।
मुरछि परी तब बाल, मुखते वचन न आवई ॥

देखि दशा सब तिय अकुलानी ❀ बैठारी अंकम गहि पानी ॥
कहु राधा क्यों बोलति नाहीं ❀ काहे मुरछि परी महि माहीं ॥
या वनमें कैसे तू आई ❀ कहांगये तजि तोहिं कन्हाई ॥
निरखि वदन सबहिन दुख कीनों ❀ मनहुँ अमीनिधि अमृतदीनों ॥
कोऊ लगी सँवारन अलकैं ❀ कोउ अंचरते पोंछति पलकैं ॥

---

१ छिपे । २ अपनी । ३ आंसू । ४ शीघ्र । ५ हेरें । ६ गोद

नयन नीर कछु सुधि नहिं देही ❋ अतिव्याकुल बिन श्यामसनेही ॥
बूझति युवति कहां बनवारी ❋ चलिहैं तहां तोहिं लै प्यारी ॥
सुनत नाम पिय को अनुरागी ❋ विरह मोह निद्राते जागी ॥
जान्यो आये कुँवर कन्हाई ❋ नयन उघारि मिलन को धाई ॥
जो देखे तौ सब ब्रजबामा ❋ अतिही बिलखि उठी तब श्यामा ॥
कहत मोहिं त्यागी नँदनन्दन ❋ तुमहूं नहीं मिले जगबन्दन ॥
मैं अपने जिय गर्बभुलानी ❋ नहिं उनकी महिमा कछुजानी ॥
दो०–बोली पिय सों मन्दमति, मैं अभिमान बढाय ।
लीजै कंध चढाय मुहिं, मोपै चल्यो न जाय ॥
सो०-वे प्रभु परमसुजान, बिहँसि कह्यो मोहिं चढनको ।
ह्वैगये अन्तर्द्धान, अपनी चूक कहा कहैं ॥
गये श्याम धौं कित बनमाही ❋ मेरी दृष्टि परे कहुँ नाहीं ॥
कहति विकल नयननजलढारी ❋ मोको त्यागिगये गिरिधारी ॥
मुरछि परी धरणी अकुलाई ❋ श्यामविरह दुख सह्यो न जाई ॥
देखि दशा व्याकुल सब नारी ❋ कहति निठुर री अति बनवारी ॥
त्रिया पुरुषसों मान जु करहीं ❋ पुरुष नहीं ऐसी उर धरहीं ॥
देखहु श्याम तजी हम कैसे ❋ नाहिं बूझिये उनको ऐसे ॥
कहति राधिकासों ब्रजनारी ❋ मिलिहैं श्याम धीर धरु प्यारी ॥
चलीं आप खोजन सब बनमें ❋ बिरहविकलकछु सुधि नहिं तनमें ॥
टेरत जहँ तहँ घोषकुँमारी ❋ अहो रासपति कुंजबिहारी ॥
कहां दुरे पिय हमते भजिकै ❋ जातप्राण तुमविनुत तुतजिकै ॥
क्षमाकरो प्रभु चूक हमारी ❋ मिलहु कृपाकरि बेगि मुरारी ॥
तुमबिन हमको सुनहु कन्हाई ❋ क्षण क्षण कल्पसमान बिहाई ॥
दो०–जरत सकल तुम दरश बिन, विरहअग्नि तनु वाम ।
मंद मधुर मुसकनिसुधा, बरषि बुझावो श्याम ॥
सो०-सकल विश्वसुख धाम, गावत तुमको जगत सब ।

१ प्रभाव । २ ग्वालसुताएँ । ३ बीतताहै ।

तिन्हैं होत कत बाम, जो दासी बिन मोलकी ॥

सदा हमारी रक्षा कीनी ❀ गरल अनल जलते रखलीनी ॥
अबकत निठुर होत हो प्यारे ❀ विरह जरावत गात हमारे ॥
कतहि फिरत बन चरण उघारे ❀ गडिहैं कुश कंटक अनियारे ॥
तुम पद बसत हमारे हियमें ❀ ते कंटक शालतहैं जियमें ॥
अहो नाथ यह कह जिय धारी ❀ सुखदेके दुख देत मुरारी ॥
ऐसे कहति सकल बन डोलैं ❀ अलबल वचन बदनते बोलैं ॥
अति अकुलाय गईं मनमाहीं ❀ जड चेतन कछु समुझत नाहीं ॥
बूझति बन विटपनसों धाई ❀ तुम कहुँ देखे कुवँर कन्हाई ॥
अहो कदम अहो अंब तमाला ❀ हमहिं बताओ कित नँदलाला ॥
अहो जुही मालती निवारी ❀ लखे कहूं इतजात बिहारी ॥
हे चंपक हे श्रीफल कदली ❀ हे दाडिम हे जामुन बदली ॥
तुम देखे मनमोहन लाला ❀ श्यामकमलदल नयन विशाला ॥
हे पलाश हम दास तुम्हारी ❀ कहो कहां सुखरास बिहारी ॥

दो०—हे अशोक हरि शोक तुम, सत्य करो निज नाम ।
लेत नहीं यस हेपनँस, क्यों न कहत कित श्याम ॥

सो०—हे मन्दार उदार, हेपीपर हर पीर मम ।
कह कित नन्दकुमार, सुन्दर घन तन सांवरो ॥

हे चन्दन तनु जरत जुडावो ❀ नन्दनँदन पिय हमहिं बतावो ॥
हे अवनी चितचोर हमारे ❀ कितराखे नवनीत पियारे ॥
तुमते दूरि कहूं हरि नाहीं ❀ क्यों न मिलायदेत हमपाहीं ॥
कहि धौं कुंद मुकुंद कहाँहैं ❀ हमको देहु बताय जहाँहैं ॥
हे वट नटनागरहि बताओ ❀ कहूं निकट नँदसुवन दिखाओ ॥
कहु धौं मृगी मया करि हमको ❀ पूछति हम हाहाकरि तुमको ॥
देखियत डह डहे नयन तुम्हारे ❀ तुम कहुँ मोहनलाल निहारे ॥
हे दुखदमन परम सुखकारी ❀ कहियत गति सर्वत्र तुम्हारी ॥

१ विष । २ अग्नि । ३ गडत । ४ कटहर । ५ बरगद ।

जहां होयँ बलबीर बिहारी ❀ कहति जाय किन व्यथा हमारी ॥
हे तुलसी तुम तौ सब जानो ❀ क्यों नहिं हरिसों प्रगट बखानो ॥
तुम तौ सदा श्यामकी प्यारी ❀ कहति नहीं यह दशा हमारी ॥
बोलत नहिं कोउ कहत तरुनको ❀ ले गये श्याम इनहूँके मनको ॥

दो०-इहिं विधि वन घन ढूंढि सब, ब्रजतिय विरहउदास ।
इत उतते फिर आवहीं, कुँवारि राधिका पास ॥

सो०-मनहुँ नीर विन मीन, अति ब्याकुल तरफत परी ।
श्याम बिरह अति दीन, कनक लतासी नागरी ॥

व्याकुल कहति सकल ब्रजबाला ❀ अजहूं नहिं आये नँदलाला ॥
कहा करे अब कितको जैये ❀ श्याम विना कैसे सुख पैये ॥
तब सब बहुरि यमुनतट आई ❀ जहां रसिक पियरास रमाई ॥
बैठीं सब राधा ढिग बामा ❀ कहन लगीं हरिके गुणग्रामा ॥
सबके ढिग हरि सोहत कैसे ❀ दृष्टि बन्द करि नटवर जैसे ॥
युवति नहीं कोउ उनको देखैं ❀ हरि सबहीकी लीला पेखैं ॥
देखि देखि मन अति सुख पावें ❀ परम प्रीति रस रीति बढावें ॥
करत चरित्र विचित्र विहारी ❀ सदा श्याम भक्तन सुखकारी ॥
विरहअग्नि तनुगर्व जरावैं ❀ निर्मल प्रेम भक्ति उपजावैं ॥
गोपी जन सब हरिकी प्यारी ❀ नेक नहीं कहुँ हरिते न्यारी ॥
कहति श्याम ब्रज प्रगटे जबते ❀ देत सबनको सब सुख तबते ॥
तिनमें हम सब उनकी दासी ❀ क्यों हमतजि हरिभये उदासी ॥

दो०-व्यांधहुते करनी कठिन, हमते ठानी श्याम ।
वेणु बजाय बुलाय सब, वधतमृगीज्यों वाम ॥

सो०-कीजै कौन उपाय, मोहनमुख देखे विना ।
मरति मसोसा खाय, यह मन गीध्यो माधुरी ॥

सदा हमारे मनको भावे ❀ तिरछीचितवनिचितहिचुरावे ॥
जब अति बालक हुते मुरारी ❀ बाल विनोदें किये सुखकारी ॥

१ बहेलिया । २ हारिणी । ३ चारित ।

खेलतमें बहु असुर सँहारे ❀ विघन अनेक न ब्रजके टारे ॥
अद्भुत चरित मनोहर कीनो ❀ गिरिवरधर ब्रजको रखि लीनो ॥
हलधर सखन संग मुरली धरि ❀ गोचारन वन जात जबहिं हरि ॥
तब हमको बीतत दिन जैसे ❀ जानत है हमरो मन तैसे ॥
कुंडल मुकुट केश घुंघरारे ❀ गोरज रंजित दृग अनियाँरे ॥
पीत वसन वनमाल विशाला ❀ वेणु बजावत मधुर रसाला ॥
सखन मध्य गौअनके पाछे ❀ चंदन चित्र सुभगतनु आछे ॥
साँझ समय आवत जब देखैं ❀ तब हम जन्म सफल करि लेखैं ॥
ऐसे कथत सकल ब्रजनारी ❀ हरि गुण रूप कथा विस्तारी ॥
समुझत कहत श्याम गुणरूपा ❀ उपजी उर अति प्रीति अनूपा ॥

दो०—भूलि गई सुधि देहकी, भयो विरह दुख औन ।
केवल तनुमय ह्वै गई, नहिं जानति हम कौन ॥

सो०—भृंगी कीट समान, मगन ध्यान रस नागरी ।
बिसरो सकल सयान, भई आपुही कृष्णतन ॥

लागीं करन चरित सब हरिके ❀ पूरण प्रेम भई गिरिधरके ॥
ये लीला उनहींको सोहैं ❀ नेक नहीं जानति हम कोहैं ॥
एक भई दधिचोर कन्हाई ❀ एक पकरि गहि भुज लै आई ॥
एक यशोमतिको वपु धरिकै ❀ बांधति है ऊखलसों हरिकै ॥
इक भइ गाय एक गोपाला ❀ बोलति वैसेइ बचन रसाला ॥
कारी धोरी धूमरि कहिकै ❀ हटकतिफिरति लकुट करगहिकै ॥
कहति एक अंबर गिरिधारी ❀ गाय गोप सब रहौ सुखारी ॥
कहति एक मूंदो सब लोचन ❀ मैं करिहौं दावानल मोचन ॥
एक यमल अर्जुन तरु भंजै ❀ एक बकासुर वदन विभंजै ॥
एक वस्त्रको नाग बनाई ❀ तापर निरत करत हरषाई ॥
एक दहीको दान चुकावै ❀ इक त्रिभंग ह्वै वेणु बजावै ॥
मगन भई सब या रसमाहीं ❀ तनु अभिमान रह्यो कछु नाहीं ॥

१ मारे । २ बाळ । ३ पैने । ४ बंशी । ५ नाश ।

दो०-अंतरनेकु रह्यो नहीं, भई श्याम ब्रज वाम ।
तब अंतर नहिं करि सके, भये निरंतर श्याम ॥
सो०-प्रगट भये ततकाल, तिनहीं मधि नँदलाडिले ।
सुन्दर नयन विशाल, गोपीजन वल्लभ सुखद ॥
प्रेम मगन अति आतुरताई ❋ श्रीवृषभानुकुँवरि उर लाई ॥
देखि प्रगट दरशन गोपाला ❋ मिलीं धाय आतुर ब्रजबाला ॥
जो धनराशि परी कहुं पावै ❋ लोभी जन लूटनको धावै ॥
लपटी एक धाय उर माहीं ❋ एक मिलत ग्रीवा दै बाहीं ॥
कोऊ परी चरण पर आई ❋ कोऊ अंग रही लपटाई ॥
कोऊ गहि उरपंकज लावैं ❋ तप्त विरहकी ताप नशावैं ॥
कोउ लटकी गहि भुजा नवेली ❋ जनु शृंगार विटप छवि बेली ॥
कोऊ मुख छवि रही निहारी ❋ कोऊ रही चरण उर धारी ॥
कोऊ दृग भरि कहत भले हरि ❋ एक पीत पट छोर रही धरि ॥
हरि सों मिली लसतियों भामिनि ❋ जनुवनघनघेरचो बहु दामिनि ॥
कहुं अंजन कहुं कुंकुम रेखा ❋ कहूं पीककी लीक सबेखा ॥
युवतिन मध्य लसैं हरि प्यारे ❋ कृपा दृष्टि सब ओर निहारे ॥
दो०-पुनि बैठे हरि हर्षि तहँ, युवति वृन्द चहुँ पास ।
सबके सन्मुख राजहीं, सुन्दर छवि घनरास ॥
सो०-बोले बिहँसि गोपाल, हँसत कियो यह ख्यालहम ।
कतहि भई बेहाल, तुम प्राणन ते मोहिं प्रिय ॥
सकुचीं सुनि प्यारी यह वानी ❋ मन जान्यों नहिं प्रगट बखानी ॥
कहि कहि कोमल वचन कन्हाई ❋ सबको दुख डारचो बिसराई ॥
अति आनंद सबनको दीनो ❋ सफल मनोरथ सबको कीनो ॥
जाके साधहुती जिय जैसी ❋ पूरण करी श्याम मन तैसी ॥
भये कान्ह प्रीतम अनुकूले ❋ बढचो अनंद सकल दुख भूले ॥
तब हरिसों सब नवलकिशोरी ❋ पूछनलगीं बिहँसि कर जोरी ॥
प्रेम प्रीतिकी रीति सुहाई ❋ हमैं कहो समुझाय कन्हाई ॥

इक जो प्रीति परस्पर कहिये ❀ एक एक ही दिशि ते लहिये ॥
एक दुहुनको मानत नाहीं ❀ ताको कहा कहत जग माहीं ॥
उत्तम प्रीति कहावति जोई ❀ कहहु श्याम हमसों तुम सोई ॥
हम अबला जानति कछु नाहीं ❀ ताते पूछति हैं तुम पाँहीं ॥
सुनि गोपिनके वचन रसाला ❀ भये प्रेम वश परम कृपाला ॥

दो०-यदपि जगत गुरु अजित प्रभु, जानराय ब्रज चंद।
प्रेम विवश हारे तदपि, अपने सुख नँदनन्द ॥

सो०-कहत भये तब कान्ह,सुनहु प्राणवल्लभ प्रिया ।
नहिं तुम सम कोउ आन्ह, निपुण प्रेमकेपंथमें ॥

तद्यपि तुम पूछति हो जैसे ❀ प्रगट करौं लक्षण सब तैसे ॥
एक जो प्रीति परस्पर होई ❀ स्वारथ हेतु करत सब कोई ॥
जैसे पशू पशूको जाने ❀ आपुसमें अतिहित करमाने ॥
सो वह प्रीति कनिष्ठ कहावै ❀ जासों सब संसार बँधावै ॥
दूजी प्रीति एक दिशि जोई ❀ करति धर्म अधिकारी सोई ॥
जैसे मात पिता चित धरिकै ❀ रक्षत हैं सुतके हितकरिकै ॥
सो वह मध्यम प्रीति कहावत ❀ उत्तम गति ताते जन पावत ॥
जो यह दोउनको नहिं जाने ❀ गुण दूषण कछु उरनहिं आने ॥
तिन्हें सुनो मैं कहत बखानी ❀ कै कृतज्ञ कै पुनि अज्ञानी ॥
उत्तम प्रीति जानिये सोई ❀ अर्नायास उपजत उर जोइ ॥
दुहुँदिशि हठकरि प्रीति बढावै ❀ नहिं निमित्ततामें कछु आवै ॥
अन्तर नेक परै नहिं कोई ❀ प्रीति पुनीत जानिये सोई ॥

छं०-नहीं अंतर नेकु जा मधि, प्रीति उत्तम सो कही ।
करी मोसों तुम सबन सोइ, मैं ऋणी तुम्हरो सही ॥
करहुँजोउपकारतुमप्रति, कोटि कोटिनजग भरी ।
कबहुँ होहुँन उऋण तुमते, हे प्रिया ब्रज सुंदरी ॥

---

१ माणप्यारी । २ प्रेममार्ग । ३ छोटी । ४ अकस्मात् । ५ अनरस । ६ बीच । ७ कर्जी ।

करै ऐसी कौन जैसी, तुमन जो करनी करी।
लोक वेद मर्याद ममहित, तोरि तृणसम परिहरी॥
करहु मनते दूर अब यह, दोष मैं तुमते कियो।
प्रिया अंतर परम सुखमें, विरह दुख तुमको दियो॥
दो०—ऐसे प्रेमाधीन है, कहि कहि बचन रसाल।
दूरकरी युवतीनके, मनते गांस गुपाल॥
सो०—बाढ्यो परमानंद, ब्रज बासिन प्रभु वचन सुनि।
परम मुदित तिय वृंद, प्यारी प्रिय नँदनन्दकी॥

अथ महामंगलरासलीला.

सुनि पियके मुखकी रसवानी ❋ गोपी जन सब मन हरषानी॥
हँसि हँसि बहुरि लाल उरलाये ❋ मनते सब सन्देह मिटाये॥
देखि सबनकी प्रीति कन्हाई ❋ बहुरि रासरस रुचि उपजाई॥
वैसोइ सुख सबको उपजायो ❋ वही भाव सबके मन भायो॥
यह जान्यो सबहिन तबहीते ❋ करत रासरस पिय सबहीते॥
अन्तर्धान चरित सब भूलीं ❋ वैसइ आनँदके रस फूलीं॥
बहुरि रासमंडल विधि जोरी ❋ बिच बिच श्याम बीच बिच गोरी॥
वैसइ मधि नायक हरि राधा ❋ वहे परस्पर प्रीति अगाधा॥
वैसइ मुरली श्याम बजाई ❋ वैसइ थकित भयो उडराई॥
वैसइ सुरविमान नभ सोहैं ❋ वैसइ सुर मुनि गंध्रब मोहैं॥
वैसइ खग मृग नव द्रुम वेली ❋ वैसइ यमुना पुलिन सुहेली॥
वैसइ पवन त्रिविध सुखदाई ❋ वही रास रस रूप निकाई॥
छं०—करै वैसोइरासरसपुनि, युवतिअति छबि छाजहीं।
गौर अंग किशोर वेष, सुदेखमुख शशि राजहीं॥
जोरि पंकज पाणि बाहु, मृणाल मंडल साजहीं।
मध्य सबके श्याम श्यामा, रूप राशि विराजहीं॥

१ खटक, चिन्ता। २ चन्द्र।

मुकुट कुंडल वसन भूषण, बरण अंगन राजहीं ।
अंग अंग अनंग रति लखि, कोटि कोटिन लाजहीं ॥
चरणनूपुरकिंकिणी कटि, बलय नूपुर बाजहीं ।
बीन ताल मृदंग चंग, उपंग सुर सुख साजहीं ॥
दो०–अरस परस निरखत छबिहि, भरे प्रेम आनन्द ।
नवल नागरी ब्रजबधू, नव नागर नँदनन्द ॥
सो०–रहे निरखि सुर भूल, सहित सुन्दरी मग्न सुख ।
पुनि पुनि बरषत फूल, धन्य धन्य ब्रजकहि मुखन ॥
सोहति हरि मुख मुरली कैसे ❀ करि दिग्विजय नृपति वर जैसे ॥
बैठि पाणि सिंहासन गाजे ❀ अधर छत्र शिर ऊपर राजै ॥
चमर चहूँदिशि चिकुर सुहाये ❀ बेतपाणि कुंडल छबि छाये ॥
वलि वलि बरजत हैं सब काहू ❀ कहत निकट कोऊ मति जाहू ॥
दूरहिते सब करत जुहारैं ❀ सन्मुख आदर सहित निहारैं ॥
मधुकर पिक बंदी गुणगावैं ❀ मागध मदन प्रशंसि सुनावैं ॥
मान महीपति बलमथि मान्यो ❀ युवती यूथ जीत गहि आन्यो ॥
बिनहिं पनच बिनही कोदंडा ❀ स्वर शर भेद कियो ब्रह्मंडा ॥
ब्रह्मा शिव सनकादिक ज्ञानी ❀ बोलत हैं सब जय जय बानी ॥
नारि पुरुष जडजंगम जेते ❀ किये सकल अपने वश तेते ॥
थक्यो पवन जल अनल सिरानी ❀ विधि कृत मेटि आपनी ठानी ॥
निज निज ठकुरायनकी रेखा ❀ बांचि सकल वश भये बिशेखा ॥
दो०–रच्यो राजसूयज्ञ रस, रास बिपिन शुभधाम ।
तहँ अधिकारी साँवरो, मोहन सुन्दरश्याम ॥
सो०–सबहिनको सुखदेत, दान मान रस प्रेमको ।
बढ्यो माधुरी हेत, परमानंदित लोग सब ॥
गावत गोपी सँग सब जुरली ❀ बाजत मधुर मधुर सुर मुरली ॥
राग रागिनी प्रगट दिखावैं ❀ जे सब रूप अनूपम गावैं ॥

१ चलअचल । २ वन ।

अति प्रवीन पियको मनमोहैं ❀ नृत्य करति सुन्दर सब सोहैं ॥
नाचत कबहुं श्याम अरु श्यामा ❀ रीझति निरखि सकल ब्रजवामा ॥
लै गति चलत परस्पर दोऊ ❀ सो छबि वरणि सकै कबि कोऊ ॥
होडा होडी रंग बढावैं ❀ तडपलेत शोभा अति पावैं ॥
उरझी कुंडल बेसर सों लट ❀ पीतवसन बनमाल रहीसट ॥
उरझे मन मन वैनन बैना ❀ लटकीली छबि उरझे नैना ॥
नाचत युगल चपल गिरिधारी ❀ प्रेमउरझ उरझे पिय प्यारी ॥
उरझी गोपीजन लखि शोभा ❀ नहिं निरवारि सकत मन लोभा ॥
अति रस रंग बढ्यो सुख भारी ❀ थेइ थेइ बदति मुदित ब्रजनारी ॥
मगन सकल रस सिंधु निहोरैं ❀ रीझि रीझि तन मन धन वोरैं ॥

छं०-मगन सब रसरास सुखनिधि, हर्षि तनमनवारहीं ।
हिय हुलास न जायकहि छबि, राजयुगल निहारहीं ॥
कीन्हेंजु तप जिहिं हेतु बारह, मास सो पति पाइयो ।
तब मंत्रकीनों व्याहको, सब सखिन मंगल गाइयो ॥
ललित कुंज बितान सुभग, लतान मंडप द्युतिबनी ।
बहु रंग बंदवार चहुं दिशि, चारु सुमननछविघनी ॥
अति विचित्र पवित्र यमुना पुलिन शुभ वेदीरची ।
वर्णन सकै छबिकौन विधि, तिहुंलोकशोभाकीसची ॥

दो०-तहँ नँदनन्दन लाडिलो, श्रीवृषभानुकुमारि ।
दूलह दुलहिनि राजहीं, शोभा अमित अपारि ॥

सो०-भरीं परम उतसाह, ललितादिक ब्रजसुन्दरी ।
प्रीति रीतिकी चाह, लागी करन विवाह विधि ॥

मोर मुकुट रचि मौर बनायो ❀ सो शिर धर गिरवर धर आयो ॥
तन घनश्याम पीतपट सोहैं ❀ घन दामिनि ताके ढिग मोहैं ॥

---

२ निछावरकरैं । २ सुखसमुद्र ।

वनमाला गरमाहिं विराजै ❋ निरखत इन्द्र धनुष द्युति लाजै ॥
ललित अंग तनु भूषण जाला ❋ कुंडल झलकन नयन विशाला ॥
सकल कला गुण रूप निधाना ❋ त्रिभुवनसुन्दर परम सुजाना ॥
जाके मन्मथ सैन बराती ❋ फूले विटप सुमन बहुभांती ॥
करिकोलाहल पिक शुक बोलैं ❋ मंजुमोर निर्तत सँग डोलैं ॥
नभसुरपति दुंदुभी बजावैं ❋ नाचत किन्नर गंध्रब गावैं ॥
वर्षत सुरगण सुमन सुहाये ❋ ब्रजतियकरति सकल मनभाये ॥
कुँवरि लाडिली सुभग सँवारी ❋ गोरे अंग चूनरी सारी ॥
नखशिख मणि भूषण छविछाजैं ❋ मुख शोभा लखि उडपति लाजैं ॥
प्रीतिरीति जहँ हितकरि गानी ❋ सो शुभघरी विधाता बानी ॥

छं०-शुभ घरी सोवानीविधाता, हेतजिहिदृढ व्रतलियो ।
शरदनिशिपून्योविमलशशि, निरखिअतिप्रफुलितहियो ॥
अधर मधुमधुपर्क कहिकै, पाणिग्रहणसुविधिकरी ।
पढत नभ विधि वेद वाणी, सुरन जय धुनि उच्चरी ॥
तब अलिनहँसिकै गांठि जोरी, प्रेम गांठि हिये परी ।
सहस सोरह संग सखियां, फिरति भांवरि रस भरी ॥
बढ्यो अति आनंद उरमधि, साद सब पूरणभई ।
मदन मोहनलाल दूलह, राधिका दुलहिनि नई ॥
दो०-निरखि देव वरषैं सुमन, हरष न हिये समात ।
वृन्दावन रसरास सुख, लखि सुरवधू सिहात ॥
सो०-हमसों यह सुख दूरि, कहत परस्पर सुरन गण ।
क्यों उडि लागै धूरि, धनि ब्रजवासी धन्य ब्रज ॥

सोहति युवतिवृन्द मधि जोरी ❋ नवनागर वर नवलकिशोरी ॥
शोभा अमित पार को पावै ❋ निरखत बनै कहत नहिं आवै ॥

१ कामदेव । २ हल्ला । ३ निर्मल ।

दूलह श्याम दुलहिनी राधा ❀ रूपसिंधु दोउ परम अगाधा ॥
रागभीनि रँगभीने दोऊ ❀ अतिआनंद उमँगि सब कोऊ ॥
प्रेमरंग भीनी ब्रजनारी ❀ निरखि युगलछबि होहिं सुखारी ॥
भरी प्रीतिरस गारी गावैं ❀ लखि लखि पिय प्यारी सुखपावैं ॥
हास विलास मोह उपजावैं ❀ बार बार दंपति गुणगावैं ॥
विविध भांति दुंदुभि नभ बाजैं ❀ निरत कला रंभादिक साजैं ॥
हंस मोर पिक चातक बोलैं ❀ वन मृग निकट संग सब डोलैं ॥
वारति तिय भूषण हरषाई ❀ बनके मृगन देति पहराई ॥
तब इक सखी भई नँदराई ❀ इक वृषभानुरूप धरि आई ॥
अतिहित मिले महर दोउ धाई ❀ तब बिनती वृषभानु सुनाई ॥

छं०-तब जोरिकर वृषभानुविनयो, सुनहु श्रीनँदरायजू ।
हम भये सकल सनाथ अब, सब कृपा तुम्हरी पायजू ॥
अतिबडे पुण्यते मिले तुमसे, सगे सुखके सिंधुजू ।
शिरमौर गोकुल चंद, आनँदकंद सब जग वंदजू ॥
तुमगेह मंजनहेत कन्या, हम न तुम समयोगजू ।
निज दासकरि सब जानिये, वृषभानु पुरके लोगजू ॥
अष्टसिधि नवनिद्धि संपति, सकल सुखके खानजू ।
ऐसे विनयकरि नंदके, चरणन गहे वृषभानजू ॥
तब नंद अति आनंद भरि, बोले सहित अनुरागजू ।
सुनहु श्रीवृषभानुजू, तुम धन्य अति बडभागजू ॥
तुमसे समुद्र न सो सुनहु, संबंध मांगि न पाइये ।
परम निर्मल यश तुम्हारो, लोक लोकन गाइये ॥
अति नेह कान्हर सों तुम्हारो, प्रीति पहिली यह भई ।
दई कन्या करि कृपा, गुण रूप सुख शोभामई ॥
पूरे मनोरथ सकल अब हम, बडे सब भाँतिन भये ।

वृषभानु नंद अनंद प्रमुदित, परस्पर चरणन नये ॥
दो०—मन मन हरषित नागरी, नागर नवलकिशोर ।
लखिरसरीति सखीनकी, प्रेमप्रमोद न थोर ॥
सो०—बिलसत अति आनंद, ब्रजबिलास ब्रज नागरी ।
प्रीति विवश ब्रजचंद, कोकहिसके सुहाग सुख ॥
करत मनोरथ सब मन भाये ❋ त्रिभुवनपति दूलह करि पाये ॥
व्याहरीति सब करि ब्रजनारी ❋ गावति यशुमति को रस गारी ॥
तब कंकण छोरन विधि कीनी ❋ रचि पचि गांठि चतुरतियदीनी ॥
कहत श्याम सों छोरो कंकन ❋ परमानंद मुदित गोपीजन ॥
बडे चतुर तौ खोलहु गिरिधर ❋ यह न होय धरिबो गिरिको कर ॥
कै छोरो कै दोउ कर जोरो ❋ दुलहिनिके परिपायँ निहोरो ॥
बडे कहावत हौ ब्रजनाथा ❋ काहे कँपनलगे दोउ हाथा ॥
छोरहु बेगि की सुनहु कन्हाई ❋ पठवहु यशुमति माय बुलाई ॥
दोऊ परस्पर कंकण छोरैं ❋ प्रेम उमँग उर हर्ष न थोरैं ॥
पचिहारे कंकण नहिं छूटत ❋ निरखि हर्षि ब्रजतियसुखलूटत ॥
कहत सहायकरो जिन कोऊ ❋ कंकण छोरहिं आपहि दोऊ ॥
दुलहिनि दूलह कंकण खोलैं ❋ कै वृषभानु बबाको बोलैं ॥
दो०—कमल कमल परशो जनो, पाणि लाडिली लाल ।
लखि कबिकुल सांचे लगत, रोम कटीली नाल ॥
सो०—दूलह नंदकुमार, दुलहन श्रीराधा कुवँरि ।
सन्तन प्राण अधार, अविचल यह जोरी सदा ॥
यह रस रास चरित हरि कीनो ❋ ब्रज युवतिन वांछित फल दीनो ॥
ब्रजतिय सुख हित कुंजविहारी ❋ करी मास निशिषट उजियारी ॥
साद नहीं युवतिन मन राखी ❋ श्रीभागवत कह्यो शुक भाखी ॥
वेद उपनिषद साख बतावैं ❋ ब्रह्मा शंभु सहसमुख गावैं ॥
नारद शारद ऋषय अनंता ❋ कहत सुनत गावत सब संता ॥

१ भोगत । २ लीला ।

सोरह सहस गोप सुकुमारी ❀ तिनके संग लाल गिरिधारी ॥
कियो रासरस रहस अगाधा ❀ पूरणकरी सबनकी साधा ॥
हाव भाव रस रास बिलासा ❀ नैन सैन मुख वचन प्रकासा ॥
भुजभरिमिलन अधररस चाखन ❀ नृत्य गानरस रुचि संभाखन ॥
क्षण क्षण बढति अधिक रसरीती ❀ इहविधिरैनि करत सुख बीती ॥
भयो समय ब्राह्मी[१] शुभ काला ❀ रास रमत भईं श्रम सब बाला ॥
तब श्री यमुना गे नँदलाला ❀ सोहत संग सकल ब्रजबाला ॥

छं०-सोहत सकल ब्रजबालसँग, नँदलालतबयमुनागये ।
शरदनिशिरसरास करि, पूरण मनोरथ सब भये ॥
जैसे महा मद मत्तगज[२], वरयूथकरणिनि[३]सँग लिये ।
फिरत बनसर[४]सरित[५]क्रीडत, निदरिअतिनिर्मलहिये ॥
जिमिनंदसुतजगबंद आनँद, कंदरसनिधिश्यामये ।
मेटि श्रुतिमर्याद ब्रज तिय, प्रेम सब आनँद भये ॥
रमत बृन्दावन यमुनरस, केलि अति सुख मानई ।
दास ब्रजबासी प्रभू गुण, नाग नर सुर गानई ॥

दो०-धनि बृन्दाबन धन्य सुख, धन्य श्याम धनि रास ।
धनि धनि मोहन गोपिका, नितनव करत बिलास ॥

सो०-नहिं सुरपुरसमतूल, बृन्दाबन सुख एक फल ।
कहि कहि बरषैं फूल, सुरगण मन आनँद भरे ॥

यमुना जल क्रीडत नँदलाला ❀ सोलहसहस संग ब्रजबाला ॥
मधि राजत दोऊ वहँ जोरी ❀ दंपति गौर सांवरी गोरी ॥
कोऊ कटिलौं जल सुख साजै ❀ कोउउरग्रीवालौं छबि छाजै ॥
ताकी उपमा कबि किमि कहहीं ❀ अति आदर छबि पार न लहहीं ॥
छिरकत पानि परस्पर सोहैं ❀ नंदनँदन पियको मन मोहैं ॥

---

१ ब्रह्ममुहूर्त । २ हाथी । ३ हथिनी । ४ तालाब । ५ नदी ।

सलिलशिथिल सोहत नँदनन्दन ❀ सुन्दर भाल कुमकुमा चन्दन ॥
पँचरँग भयो यमुनजल जाते ❀ छबिमय लहरि उठतिहै ताते ॥
रूप छटासी तिय गण जामें ❀ करत बिहार लिये घनश्यामें ॥
एक एक अँग भरि भरि लेहीं ❀ हास बिलास करत छबि देहीं ॥
एकनलै अथाह जल डारें ❀ सुख व्याकुलता रूप निहारें ॥
इक भाजत इक पाछे धावें ❀ एक श्यामढिग पकरि लयावें ॥
कंठ लगाय लेत पियताही ❀ सो सुख कबिसों कह्यो न जाही ॥

दो०–करतकेलियमुनासलिल, ब्रजललनासँगश्याम ।
निशिश्रममिटिआलसगयो, भयेसुखीसुखधाम ॥

सो०–अलखलखीनहिंजाय, अविगतिकीगतिकोकहै ।
योगी सकत न पाय, सो भोगी ब्रजतियनको ॥

जल बिहार बिहरत सुखपाई ❀ रास रंग मनते नाहिं जाई ॥
युवती मंडल करि कर जोरें ❀ श्यामा श्याम मध्य करि खोरें ॥
वही भाव मनमें उपजावें ❀ निरखि निरखि मोहन सुखपावें ॥
विहरत नारि हँसत नँदनन्दन ❀ अंकम भरि भरि लेत अनन्दन ॥
प्यारी श्याम अंजली डारे ❀ सो छबि तिय सुख पाय निहारे ॥
मानहुँ कमल और इन्द्रियवर ❀ छिरकतहै मकरंद परस्पर ॥
जल क्रीडा सुख करत कन्हाई ❀ वरषत सुमन देव झरिलाई ॥
लीला सागर परम अपारा ❀ कबि किहिविधि करि पावै पारा ॥
करि जल संग केलि ब्रजनारी ❀ आये जलतट निकसि विहारी ॥
भीजि पट लपटे तनु माहीं ❀ पट अंतर लट चीर चुचाहीं ॥
ठाढे यमुनातीर कन्हाई ❀ पुलिन पवित्र परम छबि छाई ॥
निरखत निर्मल तनुकी शोभा ❀ अरसपरसविहँसत मन लोभा ॥

दो०–तब इकतरुको बिहँसिकै, आयसुदीनो श्याम ।
नाना भूषण वसन बर, तिन वर्षे अभिराम ॥

सो०–निज निज रुचि अनुहार, लैलै ब्रजकी सुन्दरिन ।

---

१ पानी । २ जिसकी गति जानी न जाय । ३ वस्त्र ।

कीनो नवल शृँगार, उर आनँद नहिं जाय कहि ॥
करि शृँगार तनु नवलकिशोरी ❀ हरि सन्मुख ठाढीं सब गोरी ॥
निरखि श्यामछबि मन ललचाहीं ❀ बिदा करत घरको सकुचाहीं ॥
हँसि बोले तब मदनगुपाला ❀ जाहु सदन अब सब ब्रजबाला ॥
अति आदर दै दै सुखदाई ❀ पाणि परसि सब सदन पठाई ॥
निशिसुख टरत न काहू मनते ❀ चलीं सदन सब वृन्दावनते ॥
अति आनंद रह्यो उर भरिकै ❀ भाँवरि दै आई सँग हरिकै ॥
मनके सफल मनोरथ कीने ❀ नंदसुवन हित पति करि लीने ॥
गईं सदन सब हर्ष बढाये ❀ घर घर लोगन सोवत पाये ॥
जगस्वामी हरि यह मति ठानी ❀ ब्रजयुवतिन सबहिन घर मानी ॥
प्रातकाल सब ब्रजजन जागे ❀ निज निज कारजमें सब लागे ॥
नंदधाम गये नन्दके लाला ❀ काहू नहिं जान्यो यह ख्याला ॥
यहरहस्य लीला गिरिधारी ❀ संत जनन मन आनँदकारी ॥
छं०—यहरहसलीलाश्यामकी, सबसंतसुरमुनिभावनी ।
ज्ञान ध्यान पुराण श्रुति मति, सार परम सुहावनी ॥
यह मंत्र यंत्र अनंत व्रत फल, ध्यान दंपतिको रहै ।
भाव करि नित भावमन, बिनु भाव यह सुखही लहै ॥
धन्य श्रीशुकदेव मुनि, भागवत यह रस गाइये ।
निगम नेति अगाध श्री, गुरु कृपाबिन नहिं पाइये ॥
सरुचि कहि जे सुनैं सीखैं, प्रीतिकरि जे गावहीं ।
ऋद्धि सिधि सब कह गनाऊं, भक्तिअनुपम पावहीं ॥
उरबढै रसनेम दृढपद, प्रेम राधा श्यामको ।
अहहि अचलनिवास वृन्दा, विपिन घननिजधामको ॥
यहै आशा राखिकै उर, दास ब्रजबासी कही ।
कृपा कीजै श्याम श्यामा, शरण पदपंकज गही ॥

१ श्रेष्ठ । २ हितपूर्वक ।

दो०-चरित ललित[1] गोपालके, रास विलास अनेक ।
कापै बरणे जात सब, इतनो कहां विवेक[2] ॥
सो०-निकसीतरे अघाय, ज्योंपिपीलिका[3] सिंधुते ।
कह्यो यथामति गाय, तिमि ब्रजवासी दासहू ॥

अथ मानचरित्रलीला.

नित्य श्याम श्यामा सुखकारी ❀ करत नित्य नवं[4] चरित विहारी ॥
निर्गुण निर्विकार अविनासी ❀ भक्त मनोरथ सदा विलासी ॥
नित वृन्दावन धाम सुहायो ❀ नित्य रासरस वेदन गायो ॥
भक्तन हेतु विविधतनु धारैं ❀ भक्तन हित लीला विस्तारैं ॥
सदा भक्तवश कृष्ण कृपाला ❀ दयासिंधु प्रभु दीनदयाला ॥
शरदरैनि रसरास उपायो ❀ युवतिन प्रति निजरूप बनायो ॥
सफल मनोरथ सबको कीनों ❀ पतिहितकारि सबको सुखदीनों ॥
तब कृपालु उरमें यह आनी ❀ सदा भक्त वांछित फलदानी ॥
गोपिन गर्व रासमें कीनों ❀ सो मैं अन्तर करि हरि लीनों ॥
रही साध इनके मनमाहीं ❀ हमको श्याम मनायो नाहीं ॥
ते ब्रज भक्त परम हित मेरी ❀ करौं साध पूरण इन केरी ॥
अब इक मानचरित्र उपाऊं ❀ पाँयन परि परि सबन मनाऊं ॥
दो०-करिविभेद रसरीतिमें, देहुं मान उपजाय ।
इनके मुख मंडित बचन, कहवाऊं सुखदाय ॥
सो०-सकल गुणनके धाम, परम विचक्षण रसिकमणि ।
नवरस सागर श्याम, एक प्रेम रस वश सदा ॥
श्री राधा मनमोहनि प्यारी ❀ नवनागरि नवरूप उजारी ॥
रास नृत्य रिझये गोपाला ❀ तारस मगन फिरत नँदलाला ॥
करत भवन शृंगार पियारी ❀ औचक तहां गये गिरिधारी ॥
देखि प्रिया पियको हँसि दीनो ❀ हर्षि श्याम अंकम भरि लीनो ॥
रहे थकित छबि अंग निहारी ❀ जात कमल मुखपर बलिहारी ॥

१ मनोहर । २ ज्ञान । ३ चींटी । ४ नवीन ।

यहि अंतर पियके उर माहीं ❋ देखी तिय निज तनु परछाहीं
झझकि उठी प्यारी भइ न्यारी ❋ अतिसनेह भ्रम सुरत बिसारी ॥
और नारि पियके उर जानी ❋ आपुनविषे प्रीति घटिमानी ॥
राखत सदा हिये में याही ❋ ल्याये मोहिं दिखावन ताही ॥
कियो मान यह भ्रम[1] उपजाई ❋ कहत वचन पियसों अनखाई ॥
अब जानी पिय बात तुम्हारी ❋ ऊपरहीकी प्रीति हमारी ॥
हमसों मुँहकी बात मिलावत ❋ यह प्यारी उरमाहिं बसावत ॥

दो०–धनि धनि याको भाग्य है, बसति तुम्हारे हीय ।
याही सों हित राखिये, अब मनमोहन पीय ॥

सो०–भली करी सुख मानि, मोहिं दिखाई आनिकै ।
यह प्यारी सुख दानि, उरते जिन न्यारी करो ॥

ऐसे कहि मुसकाय किशोरी ❋ कछुरिसकारि जिय भौंह सिकोरी ॥
चकित श्याम लखि सन्मुखबानी ❋ कहत कहा नागरी सयानी[2] ॥
सांच कहति कैधौं करि हांसी ❋ कत रिस कारि तिय होतउदासी ॥
समझी नहीं कहा जिय आई ❋ झझकि उठी कै अति भ्रमपाई ॥
हँसि भुज गहन लगे मनमोहन ❋ बैठत क्यों नहिं ममप्रिय गोहन ॥
मोहिं छियो जिन दूर रहौजू ❋ बसत हिये किनताहि गहौजू ॥
तुम्हीं चतुर अरु सबै सयानी ❋ हम दासी अरु ये पटरानी ॥
उरमें मनभावती बसाई ❋ हँसी करनको हमैं बताई ॥
लखि लखि प्रियावदन सुखकारी ❋ हँसत मनहिं मन कुंजविहारी ॥
कहति कहा भामिनि भइ भोरी ❋ तो बिन उर को बसत किशोरी ॥
तू मम श्रवण नयन मुखवानी ❋ जीवन प्राण अधार सयानी ॥
वृथा क्रोधकर जियमें आनै ❋ मेरो कह्यो नहीं क्यों मानै ॥

दो०–सुनौ श्याम हिरदै बसत, सो छिपिये न छिपाय ।
ज्यों शीशीके माहिं जल, परगट परत लखाय ॥

सो०–बातैं कहत बनाय, यह देखत हमसों हँसत ।

१ संदेह । २ राधिका ।

दो०-चरित ललित[3] गोपालके, रास विलास अनेक ।
काषै बरणे जात सब, इतनो कहां विवेक ॥
सो०-निकसीतरे अघाय, ज्योंपिपीलिका[3] सिंधुते ।
कह्यो यथामति गाय, तिमि ब्रजवासी दासहू ॥

अथ मानचरित्रलीला.

नित्य श्याम श्यामा सुखकारी ❋ करत नित्य नर्वे चरित विहारी ॥
निर्गुण निर्विकार अविनासी ❋ भक्त मनोरथ सदा विलासी ॥
नित वृन्दावन धाम सुहायो ❋ नित्य रासरस वेदन गायो ॥
भक्तन हेतु बिविधतनु धारैं ❋ भक्तन हित लीला विस्तारैं ॥
सदा भक्तवश कृष्ण कृपाला ❋ दयासिंधु प्रभु दीनदयाला ॥
शरदरैनि रसरास उपायो ❋ युवतिन प्रति निजरूप बनायो ॥
सफल मनोरथ सबको कीनों ❋ पतिहितकारि सबको सुखदीनों ॥
तब कृपालु उरमें यह आनी ❋ सदा भक्त वांछित फलदानी ॥
गोपिन गर्व रासमें कीनों ❋ सो मैं अन्तर करि हरि लीनों ॥
रही साध इनके मनमाहीं ❋ हमको श्याम मनायो नाहीं ॥
ते ब्रज भक्त परम हित मेरी ❋ करौं साध पूरण इन केरी ॥
अब इक मानचरित्र उपाऊं ❋ पाँयन परि परि सबन मनाऊं ॥

दो०-करिविभेद रसरीतिमें, देहुं मान उपजाय ।
इनके मुख मंडित बचन, कहवाऊं सुखदाय ॥
सो०-सकल गुणनके धाम, परम विचक्षण रसिकमणि ।
नवरस सागर श्याम, एक प्रेम रस वश सदा ॥

श्री राधा मनमोहनि प्यारी ❋ नवनागरि नवरूप उजारी ॥
रास नृत्य रिझये गोपाला ❋ तारस मगन फिरत नँदलाला ॥
करत भवन शृंगार पियारी ❋ औचक तहां गये गिरिधारी ॥
देखि प्रिया पियको हँसि दीनो ❋ हर्षि श्याम अंकम भरि लीनो ॥
रहे थकित छवि अंग निहारी ❋ जात कमल मुखपर बलिहारी ॥

१ मनोहर । २ ज्ञान । ३ चींटी । ४ नवीन ।

यहि अंतर पियके उर माहीं ❀ देखी तिय निज तनु परछाहीं
झझकि उठी प्यारी भइ न्यारी ❀ अतिसनेह भ्रम सुरत बिसारी ॥
और नारि पियके उर जानी ❀ आपुनविषे प्रीति घटिमानी ॥
राखत सदा हिये में याही ❀ ल्याये मोहिं दिखावन ताही ॥
कियो मान यह भ्रम[१] उपजाई ❀ कहत वचन पियसों अनखाई ॥
अब जानी पिय बात तुम्हारी ❀ ऊपरहीकी प्रीति हमारी ॥
हमसों मुँहकी बात मिलावत ❀ यह प्यारी उरमाहिं बसावत ॥

दो०–धनि धनि याको भाग्य है, बसति तुम्हारे हीय ।
याही सों हित राखिये, अब मनमोहन पीय ॥

सो०–भली करी सुख मानि, मोहिं दिखाई आनिकै ।
यह प्यारी सुख दानि, उरते जिन न्यारी करो ॥

ऐसे कहि मुसकाय किशोरी ❀ कछुरिसकारि जिय भौंह सिकोरी ॥
चकित श्याम लखि सन्मुखबानी ❀ कहत कहा नागरी सयानी[२] ॥
सांच कहति कैधौं करि हांसी ❀ कत रिस कारि तिय होतउदासी ॥
समझी नहीं कहा जिय आई ❀ झझकि उठी कै अति भ्रमपाई ॥
हँसि भुज गहन लगे मनमोहन ❀ बैठत क्यों नहिं ममप्रिय गोहन ॥
मोहिं छियो जिन दूर रहौजू ❀ बसत हिये किनताहि गहौजू ॥
तुम्हीं चतुर अरु सबै सयानी ❀ हम दासी अरु ये पटरानी ॥
उरमें मनभावती बसाई ❀ हँसी करनको हमैं बताई ॥
लखि लखि प्रियाबदन सुखकारी ❀ हँसत मनहिं मन कुंजविहारी ॥
कहति कहा भामिनि भइ भोरी ❀ तो बिन उर को बसत किशोरी ॥
तू मम श्रवण नयन मुखवानी ❀ जीवन प्राण अधार सयानी ॥
वृथा क्रोधकर जियमें आनै ❀ मेरो कह्यो नहीं क्यों मानै ॥

दो०–सुनौ श्याम हिरदै बसत, सो छिपिये न छिपाय ।
ज्यों शीशीके माहिं जल, परगट परत लखाय ॥

सो०–बातैं कहत बनाय, यह देखत हमसों हँसत ।

१ संदेह । २ राधिका ।

जैहै कहुँ अनखाय, उरते तब पछिताय हौ ॥
जो वह कहै करौ तुम सोऊ ❀ वह नागारि तुम नागर दोऊ ॥
मतिहिं खिझावो मोहिं कन्हाई ❀ भली करी लै सौत दिखाई ॥
जाहु चले अब मैं सुखपायो ❀ ऐसे कहि मन मान बढायो ॥
रिसकरि मौनरही गहिप्यारी ❀ देत मनहिंमन वाको गारी ॥
शोचत श्याम देखि मनमाहीं ❀ बोलि सकत नहिं प्रियहि डराहीं ॥
कहत वृथा जिय मान न कीजै ❀ नहिं अपराध जान जिय लीजै ॥
क्यों रिसकरति प्रिया मनमाहीं ❀ मेरे उर तेरी परछाहीं ॥
यह सुनि कुँवरि राधिकारानी ❀ बोली रिसकरि पियसों बानी ॥
कहा बनावत बातैं हमसों ❀ जाहु चले बोलों नहीं तुमसों ॥
यह कहि ओटगई ह्वै प्यारी ❀ भये बिरहवश तब गिरिधारी ॥
अति व्याकुलतन मन अकुलाहीं ❀ बार बार शोचत मनमाहीं ॥
गयो सरोजबदन कुम्हिलाई ❀ तहां एक सखि दूती आई ॥

दो०-सो हरिसों बूझति भई, कहहु न मोहिं सुनाय ।
आज दशा कैसी लखति, बैठे कहा गँवाय ॥

सो०-क्यों तनु रहे भुलाय, अति व्याकुल देखत तुम्हैं ।
रह्यो वदन कुम्हिलाय, ऐसो शोच कहा परयो ॥

बोले श्याम सखी हित जानी ❀ विरह विकल कहिजात न बानी ॥
कियो मान वृषभानुकिशोरी ❀ मैं कछु नहिं अपराध कियोरी ॥
लखि मेरे उर निजपरछाहीं ❀ रूसिरही करि कोप वृथाहीं ॥
मैं कहिकै बहुभांति मनाई ❀ नहिं प्रतीति राधा उर आई ॥
बिन समुझे इतनो हठ कीनो ❀ तब ते मोहिं मदन दुखदीनो ॥
ऐसे कहि शोचत बलवीरा ❀ लेत नयन भरि सांस अधीरा ॥
परम चतुर दूतिका सयानी ❀ विरह विकलता पियजियजानी ॥
कह्यो धीर धरिये बनवारी ❀ चलिये बनको कुंजबिहारी ॥
मैं प्यारीलै तुमहिं मिलाऊं ❀ आज कहा तो तुमसों पाऊं ॥
गई सदनते लै बन धामहिं ❀ तहँ बैठारि धीर धरिश्यामहिं ॥

मैं लै आवति राधाप्यारी ❀ कितकबातयह सुनहु विहारी ॥
मेरे आगेकी वह बारी ❀ कहा मानकरिहै सुकुमारी ॥

दो०–ऐसे कहि चातुर अली, आतुर लखि घनश्याम ।
श्रीवृषभानुलली जहां, चपल चली ब्रज धाम ॥

सो०–मन मन रचत सयान, नई बनाऊं बात इक ॥
अबहिं छुडाऊं मान, मोसों धौं कहिहै कहा ॥

हरिसों रूसि मान करि बैसी ❀ अबहीं कहा भई यह ऐसी ॥
करत विचार यहै मनमाहीं ❀ गई सखी राधाके पाँहीं ॥
कुँवरि किशोरी परम सयानी ❀ मुख देखतहि दूतिका जानी ॥
सहजहि बोलि ताहि ढिगलीन्हीं ❀ सहजहि कह्यो मया कितकीन्हीं ॥
तुरतहि कहि तब सखी सुनायो ❀ तुमको वन घनश्याम बुलायो ॥
सुनत कह्यो प्यारी अनखाई ❀ काहेको मुहिं श्याम बुलाई ॥
तू आई याहीके लीन्हें ❀ मैं अब श्याम भले करिचीन्हें ॥
कहा कहौं तोको री आली ❀ तुहूँ भली अरु वे वनमाली ॥
उनकी महिमा कहत न आवै ❀ अब इक नई नारि मनभावै ॥
ताको लै उरमाहिं बसाई ❀ तोहिं उहांते टारि पठाई ॥
आज कहा कछु कलह भयो री ❀ कै धौं कछु तैं मान ठयो री ॥
तबहिं आज अनमनी बतानी ❀ यह तो कछु मैं बात न जानी ॥

दो०–मोसों नहिं कछु हरि कह्यो, सहज पठाई लैन ।
कह धौं परी पुकार वहँ, तुम चलि देखहु नैन ॥

सो०–कहत सुताय सुनाय, लै लै तेरो नाम सब ।
तैं धौं लियो छुडाय, कहि काके काके गथहि ॥

काहे को गथलियो परायो ❀ अपनो नाम कुनाम धरायो ॥
डारि देहु जाको जो लीनो ❀ तेरे बहुत दईको दीनो ॥
तबहीं तै उन शोर लगायो ❀ ता कारण हरि तोहिं बुलायो ॥
हरि तेरी दिशिते झगरेरी ❀ तू कत उनसों रोष करेरी ॥

१ शीघ्रतासे । २ निकट । ३ प्रभाव ।

यह कछु नोखी बात सुनाई ❀ मैं काको धन लियो छिपाई ॥
काहेको हरि झगरत माई ❀ इती मया मोपै कहँ आई ॥
जैसे हैं तैसे हरि जाने ❀ नहिं उनके गुण परत बखाने ॥
बैठ किधौं तू घर जा अपने ❀ मैं उन पै अब जाउँ न सपने ॥
हौं कह तोहिं मनावन आई ❀ मान करो तुम और सवाई ॥
परधन लै सबको ब्रज बैठी ❀ कहा करत बातैं यों ऐंठी ॥
देति जवाब सबनि किनजाई ❀ मो पैं कह इतनो सतराई ॥
तबते सबसों लरत कन्हाई ❀ जब मैं तोहिं बुलावन आई ॥

दो०-बार बार कह कहतरी, तू मोको डरपाय ।
मैं नहिं काहूको लियो, झूठहि दोष लगाय ॥

सो०-लरत कौनसों श्याम, कौने करी पुकार अब ।
कहै न तिनको नाम, सांच तबहिं मैं मानिहौं ॥

तब वदिहौं ऐसे कहि हेरी ❀ श्याम निकट बैठे जब वेरी ॥
कहँ लगि सबके नाम बताऊं ❀ एक एककरि तोहिं गिनाऊं ॥
नभ जल धरणि वनहुमें आये ❀ कहँ लगि मोते जात सुनाये ॥
जो नहिं तिनकी गथहि चुराई ❀ तौ तू कत बन चलत डराई ॥
परी बानि तोको यह कैसी ❀ भली कहत अलिलगति अनैसी ॥
श्याम विना क्यों न्याव चुकेरी ❀ तिनहीं सों तू रोष करेरी ॥
कोटि करो एकै पुनि ह्वैहो ❀ वे अरु तुम कछु जियके द्वैहो ॥
मानकही चलु श्याम बुलाई ❀ श्रवण लागि हरि मोहिं पठाई ॥
जिनकी यह सब सौज तुम्हारे ❀ ते जन हरिपहँ जाय पुकारे ॥
इंदु कहत मोवदन बिगोयो ❀ अलिकुल अलकनको दुखरोयो ॥
हरिण मीन छबि दृगन दुराई ❀ खंजनहूं तहँ देत दुहाई ॥
शुककी छवि नासा हरिलीनी ❀ बैननकरी कोकिला हीनी ॥

दो०-अधर बिंब दाडिमदशन, लूटे कंठ कपोत ।
लई तरणि छबि छीनिकै, तरल तरौना जोत ॥

१ कान । २ छिपाई । ३ नासिका ।

सो०-चत्रवाक कुच दोय, कटि हरि कदली जंघलिय।
गज मराल गति जोय, चरण पाणि पंकज हरे॥
ये सब हरिसों करत लराई ❋ तैं जु करी इनसों अधिकाई॥
अति अनीति लखि कुँवरकन्हाई ❋ पठई मोहिं लेन तोहिं आई॥
प्रति उत्तर अपनो करु चालिकै ❋ इहांरही कह बैठि मचालिकै॥
सुनि पियके गुण तिय हँसिदीने ❋ कछु सकुची मन मान जु लीने॥
चतुर सखी जियकी सब जानी ❋ तबहीं हरषि कही यह वानी॥
श्यानि कहा अब तोहिं परीरी ❋ जब तब लखिं निज छांह डरीरी॥
तादिन दर्पण लखि भ्रमकीनो ❋ सो दृगमूंदि मेटि हरि दीनो॥
आज देखि पिय उर निज छाहीं ❋ कियो इतोहठ कुवँरि वृथाहीं॥
यहसुनि समुझि मनहिं सकुचाई ❋ सहचरि कंठ विहँसि लपटाई॥
रसकरि तुरत मान बिसरायो ❋ सुनि वनधाम श्याम सुखपायो॥
हँसिकै कह्यो सखी सों जारी ❋ तू हरि सों कहि आवत प्यारी॥
मैं अँग भूषण बसन सँवारी ❋ आवति वनहिं जहां वनवारी॥
दो०-यह सुनि हर्षी दूतिका, गई जहां घनश्याम।
अति व्याकुल तनु सुधि नहीं, विह्वल कीनों काम॥
सो०-बैठत उठत अधीर, क्योंहूं सुख पावत नहीं।
बढति बिरहकी पीर, श्रीराधा राधा रटत॥
राधा विरह विकल गिरिधारी ❋ कहूं माल कहुँ मुरली डारी॥
कहूं मुकुट कहुँ पीतंपिछोरी ❋ नहिंकछु सुरति भई मति भोरी॥
कबहुँ मूँदि दृग ध्यान लगावें ❋ कबहूं प्यारीके गुण गावें॥
कबहूं लोटत कुंजनमाहीं ❋ कबहूं बैठि द्रुमनकी छाहीं॥
ठाढेटेर्कि कबहुँ द्रुम डारी ❋ तकताप्रियापंथपलकाबिसारी॥
देखि दशा दूतिका सयानी ❋ कही श्याम सों आतुर वानी॥
काहेको कदरात विहारी ❋ मैं ल्याई वृषभानुदुलारी॥
विरह विषाद दूरि कर डारो ❋ नेकधीर अपने मन धारो॥

१ देखि। २ व्याकुल। ३ पीतांबर। ४ पकड़। ५ मार्ग।

सुनि प्यारी को नाम कन्हाई ❀ मिले दूतिका सों उठि धाई ॥
कहां प्रिया कहि अति अकुलाये ❀ नयनसरोज नीरं भरिआये ॥
तब हँसि कह्यो दूतिका ग्वारी ❀ आवत प्रिया अबहिं बनवारी ॥
मैं जु प्रतिज्ञा तुमते कीनी ❀ विधना आज राखि सो लीनी ॥
दो०—अब अपने मन हर्षि करि, दूरि करो सन्देहु ।
आवतिहैं वृषभानुजा, भुजभरि अंकम लेहु ॥
सो०—सुख शोभाकी खान, नहीं कुँवरि वृषभानुसी ।
तुम सम धन्य न आन, बडभागिनतुम वश भये ॥
रसिकपुरंदर प्रभु सुखदानी ❀ सुनत सिहात दूतिका वानी ॥
पुलकत अंग धीर नहिं धारैं ❀ पुनि पुनि प्यारी पंथ निहारैं ॥
निज कर सुमन सुगंध लगावैं ❀ कुंज भवन रुचिसेज बनावैं ॥
अति कोमल तनु जान पियारी ❀ सेज कली चुनि करतनियारी ॥
जो द्रुम लता लटकि तनुलागैं ❀ ते ऊपरधरि मन अनुरागैं ॥
प्रेम प्रीति रस वश जग स्वामी ❀ करत चरितमानहुँ अतिकामी ॥
देखि श्यामकी आतुरताई ❀ हँसति सखी मन हर्ष बढाई ॥
जानि प्रेम वश हरि सुखरासा ❀ गई बहुरि प्यारीके पासा ॥
करि शृंगार नवल तनु गोरी ❀ राजत श्रीवृषभानु किशोरी ॥
सहज रूपकी राशिं कुमारी ❀ भई अधिकछबि भूषण भारी ॥
अंग अंग छबि पुंज विराजै ❀ निरखि मदनतिय कोटिकलाजैं ॥
त्रिभुवनकी छबि मनहुँ बटोरी ❀ विधिकीन्ही वृषभानुकिशोरी ॥
दो०—देखि रूप मन मगन सखि, बोली वचन सँभार ।
धन्य धन्य राधा कुवँरि, तुव गुण रूप अपार ॥
सो०—तोसमान नहिं तीय, तिहुँपुर सुन्दरि नागरी ।
बसत सदापिय जीय, तू मोहन मनभावती ॥
चलहु बेगि अब सहित हुलासा ❀ लागि रही पियकी इत आसा ॥
तेरोइनाम जपत मनलाई ❀ गावत तुव गुण कुवँर कन्हाई ॥

१ अश्रु । २ समूह ।

तुम तनु परस पवन जो जाही ❀ उठि आतुर परिरंभत ताही ॥
तेरो रूप आनि उर अन्तर ❀ धरत ध्यान दृग मूँदि निरंतर ॥
रमी श्याम तन मन तू जाते ❀ राधारमण नाम है ताते ॥
सुनि सहचरिके मुखकी वानी ❀ पुलकि प्रफुल्लित मृदुमुसकानी ॥
पियको प्रेम समुझि सुखपाई ❀ चलींमिलन गज गति हर्षाई ॥
मुखशशि कनकलतासी गोरी ❀ बालहरण छबि नयनकिशोरी ॥
भूषण वसन अनूप सुहाई ❀ अंग अंग शोभित छबि छाई ॥
अंग सुगंध मनोहरताई ❀ भँवर भीर चहुँओर सुहाई ॥
हँसि हँसि कहत सखी सों बातैं ❀ झरत सुमन जनु रूपलतातैं ॥
ऐसे करत प्रकाश पियारी ❀ गई जहां पिय कुंजबिहारी ॥

दो०-परम प्रेम दोऊ मिले, श्रीराधा नँदनन्द ।
गुण आगर नागर युगल, छबि सागर सुखकन्द ॥
सो०-जोप्रभु परम अपार, वेद भेद जानत नहीं ।
सो ब्रज करत विहार, वर्णि पार को पावहीं ॥

कुंजन मंजु सुफल छबि छाई ❀ भँवर गुंज सुख पुंज सुहाई ॥
फूलनसेज रुचिर रचि कीनी ❀ चित्र विचित्र रंग रसभीनी ॥
फूले खगगण करत कलोलैं ❀ जहँ तहँ मधुर मनोहर बोलैं ॥
फूली वृन्दावन तरु डारी ❀ तन मन फूले पिय अरु प्यारी ॥
सहचरि सहित मनोहर जोरी ❀ राजत युगल किशोर किशोरी ॥
हाव भाव करि रस उपजावैं ❀ हास विलास करत सुखपावैं ॥
सखी कह्यो तब कै अबनीके ❀ सकुचि हँसी प्यारी सँग पीके ॥
नयन कोर पियको हियँ ताक्यो ❀ तबहिं श्याम पीतांबर ढांक्यो ॥
यह छबि निरखि सखी बलि जाई ❀ अचल रहो जोरी सुखदाई ॥
धनि राधा धनि कुँवर कन्हाई ❀ धन्य मान रस केलि सुहाई ॥
धन्य कुंजवन धनि मँहि पावन ❀ धन्य लता द्रुम सुमनसुहावन ॥

---

१ बसी । २ दूती । ३ कृष्ण-राधा । ४ पक्षी । ५ हृदय । ६ पृथ्वी । ७ वृक्ष ।

धन्य सखी धनि सब ब्रजवासी ❀ तिनसँग विहरत प्रभु सुखरासी ॥

दो०-गये श्याम श्यामा सदन, सखी सहितसुखपाय ।
मान चरित रस केलि करि, ब्रजवासी बलि जाय ॥

सो०-मान चरित्र अनूप, जे सुभाव गावहिं सुनहिं ।
ते न परैं भव कूप, राधा कृष्ण प्रतापते ॥

करत चरित नाना गिरिधारी ❀ सुखसागर भक्तन हितकारी ॥
जाको शिव अज ध्यान लगावैं ❀ सनकादिक मुनि जप कर ध्यावैं ॥
जा प्रभु को यश परम विशारद ❀ गावत अहिपति नारद शारद ॥
अखिल अनीह अकाम अभोगी ❀ योग समाधि न पावत योगी ॥
सो प्रभु सबके अन्तर्यामी ❀ युवतिन प्रेम भक्ति वश कामी ॥
बहु नायकह्वै करत विहारा ❀ ब्रज पुर घर घर नन्दकुमारा ॥
रस लीला नाना उपजावैं ❀ काहु रुठावैं काहु मनावैं ॥
अरस परस तिय सब यह जानैं ❀ हरि हैं सबके धाम लुभानैं ॥
अवधि वदत काहू सों जाई ❀ काहूके घर बसत कन्हाई ॥
सांझ कहत जाके घर आवन ❀ जात प्रात ताके मनभावन ॥
ब्रज गोपी जिनको पति जाने ❀ कोउ आदरहिं कोउ अपमाने ॥
खंडित वचन सुनत सुखदाई ❀ यह लीला हरिके मन भाई ॥

दो०-ब्रजमें करत विहार हरि, ब्रज बनितनके संग ।
अखिल काम पूरण करण, भरे प्रेम रस रंग ॥

सो०-कोटि काम कमनीय, सुंदर सुख सागर नवल ।
रमणी मन रमणीय, ब्रजभूषण ब्रजलाडिलो ॥

ब्रजबीथिन नँदनन्दन ठाढे ❀ अंग अंग सुन्दर छवि बाढे ॥
ललिता आइ गई तिहिं पैंडे ❀ मनमोहन रोकी मग बैंडे ॥
देखत छवि ललिता ललचानी ❀ बोली विहँसि श्यामसों बानी ॥
कत रोकत मगमें बिन काजे ❀ जाहु चले जितहो हित साजे ॥
झूंठहि इतो सनेह जनावो ❀ कबहुं हमारे धाम न आवो ॥

१ उपमारहित । २ ब्रह्मा । ३ गलिन । ४ घर ।

हरि हँसि कह्यो आज निशि ऐहैं ❀ तेरीसों हम अनत न जैहैं ॥
ऐसे कहि मधुरे मुसकाई ❀ छोडि दई मग छैल कन्हाई ॥
ललिता गई सदन सुखमानी ❀ ऐहैं श्याम आज यह जानी ॥
सांझहिते हरिपंथ निहारे ❀ धाम आपने सेज सँवारे ॥
भूषण बसन नवल तनु साजें ❀ खंजनसे दृग अंजन आँजें ॥
सुमन सुगंध अनूप मँगाई ❀ रचि रुचि राखति माल बनाई ॥
कबहुं ठाढी होति दुवारे ❀ कबहूँ लखति गगनके तारे ॥

दो०–कहति श्याम आये नहीं, होन लगी अधरात ।
गये आशदे मोहिं पुनि, कहा धरी जिय बात ॥

सो०–वे बहु नायक श्याम, किधौं लुभाने अनतकहुँ ।
मन मन शोचत बाम, कारण कह आये नहीं ॥

कैधौं कछु ख्यालहि चित दीनों ❀ कैधों मातपिता डर कीनों ॥
कैधौं सोय रहे अलसाने ❀ कैधौं घरआवत सकुचाने ॥
ऐसे शोचत रैनि बिहानी ❀ जहँ तहँ बोले तमचर बानी ॥
तब बैठी अपनो मन मारी ❀ कछू शोच कछु रिस उरधारी ॥
हरि निशिगये सखी शीलाके ❀ सुन्दर श्याम धाम लीलाके ॥
तहँ सुख सोवति रैनिगमाई ❀ प्रातहोत ललिता सुधि आई ॥
चले सहजशीला सों कहिकै ❀ जिय सँकोच ललिताको गहिकै ॥
आये ललता सदन बिहारी ❀ चितै रही मुखकी छबि प्यारी ॥
अंजन रेख अधरपर राजें ❀ पीक लीक नयनन छबि छाजें ॥
सोहत ललित कपोलन नीको ❀ लाग्यो अंजन काहू तीको ॥
तुरत मुकुर लै उठी सयानी ❀ दिखरायो मुख सन्मुख आनी ॥
कहति देखि निज वदन सुधारो ❀ लाल कहूं तब प्रात सिधारो ॥

दो०-पीक पलक अंजन अधर, देखि श्याम सकुचाय ।
रहे निचौहैं नयन करि, वचन कह्यो नहिं जाय ॥

सो०–ज्योंज्योंसकुचतश्याम,त्योंत्योंहठनागरिकरत ।

१ रात । २ आकाश के नखत । ३ भरोसा । ४ मुर्गा । ५ दर्पण ।

देखहु छबि अभिराम, हाहामुख कत फेरियत ॥
सकुचत कहा बोलिकै सांचे ❀ आये तो मो गृह रँग राचे ॥
रैनि नहीं तो प्रातहि आये ❀ धनि धनिवहजिन स्वांगबनाये ॥
तुम जिन मानहुँ विलगकन्हाई ❀ मैंतों करति अनंद बधाई ॥
क्यों मोहन दर्पण नहिं देख्यो ❀ सूधे मोंतन काहे न पेख्यो ॥
ठाढे कत बैठत क्यों नाहीं ❀ कहु कछु चूक परी हम पाहीं ॥
रहे मूक[1] ह्वै कहा ठगेसे ❀ सोहत हो अलसात जगेसे ॥
उत्तर मोहिं देत क्यों नाहीं ❀ मैं तबहीं ते बकत वृथाहीं ॥
तब चितये दृगकोर[2] कन्हाई ❀ भाव अतिहि आधीन जनाई ॥
ग्वालि प्रवीण जानि सब लीनों ❀ तुरत रोष उरते तजि दीनों ॥
हँसि करि मोहन कंठलगाये ❀ भले श्याम ऐसेहू आये ॥
श्रमित अंग जागे निशि जाने ❀ अति सनेह मनहीं मन माने ॥
अंग सुगंध मर्दि अन्हवाये ❀ बसन अभूषण दे बैठाये ॥
दो०-रुचि भोजन दै सेजपर, पौढाये घनश्याम ।
रस वश करि नव नागरी, किये सफल मन काम ॥
सो०-सुर मुनि सकत न पाय, प्रभु ब्रजवासी दासको ।
प्रेम प्रीति वश आय, सो गोपीवल्लभ भये ॥
कहत सौंह करि रसिक बिहारी ❀ तुम प्रिय मोहिं प्राणते प्यारी ॥
सदा बसत तुम मो मनमाहीं ❀ तुम बिनलहत अनत सुखनाहीं ॥
ऐसे कहि अति प्रीति जनावैं ❀ चतुरवचनकहि चितहि चुरावैं ॥
यहै भाव युवतिनसों भाखैं ❀ सबहिनके मनकी रुचि राखैं ॥
कुल मर्य्याद लोक डर त्यागी ❀ सब गोपी हरिसों अनुरागी ॥
बिन देखे रसभाव बढावैं ❀ नयनन देखतही सुखपावैं ॥
ब्रह्म सनातन जग सुखकारी ❀ यह लीला ब्रजमें विस्तारी ॥
ललिताको सुखदे सुखसागर ❀ चले सदन अपने नटनागर ॥
उतते मग आवति चंद्रावलि ❀ देखि रहीं सुंदरि छबि सांवलि ॥

१ गूंगे । २ आंखकी कोरसे ।

बने विशाल कमलदल लोचन ❀ चितवनि चारु काममदमोचन ॥
इत मुसकाय श्याम तेहि हेरी ❀ खोरि सांकरी भइ भटभेरी ॥
बिहँसि कह्यो चंद्रावलि प्यारी ❀ कहां रहत हरि हमहिं बिसारी ॥
दो०-तुम कैसे बिसरत प्रिया, हँसि बोले घनश्याम ।
आज आय सुख लेहिंगे, रैन तुम्हारे धाम ॥
सो०-सुनि हरषी जिय वाम, चली सदन मुसकायकै ।
लखि सुख पायोश्याम, मुदित गये अपने भवन ॥
चंद्रावलि मन अधिक उछाहू ❀ फूली फिरत कहत नहिं काहू ॥
सुखके करत मनोरथ नाना ❀ वासर कलप समान बिहाना ॥
भये अस्त रवि निशि नियरानी ❀ उडुगण[३] ज्योति देखि हरषानी ॥
हरि सुखमाके भवन सिधाये ❀ चंद्रावलिके भवन न आये ॥
सूने घर देखी सो ग्वाली ❀ आतुर गये तहाँ बनमाली ॥
सुखमा लखि हरिको सुखपायो ❀ अतिही आदर करि बैठायो ॥
कोक कला कोविद बर नारी ❀ हाव भाव मोहे गिरिधारी ॥
बसे तहां मोहन सुखपाई ❀ चंद्रावलिकी सुरति भुलाई ॥
इत चंद्रावलि सेज सँवारै ❀ बार बार हरिपंथ निहारै ॥
कबहूं भवन कबहुं अँगनाई ❀ कबहूं रहति द्वार टकलाई ॥
कबहूं शोच करत मनमाहीं ❀ आवहिंगे मोहन कै नाहीं ॥
कबहूं आलस कछु जिय जानी ❀ धोवतिहै नयनन लै पानी ॥
दो०-कबहुँ कहत हरि आयहैं, उरमें हर्ष बढाय ।
कबहुं विरह व्याकुल जरति, अति आकुल अकुलाय ॥
सो०-कबहुँ कहत सुखपाय, बहुरमणी रमणीयपिय ।
बसे अनत कहुँ जाय, मोसों झूंठी अवधि बदि ॥
ऐसेहि ऐसे रैनि बिहानी ❀ सुनी श्रवण वाँयसकी बानी ॥
भई काम दुख वाम उदासी ❀ जाने श्याम कपटकी रासी ॥
कहति बाम कर मनके माहीं ❀ श्याम नाम खोटे सब आहीं ॥

१ उत्साह । २ दिन । ३ नक्षत्र । ४ कौआ ।

कोकिल श्याम श्यामअलिदेखो ❀ श्यामजलदअहिश्यामविशेखौ ॥
तिनहींकी करनी हरि लीनी ❀ मोसों प्रीति कपटकी कीनी ॥
ऐसे क्रोध विरह सब बाला ❀ सुखमा सदन गये नँदलाला ॥
प्रात भये उठि चले तहांते ❀ आलस भरे नयन रँगराते ॥
चंद्रावली सदन चलि आये ❀ ठाढे अजिर रहे सकुचाये ॥
मन्दिर ते रिसभरी गुवारी ❀ नखते शिखलौं रही निहारी ॥
मन मन कहत कुटिल अति गिरिधर ❀ प्रात होत आये मेरे घर ॥
कियो मान मनमें अति भारी ❀ आँगनमें ठाढे बनवारी ॥
और नारिके चिह्न बिलोकी ❀ रोकतिरिसहिरुकत नहिंरोकी ॥
दो०–तब बोली करि मानतिय, कहा काम मम धाम ।
ताहीके घर जाइये, बसे जहां निशि श्याम ॥
सो०–प्रात दिखावन मोहिं, आये रंग बनायकै ।
मैं सुख पायो जोहि, भले बनेहौ लाल अब ॥
बिन गुण शोभित है उर माला ❀ बीच रेख मुखचन्द्र रसाला ॥
अधर दीपसुत रेख सुहाई ❀ नागबेलि रँग पलक रँगाई ॥
लटपटि पाग महावर लाये ❀ आलस नयनअरुण जल छाये ॥
चंदन भाल मिल्यो कहुँ वन्दन ❀ यह छबि अधिक बनी नँदनन्दन ॥
वलय गाढ वर पीठ धरेहौ ❀ जान्यो नागरि अंक भरेहौ ॥
इतने पर डाहन मुहिं आये ❀ सौंह करनको इत उठि धाये ॥
जाउ तहीं जासों मन मान्यो ❀ जैसेहौ तैसे मैं जान्यो ॥
बिहँसि कह्यो तब लाल बिहारी ❀ तुमते और कौन मुहिं प्यारी ॥
तुमबिन मोहिं कहूं कल नाहीं ❀ बसत सदा मन तेरे माहीं ॥
यह चतुरई कहां पढि आई ❀ चीन्हे हौ गुणराशि कन्हाई ॥
यह कहि गई भवनमें भामिनि ❀ रीझे श्याम देखिछबि कामिनि ॥
सन्मुख जाय भये पुनि ठाढे ❀ द्वारकपाट दिये पुनि गाढे ॥
दो०–पौढि रही तिय सेजपर, बदन मूँदि अनखाय ।

१ मेघ । २ साँप । ३ पान ।

हरि तन पुनि चितयो नहीं, उरमें प्रेम बढाय ।
सो०-प्रभु गति लखी न जाय, जो चाहैं सोई करैं ॥
पौढि रहे सँग जाय, पौढी तिय जहँ मानकरि ।
जो देखे तौ संग कान्हाई ❋ चली बहुरि तिय उठि झहराई ॥
खोलि किंवार अजिरमें आई ❋ देखे ठाढे तहां कन्हाई ॥
विनय करत नयननकी सनन ❋ चकित भई देखत तिय नैनन ॥
भीतर भवन गई पुनि प्यारी ❋ तहां अंक भरि लई मुरारी ॥
तब नागरि रिससबै भुलाई ❋ चेटक करि वश करी कन्हाई ॥
मान छुडाय हुलास बढायो ❋ तियको सुख दीनो सुखपायो ॥
तब निज धाम गये गीरिधारी ❋ चंद्रावलि उर आनँद भारी ॥
तहां सखी दश पांचक आई ❋ चंद्रावलि बैठी जेहि ठाई ॥
औरै वदन और अँग शोभा ❋ निरखि रही दृग द्वै मन लोभा ॥
कहत पिया कह हर्ष बढायो ❋ कहैन लूट कहूं कछु पायो ॥
क्यों अँग शिथिल मरगजी सारी ❋ यह छवि कही न जाय तुम्हारी ॥
हमसों कहा दुरावति प्यारी ❋ हमजानें तोहिं मिले विहारी ॥
दो०-चंद्रावलि करि चतुरई, ज्वाब सखिन नहिं देह ।
रही मूँदि मुख मंद हँसि, भीजी श्याम सनेह ॥
सो०-रह्यो ध्यान उरछाय, वह लीला बिसरै नहीं ।
मुखसों कह्यो न जाय, गूँगेको गुडसों भयो ॥
तब बोली बूझति कह आली ❋ युवती मनमोहन वनमाली ॥
है लीला अद्भुत सब जिनकी ❋ कही न जात बात सखि तिनकी ॥
हाहा कहि चंद्रावलि हमसों ❋ हमहूं सुने श्याम गुण तुमसों ॥
कै तोहिं मिले यमुनके तीरा ❋ कै तोहिं मिले भवन बलवीरा ॥
तब चंद्रावलि गद्गद बानी ❋ हर्ष सहित हरिकथा बखानी ॥
सुनि हरिचरित ललितसुखकारी ❋ भई प्रेमवश सब ब्रजनारी ॥
चंद्रावलि धनि धन्यकही तब ❋ कहन लगी हरिके गुणगण सब ॥

१ छिपावति ।

नंदनँदन सब लायकहैं री ❀ सबहिनके सुखदायकहैं री ॥
बसे रैनि काहूके जाई ❀ काहू देत प्रातसुख आई ॥
काहूको मन आय चुरावैं ❀ काहूसों अपनो मन लावैं ॥
काहूके जागत सिगरी निशि ❀ काहूको उपजावतहैं रिशि ॥
ब्रजवासी प्रभुके मनभावैं ❀ तैसेइ तैसे चरित उपावैं ॥
दो०-यह लीला आनँद भरी, सकल रसनको सार ।
भक्तनहित हरि करतहैं, गाय तरत संसार ॥
सो०-घर घर करत विहार, ब्रज युवतिनके संग हरि ।
गावतिहैं श्रुति चार, ब्रजवासी प्रभुके यशहिं ॥
श्रीराधा वृषभानुदुलारी ❀ नन्दनँदन पियकी अतिप्यारी ॥
सहज रहै अपने मनमाहीं ❀ नन्द सुवन निशि अन्तनजाहीं ॥
नन्दभवन के मेरे गेहा ❀ रहैं सदा चित यही सनेहा ॥
श्याम बसे काहू नारीके ❀ आये सदन प्रात प्यारीके ॥
रति रँग चिह्न अंग परवाने ❀ सोहत नयन अरुण अलसाने ॥
प्यारी देखि रही मुख पियको ❀ जान्यो रंग लग्यो कहुँ तियको ॥
तब मन बिहसि कह्यो श्रीराधा ❀ आज बन्यो पियरूप अगाधा ॥
पर उपकार हेतु तनु धारयो ❀ पुरवन सबकी साध बिचारयो ॥
कहां पढी यह नीति बतावो ❀ हमहूंको सो ठाम सुनावो ॥
कहो कहां काको सुखदीनो ❀ धनिधनि यह उपकार जु कीनो ॥
धनि यह बात आज मैं जानी ❀ क्यो नहिं कहियत प्रगट बखानी ॥
धन्य मोहिं यह दरश दिखायो ❀ धनिधनि जासों नेह लगायो ॥
दो०-भली दिखाई आज यह, अद्भुत छबि अभिराम ।
सूर[1] उदय लोचन कमल, चन्द उदै पर श्याम ॥
सो०-उर कुच कुंकुम दाग, अधर दशन छबि राजई ।
रंगी महावर पाग, यह शोभा अनुपम बनी ॥
क्यों उठि भोर यहांको आये ❀ काहेको इतने सरमाये ॥

१ सूर्यनारायण ।

तुमहूं भले भलीहैं वोऊ ❀ कीन्हों भलो भले मिलि दोऊ ॥
कीन्हींहै इतनो हित जिनते ❀ तौ अब कित बिछुरेहौ तिनते ॥
जाहुतहीं वे सुनि दुख पैहैं ❀ बहुरो तुमसों मन न मिलैहैं ॥
तिनहींको सुख दीजै मोहन ❀ जिनसोंनिशिबिलसेमिलिगोहन ॥
तियसन्मुख नहिं लखत कन्हाई ❀ वदन नवाय रहे सकुचाई ॥
कबहुँ नयनकी कोर निहारैं ❀ कबहुँ चरण नख भूमि उखारैं ॥
प्रगटत्रसित मनमन मुसकाई ❀ खंडित वचन सुनत हरषाई ॥
पियको सुख प्यारी नहिं जानैं ❀ रोष करतहू पिय मनमानैं ॥
जोइ आवत सोइ कहत वदनते ❀ जाहु जाहु पिय कहत सदनते ॥
तुम जानत जिय हमहिं सयाने ❀ और बसत सब लोग अयाने ॥
रैनि बसत कहुँ भोर हमारे ❀ आवत नाहिं लजात ललारे ॥

दो०-तबहिं श्याम वाणी मृदुल, बोले अति सकुचाय ।
किन देख्यो कौने कह्यो, झूठहि तुमसों आय ॥

सो०-कहति झूठ यह बान, खोटी ब्रजनारी सबै ।
तुमते प्रिय को आन, सौंह करौं जो मानिये ॥

बिनहीं बोले रहिये जू पिय ❀ कत ऐसे वचननदहिये हिय ॥
झूठी सबै एक तुम सांचे ❀ नीके लाज छांडिकै नाचे ॥
सौंह कहूं सुनिबो करि पायो ❀ सो अब इहां काम है आयो ॥
ऐसे खिजत पीयसों प्यारी ❀ आई तहां और ब्रजनारी ॥
सखियन देखि कुँवरि मुसुकाई ❀ उर अन्तर है रिस अधिकाई ॥
तिन्हें कह्यो सैनन में प्यारी ❀ देखहु हरिकी छविहि निहारी ॥
मौनहि रहे श्याम सकुचाई ❀ युवति बिलोकतिछबिअधिकाई ॥
कहति सबै हँसि हँसि ब्रजबाला ❀ कहँ पाई छबि यह नँदलाला ॥
तबहिं सखिन सों कह्यो किशोरी ❀ करत इते पर सौंह लखोरी ॥
निशि औरनके चितहि चुरावत ❀ दरशन देन प्रात इत आवत ॥
तुमहीं अंग चिह्न पहिचानो ❀ सही परै सो बात बखानो ॥
कृपाकरैं तहँ हीं पग धारैं ❀ नहीं काज इहँ वेगि सिधारैं ॥

दो०-प्यारीउरअतिरोषलखि, अरुसहियनकीभीर ।
तब वहँते बहरायकै, द्वार गये बलबीर ॥
सो०-शोच करत उरमाहिं, भरे विरह आनन्दरस ।
जाय सकत कहुँ नाहिं, मनमें प्यारी डर डरत ॥

अथ मध्यममानलीला.

जबहीं श्याम गये द्वारे तन ❀ कियो मान प्यारी अपने मन ॥
कहति सखिन सों देखो तुम अब ❀ बहुरि दोष देती मोको सब ॥
ऐसे श्याम गुणनके आगर ❀ चोरन चित्त फिरत अतिनागर ॥
ऐसे ख्याल मोहिं दिखरावैं ❀ जान देहु अब यहँ जिन आवैं ॥
इहां काज उनको कछु नाहीं ❀ मैं बैठी अपने घर माहीं ॥
जाव तुमहुँ अपने सब कामहिं ❀ यों कहि प्रिया गई उठिधामहिं ॥
नख शिख रोष भरी पियप्यारी ❀ यौवन[1] रूप गर्व उर भारी ॥
चली सखी बहु दशा निहारी ❀ द्वारे पर देखे बनवारी ॥
कहति सुनौ मोहन पिय हमसों ❀ प्रिया रोष कीन्हों अति तुमसों ॥
तुम्हरे आवत अति रिसपाई ❀ यह तुम कहा करी चतुराई ॥
सुनत बात यह कुँवर कन्हाई ❀ भये चकित अति गये झुराई ॥
जान्यो मान कियो फिरप्यारी ❀ भये विरहव्याकुल तनु भारी ॥
दो०-तब सखियन हरि सों कह्यो, चतुर कहावत नाम ।
करत फिरत ऐसे गुणन, अब कच्यातकतश्याम ॥
सो०-तुमहिं करायो मान, अटपट रूप दिखायकै ।
अब लागे पछितान, प्रथम बिचार[3] करचो नहीं ॥
यह सुनि धीरज कियो कन्हाई ❀ तब इकयुवती और बुलाई ॥
तासों कहि सब बात जनाई ❀ दूती करि हरि ताहि पठाई ॥
कहत श्याम तोसों यह वानी ❀ वेगि[2] मिटे जिय मान सयानी ॥
दूती गई करति मन साधा ❀ बैठी तहां जाय जहँ राधा ॥
प्यारी मान ठान दृग बैठी ❀ हृदय रोष भौंहें करि ऐठी ॥

१ युवावस्था। २ शीघ्र। ३ विचार।

उरमें सौति शाल अति शाले ❋ नेक नहीं इत उत कहुं हाले ॥
दूती कछू थाह नहिं पावै ❋ विना भींत कहँ चित्र बनावै ॥
मनहीं मन दूती पछिताई ❋ अति आतुर मोहिं श्याम पठाई ॥
यह इत उत कहँ नाहिं निहारै ❋ कहा करौं मन मांझ बिचारै ॥
तब कहि उठी दूतिका नारी ❋ मान कियो वृषभानुदुलारी ॥
कहा करौं मोहन अति कीन्ही ❋ उनकी बात आज मैं चीन्ही ॥
ऐसे मैं उनको नहिं जाने ❋ अब कैसे उनसों मन माने ॥

दो०-घर घर डोलत फिरत निशि, बोलत लगत न लाज।
आय दिखाये प्रात मुख, नटके रतिरँग साज ॥

सो०-मैं आई अब बाज, जित चाहो तितही फिरो।
उनको यहां न काज, राज करो ब्रजमें सदा ॥

दूती सुनि प्यारी की बानी ❋ अन्तर प्रेम रोष लपटानी ॥
कह्यो यमुनते मैं गृहआई ❋ सखी एक यह बात सुनाई ॥
तब मैं रहि न सकी घरमाहीं ❋ भली प्रकृति हरिकी यह नाहीं ॥
अब द्वारे ते हरि न टरतहैं ❋ पर घर जान कि सौंह करतहैं ॥
मन पछितात कहत घनश्यामा ❋ भूलेहुँ ऐसो करहुँ न कामा ॥
तू जिन मान तजै सुन मोसों ❋ यहै कहन आई मैं तोसों ॥
अब समझे अरु हम समझावैं ❋ परघर जानकि बात मिटावैं ॥
अब मोको यह बात लखाई ❋ जाहिं न परघर कुँवर कन्हाई ॥
जब दूती यों बात बखानी ❋ द्वारेहैं हरि तब यह जानी ॥
उमगि उठ्यो रस सुनि मनमाहीं ❋ बाहर प्रगटकियो सो नाहीं ॥
काहेको हरिद्वार खरेरी ❋ कौने राखे जाय घरेरी ॥
तूरहि मान कितहि रिस पावति ❋ यह हरिसों मैंही कहि आवति ॥

दो०-लई तीयके हीयकी, चतुर दूतिका जान।
अति आतुर हरिपै गई, कहति आनकी आन ॥

सो०-कही मनाऊं लाल, नेकु मरम नहिं पाइये।

१ खटके। २ स्वभाव। ३ विख्यात। ४ राधा।

दीठि न जोरति बाल, सूधे मुख बोलति नहीं ॥
अपनी सी बहुते मै भाखी ❀ सुनि उन मौन हृदय धर राखी ॥
नेक नहीं उत्तर मुख बोलैं ❀ अति रिस कंपत इत उत डोलैं ॥
मैं जु कही सो सुनहु कन्हाई ❀ भई बूँद बारूदकि नाई ॥
भरि भरिलेत नयन जलकोरैं ❀ नहीं डरत बैठी मुखमोरैं ॥
तिरछी करि करि भौंहन तानै ❀ कोटि कोटि अवगुण मुखगानै ॥
ऐसीहै वह दीठ[1] तुम्हारी ❀ कहा बसीठि[2] करै कोउ नारी ॥
सुनहु रसिक बर कुवँर कन्हाई ❀ आपहि लीजै जाय मनाई ॥
याको नाम भयो गढवाई ❀ लीजै ताहि सुरंग लगाई ॥
यह सुनि बिहर भरे बनवारी ❀ मुरछिपरे धर सुरति बिसारी ॥
सखी उठाय लये अँकवारी ❀ योंकत बिकल होत बलिहारी ॥
नागर बडे कहावत हौजू ❀ धीर धरो सुखपावत हौजू ॥
बातन नेकु ताहि गहिपाऊं ❀ तो तबहीं मैं तुमहिं मिलाऊं ॥
दो०-धीरजदै घनश्यामको, दूती गई उताल[3] ।
जाय कह्यो प्यारी निकट, प्यारे श्याम बेहाल ॥
सो०-मुख नाहिं बोलत वयन, अति व्याकुल तेरेविरह ।
भरि भरि डारत नयन, कहा कहौं न सँभार कछु ॥
बारहि बार कहति पछितानी ❀ दे मुख जो तू कुवँरि सयानी ॥
तूही प्रिया भावती हरिकी ❀ और नहीं कोऊ तो सरिकी ॥
तेरेहि रसवश कुँवर कन्हाई ❀ तेरे तनक बिरह कुम्हिलाई ॥
तेरेहि रूप अधीन खरेरी ❀ तेरेहि चितवनके चेरेरी ॥
तेरेइरंग बसन तनुधारैं ❀ तेरेइ रँगको तिलक सँवारैं ॥
चन्द्रवदन तेरो लखि गोरी ❀ मोर चन्द्र शिर मुकुट कियोरी ॥
तेरोइ चरित सुनैं अरु गानैं ❀ तूमानैं भावे जिनमानैं ॥
अति अनुराग श्यामको तेरो ❀ करि विचार नीके मैं हेरो ॥
जो जाको नीके करि जानैं ❀ सो तासों तैसो हित मानैं ॥

१ दृष्टि। २ दूतीपना। ३ घबराईहुई शीघ्रतासे।

यहै प्रीतिकी रीति पियारी ❀ कह तू बोलि लेहुँ गिरिधारी ॥
तूकहँगई कहन कहआई ❀ मैं जानति हरि तोंहि पठाई ॥
मानत कौन कही अब तेरी ❀ जानतिहौं हरि चरित बडेरी ॥
दो०—अबधौं को तिनसों मिलै, जिन्हैं परी यह बान ।
उरमें राखत आन कछु, कहत करत कछु आन ॥
सो०—हैं वे कपटनिधान, बहु नायक पूरे गुणन ।
जिनको करतबखान, जिन वामन ह्वै बलि छल्यो ॥
मान किये अब नाहिं बनेरी ❀ देखु विचारि हिये अपनेरी ॥
जाके गुण गण सुर मुनि मोहैं ❀ सो तेरे गुण गणि मणि पोहैं ॥
सनकादिक जेहि ध्यान लगावैं ❀ सो तेरे दरशन सुख पावैं ॥
शिव विधि जाके द्वार खरेरी ❀ सो प्रभु तेरे द्वार परेरी ॥
जाके पद कमला करलीन्हें ❀ सो प्रभु पद चिंतत मनदीन्हें ॥
अति आतुर नँदलाल हियेरी ❀ सौंह करति हौं शीशछुयेरी ॥
सुनु प्यारी अति हठ नहिं कीजे ❀ सर्वस वारि श्यामपर दीजे ॥
यह यौवन वर्षा को पानी ❀ गर्व न कीजे याहि सयानी ॥
सब सुख हरिके संग कियेरी ❀ कृष्ण विमुखके काज जियेरी ॥
पूरुब पुण्य सुकृत फल तेरो ❀ भामिनि मान कह्यो कर मेरो ॥
हरिके रस रँग जो मनभीजे ❀ रूप सुधा जो नयनन पीजे ॥
सौंह चरण तेरेकी कीजे ❀ सफल दरश दियतो यों जीजे ॥
दो०—वृथा जान नहिं दीजिये, हरिसों करिकै मान ।
उठति बैसके दिननको, सुन तिय यहै सयान ॥
सो०-हिलि मिलि करहि कलोल, मैं तेरे हितकी कहति ।
लेहिं श्यामको बोल, परे द्वार विलपत दई ॥
सोई चतुर सुलक्षण नीकी ❀ सदा भावती जो पियजीकी ॥
यौवन गुण द्युति अरुहित पीको ❀ है सुन्दर तेरे शिर टीको ॥
तेरे हित सब ब्रजकी बाला ❀ कियो बुलाय रास नँदलाला ॥
तू तनु श्याम प्राणरी प्यारी ❀ परछाही अरु सब ब्रजनारी ॥

तोसी और नहीं व्रजगोपी ❋ तेरेइ रूपवसे तिय ओपी ॥
सुंदर श्याम सकल सुखदायक ❋ कहा भयोरी जो वहुनायक ॥
तो समान वृषभानुललीको ❋ शशिहिकिहाडर कुमुलकलीको ॥
ऐसे जब दूती समुझाई ❋ तब बोली तिय कछु मुसुकाई ॥
वादहि बकति आय मेरे घर ❋ वेधति है ऐसे वचनन शर ॥
उतकी इत इतकी उत जाई ❋ मिलवत झूंठी बात बनाई ॥
जो चहिहैं तो आपुहि ऐहैं ❋ सौंह करैं अरु हाहाखै हैं ॥
प्रीति रीति कछु जानत नाहीं ❋ जोइ आवत सोइ कहत वृथाहीं ॥

दो०—जब प्यारी ऐसे कह्यो, सखी लियो तब जान ।
मानत नाहीं लाडिली, श्याम मिलाऊं आन ॥

सो०—कह्यो सखी मुसकाय, नहिं मानत मेरो कह्यो ।
श्याम मनावैं आय, मैं जानी तब मानिहैं ॥

अरी मनावे बहुतें तेरे ❋ लगत माननी कोई हेरे ॥
हांसी खेल औरको माई ❋ तुलत न तेरे बिरस रुखाई ॥
ऐसेही रहि जो लगि जाऊं ❋ यह सुख हरिको आनदिखाऊं ॥
पिय मन नूतन चोप बढाऊं ❋ अतिरस रूप अनूप उपाऊं ॥
यह कह गई श्याम पै आली ❋ कहत आज सुनिये वनमाली ॥
मानति नाहिं मनायो प्यारी ❋ को जानैं जियमैं कह धारी ॥
हाहा करि मैं बहु समुझाई ❋ सुनितें अधिक होत रिसहाई ॥
तुम आतुर वैसी गति वाकी ❋ आवति जाति बीचमैं थाकी ॥
आपहि चलि लीजिये मनाई ❋ और भांति नहिं बनत बनाई ॥
बहै बयारि जैसिये जबहीं ❋ पीठ आडिये तैसी तबहीं ॥
मोसी जो पठवहु तुम कोरी ❋ नहिं मानत वृषभानुकिशोरी ॥
हौं तो कहति तुम्हारे हितकी ❋ पाई है कछु वाके चितकी ॥

दो०—चले बनतहै लाल अब, और यतन नहिं कोय ।
काछ काछिये जौन हरि, नाच नाचिये सोय ॥

१ कमलकली । २ उपाय ।

सो०-आप काज महकाज, बडे कहिगये बात यह।
तजहु श्याम उर लाज, करि विनती तियसों मिलहु॥
चलो चले तुम्हरे हठ जैहै ❋ देखत प्रेम उमँग उर ऐहै॥
सखी संग तब नवल विहारी ❋ गये भवन बैठी जहँ प्यारी॥
आगे भये सकुंचिकै ठाढे ❋ अति आधीन प्रेमरस बाढे॥
नेक नहीं इत उत कहुं डोलैं ❋ चित्र लिखेसे मुख नहिं बोलैं॥
यद्यपि लाल गाढे अति जीके ❋ सकल सयानप भूले नीके॥
प्यारी देखि पियहि मुसकानी ❋ जिय डरपे मोते यह जानी॥
अति आनन्द भयो मन माहीं ❋ चुपही रही कह्यो कछु नाहीं॥
मन मन कहत न अब उचटाऊं ❋ आदर करि पियको बैठाऊं॥
मोसों श्याम बहुत सकुचाने ❋ अब नहिं जैहैं धामे बिराने॥
सहचरि कह्यो देखु री प्यारी ❋ कबके ठाढेहैं गिरिधारी॥
मान मनायो प्यारी पीको ❋ तू पिय जिय पिय जीवन जीको॥
प्राणहिं तनहिं रूसिबो कैसो ❋ यह कहुँ भयो सुन्यो नहिं ऐसो॥
दो०-करि आदर बैठारि पिय, हँसिले कंठ लगाय।
घर आये नहिं कीजिये, ऐसी कित सकुचाय॥
सो०-है तू नागरि बाम, मनमें कह ऐसी धरी।
वे ठाढेहैं श्याम, तू मुखते बोलति नहीं॥
तब हँसि कह्यो भलो पिय बैसो ❋ अब जिन काम करहु कहुँ ऐसो॥
अबकी चूक नहीं मैं मानी ❋ और दिनाको रहिये जानी॥
मेरी सौंह करो मो आगे ❋ तजि सँकोच बोलो डर त्यागे॥
कह्यो सौंहकर मोहन तबहीं ❋ और तियन पर जात न कबहीं॥
नंदभवन ते अबहीं आये ❋ तुम्हरो रोष देखि सकुचाये॥
ऐसी अब काहेको बोलो ❋ अबलोंकी करनी नहिं खोलो॥
अब जु काल्हिते अनत सिधारे ❋ तौ तुमहीं जानौगे प्यारे॥
तब हरि हँसि कर शिरपर राखे ❋ बारहि बार सौंह कर भाखे॥

---

१ लाजकर। २ घर।

सहचरि हँसि कर साखि रहीजू ❀ सखी आज ते बात यहीजू ॥
पानदिये प्यारी तब लालहि ❀ आई सखी सकल तेहि कालहि ॥
सौंह करी सबहिन यह जानी ❀ हँसे श्याम श्यामा मुसुकानी ॥
आदर करि सबको बैठायो ❀ निरखियुगलसबहिन सुखपायो ॥

दो०-कह्यो सखिनसों हँसि प्रिया, भरि आनँद उत्साह ।
तुमहूं सब मिलिकै कह्यो, भये श्याम अब साह ॥

सो०-लखिलखिसखीसिहात, यहसुखलाडिलिलालको ।
बसे श्याम तहँ रात, प्रात चले अपने सदन ॥

चले धाम निज श्याम सकारे ❀ देखे ठाढे नन्द दुवारे ॥
सकुच फिरे घर जात लजाने ❀ प्रमुदाके घर जाय समाने ॥
चकित बाल जब श्याम निहारे ❀ कहत लाल यह ख्याल तुम्हारे ॥
कहां हुते गवने कित माहीं ❀ कबहूं दरश देत हौ नाहीं ॥
रहत कहां हौ सकल लुभाने ❀ आयपरे इत कहां भुलाने ॥
कहौ कहाँहौ कछू डरेसे ❀ आलस भरे जम्हात खरेसे ॥
बसे कहूं निशि तिय सँगजागे ❀ नयन अरुण अतिरस रँगपागे ॥
मलयज उरज छाप उरधारे ❀ द्वैशशि मनहुँ उदित उजियारे ॥
नयन कछू सकुचतसे ऐसे ❀ शशिके उदय सरोरुह जैसे ॥
पुतरी अलि उडसकै न जानों ❀ उरझरहे अँग गात न मानों ॥
डगमगात से डग पग डोलो ❀ रसमस गात शृँगार अमोलो ॥
अंग अंग शोभाके सागर ❀ धनि धनि बसे जहाँ रतनागर ॥

दो०-विहँसि चले कहि श्याम तब, तरक करी तुम बात ।
समुझी सब हम आय हैं, आज तुम्हारे रात ॥

सो०-सुनि हरषी जिय नारि, पुलक गात आनंद उर ।
ऐहैं आज मुरारि, सांझ परे मेरे सदन ॥

प्रातहिते मन हर्ष बढ़ायो ❀ नवसत साजि शृँगार बनायो ॥
बार बार दर्पण मुख देखे ❀ भूषण वसन अंग सब रेखे ॥

१ चन्दन । २ कमल ।

कंद्रूसुत छवि छाजत वेणी ❁ माँग सुधारत दधिसुत श्रेणी ॥
भुवन तीय सुत रेख सँवारे ❁ धनपति पुरको नाम सुधारे ॥
हीरावलि उरपर लै धारे ❁ श्याम मिलनसुखमनहिंविचारे ॥
रचि रचि सुमनन सेज बनावैं ❁ केसर चन्दन अगर मिलावैं ॥
बहु नायक नँदसुवन कन्हाई ❁ गये अन्त याको बिसराई ॥
बासर ऐसे करत विहानो ❁ एक याम निशिको नियरानो ॥
परचो शोच विरहा अकुलानी ❁ श्याम न आये कहँ धौं जानी ॥
गये सांझहीको कहि आवन ❁ अजहूँ नहिं आये मनभावन ॥
कैधौं आवत हैं अब धाये ❁ किधौं परे कहुँ फंद पराये ॥
वे बहुरमणीरमण बिहारी ❁ कैधौं मेरी सुरत बिसारी ॥

दो०-कुमुदाके घर हरि रहे, बढ्यो अधिक उर हेत ।
भींजे दोऊ प्रेमरस, अरसपरस सुख लेत ॥

सो०-मुदित श्यामसँग वाम; क्षण सम बीततयामतिह ।
याको युगसम याम, बीतत नँभतारे गनत ॥

बसे उहां याही इहि रीती ❁ भयो भोर रजँनी सब बीती ॥
मनहीं मन युवती पछितानी ❁ मोसों श्याम कुटिलई ठानी ॥
गयो मदन दुख बदन झुराई ❁ रही बैठि सदनहिं मुरझाई ॥
आई तहां सहज इक आली ❁ देखी विरह विकलतनु ग्वाली ॥
लोचन जलज भरे जल ढारै ❁ मन मारे महि नखन बिदारै ॥
बूझनलगी निकटसो जाई ❁ कहा भयो तोको री माई ॥
आनँदरहित आज मुख तेरो ❁ देखत होत विकल मन मेरो ॥
सो तौ बात भई है कैसी ❁ मोहिं सुनाय कहत किन तैसी ॥
तब बोली मधुरे तिय बानी ❁ अंचर पोंछि नयन को पानी ॥
कहा कहौं तोसौं री आली ❁ कपटी कुटिल कठिन बनमाली ॥
मोसों गये अवधि बदि माई ❁ अनतहि लुब्ध रहे कहुँ जाई ॥
कियो नहीं मेरे गृह आवन ❁ भये सखी नयना दोउ सावन ॥

१ नागिन । २ दिन । ३ पहर । ४ आकाश के नक्षत्र । ५ रात । ६ पृथ्वी ।

दो०-ऐसे गुण हरिके सखी, निपट कपटकी खान ।
अब उनसों मोसों कहा, बने लिये पहिचान ॥
सो०-तोहिं मिलैं जो आज, मेरी सौं कहियो उन्हें ॥
गहौ कछू जियलाज, वचननके सांचे बड़े ॥
उन्हें गई मैं कछू बुलावन ❀ आपहि अजिरगये करि पावन ॥
मोपै कृपा आप यह कीन्हीं ❀ तोसों कहौं तबहिं मैं चीन्हीं ॥
कालि्ह कहूं जागे तिय गोहन ❀ जात हुते अपने घर मोहन ॥
द्वारे नन्दहिं देखि डराने ❀ मेरे गृह आये सकुचाने ॥
डग मग पग दृग नींद भरेरी ❀ बारहिं बार जम्हात खरेरी ॥
जब मैं कही कहांते आये ❀ तब मोहन सन्मुख मुसकाये ॥
उत्तर नहीं दियो सकुचाई ❀ श्याम करी तब यह चतुराई ॥
कह्यो धाम मेरे निशि आवन ❀ आपहि श्रीमुख वचन सुहावन ॥
रैनि जागि मैं सेज सँवारी ❀ ताते जरी रिसहिकी मारी ॥
इतनी कहत द्वार हरि आये ❀ ग्वालिनि भीतरते लखि पाये ॥
देखतही रिसमें झहरानी ❀ कही सुनाय श्यामको बानी ॥
धन्य धन्य यह घरी विधाता ❀ आये मेरे जू सुखदाता ॥
दो०-ऐसे कहि चुपह्वै रही, मुरि बैठी रिस गात ।
मधुरे वचननसों कहति, निकट सखीसों बात ॥
सो०-आयेहैं करि गौन, चतुर नारि सँग निशि जगे ।
इनसों मिलिहै कौन, फिरत कहा कोऊ बही ॥
कृपा करहिं अब इतहिं न आवें ❀ उतही जायँ जहाँ सुखपावैं ॥
सखी लखे सब अंग श्यामके ❀ जागे कहुँ निशि संग बामके ॥
कहुं चंदन कहुं बन्दनरेखा ❀ कहुँ काजर कहुँ पीक सुवेखा ॥
लखि स्वरूप हरितन मुसकाई ❀ मान कियो यह दियो जनाई ॥
मन मन शोचत कुँवर कन्हाई ❀ परे कठिन तियके फँद आई ॥
मेरो नाम सुनतही ऐंठी ❀ मान कियो मोसों फिरि बैठी ॥
तबहीं श्याम करी चतुराई ❀ सैननही सों सखी बुलाई ॥

सो कहि चली जाति घरमाई ❋ तू बैठी जो मान दृढाई ॥
अनतहि ठाढे भये कन्हाई ❋ तहां सखी सहजहि चलि आई ॥
निरखि वदन दोउन हँसि दीन्हों ❋ सखी कह्यो तुम यह कह कीन्हों ॥
तब हँसि कह्यो सखीसों गिरिधर ❋ मैं मनायलेहों तू जा घर ॥
यह सुनि विहँसि गई कहि आली ❋ जाय मनायलेहु वनमाली ॥

दो०-रसिकनकेमनिजान मणि, विद्या मणि गुणपाय ।
आपनहूं तहँ ते गये, तिनको दरश दिखाय ॥

सो०-रही अकेली वाम, फिरिकै चितयो द्वारतन ।
तहाँ न देखे श्याम, अधिक शोच मनमें भयो ॥

तब जानी फिर गये कन्हाई ❋ रही तिया मनमें पछिताई ॥
भई विरह व्याकुल अति नारी ❋ मिटिगयो मान हृदय दुखभारी ॥
कहत कहा मैं यहमति ठानी ❋ आवतही हरिसों झहरानी ॥
भीतरलों आवन नहिं दीनो ❋ कहा क्रोध मोको वह कीनो ॥
ज्यों त्यों कर मेरे घर आये ❋ सो मैं देखतही उचटाये ॥
बार बार ऐसे पछिताई ❋ मनहीं रही मसोसा खाई ॥
श्याम गये निहचै जब जानी ❋ न्हान चली तब यमुना पानी ॥
अति व्याकुल मन कछु न सुहाई ❋ कोऊ सखी न संग बुलाई ॥
पहुँची यमुना तुरत अन्हाई ❋ चली बहुरि घरको अतुराई ॥
भये श्याम मारगमें ठाढे ❋ पाँच वर्षके ह्वै छबि बाढे ॥
आगे ह्वै नागरिसों बोले ❋ सुन्दर कोमल वचन अमोले ॥
कहाँ जाति है री तू नारी ❋ चलु बोलत जाकी तूप्यारी ॥

दो०-बनहिं बुलाई श्याम तोहिं, लेन पठायो मोहिं ।
सुनत वचन चक्रित भई, रही बाल मुख जोहिं ॥

सो०-श्याम नाम सुनि कान, अति आनँद उरमें भयो ।
अगम चरितको जान, ब्रजबासी प्रभु कान्हके ॥

करगहि लियो चली हरषाई ❋ गोपकुमार जान गृह लाई ॥

१ देखि ।

कहत श्याम बनधाम बुलाई ❀ या बालकको लेन पठाई ॥
पूछौं याहि भेद वनको सब ❀ कहा कह्योहै हरि यासों अब ॥
अति आनंद भयो मन बालहि ❀ अंतहपुर लेगई गुपालहि ॥
तहाँ चरित्र कियो नँदलाला ❀ भये तरुण सुन्दर ततकाला ॥
भुज गहि लई हर्षि उरलाई ❀ चकित भई नागरि सकुचाई ॥
छाँडि देहु मन मुदित कहत तिय ❀ ऐसे चरित करत धन धन पिय ॥
ऐसे हरि भामिनी मनाई ❀ सुख दै गये सदन सुखदाई ॥
परम हर्ष मन भई गुवारी ❀ रैनि विरह तनु ताप निवारी ॥
समुझि समुझिकै पियगुणमनमें ❀ पुनि पुनि हर्षित पुलकिततनमें ॥
हरि ये चरित करत ब्रजडोलैं ❀ यशुमति ढिग बालकजिमिबोलैं ॥
निजगृह गये सदा नँदलाला ❀ परम विचित्र श्यामके ख्याला ॥

दो०-ब्रजबासी प्रभुकी कथा, अति विचित्र सुखवान ।
कहत सुनत गावत गुणत, हरषत संत सुजान ॥

सो०-ब्रजनायक घनश्याम, नट नागर गुण आगरे ।
ब्रजवासी सुख धाम, गोपीपति नँदलाडिले ॥

अथ गुरुमानलीला.

सखिनसंग वृषभानुकिशोरी ❀ चली न्हान प्रातहि उठि गोरी ॥
जाकेघर निशिबसे कन्हाई ❀ तावर ताहि बुलावन आई ॥
ठाढी भई द्वार पर आई ❀ कढे तहाँते कुँवर कन्हाई ॥
औचक मिले न जानत कोऊ ❀ रहे चकित इत उतते दोऊ ॥
फिरी सदनको तुरतहि प्यारी ❀ न्हान जानकी सुरति बिसारी ॥
भई बिकल तनु रिस अतिबाढी ❀ रह गईं सखी निरखि सब ठाढी ॥
रह गये ठाढे श्याम ठगेसे ❀ सकुचाने उर शोच पगेसे ॥
जब देखे हरि अति मुरझाये ❀ तब सखियन भुज गहिसमुझाये ॥
उलटि भई सब हरिकी धाई ❀ दैकै बांह प्रिया जहँ ल्याई ॥
देखी श्याम आय तहँ राधा ❀ बैठी मान दृढाय अगाधा ॥

१ प्रसन्न । २ घर ।

रिसहीके रस मगन किशोरी ❀ भई श्याम मति देखत भोरी ॥
ठाढे चाकित चित्त अकुलाहीं ❀ मुखते वचन कहे नहिं जाहीं ॥
दो०-व्याकुललखिनँदलालको, सखियन कियोबिचार ।
अब दोऊ जैसे मिलैं, करिये सो उपचार ॥
सो०-अति रिस नारि अचेत, को सुनिहै कासों कहैं ।
इत ये धरत न चेत, परी रुठावनबानि इन ॥
प्यारी निकट गई सब आली ❀ ठाढे पौंरि रहे बनमाली ॥
कहत मानकीनों तैं प्यारी ❀ न्हान जानते फिरी कहारी ॥
तोहिं लखत हैं री गिरिधारी ❀ अतिही डर तनु सुरति बिसारी ॥
मुरछि परे धरणी अकुलाई ❀ तरुतमाल जनु गयो झुराई ॥
तेरी सों कछु चितयो उनको ❀ नेकहु चैन रह्यो नहिं तनको ॥
तेरे नयन अरी अनियारे ❀ किधौं वान खरसान सँवारे ॥
भौंहकमान तान यों मारे ❀ क्यों कर राखे प्राण पियारे ॥
घायल जिमि मूर्छित गिरिधारी ❀ अमीवचन अब सीचत प्यारी ॥
बहुनायक वे तू नहिं जाने ❀ तिनसों कहा इतो दुख माने ॥
बाँह गहो हरिको ढिग लावैं ❀ अब वे निज अपराध क्षमावैं ॥
गहत बाँह तुमहीं किन जाई ❀ मोसों कहा गहावन आई ॥
काल्हिहि सौंह मोहिं उन दीनी ❀ आजहि यह करणी पुनि कीनी ॥
दो०-देखि चुकी उनके गुणन, निज नयनन सुखपाय ।
तिन्हैं मिलावति मोहिं अब, बाँहगहावति आय ॥
सो०-मिलौं न तिनसों भूल, अबजोलौं जीवन जियहुँ ।
सहौं बिरहकी शूल, बरु ताकी ज्वाला जरौं ॥
मैं अब अपने मन यह ठानी ❀ उनके पंथ न पीऊं पानी ॥
कबहूँ नयन न अंजन लाऊं ❀ मृगमद भूलि न अंग चढाऊं ॥
हस्तबलै पटनील न धारौं ❀ नयनन कारे घन न निहारौं ॥
सुनौं न श्रवणन अलिपिकवानी ❀ नीलेतनुपरसों नहिं पानी ॥

१ दूआर । २ अमृतवचन । ३ कस्तूरी । ४ कान । ५ भौंरा । ६ हाथ ।

सुनत प्रियाकी बात सुहाई ❋ हर्षत ठाढे पोरि कन्हाई ॥
सखी कहतियों हठ नहिं लीजे ❋ हरिसों ऐसो मान न कीजे ॥
तूहै नवल नवल गिरिधारी ❋ यह यौवन हैरी दिन चारी ॥
क्षण क्षण ज्यों करको जलछीजे ❋ सुनरी याको गर्व न कीजे ॥
नंदनँदन पिय मुख सुखकारी ❋ तूकरि नयन चकोर पियारी ॥
हुतो प्रेम धन यह तौ प्यारी ❋ सो अब कहु तैं कियो कहारी ॥
कहति हुती रूसौं नहिं कबहीं ❋ सो अब रूसतिहै जब तबहीं ॥
सुनिहै सुघर नारि जो कोई ❋ करिहै हँसी प्रेमकी सोई ॥

दो०-मान कियो जो भावते, सोन भावतो होय ।
उरते रिसवत प्रेम कित, अंत भावतो सोय ॥

सो०-लाख कहे किन कोय, पिय सनेह जो गाइहै ।
चतुर नारि है सोय, लियो प्रेम परचौ किनहुँ ॥

तुम ते एक न दोय पियारी ❋ जलते तरँग होति नहिं न्यारी ॥
रस रूसनो ओसकन जैसो ❋ सदा न रहिये चहिये तैसो ॥
ताजि अभिमान मिलहि पिय प्यारी ❋ मान राधिका कही हमारी ॥
चुप न रहत कहकरत मनावन ❋ तुम आईहो बात बनावन ॥
बहुत सखी घर आई यातें ❋ सुरति दिवावत पिछली बातें ॥
मोसों बात कहतहौ काकी ❋ जाहु घरन अब कछुहै बाकी ॥
को उनकी यह बात चलावत ❋ हैं वे अब तुमहीं को भावत ॥
तुम पुनीत अरु वे अतिपावन ❋ आईहो सब मोहिं मनावन ॥
यह कहि रही रोष भरि भारी ❋ गई सखीले जहाँ विहारी ॥
कह्यो जाय हरिसों हरषाई ❋ आज चतुरई कहाँ गँवाई ॥
विन निज जाँघन चलहिं ललारे ❋ कैसे चहत कियो सुखप्यारे ॥
हौ मनमोहन तुम बहुनायक ❋ नागर नवल सकल गुणलायक ॥

दो०-मान तजै नहिं लाडिली, थाकीं सबै मनाय ।
बेगि यत्न कछु कीजिये, रचिये आप उपाय ॥

१ योग्य ।

सो०-रच्यो दूतिका रूप, तब मनमोहन आपही।
करितिय स्वांग अनूप, गये जहां प्रियमानिनी॥
बैठे निकट सखी मिसजाई ❋ कहत श्रवण ढिग बात सुहाई॥
बन घनश्याम धाम तू प्यारी ❋ करि बैठी यों मान कहारी॥
मैं उतगई तोहिं नहिं पाई ❋ हरिकी दशा देखि फिरि आई॥
अति आरति मन कुंजबिहारी ❋ इकले खड़े गहे द्रुम डारी॥
तेरोइ नाम रटत मुख माहीं ❋ और कछू तिनको सुधि नाहीं॥
देखत व्यथा भई मुहिं गाढी ❋ चल तू होहि नेक ढिग ठाढी॥
कुंजभवन ठाढे दोउ देखों ❋ तब मैं नयन सफल करिलेखों॥
अब हरि कहत कृपा मोहिंकीजै ❋ जो बूझिये दंडसो दीजै॥
अति आतुर प्रीतमको लेरी ❋ हठतजि हाहाकहि सुनि मेरी॥
तुव कारण वृषभानुदुलारी ❋ मेरे पाँय परत गिरिधारी॥
अब मैं पाँय परतिहौं तेरे ❋ करु अपराध क्षमा हरि केरे॥
चाहत कियो श्यामको जोई ❋ उन्हें जानि मोसों कर सोई॥
दो०-क्षण क्षण परशत चरणकर, क्षणक्षण लेत बलाय।
कहत प्रिया अब मान तजु, पुनिपुनि हाहाखाय॥
सो०-लखिलखिसखीसिहात, चरितललितनँदलालके।
मनहीं मन मुसुकात, भरी प्रेम आनन्द रस॥
तब चितयो प्यारी नयनन भर ❋ आयो उघरि लाल लीला धर॥
श्याम चतुराई मोसों माँडत ❋ वे गुण तुम अजहूं नहिं छाँडत॥
इन छंदनमें मानत हौ जू ❋ नीके सब गुण जानत हौ जू॥
रस वादिन मोको करि पाई ❋ वे बातैं सब देहु भुलाई॥
यह कहि बहुरि भई रिसहाई ❋ रहे श्याम ठाढे सकुचाई॥
गहे ग्रीव पट अति आधीना ❋ जलके निकट दीन जनु मीनां॥
फिरि पौढी दै पीठ श्यामको ❋ हृदय बिरह दुख अधिक वामको॥
कर आरसी अग्र लै धारैं ❋ पट अंतर हरि वदन निहारैं॥

१ वृक्ष। २ मछली। ३ वस्त्र।

रिसवश धरत नहीं मन धीरा ❀ तलफत हिये बिरहकी पीरा ॥
इत नागरि उत नागर ओऊ ❀ भली चतुराई बाढे दोऊ ॥
जिते जिते मुख फेरति प्यारी ❀ तितही ढरि आवत गिरिधारी ॥
जोइ जोइ बात भावतिहि भावैं ❀ सोइ सोइ बातैं श्याम चलावैं ॥
दो०-करि हारे छलछंद सब, छुवन न पावत छांह ।
हठ छाँडत नहिं लाडिली, हरि शोचत मनमाँह ॥
सो०-देखि श्यामको दीन, विरह बिवश प्यारी निकट ।
सखियाँ परम प्रबीन, तब सब समझावन लगीं ॥
लखु री कमलनयन तो आगे ❀ कब के हहा करत अनुरागे ॥
तेरे भयते कुँवरकन्हाई ❀ आये तिय को रूप बनाई ॥
मधुर मधुर वचनन बनवारी ❀ तोहिं मनावत हैं री प्यारी ॥
हाहा करि अरु पाँयन लागे ❀ कियो कहा चाहति है आगे ॥
लखि हरि खड़े मिलन मुरझाये ❀ आदर नहिं चुकिये वर आये ॥
वे तो वनके भवँर बिहारी ❀ तोसी और बेलिको प्यारी ॥
करि सन्मान बिहँसिकर वैसो ❀ कीनो कहा निठुर मन ऐसो ॥
पावत कहा मानके कीने ❀ कहा गवाँवत आदरदीने ॥
होत कहा घूंघट पट खोले ❀ कहा नशात तनक मन बोले ॥
ऐसी कहा कीजियत है री ❀ प्रीतम छांडि राखियत बैरी ॥
निज वश मदनगुपालहि जानी ❀ ऐसी कहा अधिक इतरानी ॥
सिखकी कहत अनसिखी आवे ❀ कहा तोहिं कोई समुझावे ॥
दो०-जो नहिं मानति श्यामसों, मानहि रहिहै हाथ ।
तब अपने मन जानिहै, जब दहिहै रतिनाथ ॥
सो०-ऐसे कहिहै कौन, मान प्रिया हम कहतिहैं ।
त्रिभुवन ठाकुर जौन, सो तेरे वश ह्वै परचो ॥
ऐसो समय बहुरि नहिं पैहै ❀ सुनु री फिरि पाछे पछितैहै ॥
यह यौवन है धन स्वपनेको ❀ मान मनायो पिय अपने को ॥

१ कामदेव ।

अब ये दिन रूसनके नाहीं ❋ प्रिया विचारि देखु मनमाहीं ॥
पावस ऋतु कीयो री फेरो ❋ गरजत गगन[1] भयो घन[2] घेरो ॥
बोलत दादुर[3] चातक मोरा ❋ चहुं दिशि करति पवनझकझोरा ॥
वरषत मेघ भूमि हित लागी ❋ नारि सकल प्रीतम अनुरागी ॥
जे बेली ग्रीषमऋतु दाहीं ❋ ते हुलसी तरुसों लपटाहीं ॥
सरिता उमगि सिंधुको जाहीं ❋ मिलत सरी सर आपसमाहीं ॥
भयो समय यह दिवस चार को ❋ नंदनँदन पिय सँग बिहारको ॥
सुनि सखियनके बचन किशोरी ❋ उमग्यो प्रेम रही रिस गोरी ॥
रिस करि कह्यो जाहु उठि ताके ❋ रस कर हाथ बिकाने जाके ॥
मुख सों भलो मनावत मेरो ❋ रहत सदा अनहित चितघेरो ॥

दो०-सांच बखानत जगत सब, बिरद तुम्हारो लाल ।
गहे रहत मन तियनके, बिहँसि कह्यो यों बाल ॥

सो०-भये प्रफुल्लित श्याम, विरह ताप तनुको गयो ।
हर्षि उठीं सब बाम, प्यारी मुख विहँसत निरखि ॥

तब बोले हरि दोउ कर जोरी ❋ तेरी सौं वृषभानुकिशोरी ॥
तूही हित चित जीवन मोको ❋ सदा करत आराधन तोको ॥
तू मम तिलक तुही आभूषण ❋ पोषण तेरेइ वचनपियूषण ॥
तेरोइ गुण मैं निशिदिन गाऊं ❋ अब तजि मान हृदय सुखपाऊं ॥
कर जोरैं विनती करि भाख्यो ❋ कहत शीश चरणनपर राख्यो ॥
यह सुनि कछु प्यारी मुसकानी ❋ तब बोली उठि सखी सयानी ॥
सुनहु श्याम तुम हो रससागर ❋ रूप शील गुण प्रीति उजागर ॥
तुमते प्रिया नेक नहिं न्यारी ❋ एक प्राण द्वैदेह तुम्हारी ॥
प्यारी मैं तुम तुम मैं प्यारी ❋ जैसे दर्पण छांह निहारी ॥
रसमें परै विरस जहँ आई ❋ होय परति तहँ अति कठिनाई ॥
अबके हम सब देति मनाई ❋ परसो[4] प्यारी चरण कन्हाई ॥
अब रुठायहो जो गिरिधारी ❋ राम रामतो बहुरि हमारी ॥

---

१ आकाश । २ बादल । ३ मेढक । ४ स्पर्शकरो ।

दो०-जब परशे प्यारी चरण, परम प्रीति नँदनन्द ।
छुट्यो मान हरषी प्रिया, मिट्यो विरह दुखद्वन्द ॥
सो०-उर आनन्द बढाय, प्रेम कसौटी कसि पियाहिं ।
अवगुणमन बिसराय, मिलीप्रियाउठिश्यामसों ॥
हर्षि मिले दोउ प्रीतम प्यारी ❋ भई सखी सब निरखि सुखारी ॥
तब दोउ उबटि सखी अन्हवायो ❋ रुचिर शृँगार शृँगारि बनायो ॥
मधुर मिष्ट भोजन मनभाये ❋ दोउन एकहि थार जिमाये ॥
दिये पान अँचवन करवाये ❋ सुमन सुगंध माल पहिराये ॥
लै बीरा अपने कर प्यारी ❋ दीनो वदन बिहँसि गिरिधारी ॥
तबहिं सफल यौवन हरि जान्यो ❋ परम हर्ष उर अन्तर मान्यो ॥
मिलि बैठे दोउ प्रीतम प्यारी ❋ तब सखियन आरती उतारी ॥
अति आनन्द भरे दोउ राजैं ❋ अरस परस निरखत छबि छाजैं ॥
पाये वश करि कुंजविहारी ❋ बिहँसि कह्यो तब पियसों प्यारी ॥
सुनहु श्याम वर्षाऋतु आई ❋ रचहु हिंडोला शुभ सुखदाई ॥
है मन पिय यह साध हमारे ❋ सब मिलि झूलहिं संग तुम्हारे ॥
सुन तियवचन श्याम सुख पायो ❋ ऐसे कहि हरि मान छुडायो ॥
छं०-तिय मान हरि ऐसे छुडायो, भक्तहित लीलाकरी ।
निगम नेति अपार गुण सुख, सिंधु नट नागर हरी ॥
यह मानचरित पवित्र हरिको, प्रेम सहित जो गावहीं ।
करहिं आदर मान तिनको, संत जन सुख पावहीं ॥
दो०-राधा रसिक गोपालको, कौतूहल रस केलि ।
ब्रजबासी प्रभु जननको, सुखद कामतरुबेलि ॥
सो०-सफल जन्म है तास, जे अनुदिन गावत सुनत ।
तिनको सदा हुलास, ब्रजबासी प्रभुकी कृपा ॥

अथ हिंडोरावर्णनलीला.

भक्त वश्य प्रभु कुंजविहारी ❋ भक्तनहित लीला अवतारी ॥

सदा सदा भक्तन सुखदाई ❀ करत सदा भक्तन मन भाई ॥
प्रेम भक्ति दृढ ब्रजकी बाला ❀ भये वश्य तिनके नँदलाला ॥
जो जो सुख तिनके मन भावें ❀ सो सो ब्रजमें श्याम बनावें ॥
समय समयके सुखद बिहारा ❀ करें तियनसँग नन्दकुमारा ॥
ग्रीषम गत पावसऋतु आई ❀ परम सुहावन जन सुखदाई ॥
श्रीराधामनकी रुचि जानी ❀ तब हिंडोललीला मन आनी ॥
यमुनापुलिन गये मनभावन ❀ वृन्दावन घन परम सुहावन ॥
सखिन सहित सोहति सँग प्यारी ❀ कोटिक करत मनोजबिहारी ॥
अति आनन्द उमँगि चहुंओरा ❀ घुमडि रहे पावस घन घोरा ॥
जहां तहां बगपाँति उडाहीं ❀ चपला[1] चमकि रहीं घन माहीं ॥
गरजत मधुर श्रवण सुखदाई ❀ तैसिय बहत समीर[2] सुहाई ॥

दो०–नाना रँग खग फूल फल, लगे नगनके चार ।
गजमुक्तनके झूमका, झालर झबा अपार ॥

सो०-शोभित लता वितान, अति उतंग तरु सुमन युत ।
रहे पान मिलपान, विविध नगन मानहुँ जडे ॥

कनकवर्णमय[3] भूमि सुहाई ❀ छबि हिंडोर नहिं वार्णि सिराई ॥
तापर रसिक छबीले दोऊ ❀ उपमा को त्रिभुवन नहिं कोऊ ॥
नन्दनँदन वृषभानुकिशोरी ❀ गौर श्याम सुन्दर छबि जोरी ॥
चढे उमँगि आनँद उर भारी ❀ निरखत छबि नभ सुर नरनारी ॥
मोरमुकुट पीताम्बर सोहे ❀ श्याम सुभग तनु त्रिभुवन मोहे ॥
प्यारी अंग बैंजनी सारी ❀ शोभित चहुँदिशिचारु किनारी ॥
युगल अंग भूषण छबि छाये ❀ रुचि रुचि सखि शृंगार बनाये ॥
उर रतनके हार बिराजें ❀ सुमन हार अतिशय छबि छाजें ॥
उत कुंडल इत तरबनकी छबि ❀ रह्योलजाय निरखि छबिको रवि ॥
सखि गण क्षण तृण तोर निहारें ❀ वारत प्राण रीझि रिझवारें ॥
भरि उछाह ऊंचे स्वर गावें ❀ पिय प्यारीको हर्षि झुलावें ॥

१ बिजुली । २ पवन । ३ स्वर्णवर्ण ।

ताल मृदंग बांसुरी बीना ❋ बाजत सरस मधुर सुर लीना ॥

दो०-यह सुख सुनि ब्रज सुन्दरी, अपरसकल नव बाल ।
बृन्दाबन झूलति कुँवरि, राधा अरु नँदलाल ॥

सो०-चलीं सकल अतुराय, नवसत साजि शृँगार तन ।
गृहकारज बिसराय, मनमोहन के रस पंगी ॥

चुनि करि पहिरि चूनरी सारी ❋ अरुण चुहचुही कोर किनारी ॥
यूथ यूथं मिलि हरि पै आवैं ❋ तिन्हैं प्रिया पिय निकट बुलावैं ॥
आदर वचन सप्रेम सुनावैं ❋ सबके मनकी साद पुरावैं ॥
एकन लेत निकट बैठाई ❋ एकै चढत पैंग पर धाई ॥
एक बुलावति अति सचुपाई ❋ गावति एक मलार सुहाई ॥
राग रंग सुख वरणि न जाई ❋ रह्यो छाय घननिधि वन जाई ॥
युवतिवृन्द चहुँओर सुहाई ❋ भूषण भीर वर्णि नहिं जाई ॥
बसन सुगंध सने बहुरंगा ❋ भवँर भीर छांडतनहिं संगा ॥
हरिमुख शशि लखि सुभगअनंगा ❋ उमँगि मनो छविसिंधुतरंगा ॥
देत चाव भरि जब झकझोरा ❋ होतिअधिक छविबढतहिंडोरा ॥
ऊंचो मिलत द्रुमन सों जाई ❋ लेत जहां ते सुमन कन्हाई ॥
ज्यों ज्यों पैंगबढति अति भारी ❋ त्यों त्यों डरति कुवँरि सुकुमारी ॥

दो०-राखु राखु सखियन सहित, सौंह दिवावत जात ।
जब नहिं सकत सँभारि तन, तब पियसों लपटात ॥

सो०-हँसत परस्पर बाल, तब हिंडोल राखत पकरि ।
करति चरित्र रसाल, पिय प्यारी अति रस भरे ॥

इक उतरत इक चढत हिंडोरे ❋ इक आतुर चढिबेको दोरे ॥
एक कहति मोहिं देहु उतारी ❋ एक चढनको बिनवति नारी ॥
सबके मनकी रुचि हरि राखें ❋ मधुर वचन सबसों हँसि भाखें ॥
कबहुँ अकेले झूलत मोहन ❋ गावति युवती सब मिलि गोहन ॥
कबहूं युवतिन देत चढाई ❋ आप झुलावत कुँवर कन्हाई ॥

१ लीन । २ लाल । ३ झुंडकेझुंड ।

कबहूँ मुरली मंन्द बजावैं ❀ कबहूं संग सबनके गावैं ॥
बिच बिच देत कोकिला टेरे ❀ रहे सजल घन झुकि अतिनेरे ॥
परत फुवार मंद श्रमहारी ❀ बहत त्रिविध अतिसुखद बयारी ॥
चातक पिय पिय रटत पुकारी ❀ राधा नाम रटत बनवारी ॥
ऐसे गोपिनसों मनमोहन ❀ करत केलि कौतूहल गोहन ॥
अति आनन्द सबन उपजावैं ❀ निरखि सुमन सुरगण वरषावैं ॥
जय जय यजधुनि बोलत बानी ❀ धन्य धन्य ब्रज कहत बखानी ॥

छं०—कहतब्रजधनिअमरअंबर, सकलमनआनँदभरे ।
कहत मन मन इहै चाहत, हम न विधिब्रज द्रुम करे ॥
भक्त हित प्रभु अज सनातन, ब्रह्म तनु धरि अवतरे ।
वर्णि कापै जातसो सुख, करत जो नित ब्रज हेरे ॥

दो०—नित लीला आनन्द नित, नित नव मंगल गान ।
धनि धनि जिनके चितरहत, ब्रजवासीप्रभुध्यान ॥

सो०—हरिके चरित रसाल, जे सप्रेम गावत सुनत ।
रहत सदा नँदलाल, ब्रजवासी तिनके निकट ॥

अथ फागवर्णनलीला.

जय जय जय श्रीनित्य[illegible]बेसीवा ❀ नित्यानन्द भक्तहितकारी ॥
झगा झीन रंग पीत सुहायो ❀ नितनव करत बिहार बिहारी ॥
घेरदार संजाफ जरीकी ❀ नित्य रूप राधा ब्रजवामा ॥
तैसिय कमल चरणपर पनहीं ❀ नित्य मानखण्डन व्यवहारा ॥
कर चूडामणि जटित अँगूठी ❀ नित्य प्रेम सुख सिंधु हिलोरा ॥
बाहु बिजैठा जटित रतनको ❀ नित्य नवल छबि मन्मथ चोरी ॥
झलकत झीन झँगाके माहीं ❀ सदा बसंत रहत जहँ छाई ॥

दो०—कटि पर पट पीरोकर सदा त्रिविधं मारुण सुखकारी ॥
कोकिल कीर सदा कलबोलैं ॥

१ सानेकेकलश । २ वर्तन । ३ सु[illegible]
६ दांत । ७ ओष्ठ । [illegible] । ५भ्रमर । ६ सुवा । ७ मनोहरवचन ।

सुनि सुनि नारि हृदय सुखपावैं ❋ मनहीं मन अभिलाष बढावैं ॥
वारि वारि कहि पियसुख पावैं ❋ ऋतुवसन्त आई समुझावैं ॥
फागु चरित अतिसाद हमारे ❋ खेलै मिलि सब संग तुम्हारे ॥
दो०-ब्रज वनिता हरिसों हरषि, कहति सुनहुँ ब्रजराज।
देखहु वन शोभा निरखि, अतिहि विराजत आज ॥
सो०-खेलतहैं दोउ फाग, मानहुँ मदन वसन्त मिलि।
लखि उपजतअनुराग, यह रसअधिक सुहावनो ॥
द्रुमन मध्य टेसूतरु फूले ❋ करत प्रकाश अग्निसम तूले ॥
मानहु निज निज मेरु सुहाई ❋ हर्षि सबन होलिका लगाई ॥
कुंज कुंज कोकिल सुखदानी ❋ बोलति विमल मनोहर बानी ॥
निलज भई मनु ब्रजकी नारी ❋ गावति गृहपति चढी अटारी ॥
नाना खग केकी शुकनारी ❋ जहँ तहँ करत कुलाहल भारी ॥
मनहुँ परस्पर नर अरु नारी ❋ देत दिवावतहैं सब गारी ॥
प्रफुलित लता विलोकत जितहीं ❋ अलिमधुमत्तजातचलि तितहीं ॥
मानहुँ गणिका देखि सुहाई ❋ मतवारे लपटतहैं धाई ॥
पुहुप पराग अबीर सुहाई ❋ लिये समीर फिरतहैं धाई ॥
संयोगिनरस अनरस विरहिन ❋ क[illegible] छोडतमनभायो सबहिन ॥
नवपल्लवदल सुमन सुहाये ❋ [illegible]त, स[illegible] विटपन छविछाये ॥
जनु ऋतुराज संग छवि बाढे ❋ [illegible]न, तब पियसों लपटाते ॥
दो०-भँवर गुंज निरझरशब[illegible]ब हिंडोल राखत पकारि।
रची मण्डलीमदन ज[illegible]पेय प्यारी अति रस भरे ॥
सो०-वृन्दाविपिन समाज, ❋ इक आतुर चढिबेको दोरे ॥
कान्ह तुम्हारे राज, ❋ एक चढनको विनवति नारी ॥
रचहु फाग सुख अब नँदलाला ❋ मधुर बचन सबसों हँसि भाखें ॥
सुनि गोपिनके वचन कन्हाई ❋ गावति युवती सब मिलि गोहन ॥
विहँसि कह्यो तब श्री गिरिधारी ❋ आप झुलावत कुँवर कन्हाई ॥

हमहूं सखन संगलै आ[illegible]लाल । ३ झुंडकेझुंड ।

यह सुनि मुदित भई ब्रजबाला ❀ गये सदनको मदन गोपाला ॥
सखा वृन्द सब श्याम बुलाये ❀ सुनत सकल आतुर जुर आये ॥
हँसि हँसि उन्हें श्याम समुझायो ❀ आयो फागुन मास सोहायो ॥
भैया हो सब खेलैं होरी ❀ भरो अबीर गुलालन झोरी ॥
यह सुनि ग्वाल बाल अनुरागे ❀ होरीसाज सजन सब लागे ॥
कंचनकलश अनेक सुहाये ❀ केशर टेंसू रंग भराये ॥
अतर अरगजा विविध विधाना ❀ लियसुंगध भाजनं भरिनाना ॥
पीत अरुण बरं वसन बनाये ❀ नेह सुगन्धन अति मन भाये ॥

दो०—अंग अंग भूषण ललित, उर सुमननकी माल ।
नयन सैन शोभा हरन, बनी मण्डली ग्वाल ॥

सो०—पान भरे मुख लाल, उसकाये बाहैं झँगा ।
फेटन भरे गुलाल, पिचकारी कञ्चन बरन ॥

फेंटा पीत श्याम शिर सोहै ❀ तुर्राकी झलकन मन मोहैं ॥
तापर मोर चंद्र छवि न्यारी ❀ कोटि चंद्र रवि छवि बलिहारी ॥
केशर खौर भाल शुभकारी ❀ बीच तिलककी रेख शृँगारी ॥
भौंहैं कुटिल नयन रतनारे ❀ कुण्डल झलक केंश घुघरारे ॥
चारु कपोल मनोहर नाशा ❀ मन्द हँसनि द्युति दर्शन प्रकाशा ॥
अँधरे अरुण चिबुक छबिसींवा ❀ कटि अतिललितकंबुकलग्रीवा ॥
झँगा झीन रँग पीत सुहायो ❀ शोभित तनु छबिसों लपटायो ॥
घेरदार संजाफ जरीकी ❀ झमकिरही छवि उमग भरीकी ॥
तैसिय कमल चरणपर पनहीं ❀ कंचनमणिमय,मोहत मनहीं ॥
कर चूडामणि जटित अँगूठी ❀ लसत अँगुरियन भाँति अनूठी ॥
बाहु बिजैठा जटित रतनको ❀ चन्दन चित्रित श्यामलतनको ॥
झलकत झीन झँगाके माहीं ❀ सो छवि कहत बनत मुख नाहीं ॥

दो०—कटि पर पट पीरोकसे, कनक किनारे चार ।

---

१ सानेकेकलश । २ वर्तन । ३ सुन्दर । ४ बाल । ५ नाक ।
६ दांत । ७ ओष्ठ । ८ बजुल्ला ।

तापरखोंसे मुरलिका, उर मुक्तनके हार ॥
सो०–तापर ललित बिशाल, माल गुलाब प्रसूनकी ।
चितवन हँसन रसाल, बन्यो छैल नँद लाडिलो ॥
बन्यो यूथ सब रंग रँगीलो ❀ मधि नायक नँदनंद छबीलो ॥
खेलत श्याम चले ब्रजहोरी ❀ उडत अबीर गुलालन झोरी ॥
बाजत ताल मृदंग सुहाई ❀ डफ मुहचंग बीन सहनाई ॥
और नगारनकी कल जोरी ❀ बीच बीच मुरली सुरबोरी ॥
कोउ नाचैं कोउ भाव बतावैं ❀ होरी गीत मिले सुरगावैं ॥
ब्रज बीथिन बीथिन सब डोलैं ❀ हो हो होरी मुखते बोलैं ॥
मिलत गलिनमें जो नरनारी ❀ बचत नहीं दीन्हें बिन गारी ॥
अबिर गुलाल तासुपर डारैं ❀ भरि भरि पिचकारिन रँग मारैं ॥
बोलत होरी बचन सुहाई ❀ करि छाँडत सब मनकी भाई ॥
गोरस केशर माते डोलैं ❀ घरन घरनके फटका खोलैं ॥
जो कोउ भाजि रहति घर बैठी ❀ बरिआई आनत तिहि पैठी ॥
अटन चढी देखैं ब्रजनारी ❀ छज्जनते छूटहिं पिचकारी ॥
दो०–गावत होरी गीत सब, देहिं दिवावहि गारि ।
डारत अबिर गुलालकी, झोरी भरि भरि नारि ॥
सो०–इत हरिके सँग ग्वाल, मुदित गुलाल उडावहीं ।
पिचकारिनके जाल, वर्षत भरि केशर ललित ॥
होत कुलाहल आनँद भारी ❀ रंग अबीरन महल अटारी ॥
ह्वै गइ ब्रजकी बीथिनं बीचा ❀ अबिर गुलाल कुमकुमाकीचा ॥
ऐसे संगलिये सब ग्वाला ❀ करत फागु कौतुक नँदलाला ॥
भीजि रहे केशरिरँग बागे ❀ नख ते शिख गुलाल ते पागे ॥
आनँद भरे मुदित सब गावत ❀ गुणी जननके बाल नचावत ॥
बरसानेको चले कन्हाई ❀ यह सुधि कुवँरि राधिका पाई ॥
तुरत सखी सब बोलि पठाई ❀ सुनत सकल आतुर उठि धाई ॥

६ मोतिन । २ गलियन । ३ वस्त्र ।

नवसत सकल मनोरथ साजैं ❋ बरण बरण वर वसन विराजैं ॥
बेंदी भाल विराजत रोरी ❋ मुख तँबूल तनुकी छवि गोरी ॥
होरी खेल सुनत सब चोपी ❋ आईं प्रिया निकट सब गोपी ॥
हँसि हँसि सबसों कहति किशोरी ❋ चलौ श्यामसँग खेलैं होरी ॥
पकरि आज मोहनको लीजे ❋ मन भाई तिनसों सब कीजे ॥
दो०-ललितादिक ब्रज नागरी, मिलि सब सजो समाज ।
तिनमें श्री कीरति कुँवरि, सबहिनकी शिरताज ॥
सो०-परम रूप की रास, गुणागार नवनागरी ।
राजति भरी हुलास, मनमोहन मनभावनी ॥
नख शिखलौं सब सुन्दरताई ❋ रही छाय छविपुंजनिकाई ॥
भूषण जाल लाल नग केरे ❋ शोभित अंगन सुभग घनेरे ॥
मुख छवि बर्णिसकै सो कोहै ❋ जाहि देखि मोहन मन मोहै ॥
लसति नवलतनु सुंदर सारी ❋ केशरिया कीनी जरतारी ॥
गुलगचको लहँगा चटकीलो ❋ घेरघनो अति छविन छबीलो ॥
कंकण किंकिणि नूपुर बाजैं ❋ होरी साज सजे सब राजैं ॥
रंग गुलाल संग सब लीनो ❋ सोहति युवति यूथ रँग भीनो ॥
मृगमद केशर मेल मिलाई ❋ माथि माथि लीन्हें कलश भराई ॥
हाथन में लीन्हें नवलासी ❋ चलीं श्याम घन पै चपलासी ॥
युवति यूथलै संग किशोरी ❋ गही जाय आगे ब्रज खोरी ॥
उतते आये मदनगुपाला ❋ सोहत संग भीर नव बाला ॥
देखि परस्पर आनँद बाढ्यो ❋ दुहुँदिशि गोल भयो रुकिठाढ्यो ॥
दो०-भरि भरि पिचकारी हरषि, इतते धाये ग्वाल ।
नवलासी लै लै करन, सिमिटि चलीं उत बाल ॥
सो०-भो भँटभेरो आन, परी मार बिच रंगकी ।
करत न कोऊ कान, मन भाई मुखते कहत ॥
भरि भरि मूठि गुलाल चलावैं ❋ हो हो होरी वचन सुनावैं ॥

१ मस्तक । २ बिजुलीसी । ३ मिलाप ।

केशरिरँग लै लै पिचकारी ❀ ताकितकिमारतपियअरु प्यारी ॥
दुहुं दिशि चलत झराझर जेरी ❀ भइ गुलालकी घटा अँधेरी ॥
आय परत जाके जो पैंडें ❀ सो केशरिके कलश उलैंडें ॥
लगिलगिरहे चीर अंगनसों ❀ पहिंचाने न परत रंगनसों ॥
मुख शोभा कछु कहि नहिं जाई ❀ रही गुलाल झलक छबिछाई ॥
कवि उपमा कहि कहा बखाने ❀ शशि सरोज दोऊ सकुचाने ॥
सकुच रहित गारी सब गावें ❀ दुहुं दिशि लै लै नाम चुकावें ॥
बाजत बीन रबाब तँबूरा ❀ ताल पखावज ढोलक तूरा ॥
नवलासी चपलासी गोरी ❀ मारति ग्वालन कहि कहि होरी ॥
यक भागे यक ढूँढन लागे ❀ एक अबीर डारि मुख भागे ॥
मच्यो खेल रँग रस अति भारी ❀ सखियन बोलि कह्यो तब प्यारी ॥

दो०-छल बल कर कछु भेदसों, मोहन पकरे जाय ।
आंख आंजि मुख माँडि तब, छाँडचोहहाकराय ॥
सो०-हैं अति लंगर कान्ह, ऐसे ये नहिं मानिहैं ।
वसन चुराये आन, लेहिं दाँव सो आपनो ॥

तब यकतिय हलधर वपु काछचो ❀ चली ओढि नीलांबर आछचो ॥
निकसि यूथते ह्वै कै न्यारी ❀ निकसी जित ठाढे बनवारी ॥
हरि जान्यो आये बलदाऊ ❀ चले अकेले लेन अगाऊ ॥
गये निकट ताके हरि जबहीं ❀ धरे जाय औंचक तिन तबहीं ॥
आईं धाय और सब नारी ❀ लीन्हे पकरि श्याम अँकवारी ॥
हँसि हँसि कहत सकल ब्रजबाला ❀ ढीठो बहुत दई तुम लाला ॥
सो फल आज तुम्हें सब देहैं ❀ दांव आपनो नीको लेहैं ॥
ठाढे हँसत दूर सब ग्वाला ❀ कहत गये पकरे नँदलाला ॥
हँसति कुँवरि राधा दुर ठाढी ❀ पिय मुख निरखिसकुचंउरबाढी ॥
किनहूं लियो पीतपट छोरी ❀ काजर दियो किनहुं बरजोरी ॥
काहू बेणी शीश सँवारी ❀ मुख गुलाल लावति कोउ नारी ॥

काहू उर अरगजा लगायो ❀ काहू रंग शीश ढरकायो ॥

दो०--गये छूटि मोहन तबै, गोहन चले पराय ।
आय मिले निज सखनमें, रही नारि पछिताय ॥

सो०--करमींजति पछितात, कहति परस्पर बाल सब ।
भली बनीथी घात, दांव लेन पाई नहीं ॥

गये आज तुम भजि नँदलाला ❀ जैहौ कहां कालिह गोपाला ॥
करि राखी जैसी तुम हमसों ❀ सो हम दांव लेयँगी तुमसों ॥
पीताम्बर अपनो यह लीजे ❀ पठै ग्वाल काहूको दीजै ॥
कै आपही आय लै जाहू ❀ अब हम नहीं पकरि हैं काहू ॥
हँसत सखा सब तारी दैकै ❀ बेनी छोरत हैं कर लैकै ॥
कहत जाहु फिरि कुँवर कन्हाई ❀ पीताम्बर लै आवहु जाई ॥
भाजत हार हियेते टूटै ❀ पीताम्बर गहनेदै छूटै ॥
तबहिं कह्यो हरि नंददुहाई ❀ अबहिं पीतपट लेत मँगाई ॥
सखा एक हरि निकट बुलायो ❀ युवति भेष करि ताहि पठायो ॥
गयो सुमिलि युवतिनके माहीं ❀ हँसत जाय ठाढो पट पाहीं ॥
कहत देहु पट धरैं दुराई ❀ अब नहिं पावहिं कुवँर कन्हाई ॥
अब यह पट हरिको तब देहैं ❀ दांव आपनो जब हम लेहैं ॥

दो०--ऐसी कहि पटलै लियो, आयो चमकि गुवाल ।
फेरचो करसों श्यामलै, चकित भई सब बाल ॥

सो०--लखि हरिकी चतुराय, भई थकित ब्रजबाल सब ।
धिरवत कहत सुनाय, भली बनाई आज तुम ॥

गये आज बचिकरि चतुराई ❀ अब वदिहैं जो बचहु कन्हाई ॥
अब तो लाग लगीहै हमसों ❀ जब लगिदांवलेतिनाहिं तुमसों ॥
पकरि नचावहिं तुमहिं बिहारी ❀ तब कहिहौ हमको ब्रजनारी ॥
कहत श्याम अब भये सयाने ❀ इन बातन कछु भय नहिं माने ॥
जान लियो हम कपट तुम्हारो ❀ अब तुम कह करिसकत हमारो ॥
अबहीं ग्वालन देहुँ लगाई ❀ छांडों अपनी विनय कराई ॥

नेक कानि मानतहौं तिनकी ❀ सखी कहावति हौ तुम जिनकी ॥
यह सुनि तब युवती मुसकानी ❀ कहा करत हौ श्याम सयानी ॥
तुम्हैं नन्दकी सौंह कन्हाई ❀ जो नहिं विनय करावहु आई ॥
सखन सहित तब मोहन करषैं ❀ लैलै पिचकारिन रँग बरषैं ॥
उत सब युवती ह्वै इकठौरी ❀ लैलै नवलासी सब दौरी ॥
दियो सखनको मारि हटाई ❀ भाजि चले तब कुँवर कन्हाई ॥
दो०-भाजे भाजे कहत सब, तारीदै ब्रजबाल ।
जो तुम जाये नंदके, ठाढे रहौ गुपाल ॥
सो०-फिरे बहुरि घनश्याम, सखावृन्द सब फेरिकै ।
शिथिल करी ब्रज वाम, झोरी मारि अबीरकी ॥
ऐसे खेलत रस मिलि होरी ❀ इत मोहन उत कुँवरिकिशोरी ॥
गोपी ग्वाल संग सब लीने ❀ मोहन सकल रंग रस भीने ॥
कबहुँ परस्पर गावत गारी ❀ कबहुँ करत रस वाद विहारी ॥
कबहुँ अवीर गुलाल उडावैं ❀ कबहूँ रंग सलिल बरषावैं ॥
अरस परस छबि निरखत दोऊ ❀ परमानन्द मगन सब कोऊ ॥
चढे विमानन नभ सुर देखैं ❀ जन्म सफल ब्रजको करि लेखैं ॥
पुनि पुनि हर्षि सुमन बर्षावैं ❀ जय जय करि प्रभुको यश गावैं ॥
ऐसे श्याम रंग रस राख्यो ❀ ललिता आय बीच तब भाख्यो ॥
आज श्याम तुम औचक आये ❀ हम काहू जानन नहिं पाये ॥
बहुत करी तुम आय ढिठाई ❀ भई सांझ अब कुँवर कन्हाई ॥
काल्हि प्रात है वार हमारी ❀ देखैंगी मनुसाय तुम्हारी ॥
ऐहैं नन्द गांवलैं प्यारी ❀ रहियो सजम लाल गिरिधारी ॥
दो०-प्यारी करते पानलै, दीन्हें सखी सुजान ।
प्रात अवधि वदि खेलकी, राख्यो दुहुँदिशि मान ॥
सो०-घर आये घनश्याम, सखन संग गावत हँसत ।
गई प्रिया निज धाम, सखिन सहित आनँदभरी ॥

१ राधा । २ आकाश । ३ पुरुषार्थ । ४ कृष्ण ।

परमानन्द सकल ब्रजनारी ❀ कृष्ण केलि सुखकी अधिकारी ॥
लोक लाजको भय नहिं मानैं ❀ कृष्ण विलास सदा उर आनैं ॥
श्रीराधिका कुँवरि सुखदाई ❀ प्रात सखी सब बोलि पठाई ॥
कियो विचार सबन मिलि गोरी ❀ नन्दगांव खेलैं चलि होरी ॥
मिलि मोहन सों यह सुखकीजै ❀ फगुवा नन्दमहर सों लीजै ॥
सामा सकल खेलकी लीन्हीं ❀ रंग गुलालन सों बहु कीन्हीं ॥
मथि मथि विविध सुगंधन लीन्हे ❀ भांति अनेक अरगजा कीन्हें ॥
भरि भरि भाजनकनक सुहाये ❀ अमित सुगंध न जाहिं गनाये ॥
लै कांवरिन अनेक अपारा ❀ चले संग सजि सुभग शृँगारा ॥
ग्वालिनि यौवन गर्व गहेली ❀ श्रीराधासँग चलीं सहेली ॥
कुंकुम उवटि कनक तनु गोरी ❀ रूप राशि सब नवलकिशोरी ॥
एक बयस सुन्दर सब राजें ❀ निरखत कोटिमदन तिय लाजें ॥

दो०–नवसत साजि शृँगार तनु, अंग अंग सब ग्वारि ।
चंद्रावलि ललितादि सब, अमित गोप सुकुमारि ॥

सो०–को कवि वरणै पार, प्यारी सब नँदलालकी ।
शोभा अमित अपार, उपमाको त्रिभुवन नहीं ॥

सुमन सुगंधन गूंथी बेणी ❀ लटपट कनक छवी छबि श्रेणी ॥
मोतिन मांग बनी अतिनीकी ❀ केशरि आड जडाऊटीकी ॥
कुटिल भौंह अलकैं घुंघरारी ❀ मनमोहन मन मोहनहारी ॥
खंजन नैन मधुप मृगहारे ❀ खंजन रेख सुभग अनियारे ॥
श्रवणनतरवण रविसम ज्योती ❀ नकबेसरिलटके गजमोती ॥
दशन कुंद बिंबाधर सोहैं ❀ चिबुकनीलकण छबि मनमोहैं ॥
कंठ कपोत मोति उरहारा ❀ जनुयुग गिरि बिचसुरसरिधारा ॥
कुचचकवा मुख शशि भ्रमभूले ❀ बैठे बिछुरि मनहुँ दुहुँकूले ॥
कर कंकण चूरी गजदंती ❀ नख मणिमाणिक मेटत कंती ॥
नाभी हृदय कहा कवि वरणै ❀ कटि मृगराज लेत जनु निरणै ॥

१ उमर । २ कुंदुरू ।

चरणन नूपुर बिछिया बाजैं ❀ चालमराल चलत कल राजैं ॥
लहँगा कसब पीतरँग सारी ❀ चमक चहूंदिशि लाल किनारी ॥
दो०-नख शिख सब शोभा भरी, बनी छबीली बाम ।
तिनमें श्रीराधा कुँवरि, राजत अति अभिराम ॥
सो०-लई सबन गहि हाथ, पीरे सुमननकी छरी ।
होरी हरिके साथ, नंदगाँव खेलन चलीं ॥
प्रेम प्रीतिके रसबस पागीं ❀ नंदनँदन पियकी अनुरागीं ॥
बाजे सुघर बजावैं गोरी ❀ गावहिं कोकिल कंठ निहोरी ॥
करति केलि कौतुक मन माहीं ❀ अबिर गुलाल उडावत जाहीं ॥
लीनो घेर नंदगृह जाई ❀ बसत तहां मनहरन कन्हाई ॥
शोभित रूप लतासी गोरी ❀ गावत फाग नंदकी पोरी ॥
सुनि सुन्दर वर बाहर आये ❀ हलधर[1] ग्वाल गुपाल बुलाये ॥
एकन एक भई सब नारी ❀ होरी खेल मच्यो अति भारी ॥
मृगमद कुंकुम चंदन घोरे ❀ लैलै पिचकारी करदोरे ॥
गोपी ग्वाल भरे झकझोरी ❀ अबिर गुलालन मारहिं गोरी ॥
उडत गुलाल घटा घन छाई ❀ महि[2]केशरिकी कीच सुहाई ॥
बाजे सरस मधुर सुर बाजैं ❀ गान सुनत गण गंध्रब लाजैं ॥
पकरत एक एक छुटि भाजैं ❀ गारी देत एक तजि लाजैं ॥
दो०-हो हो होरी कहत सब, भरे परम आनंद ।
सखिन संग उत लाडिली, इतै सखा नँदनंद ॥
सो०-औचक धाई बाम, गहन[3] हेतु नँदनंद तब ।
गहि पाये बलराम, निकसिगये हरि भाजिकै ॥
अति निशंक सब ब्रजकी गोरी ❀ तामें अवसर पायो होरी ॥
भरि भरि केशरिरंग कमोरी ❀ लैलै हलधरके शिरढोरी ॥
अबिर उडाय अँधेरो कीनो ❀ ललतागहि दृगकाजर दीनो ॥
व्यंग्य वचन सब कहत सुहाई ❀ लेहु रोहिणी मात बुलाई ॥

१ बलदेवजी । २ पृथ्वी । ३ पकड ।

हास विलास विविध कहि गावैं ❀ इत उत बल कहुँ जान न पावैं ॥
फगुआ मनभावतो मँगाई ❀ हलधर छाँडे विनय कराई ॥
हँसत सखनमिलि कुवँर कन्हाई ❀ आये दोऊ आंख अँजाई ॥
तब हलधर दुचिते हरि कीन्हें ❀ युवतिन धाय श्याम गहि लीन्हें ॥
सिमटे सखा छुडावन धाये ❀ युवतिनसे हरि छुटन न पाये ॥
लै लै नवलासी नव बाला ❀ दियेहटाय मारि सब ग्वाला ॥
श्यामहि जीत यूथमें लाई ❀ भई सबनके मनकी भाई ॥
रस लम्पट नँदनंद कन्हाई ❀ दीन्हो आपुन आनि गहाई ॥

दो०—ले आईं प्यारी निकट, हँसति कहति ब्रजबाल ।
कहिये अब कैसी बनी, बहुत करत हौ गाल ॥

सो०—एक कहति मुसकाय, बसन हरेते आपुही ।
हमहूं बसन छुडाय, लेहिं दांव अब आपनी ॥

कान्ह कह्यो करिहौ कह मेरो ❀ सोई पाय भयो अबनेरो ॥
ऐसे कहति रूप अनुरागीं ❀ मुरली छीनि बजावन लागीं ॥
एकनि लियो पीतपट[1] छोरी ❀ एकरंग गागरिलै दौरी ॥
हरिके हाथ गहे चन्द्रावलि ❀ कज्जल लैआई संजावलि ॥
ललिता लोचन अंजन लागी ❀ एक श्रवणलगि कछुकहिभागी ॥
एक चिबुकगहि वदन उठावे ❀ एक गुलाल कपोलन लावैं ॥
घेरि रहीं परिखाकी नाईं ❀ करति सबै निजनिज मनभाईं ॥
काहू वेणी गूँथि सँवारी ❀ काहू मोतिन मांग सुधारी ॥
पहिरावति लहँगा कोउ सारी ❀ काहूलै अँगिया उरधारी ॥
निरखि निरखि प्यारी मुसकाई ❀ राखत आपन कृष्ण बडाई ॥
काहू वदन अभूषण लीन्हें ❀ नेकहु श्याम परत नहिं चीन्हें ॥
वधू वधू कहि सबहिन गायो ❀ प्यारी निकट आनि बैठायो ॥

दो०—निरखि वदन प्यारी हँसी, श्याम हँसे सकुचाय ।
गहि प्यारी निज पाणि तब, दीन्हों पान खवाय ॥

१ पीतांबर ।

सो०-सखियां करत कलोल, गांठि जोरि आँचर दई।
ब्रजमें रहै अडोल, यह जोरी युग युग सदा॥
लीन्हें मध्य श्याम सब ग्वारें ❀ मग्न भईं अब वपु न सँभारें॥
पिय प्यारी मुखकी छबि जोहैं ❀ अरस परस दोऊ मन मोहैं॥
रंगन भरे रँगीले दोऊ ❀ त्रिभुवन छबि पटतरनहिं सोऊ॥
एक नयनकी सैन मिलावैं ❀ एकयुगल छबि लखि सुखपावैं॥
गावति एक महरिको गारी ❀ बजै मँजीरा डफ करतारी॥
भरि भरि मूठ गुलाल उडावैं ❀ ग्वालनिकटकहुँ लगन न पावैं॥
रही गुलाल घटा छबिछाई ❀ फूली मानहुँ सांझ सुहाई॥
तब ललिताको यशुमति माई ❀ घर भीतरसे बोलि पठाई॥
हँसिकै महरि बहुत सनमानी ❀ विनती करी बहुरि मृदुबानी॥
आज भई भोजनकी बिरियां ❀ देखहु अब राधाकी डरियां॥
खान पान करि श्रमहिं निवारो ❀ बहुरि खेलियो निकट सबारो॥
ल्यावहु अब लाडिलिहि लिवाई ❀ कीरति जीकी सौंह दिवाई॥
दो०-तब यशुमतिपहँ राधिकहि, ललिता चलीलिवाय।
सकुच जानि घनश्याम अति, छूटे हाहा खाय॥
सो०-हँसे ग्वाल मुखहेरि, तनु शोभा देखत खरे।
बलको लीन्हों टेरि, बन्यो आजु अति साँवरो॥
कहत सखा सब दै दै सोहन ❀ ऐसेहि चलो नंदपै मोहन॥
चले भुजागहि तहां लिवाई ❀ छबि अनूप वह वरणि न जाई॥
उत सब युवतिनके चितचोरे ❀ चले लाल इतके अति भोरे॥
अति छबि देखि हँसे नँदराई ❀ जननी सुनति दौरि तहँ आई॥
निरखि हरषि लीन्हें उरलाई ❀ अति आनंद हृदय न समाई॥
बार बार करलेत बलैया ❀ किन यह कीन्हों हाल कन्हैया॥
ये ऐसी सब ब्रजकी बाला ❀ सकुच हँसे मनहीं नँदलाला॥
तुरत श्याम सोइ वेष उतारचो ❀ कटिपटपीतमुकुटशिरधारचो॥

१ पकड़।

युवतिनसहित कुँवरि श्री श्यामा ❀ आई नंदमहरिके धामा ॥
भूषण वसन नवीन बनाये ❀ यशुमतिले सबको पहिराये ॥
अति सनेह वृषभानुदुलारी ❀ अपने हाथ शृंगारि सँवारी ॥
निरखि रूप प्रमुदित नँदरानी ❀ वारति राई नोन सिहानी ॥
दो०–विविधभांति मेवा मधुर, और मिठाई आनि ।
सादर सबकी गोदमें, भरे हरषि नँदरानि ॥
सो०–रह्यो नंदगृह छाय, होरीकी आनंद अति ।
कहति यशोमति माय, फगुआकहोसोदीजिये ॥
ललकि कह्यो औरै कछु नाहीं ❀ लेहैं कान्हर फगुआ माहीं ॥
देखे बिन रहि सकहिं जु उनको ❀ तौ मांगे देहैं हम तुमको ॥
बाढौ वंश महर नँदराई ❀ चिरजीवहु बलराम कन्हाई ॥
जिनसे यह सुख ब्रजमें लीजत ❀ यह अशीश सबही मिलिदीजत ॥
अति आनंद मगन ब्रजबासी ❀ अष्ट सिद्धि नव निधि सब दासी ॥
गोपी ग्वाल भये अनुकूला ❀ न्हान चले यमुनाके कूला ॥
जहँ बर विटप विविध रँग फूले ❀ गुंजत भ्रमर मत्तरस भूले ॥
शीतल सुखद छांह छबिछाई ❀ फूलडोल तहँ रच्यो कन्हाई ॥
झूलत रंग भरे पियप्यारी ❀ गावत मिले गोप अरुनारी ॥
ऐसे दूर खेल श्रम कीनो ❀ अति आनंद सबनको दीनो ॥
तब यमुनाजल श्याम नहाये ❀ महिदेवन शिर तिलक बनाये ॥
दियो दान तिनको नँदलाला ❀ बर्षत सुर सुमननकी माला ॥
छं०–बरषतमालप्रसूनसुरगण, निरखि छबिआनँदभरे ।
श्रीनंद सुत सुख धाम पूरण, काम सब ब्रजजनकरे ॥
लूटि सुखरस फागको सब, मुदित निजनिजगृहगये ।
गोप बाल गोपाल बल, निज धाम आये छबि लये ॥
दो०–कियो जो फाग विहार हरि, शारद लहै नपार ।
ब्रजबासी सो किमि कहै, लीला सिंधु अपार ॥

१ कृष्ण-राधिका । २ भूदेव ।

सो०-जन मनके सुखदान, चरित ललित गोपालके ।
गावत सुनत सुजान, ब्रजबासी जन रति लहत ॥

अथ सुदर्शनशापमोचनलीला.

पूरण ब्रह्म कृष्ण भगवाना ❀ ब्रज विलास जो कीन्हे नाना ॥
शिव विधि शारद नारद शेषा ❀ कहिनाहिं सकाहिं गणेश अशेषा ॥
कीन्हे चरित रहस्य अपारा ❀ ब्रज युवतिन मिलिरस शृंगारा ॥
साध नहीं काहू मन राखी ❀ करी सकल जो जाने भाखी ॥
ब्रजबिलास रस केलि बडाई ❀ भांति अनेक मुनीशन गाई ॥
ब्रजवासी प्रभु सब गुणनायक ❀ जो कछु करहिं सोसबहीलायक ॥
सखा संग सबको सुख दीनो ❀ मन भायो गोपिन को कीनो ॥
महरि नंद पितु मात कहाये ❀ तिनके हेत देह धरि आये ॥
बालकेलि रस सुख करि भारी ❀ दियो परम आनंद मुरारी ॥
गिरिधरि ब्रजजन सगरे राखे ❀ इंद्रादिक सुर जय जय भाखे ॥
गाय बच्छ बन माहिं चराये ❀ कालीनाग नाथि लै आये ॥
करे चरित्र अनेक कृपाला ❀ भक्तन हित प्रभु दीनदयाला ॥

दो०-भक्तनके हित लेतहै, प्रभु युग युग अवतार ।
असुर मारि थापत सुरन, हरत भूमिभव भार ॥
सो०-गावत संत अपार, यशपुनीत पावन करन ।
पूरि रह्यो संसार, करता हरता आप हरि ॥

इक दिन प्रभु भक्तन सुखदाई ❀ नंद हृदय यह मति उपजाई ॥
चलिये आज सरस्वति तीरा ❀ पूजन शंकर सकल अहीरा ॥
लिये संग बलमोहन दोऊ ❀ गोपी ग्वाल चले सब कोऊ ॥
करत कुलाहल आनंद भारी ❀ पहुँचे तहां सकल नरनारी ॥
सरित[1] पुनीत कियो अस्नाना ❀ महिदेवन दीन्हें सब दाना ॥
देखि देव थल अति सुखमानी ❀ सादर पूजे शंभुभवानी ॥
पूजा करत सांझ ह्वै आई ❀ श्रमित भये सब लोग लोगाई[2] ॥

१ नदी । २ द्विजनको ।

खान पान करि सहित हुलासा ❋ कियो रैनि तहँ बनमें बासा ॥
सोये हरि हलधर सुखरासी ❋ तब सोये सब ब्रजके बासी ॥
आधी निशि अजगर यक आयो ❋ नंदमहरके पग लपटायो ॥
उठे पुकारि चौंकि नँदराई ❋ आये ब्रजवासी सब धाई ॥
अजगर देखि डरे सब कोई ❋ लगे छुडावन छुटत न सोई ॥

दो०-हारे यत्न अनेक करि, सर्प न छोडै पांय ।
कृष्णकृष्ण करि नन्द तब, गुहराये अकुलाय ॥
सो०-अति व्याकुल गये ग्वाल, बोले श्याम जगायके ।
कह्यो महा यक व्याल, लपटानों पग नंदके ॥

सुनत उठे आतुर गोपाला ❋ निकटजाय देख्यो स्वइब्याला ॥
परश्यो ताहि कमलपद पावन ❋ पाप शाप संताप नशावन ॥
छुवत चरण तिन लइ जमुहाई ❋ धरचो दिब्यतनु बरणि न जाई ॥
लाग्यो हाथजोरि गुणगावन ❋ जय जय जगतईश जगपावन ॥
सब देवनके देव मुरारी ❋ जय जय जय ब्रजगोप बिहारी ॥
ऋषि अंगिरा शाप मोहिं दीन्हो ❋ सो वह बहुत अनुग्रह कीन्हो ॥
जाते प्रभुको दर्शन पायो ❋ जन्म जन्मको पाप नशायो ॥
ऐसी विनती प्रभुहि सुनाई ❋ आयसु पाय चल्यो शिरनाई ॥
बहुरि नन्दको शीश नवायो ❋ देखि महर अति अचरज पायो ॥
पूछचो जाय नन्द तब भेवा ❋ तुमतौ दिव्यरूप कोउ देवा ॥
सर्प शरीर धरचो क्यों आई ❋ सो सब हमसों कहौ बुझाई ॥
नन्दवचन सुनि मन सुखपाई ❋ तब उन अपनी कथा सुनाई ॥

दो०-हौं यश गायक श्यामको, नाम सुदर्शन होय ।
सुन्दर विद्याधरनमें, मोते और न कोय ॥
सो०-इकदिन ऋषिके धाम, गयो धरे अभिमान मन ।
कियो न तिन्हैं प्रमाण, रूप द्रव्यके गर्वसे ॥

ऋषि अंगिरा बडे विज्ञानी ❋ जानि मोहिं जड अतिअभिमानी ॥

१ दुःख । २ सुंदर । ३ दया ।

दीन्हो शाप कोप करि एहा ❀ जाय होहु शठ अजगरदेहा ॥
ऐसे कह्यो मोहिं ऋषि जबहीं ❀ अजगर भयो तुरत मैं तबहीं ॥
देखि दुखित म्वहिं परम कृपाला ❀ भये बहुरि मुनिराय दयाला ॥
तब करिकृपा कह्यो यह मोहीं ❀ कृष्ण दरश ह्वै हैं जब तोहीं ॥
परशि चरण रज पाप नशैहै ❀ बहुरि आपनो तनु तब पैहै ॥
ते पद आजु परशि सुखदाई ❀ भयों पुनीत रूप निजपाई ॥
जो पदरज ब्रह्मा नहिं पावैं ❀ शिव सनकादि सदा चितलावैं ॥
मुनि प्रसाद सोरज मैं पाई ❀ कहँ लगि मुनिकी करौं बडाई ॥
दीनदयालु जगतहितकारी ❀ सन्त समान कौन उपकारी ॥
ऐसे विद्याधर सुख मानी ❀ नन्दहि अपनी कथा बखानी ॥
बहुरि कृष्णचरणन शिर नाई ❀ गयो लोक निज बहु हर्षाई ॥

दो०-नंदादिक आनंद सब, महिमा देखि पुनीत ।
कहत परस्पर कृष्ण गुण, गई तहां निशि बीत ॥
सो०-आये सब ब्रज धाम, प्रात होत आनंद सों ।
संग श्याम बलराम, प्रभु ब्रजबासी दासके ॥

अथ शंखचूडवधलीला.

यकदिन सुन्दर मदन गोपाला ❀ श्रीबलदेव और सँग ग्वाला ॥
दिवस अन्त निशि समय सुहाई ❀ उदित उडुप[1] उडुगण[2] छबिछाई ॥
प्रफुलित चारु मालती सोहै ❀ कुमुद सुगंध पवन मनमोहै ॥
गुंजत भँवर मत्तरस लोभा ❀ चले तहां देखन बनशोभा ॥
ग्वालन मिलि गावत दोउ भाई ❀ कबहुं बजावत बेणु[3] कन्हाई ॥
ब्रजवनितागण चहुंदिशि घेरे ❀ चले सुनत वंशी की टेरे ॥
जिनके तन मन बसे कन्हाई ❀ मग्न भई छबि लखि अधिकाई ॥
पहुँची श्री वृन्दावन जाई ❀ गोपी ग्वाल संग समुदाई ॥
विहरत बन विहार दोउ भाई ❀ गोपी ग्वाल साथ सुखदाई ॥
मंद मंद गति इत उत डोलैं ❀ मृदुमुसकाय लेत मन मोलैं ॥

१ चन्द्र । २ नक्षत्र । ३ वंशी ।

रूप राशि निधि छबि दोउ बीरा ❋ बैठे जाय यमुनके तीरा ॥
पाछे सखावृन्द सब सोहैं ❋ सम्मुख गोपीजन मनमोहैं ॥
दो०—करत सबैं मिलि मुदित मन, भरे प्रेम रस माहिं ।
भये मगन उंनमत्त जिमि, रही देह सुधि नाहिं ॥
सो०—बाजा ताल मृदंग, बीन चंग मुरली मधुर ।
छाय रह्यो रस रंग, उठत तरंगैं तानकी ॥
प्रेम मगन सब घोषकुमारी ❋ हरिछबिनिरखतिसुरतिबिसारी ॥
शिथिलवदन कंच शीश सुहाये ❋ बिह्वल तनमन श्याम बसाये ॥
को हम कहां नहीं कछु जाने ❋ नयन श्यामके रूप लोभाने ॥
रही श्रवण मुरली धुनि छाई ❋ गृह वनकी कछु सुधि नहिं राई ॥
चन्द्रवदन चपलासी गोरी ❋ हरि मुख नाद सुनत भईँभोरी ॥
तहाँ यक्ष औचक इक आयो ❋ शंखचूड नामी तिहि गायो ॥
सो वह धनदअनुग अभिमानी ❋ प्रभु प्रभाव नहिं जान अज्ञानी ॥
देखतही बलराम कन्हाई ❋ सब गोपिन लीन्हों अगुवाई ॥
घेरिलेत जिमि गाय अहीरा ❋ उत्तर दिशि लै चल्यो अभीरा ॥
जब गोपिन हरि देखे नाहीं ❋ भयेचेत तब कछु मन माहीं ॥
कही जाति हम काके साथा ❋ भई बिकल जिमि परम अनाथा ॥
कृष्ण कृष्ण तब टेरन लागीं ❋ महा दुखित अति भयसों पागीं ॥
दो०—सुनत श्रवण आरतवचन, उठि आतुर दोउभाय ।
अति समीप गोपीनके, तुरतहिं पहुँचे जाय ॥
सो०—मैं आयों हौं धाय, मति डरपौ तिनसों कह्यो ।
अबहीं लेत छुडाय, तुम्हैं मारि या दुष्टको ॥
शंखचूड फिरिकै तब देख्यों ❋ काल मृत्यु सम दुहुँवन पेख्यो ॥
भयो त्रसित तब मूढ अभागो ❋ युवंतिन छांडि जीव लै भागो ॥
गोपिन पास राखि बलभाई ❋ ता पाछे पुनि चले कन्हाई ॥
अतिही निकट धाय कै लीनो ❋ मूका एक तासु शिर दीनो ॥

१ मतवारा । २ बाल । ३ दुःखितवाणी । ४ कृष्ण, बलराम । ५ स्त्रीनको ।

भयो प्राण विन अधम अन्याई ❋ प्रभु प्रताप उत्तम गति पाई ॥
हती एक मणि ताके शीशा ❋ सो लै आये हरि जगदीशा ॥
दीन्ही सो बलको नँदलाला ❋ प्रमुदित भई देखि ब्रजबाला ॥
गोपी ग्वाल सहित दोउ भाई ❋ बहुरि कियो सुख वनमें आई ॥
सो दुख सबको तुरत भुलायो ❋ परमानन्द सबन उपजायो ॥
करत विविध विधि हास बिलासा ❋ गृह आये पुनि सहित हुलासा ॥
नवकिशोर सुन्दर सुखदाई ❋ ब्रजजीवन बलराम कन्हाई ॥
ग्वाल बाल गायनके साथा ❋ क्रीडा करत ललित ब्रजनाथा ॥
दो०--देखि देखि हरिके चरित, परम विचित्र उदारि ।
निशि दिन सब प्रमुदित रहत, ब्रजबासी नर नारि ॥
सो०--हरण सकल भव भीर, दुष्टदलन जनहितकरन ।
नँदनंदन बलबीर, ब्रजबासी प्रभु सांवरो ॥

अथ वृषभासुरवधलीला.

नंदनँदन संतन हितकारी ❋ कमलनयन प्रभु कुंजविहारी ॥
मुरली मुकुट धरे ब्रजराजैं ❋ कोटि काम निरखत छबिलाजैं ॥
नित नवसुख ब्रजमें उपजावैं ❋ सुर नर मुनि त्रिभुवन यश गावैं ॥
सुनि सुनि अगम कृष्णगुणगाहा ❋ कंस असुर उर दारुणदाहा ॥
जो जिहि भाव ताहि हरि तैसे ❋ हितको हित जैसेको तैसे ॥
हित अनहित यह प्रभुकी लीला ❋ सदा श्याम सुन्दर सुख शीला ॥
रीझि खीझि हरिको जो ध्यावैं ❋ परमानन्द अभयपद पावैं ॥
रहै कंस उर ध्यान सदाहीं ❋ नँदनंदन पल विसरत नाहीं ॥
शत्रुभाव शोचत दिन राती ❋ नन्दसुवन मारौं किहि भांती ॥
असुर अरिष्ट नाम बल भारी ❋ एक दिवस नृपलियो हँकारी ॥
तासो कहि सब मर्म बुझायो ❋ बल सराहि ब्रज ताहि पठायो ॥
नँदनँदन मारनके काजा ❋ चल्यो असुर करि गर्व समाजा ॥
दो०--नृपको शीश नवायकै, कह्यो अरिष्ट सुनाय ।

१ खेल । २ खलनकेनाशकर्ता । ३ भेद । ४ कृष्ण ।

कितक काज महराज यह, मैं करि आवत जाय ॥
सो०–तुम असुरनके राज, इतनेको शोचत कहा ।
पलमें मारों आज, बालकनंद अहीरके ॥
वृषभरूप सोइ असुर बनाई ❀ आयो तुरत व्रजहि समुहाई ॥
गि१रि समानतनु अति विकराला ❀ महा कठिन दोउ सींग विशाला ॥
पूंछ उठाय डकारत आवै ❀ खोदि खुरन सों क्षे२र उडावै ॥
दृग३ आरक्त फेन मुख डारै ❀ कबहुँ सींगसे भूमि विदारै ॥
कबहुँ तरुन सों रगरत जाई ❀ इत उत खोजत फिरत कन्हाई ॥
उन्नत ग्रीव चहूंदिशि धावै ❀ जहां तहां गैयन विडरावै ॥
बार बार गरजत अति भारी ❀ सुनत डरे सब व्रज नर नारी ॥
बिडरीं गाय गोप सब भागे ❀ कृष्ण कृष्ण कहि टेरन लागे ॥
काल स्वरूप वृषभ इक आयो ❀ सबन कृष्ण सों जाय सुनायो ॥
प्रभु सर्वज्ञ तुरत पहिंचान्यो ❀ वृषभ न होय असुर यह जान्यो ॥
बिहँसि कह्यो मोहन सब पाहीं ❀ मत डरपौ चिंता कछु नाहीं ॥
चले असुर सन्मुख मनमोहन ❀ गोप ग्वाल लागे सब गोहन ॥
दो०–आगेह्वै हरि हांकदै, तासों कह्यो सुनाय ।
रे शठका तनु तरुघसत, फिरत बिडारत गाय ॥
सो०–मोहिं न लख इत आय, तव तनु उपजो कंडुजो ।
अबहीं देहुँ मिटाय, कहत नंदकी सौंह करि ॥
वृषभासुर सुनि हरिकी बानी ❀ मनमें गर्व कियो यह जानी ॥
याही बालकके बध काजा ❀ आदरदै पठयो म्वहिं राजा ॥
भले शकुन मैं व्रजमें आयों ❀ जो याको तुरतहि लखि पायों ॥
अबहीं याहि पलकमें मारौं ❀ नृपति काज करि जाय जुहारौं ॥
ऐसे अपने जिय अनुमानी ❀ चल्यो श्यामसन्मुखअभिमानी ॥
टूटि परचो हरि ऊपर आई ❀ लिये सींग गहि कुवँर कन्हाई ॥
यह आवत हरिकी दिशि धाई ❀ हरि पाछे लै जात हटाई ॥

१ पर्वत । २ धूरी । ३ आंखें ।

पाछे पेलि श्याम तिहि दीन्हों ❋ बहुरो वृषभासुर बल कीन्हों ॥
आवत जात असुर जब हारचो ❋ ग्रीव मोडि तब धरणि पछारचो ॥
परचो असुर पर्वत आकारा ❋ मुखते चली रुधिरकी धारा ॥
असुर मारि उत्तम गति दीन्हीं ❋ जय जय ध्वनि देवननभकीन्हीं ॥
भये सुखी सब सुर समुदाई ❋ बरषि सुमन अस्तुति मुख गाई ॥
दो०-चकित भये लखि परस्पर, कहत सकल ब्रजबाल ।
हम जान्यो कोउ वृषभहै, यह तो असुरकराल ॥
सो०-दुष्टदलन गोपाल, मुदित कहत नर नारि सब ।
भक्तनको रछपाल, ब्रजबासी नँदलाडिलो ॥
जब अरिष्ट मारचो गिरिधारी ❋ भयो कंस सुनि बहुत दुखारी ॥
आये ऋषि नारद तिहि काला ❋ कह्यो कंस सों सुन भूपाला ॥
जिन मारे सब असुर तुम्हारे ❋ ते नहिं होहिं नंदके बारे ॥
मैं जान्यों निश्चय यह भेऊ ❋ हैं वसुदेवपुत्र वे दोऊ ॥
कन्या लै जो तुमहिं दिखाई ❋ सो वह हती यशोमतिजाई ॥
भयो कछू यह सुनु छल राजा ❋ को जानै कर्ता के काजा ॥
यह तौ पुत्र भयोहो जबहीं ❋ कही हुती तोसों मैं तबहीं ॥
अपनी सों बहुतै तुम कीन्हों ❋ सोक्यों मिटै जो विधिलिखिदीन्हों ॥
करहु यत्न तुम अबहुँ सबारे ❋ यह कहि नारद स्वर्ग सिधारे ॥
उठ्यो कंस सुनि मुनिकी बानी ❋ भयो शोच वश मूढ अज्ञानी ॥
प्रथम देवकी अरु वसुदेऊ ❋ छोडे हुते बंदितें दोऊ ॥
बहुतबुरो मान्यों तिन पाहीं ❋ राखे बहुरि बन्दिके माहीं ॥
दो०-कैसे मारों कह करौं, निशिदिन यहै विचार ।
शालि रहे नृप कंस उर, हलधर नंदकुमार ॥
सो०-अब धौं पठऊं काहि, मनहीं मन शोचत खरो ।
काहुन मारचो ताहि, असुर गये ते सब मरे ॥

१ रक्त । २ बैल । ३ विधि ।

अथ केशीवधलीला.

असुरन माहिं बडो बलधारी ❀ केशीअसुर बीर अति भारी ॥
कंस ताहि तब बोलि पठायो ❀ अति आदर करि ढिग बैठायो ॥
कहत कंस केशी सुनु मोसों ❀ जीकी बात कहत मैं तोसों ॥
मोसमान राजा कोउ नाहीं ❀ मेरी आन सकल जग माहीं ॥
ये सेवक मेरे नहिं ऐसे ❀ जैसे मैं चाहत हौं तैसे ॥
जासों कहौं बात मैं जोई ❀ करि आवै कारज वह सोई ॥
ताते मोहिं यही पछितायो ❀ तब केशी कहि वचन सुनायो ॥
ऐसो कहा कठिन प्रभुकाजा ❀ जाको तुम शोचतहौ राजा ॥
तुम हो सब असुरनके नायक ❀ और कौन दूजो तुम लायक ॥
जाहि क्रोध करि चितवो जबहीं ❀ ताको नाश होय नृप तबहीं ॥
आयसु कहा मोहिं किन दीजै ❀ सो कारज अबहीं हम कीजै ॥
यह सुनि कंस हर्ष जिय आन्यो ❀ केशी को बहु भाँति बखान्यो ॥

दो०–असुर वंश सबही हते, काहि कहौं ब्रजजान ।
नंदमहरके छोहरा, करि आवै बिन प्रान ॥

सो०–कियो न तिन कछुकाज, आगे जे पठये असुर ।
यह सुनिकै अति लाज, मारे सब नँदबालकन ॥

तोते कछु ह्वैहै मैं जानत ❀ बडो बीर तोको मैं मानत ॥
ता कारण ब्रज तोहिं पठाऊं ❀ बहुत और कहि कहा सिखाऊं ॥
जिहि तिहि विधि छलबल करिकोऊ ❀ मारिआव नँदबालक दोऊ ॥
कै लैआव बांधि दोउ भैया ❀ कहत जिन्है बलराम कन्हैया ॥
यह सुनि गर्व असुर भटकीन्हों ❀ चल्यो ब्रजहि नृप आयसुदीनो ॥
मनहिं कहत देखौं धौं ताही ❀ कंस नृपति डरपत सब जाही ॥
अश्वरूप ह्वै ब्रजमें आयो ❀ अतिबल गरजि चहूंदिशि धायो ॥
वेगवन्त अति वपुष विशाला ❀ झारत ग्रीव पूंछ विकराला ॥
बारहि बारहि सो ध्वनिकरही ❀ ब्रजके लोगन मारत फिरही ॥

१ मारे । २ घोडा ।

जित तित भाजि चले नरनारी ❀ भये विकल सब अतिभय भारी ॥
कह्यो जाय आतुर हरिपाहीं ❀ अश्व एक आयो ब्रजमाहीं ॥
अति विकराल न जात बतायो ❀ कैधौं बहुरि असुर कोउ आयो ॥
दो०—ब्रज आयो केशी असुर, जानि लियो नँदलाल ।
सम्मुखताके हरषिकै, चले कंसके काल ॥
सो०—शीश मुकुट बनमाल, कटि कसिबांध्यो पीतपट ।
उरभुजनयन विशाल, असुर विदारन सुर सुखद ॥
जब केशी देखे हरि आवत ❀ भयोक्रोध करि सम्मुख धावत ॥
अति बल दोऊ चरण उठाये ❀ प्रभुके उरको चपल चलाये ॥
देखत डरे सकल ब्रजवासी ❀ गहे बीचही हरि अविनासी ॥
छूटन असुर बहुत बलकीनो ❀ ठेलि श्याम पाछे तब दीनो ॥
गिरो धरणिपर मुर्च्छित भारी ❀ उठ्यो क्रोधकरि बहुरि सँभारी ॥
दावँ घात करिकै बहु धावै ❀ पुनि पुनि चरण चपेट चलावै ॥
अतिहि वेग हरि जात बचाई ❀ करत युद्ध कौतुक सुखदाई ॥
देखत सुर मुनि चढे अकासा ❀ कछु हर्षैं मन कछु इक त्रासा ॥
तकत गोप गोपी भय बाढे ❀ चक्रितचित्र लिखेसे ठाढे ॥
वदनपसारि असुर तब धायो ❀ चाहत हरिको मुख में नायो ॥
तबहिं श्याम यह बुद्धि उपाई ❀ दियो हाथ ताके मुखनाई ॥
दांतनदाबि सक्योसो नाहीं ❀ वृक्षसमान भयो मुख माहीं ॥
दो०—एक हाथ मुख नाइकै, तुरत केश गहि धाय ।
बली सुवन नँदरायके, पटक्यो असुर फिराय ॥
सो०—शब्द भयो आघात, धरयो उर[३] सुनि कंसको ।
नंदमहरके तात, जान्यो केशी को हन्यो ॥
देखत सुरगण भये सुखारी ❀ बर्षे सुमन सुमंगलकारी ॥
प्रफुलित भये सकल ब्रजवासी ❀ बढ्यो हर्ष उर मिटी उदासी ॥
गावत जय यश प्रभुहि सुनाई ❀ असुर निकंदन जन सुखदाई ॥

१ कृष्णकेपास । २ भय ३ । हृदय ।

धाय धाय हरिको सब भेटैं ❋ धन्य धन्य कहि कहि दुख मेटैं ॥
बडो दुष्ट मोहन तुम मारचो ❋ ब्रजबासिनको प्राण उबारचो ॥
कान्हहिं सदा सहाय हमारी ❋ धन्य धन्य मोहन गिरिधारी ॥
लिये लाय उर यशुमति मैया ❋ पुनि पुनि मुखकी लेति बलैया ॥
नंद देखि आनँद अति कीनों ❋ बहुत दान विप्रनको दीनों ॥
हरि को लै पुनि पुनि उर लावत ❋ मुखचूँबत लखि छबि सुखपावत ॥
केशी मारि श्याम गृह आये ❋ भये सकल आनन्द बधाये ॥
घर घर सब ब्रजलोग लुगाई ❋ नंदनँदनकी करत बडाई ॥
ब्रजवासी प्रभु जन प्रतिपालक ❋ संतन सुखद असुर कुल घालक ॥

दो०-धनिधनि ब्रजमें अवतरे, भक्तनके हित आय ।
सुखसागर शोभा अधिक, बलनिधित्रिभुवनराय ॥
सो०-बल मोहन दोउ भाय, चिरजीवो जोरी युगल ।
देत अशीश मनाय, ब्रजवासी प्रभुको सबै ॥

अथ व्योमासुरवधलीला.

दूजे दिन सुंदर ब्रजनाथा ❋ गये बनहिं गायनके साथा ॥
बलदाऊ अरु ग्वाल सुहाये ❋ शोभित संग सुभग मन भाये ॥
गई गाय वनमें अगुवाई ❋ जहँ तहँ चरनलगीं सुखपाई ॥
ग्वालन संग श्याम अनुरागे ❋ चोर मिहिचनी खेलन लागे ॥
भये मग्न तनु सुधि कछु नाहीं ❋ दौरत दुरत फिरत मगमाहीं ॥
तबहिं कंस केशीबध सुनिकै ❋ बार बार शोचत शिर धुनिकै ॥
व्योमासुर इक अति बलवाना ❋ माया चरित बहुत सो जाना ॥
पठयो ताको तब ब्रज माहीं ❋ मारण कह्यो श्यामको ताहीं ॥
गोप वेषधरि सो ब्रज आयो ❋ ढूँढत हरिको वनमें पायो ॥
गयो समाय सखनके माहीं ❋ ताको किनहूं जान्यों नाहीं ॥
व्योमासुर इक बुद्धि उपाई ❋ प्रथम बालकनलेहुँ चुराई ॥
इकलो करि जब हरिको पाऊं ❋ तब मारौं कै गेहि लैजाऊं ॥

१ बनाई । २ पकर ।

दो०-दुरनं जाहिं बालक जहाँ, तहाँ असुर सँग जाय ॥
आवहि एकहि एकलै, पर्वत माहिं दुराय ॥
सो०-रहि गये थोरे ग्वाल, जब यों बहु बालक हरे ।
तब जान्यों नँदलाल, ब्योमासुरके कपटको ॥
धरयो ध्यान तब कुँवर कन्हाई ❁ हरिसों ताकी कहा बसाई ॥
तुरत असुर लै भूपर पटक्यो ❁ प्राणदेह तजि स्वर्गहि सटक्यो ॥
असुर मारिकै दीनदयाला ❁ बालक शोधन चले गोपाला ॥
ऋषि नारद आये त्यहि काला ❁ देखिश्याम मुखलख्यो बिशाला ॥
उपज्यो प्रेम हर्ष उर पावन ❁ बीन बजाय लगे यश गावन ॥
जय जय ब्रह्म सनातन स्वामी ❁ आदि पुरुष प्रभु अन्तर्य्यामी ॥
अलख अनीह अनन्त अपारा ❁ को जानै प्रभु रूप तुम्हारा ॥
सकल सृष्टिके सिरजनहारे ❁ पालन लय सब ख्याल तुम्हारे ॥
युग युग यह अवतार गुसाई ❁ भक्तनहित प्रभु लेत सदाई ॥
धरणीभार पाप भइ भारी ❁ सुरन संग लै जाय पुकारी ॥
त्राहि त्राहि श्रीपति दैत्यारी ❁ राखि लेहु प्रभु शरण उबारी ॥
राज अनीति सुरन तब भाखी ❁ शशि अरु सूर भये सबसाखी ॥
दो०-क्षीरसिन्धु अहि फेणु प्रभु, श्रवणन परी पुकार ।
तब जान्यों सुरसन्त महि, दुखित दनुजके भार ॥
सो०-कह्यो भूमि अवतार, सिंधु मध्य वाणी प्रगट ।
श्रीपति प्रभु असुरारि, जर्गत्राता दाता अभय ॥
मथुरा जन्मि गोकुलहि आये ❁ मात पिता सोवतही पाये ॥
नन्द यशोदा बालक जान्यों ❁ गोपिन काम रूप करि मान्यों ॥
पय पीवतहीं बकी बिनाशी ❁ भयो असुर सुनि कंस उदासी ॥
यहि अंतर जे दनुज पठाये ❁ ते प्रभु सब कौतुकहि नशाये ॥
धन्य धन्य ये ब्रजके बासी ❁ जिन वश किये ब्रह्म सुखरासी ॥
मन बुधि वचन तर्क ते न्यारे ❁ निगमहुं अगम न परतविचारे ॥

१ छिपन । २ पृथ्वीपर । ३ सूर्यनारायण । ४ जगरक्षक । ५ पूतना । ६ असुर ।

ते ब्रज युवतिन बनहिं विहारे ❋ कमल नयन प्रभु नन्ददुलारे ॥
नील जँलज तनुसुन्दर श्यामा ❋ मोर मुकुट कुण्डल अभिरामा ॥
मुरलीधर पीताम्बर धारी ❋ बनमाला धर कुंजविहारी ॥
बसहु रूप यह उर धर पाऊं ❋ बहुरि नाथ प्रभुविनय सुनाऊं ॥
यह अवतार जबहिं प्रभु लीन्हों ❋ आयसु सुरन यहै प्रभु दीन्हों ॥
दैत्यदहन सन्तन सुखकारी ❋ अब मारहु प्रभु कंस प्रचारी ॥

दो०–जब यह गाथा गायकै, नारद कही सुनाय।
बोले प्रभु करि तब कृपा, सुधाँवचन मुसुकाय ॥

सो०–जाहु वेगि मुनिराय, करहु सुरनको काज यह।
पठवहु मोहिं बुलाय, नृप आयसुते मधुपुरी ॥

जब प्रभु हँसि यह आयसुदीनों ❋ तब प्रणाम प्रभुको ऋषि कीनों ॥
हरषि चले मुनि नृपके पासा ❋ यहै बुद्धि मन करत प्रकासा ॥
यहै बात हलधर समुझाई ❋ जो वाणी ऋषि गये सुनाई ॥
तुम प्रभु अखिल लोकके कारन ❋ जन्मे हौ भूभार उतारन ॥
परम पुरुष अविगति अविकारा ❋ अविनाशी अद्वैत अपारा ॥
सिन्धु रूप जन हित सुखकारी ❋ त्रिभुवनपति श्रीपति असुरारी ॥
संकर्षण जब ऐसो भाख्यो ❋ सुनिसुनिश्याम हृदय सब राख्यो ॥
तब हँसि कही भ्रातसों बानी ❋ जो तुम कहत बात मैं जानी ॥
कंसनिकन्दन नाम कहाऊं ❋ केश गहौं पुहुँमी घसिटाऊं ॥
ऐसे प्रभु हलधर समुझाये ❋ बालक बहुरि शोध सबलाये ॥
व्योमासुर मारयो नँदलाला ❋ भये मुदित सब देखि गुवाला ॥
धन्य धन्य सब प्रभुको भाखे ❋ कहत आज तुम हम सब राखे ॥

दो०–गाय गोप हलधर सहित, भये परम अनंद।
सांझ समय वनसे चले, ब्रजको श्रीनँदनंद ॥

सो०–आये नंद अवाँस, प्रभु ब्रजबासी दासके।
गये कंसके पास, ऋषि नारद मथुरापुरी ॥

१ नीलकमल। २ अमृतवाणी। ३ पृथ्वी। ४ नंदगृह।

नारद गये कंसके पासा ❋ मन मारे मुख करे उदासा ॥
आदर करि आसन बैठाये ❋ हर्षि कंस मुनि निकट बुलाये ॥
कैसो मुख ऋषि मन क्यों मारे ❋ कह चिन्ता मन बढी तुम्हारे ॥
नारद कही सुनो हो राऊ ❋ कह बैठे कछु करौ उपाऊ ॥
त्रिभुवनमें नाहीं कोउ ऐसो ❋ देख्यो नन्दसुवन मैं जैसो ॥
करत कहा रजधानी ऐसी ❋ उपजी तुमको बात अनैसी ॥
दिन दिन भयो प्रबल बहुभारी ❋ हम सब हितकी कहत तुम्हारी ॥
तब बोल्यो नृप गर्वितबानी ❋ यह नारद तुम कहा बखानी ॥
यदपि कहत हो तुमहित केरी ❋ तदपि बराबरि नहिं वह मेरी ॥
कोटि दनुज मोसम मोपासा ❋ जिनको देखि सुरन मन त्रासा ॥
कोटि कोटि जिनके सँग योधा ❋ जीतिसकै को जिनके क्रोधा ॥
तिनके बल कह कहूं बताई ❋ देखत जिनको काल डराई ॥

दो०--रहत द्वार संतत खरी, कोटि भटनकी भीर ।
अति प्रचंड कोदंडधर, महाबली रणधीर ॥
सो०--महामत्त गज एक, त्रिभुवनगामी कुवलिया ।
ऐसे सुभट अनेक, नामी सुभटन को गनै ॥

कहा ग्वालके बालक दोऊ ❋ तदपि बली उपजेहैं वोऊ ॥
प्रजालोग ब्रजके सब मेरे ❋ सेवा करत सदा रहे नेरे ॥
ताते सकुचत हौं उन काजा ❋ बालक सुनत होत मोहिं लाजा ॥
भलीकरी यह बात बुझाई ❋ मनकी डारौं खटक मिटाई ॥
सुनहु और नारद मुनि हमसों ❋ कहत मतेकी वाणी तुमसों ॥
उनपर सैना कहा पठाऊं ❋ नन्द सहित सहजहि बुलवाऊं ॥
डारौं गजके चरण खुदाई ❋ और प्रजा ब्रज देउँ बसाई ॥
यहै बात मेरे मन आई ❋ तब सुनि मुनि बोले मुसकाई ॥
जो तुम अपनो गर्व सँभारो ❋ तो जानो अब तुम उन मारो ॥
त्रिभुवनमें को बलहि तुम्हारे ❋ अस कहि मुनि विधिधाम पधारे ॥

१ स्वर्ग, पाताल, मर्त्य ।

कंस आपने जिय यह जानी ❀ नारद हितकी बात बखानी ॥
अब मारौं नहिं गहर[1] लगाऊं ❀ मथुरा[2] जिहि तिहि भाँति बुलाऊं ॥

दो०—यहै शोच उरमें परचो, नहिं विचार कछु और ।
कैसे तिन्हैं बुलाइये, करत मनहिं मन दौर ॥

सो०—कबहुँ विचारत हीय, आपहि चढि धाऊं ब्रजहि ।
पुनि सकुचतहै जीय, ब्रजवासी प्रभुगुण समुझि ॥

जन्महिंते वे हैं असुरारी ❀ सातहि दिनके बकी सँहारी ॥
कागासुर बल गयो बढाई ❀ सो मुरझाय गिरचो फिर आई ॥
शकट तृणा क्षणहीमें मारे ❀ ख्यालहि और असुर संहारे ॥
गये प्रतिज्ञा करि करि जोई ❀ आयो नहिं जीवत फिरि कोई ॥
अब उनको सहजही बलाऊं ❀ ऐसो को जिहिं लेन पठाऊं ॥
जाय। नन्दसों कहैं बुझाई ❀ श्याम राम सुन्दर दोउ भाई ॥
सुनि सुनि अतिनृपके मन भाये ❀ देखनको मधुपुरी बुलाये ॥
ऐसे करि जब वे ह्यां एहैं ❀ बहुरो जियत जान नहिं पैहैं ॥
यह विचार उरमें ठहरायो ❀ तब आतुर अक्रूर बुलायो ॥
सुनि अक्रूर मनमें भय पायो ❀ किहिं कारण नृपवेगि बुलायो ॥
आतुर गयो पवँरि पर धाई ❀ जाय पवँरिया खबरि जनाई ॥
सुनतहि बोलि महलमें लीन्हों ❀ सकुचिगवनसुफलकसुतकीन्हों ॥

दो०—कछु डर कछु जियधीर धरि, गयोनृपतिकेपास ।
देखि डरचो मुख शोचवश, उरते लेत उसास ॥

सो०—हाथ जोरि शिरनाय, अनबोल्यो सन्मुख रह्यो ।
लीन्हों ढिग बैठाय, मर्मवचन कहि कंस तब ॥

आपहि और वहां कोउ नाहीं ❀ बोल्यो नृप सुफलकसुतपाहीं ॥
कहि जु गये नारद ऋषि बानी ❀ सो सब कहिकै प्रगट बखानी ॥
सुनि अक्रूर कहत सत तोको ❀ श्यामराम शालत उर मोको ॥
ज्यहि त्यहि विधिअबउनको मारौं ❀ यह कछु दोष हृदय नहिं धारौं ॥

---

[1] देर । [2] मथुरा ।

पठवौं काहि जाहि ब्रज जोई ❀ कहै प्रीति करि नंदहि सोई ॥
बल मोहन तुव तनय सुहाये ❀ तुमहिं सहित नृपराज बुलाये ॥
सुनि गुण रूपहि अगम अगाधा ❀ है नृपको देखनकी साधा ॥
काली पीठ कमल लै आये ❀ तब ते नृपके मनमें भाये ॥
सो बखसीस इन्हैं अब दै हैं ❀ इनके वचन सुनत सुख पै हैं ॥
यह कहिकै उनको लै आवै ❀ भेद सुकोऊ जानि न पावै ॥
ऐसे कहि जब कंस सुनायो ❀ तब अक्रूरहि धीरज आयो ॥
मन मन कहत कहा यह भावै ❀ आपुहि अपनो काल बुलावै ॥
दो०-कियो विचार अक्रूर तब, कहत जु कछु मैं और ।
तौ मारैगो मोहिं यह, अबहीं याही ठौर ॥
सो०-कह्यो मानिहै नाहिं, काल याहि आयो निकट ।
यह विचारि मन माहिं, सुफलकसुत बोल्यो हरषि ॥
सुनहु नृपति नीके मन आनी ❀ धनि धनि नारद सत्य बखानी ॥
बडे शत्रु हमको वे दोऊ ❀ उपजे नंदभवन में कोऊ ॥
कीजै वेग नृपति यह कांजा ❀ तुम सरि औरकौन म्वहिं राजा ॥
मुखते आयसु जो करि पाऊं ❀ भोर वेगि तिहि ब्रजहि पठाऊं ॥
सुफलकसुत यह कही सयानी ❀ तब हर्ष्यो नृप सुनि यह बानी ॥
फिर फिर कहत हिये गरबाई ❀ प्रात बोलि मारौं दोउ भाई ॥
आधी निशि लौं यह मन कीन्हों ❀ तब अक्रूर विदा करि दीन्हों ॥
पर्‍यो सेज आलस जिय जानी ❀ सेवाकरन लगीं सब रानी ॥
नेक पलक लागी झपकाई ❀ लखे स्वप्न बलराम कन्हाई ॥
काल सरिस दोउ देखि डरानो ❀ झिझकिउठ्योभरम्योससकानो ॥
देखे जागत ह्वां नहिं दोऊ ❀ चकित भई रानी सब कोऊ ॥
बूझन लगीं सबै अकुलाई ❀ कह झिझके स्वप्ने नृपराई ॥
दो०-महाराज झिझके कहा, स्वप्ने आज सकाय ।
कहिये काको शोचअति, जीमें रह्यो समाय ॥

१ अक्रूर ।

सो०–तब मनमें सकुचाय, सहजहि रानिनसों कह्यो।
भेद न भयो जनाय, मन शंका उर धकधकी ॥
सावधान प्रतिपाल कराये ❀ जहँ तहँ योधा सकल जगाये ॥
श्याम राम भय पलक न लावै ❀ अंतर शोच न प्रगट जनावै ॥
जाग्यो आप संग सब नारी ❀ भई यामनिशि युगते भारी ॥
बैठत कबहुँ उठत अकुलाई ❀ ठाढो होत कबहुँ अँगनाई ॥
घरियाली सों पूछि पठावै ❀ बार बार निशि खबर मँगावै ॥
शोचत सब प्रातहि कह करिहै ❀ क्रोध भरचो नृपका शिरपरि है ॥
कही घरी निशि गणिकन बाकी ❀ इक इकक्षणयुग यहगतिताकी ॥
कहत ब्रजहि धौं काहि पठाऊं ❀ जासों कहि नँदसुवन मँगाऊं ॥
पठवों अक्रूरहिको जाई ❀ ल्यावैं ब्रजते ठगि दोउ भाई ॥
इत देख्यो सपनो नँदराई ❀ बल मोहन कहुँ गये हिराई ॥
ग्वाल बाल रोवत पछिताहीं ❀ कहतश्याम तौ अब ब्रजनाहीं ॥
संगहि खेलत रहे हमारे ❀ निठुर होय कहुँ अन्त सिधारे ॥
दो०–दूत एक कोउ आयकै, सँग लै गयो लिवाय।
वाहीके दोउ ह्वैगये, ब्रजबासिन बिसराय ॥
सो०–अति व्याकुल नँदराय, मुरझि परे धरणी सुनत।
बिवश यशोदा माय, श्याम विरह ब्याकुल खरी ॥
ब्याकुल नरनारी ब्रजवासी ❀ पशु पक्षी सब परम उदासी ॥
रोवत गिरत धरणि दुख पागे ❀ अति अकुलाय नंद तब जागे ॥
धकधकात उर श्रंवत नयनजल ❀ सुत अँग परसन लागे शीतल ॥
ससकत सुनत अतिहि अतुरानी ❀ कह भरमें पूछत नँदरानी ॥
नन्द नहीं कछु भेद जानायो ❀ श्यामहिं लखिधीरज उरआयो ॥
अति प्रभात रवि उगन न पायो ❀ सुफलकं सुत उत कंस बुलायो ॥
सुनतहि द्वारपाल उठि धायो ❀ सोवतते अक्रूर जगायो ॥
कह्यो बेगि चलिये नृपपासा ❀ समुझि मंत्र निशिचल्यो उदासा ॥

१ नयनोंसे पानी टपकत । २ अक्रूर ।

ठाढो नृपति द्वारही पायो ❀ देखत दूरिहिते शिर नायो ॥
अति आदरकरि निकट बुलायो ❀ शिरोपाव[१] नृप तुरत मँगायो ॥
अक्रूरहि निजकर पहिरायो ❀ बहुत कृपाकरि बचन सुनायो ॥
ल्यावहु नन्द महर सुत दोऊ ❀ तुमसम और चतुर नहिं कोऊ ॥

दो०-मुख हरष्यो अक्रूर सुनि, हृदय गयो बिलखाय।
असुरत्रास[२] जियमें परयो, बचन कह्यो नहिंजाय ॥

सो०-दीनो रथहि चढाय, जाहु वेगि ब्रज नृप कह्यो ।
लै आवहु दोउ भाय[३], अबहिं बिलम्ब न कीजिये ॥

तब अक्रूर कह्यो करजोरी ❀ सुनहु देव विनती इक मोरी ॥
बल मोहन प्रातहि दोउ भैया ❀ वनको जायँ चरावन गैया ॥
जो उनको घरमें नहिं पाऊं ❀ जाते प्रभु यह बात सुनाऊं ॥
आज नन्द गृह बसिहौं जाई ❀ प्रातहि लै आवहुँ दोउ भाई ॥
ऐसे जब अक्रूर जनायो ❀ कंस बात यह मानि पठायो ॥
शीश नाय तब रथ चढि हाँक्यो ❀ सुफलकसुतब्रजसन्मुख ताक्यो ॥
बहु प्रशंसि सब मल्ल बुलाये ❀ चाणूरादि सकल चलिआये ॥
तिनसों कह्यो सुनौं सब बीरा ❀ ब्रजमें रहत जु नन्द अहीरा ॥
कहियत बली तासुसुत दोऊ ❀ रामकृष्ण जिनकह सब कोऊ ॥
बहुत असुर मेरे उन मारे ❀ तातेहैं वे शत्रु हमारे ॥
उनको मैं मधुपुरी बुलायो ❀ सुफलकसुतको लेन पठायो ॥
उनको मति जानो तुम बारे ❀ हैं वे महा कठिन बलभारे ॥

दो०-रंगभूमि ताते रचौ, चित्र विचित्र बनाय ।
सावधान ह्वैके तहाँ, रहौ मल्ल सब जाय ॥

सो०-ऊँचो एक मचान, तहाँ और सुन्दर रचौ ।
जहाँ असुर परधान, बैठैं सब मेरे निकट ॥

योधा और अनेक बुलावो ❀ सावधान करि सब बैठावो ॥
ताते और पौरके बाहर ❀ रहै कुवलियागज[४] तिहिंठाहर ॥

१ पहिराव, वस्त्रालंकार । २ कंसभय । ३ कृष्ण, बलदेव । ४ दशसहस्त्रहाथीका बलवाला ।

राखा द्वार तीसरे जाई ❀ गरुव कठिन अति धनुष धराई ॥
बहुभट तहां रहैं रखवारी ❀ अस्त्र शस्त्र धारी बल भारी ॥
ऐसे सजग रहौ सब कोऊ ❀ जब आवैं वे बालक दोऊ ॥
प्रथम धनुष उनसों चढवावो ❀ उन्हें कहो यह धनुष उठावो ॥
जब वे धनुष उठावैं नाहीं ❀ घेरि लेहु उनको तिहिं ठाहीं ॥
ताही ठौर मारि दोउ लीजो ❀ भीतरलौं आवन नहिं दीजो ॥
जो कदापि ह्यांते चलिआवैं ❀ तौ गजते आवन नहिं पावैं ॥
डारौ गजके चरण रुँदाई ❀ तुमको राखत अबहिं जनाई ॥
जो छल बल करिकै बचिआवैं ❀ रंगभूमि आवन नहिं पावैं ॥
तौ सब मल्ल मारि उन लेहू ❀ मोसमीपै आवन नहिं देहू ॥

दो०–ठौरहि ठौर सजायकै, सजग रहौ यहि भाँत ।
जिहिं तिहिं बिधि मारौ उन्हैं, नहीं दूसरी बात ॥
सो०–मन मन मौज बढाय, ऐसे आयसु दै सबन ।
गयो सदन नृपराय, सुनहु कथा अक्रूरकी ॥

अक्रूरआगमनलीला.

सुफलकसुत मनशोच अपारा ❀ है नृप कंस बडो हत्यारा ॥
मंत्र कियो मिलि मेरे साथा ❀ पठयो मोहिं लेन ब्रजनाथा ॥
कैसे आनिदेउँ मैं जाई ❀ मोदेखत मारै दोउ भाई ॥
नगर निकसि रथ कीन्हों ठाढो ❀ परयो विचार हृदय अतिगाढो ॥
गज मुष्टिक चाणूर सुमिरिकै ❀ आयो नीर लोचनन ढरिकै ॥
अति बालक बलराम कन्हाई ❀ कहा करौं कछु नाहिं बसाई ॥
मोहिं मारि वरु वन्दि करावै ❀ यह विचारकरि रथ न चलावै ॥
पुनि पुनि कृष्ण हृदयमें ल्यावै ❀ चलतफिरत कछु बनि नाहिं आवै ॥
प्रभु कृपालु सब अंतर्यामी ❀ सुफलकसुत मन पूरणकामी ॥
सुमिरतकृष्ण हृदय यह आई ❀ वे श्रीपति प्रभु त्रिभुवनराई ॥
अखिल जगतके कारण कर्त्ता ❀ उत्पति पालन अरु संहर्त्ता ॥
भूमिभार कारण अवतारा ❀ को जानै गुणरूप अपारा ॥

दो०-धन्य कंस जिन मोहिं ब्रज, पठयो लेन गोपाल।
जाय रूप वह देखिहौं, निगम नेति नँदलाल॥
सो०-यह विचार उर आनि, रथ हांक्यो अक्रूर तब।
भयो शकुन शुभवानि, मृगगण आये दाहिने॥
दहिने देखि मृगनकी माला ❀ सुफलकसुत उरहर्ष विशाला॥
कहत आज इन शकुनन जाई ❀ भुजभरि मिलिहौं प्रभु सुखदाई॥
श्याम सुभग तनु परमसुहावन ❀ इंदुवदन त्रयताप नशावन॥
अंग त्रिभंग किये गोपाला ❀ सारसहूते नयन विशाला॥
मोर मुकुट कुण्डल वनमाला ❀ कटिकछनी पट पीत विशाला॥
तनु चंदनकी खौर बनाये ❀ नटवरवेष मनोर्ज लजाये॥
ह्वैहैं गैयनके सँग ठाढे ❀ ग्वालन मध्य महाछवि बाढे॥
सो दर्शन लखि होब सनाथा ❀ धरिहौं जाय चरणपर माथा॥
जे शुभ चरण पितामंह ध्यावें ❀ महिमां जिनकी वेद बतावें॥
जिन चरणन कमलाँ रतिमानी ❀ शंभु धरयोशिर जिनको पांनी॥
सनकादिक नारद यश गावें ❀ जिन चरणन योगी चित ल्यावें॥
बलि जिनकी मर्यादं न पाई ❀ हारि मानि निजपीठ नपाई॥
दो०-शिलां शाप मोचन करन, हरन भक्त उरपीर।
आज देखिहौं ते चरण, सकल सुखन की सीर॥
सो०-अरुण कंजके रंग, अंकित अंकुश कुलिश ध्वज।
गोप बालकन संग, गो चारत बन पाइहौं॥
परिहौं जाय चरणपर जबहीं ❀ भुजन उठाय भेटिहौं तबहीं॥
परसत उर आनँद उपजे हैं ❀ अंगन पुलकि तनोरुह ऐहैं॥
देखत दरशपरश सुख ह्वैहैं ❀ प्रेमंसलिल लोचन भरिजै हैं॥
कुशल पूछि हैं म्वहिं सुखदानी ❀ कहि नहिं सकिहौं गद्गद बानी॥
बारहि बार वचन मृदुकै हैं ❀ सुनि सुनि श्रवणपरम सुखपै हैं॥

१ वेद। २ हरिणोंकेयूथ। ३ चन्द्रवदन। ४ कामदेव। ५ ब्रह्मा। ६ प्रभुता। ७ लक्ष्मीजी। ८ चरणोदक-गंगाजी। ९ थाह। १० अहल्या। ११ प्रेमाश्रु। १२ कान।

यों अक्रूर ध्यानमैं अटक्यो ❋ भूल्यो पंथ फिरत रथ भटक्यो ॥
हरि अनुराग भरचो उर माहीं ❋ रही देहकी सुधि कछु नाहीं ॥
सांझ भई गोकुल नहिं पायो ❋ नहिं जानत कोहौं कहँ आयो ॥
किन पठयो कहँ जात न जानी ❋ रथ बाहनकी सुरति भुलानी ॥
भयो हर्ष उर प्रेम विशाला ❋ दशहूं दिशि पूरण गोपाला ॥
हरि अंतर्य्यामी सब जानी ❋ भक्त बछल है जिनकी बानी ॥
भक्ति भाव करि जो कोउ ध्यावैं ❋ मिलत तिन्हैं नहिं बिलमलगावैं ॥

दो०-ग्वाल संग वृन्दाविपिन, चारत धेनु सुजान ।
चले हर्षि हलधर सहित, भक्त हेतु जिय मान ॥

सो०-यमुन पार करि गाय, गौरी गावत हर्षि हरि ।
गायन तहां मँगाय, लागे गोदोहन करन ॥

गायन दुहन लगे सब ग्वाला ❋ आपहु दुहत भये नँदलाला ॥
भक्त हेतु यह सुख उपजायो ❋ तहां दरश सुफलकसुत पायो ॥
रहिन सक्योरथपर सुखव्याकुल ❋ उतरि परचो भूपरअति आकुल ॥
भयो मनोरथ मनको भायो ❋ दौरि श्याम चरणन शिरनायो ॥
पुलकि गात लोचन जलधारा ❋ हृदय प्रेम आनंद अपारा ॥
कृपासिंधु करि कृपा उठायो ❋ भक्त हेतु मिलि कंठ लगायो ॥
भयो जु सुख सो सोई जानै ❋ ब्रजबासी किहिं भाँति बखानै ॥
जो अक्रूर चरित मन कीन्हों ❋ तैसिय भाँति दरश हरि दीन्हों ॥
मधुर वचन श्रवणन सुखदाई ❋ पुनि पुनि पूछत कुँवर कन्हाई ॥
आनन चारु निरखि सुखकारी ❋ तब बोल्यो अक्रूर सँभारी ॥
कुशल नाथ अब दरश निहारी ❋ दैत्यदलन भक्तन हितकारी ॥
भेदहि भेद कंसकी बानी ❋ सुफलकसुत सब प्रगट बखानी ॥

दो०-सुनत वचन अक्रूरके, मुसकाने ब्रजचन्द ।
फरकि भुजा भूभारकी, तारण असुर निकन्द ॥

सो०-मिले राम पुनि आय, परम प्रीति अक्रूरसों ।

१ गौ । २ शोभायमानमुख ।

उर आनँद न समाय, वासुदेव दोऊ निरखि ॥

कहि कहि उठत इहै नँदलाला ❀ हमहिं बुलायो कंस भुवाला ॥
लेबेको अक्रूर पठाये ❀ कालिहहि कारि अतिकृपा मँगाये ॥
सुनतहि भये चकित सब ग्वाला ❀ कहा कहतहैं मदनगोपाला ॥
भये प्रेमवश मति अकुलानी ❀ भरि आयो नयननमें पानी ॥
निरखि सबनको मुख सुखदानी ❀ तब बोले करि श्याम सयानी ॥
चलहु कालि देखहिं नृप कंसा ❀ मति आनौ जियमें कछु संसा ॥
यह कहि चले हर्षि ब्रजबालन ❀ कछू हर्ष कछु संशय ग्वालन ॥
अति कोमल बलराम कन्हाई ❀ हँसि लीन्हें अक्रूर उठाई ॥
सुमनहुँते हरुवे सुखदनियां ❀ दोउ लसत सुफलकसुत कनियां ॥
ग्वाल सकल लीनो रथ डोरी ❀ पहुंचे आय सकल ब्रजखोरी ॥
लखि जहँ तहँ ब्रज लोग चकाने ❀ कंस दूत सुनि नन्द सकाने ॥
स्वप्नो समुझि शोच उर छायो ❀ मन मन कहत कहां धौं आयो ॥

दो०-आतुर उठि आगे चले, लेन नन्द उपनन्द ।
देखन धाये घरनते, सुनत नारि नर वृन्द ॥

सो०-श्याम राम उरलाय, स्यंदनतजि सुफलक सुवन ।
आवत लखि नँदराय, भये हर्ष विस्मय विवश ॥

सादर तिनको शीश नवाये ❀ कुशल प्रश्नकरि गृह लै आये ॥
चरण धोय बैठक शुभ दीन्हीं ❀ विविध भाँतिभोजन विधि कीन्हीं ॥
संकर्षण अरु कुँवर कन्हैया ❀ मिलिगये अक्रूरहिं दोउ भैया ॥
क्षणक होत नहिं नेक नियारे ❀ मनहुँ दुलारि उनहिं प्रतिपारे ॥
तब अक्रूर संग लै दोऊ ❀ भोजन कियो लखत सब कोऊ ॥
हरि इतउत फेरत नहिं आखैं ❀ सब ब्रजलोग मनहिं मन भाखैं ॥
उठे अँचै तब पान खवाये ❀ आदर सहित पलँग बैठाये ॥
पुनि करजोरि नंद यों भाख्यो ❀ कहा कृपा करि पग इतराख्यो ॥
तब ऐसे अक्रूर सुनायो ❀ बल मोहनको नृपहि बुलायो ॥
तुमको कह्यो संग लै आवैं ❀ सुनि सुनि गुण मेरे मन भावैं ॥

देखनको अभिलाष जनायो ❋ ताते वेगिहि प्रात बुलायो ॥
ब्रजके लोग सुनत यह वानी ❋ भये चकित सुधिबुद्धि हिरानी ॥
दो०-चकित नन्द यशुमतिचकित, मनहींमन अकुलात ।
हरि हलधरको सैनदे, सबै बुलावत जात ॥
सो०--माया रहित मुकुंद, जाके योग वियोग नहिं ।
सदा एक आनंद, अविगति अविनाशी पुरुष ॥
प्रेम भक्तकी कछु उर लाजा ❋ कीन्हों चहैं भूमि सुर काजा ॥
जाते नहिं काहू तनु हेरत ❋ बोलत नहीं नयन नहिं फेरत ॥
जनु पहिचाने कबहुं किनाहीं ❋ लखिलखिसबडरपतमनमाहीं ॥
हरि सुफलकसुतसों मन लायो ❋ यहै कहत नृप हमहिं बुलायो ॥
हुती साध हमहूं मन माहीं ❋ कबहुं नृपति बोल्यो क्यों नाहीं ॥
हँसि हँसि ऐसे कहत मुरारी ❋ यह सुनि बिकल सकल नरनारी ॥
श्याम नहीं कछु मनमें आने ❋ भये नेहतजि तुरत बिराने ॥
कहति परस्पर तिय अकुलाई ❋ कितते आयो यह दुखदाई ॥
महाक्रूर अक्रूर नामको ❋ जैहै प्रात लिवाय श्यामको ॥
जान कहत या संग कन्हाई ❋ कैसे प्राण रहैंगे माई ॥
बिलखि वचन शोचति सब ठाढी ❋ मनहुं बिचित्र चित्र लिखिकाढी ॥
अब हम संग तुम्हारे जैहैं ❋ भली भाँति नृप देखन पैहैं ॥
दो०-ठौर ठौर ऐसी दशा, कहत न आवत बयन ।
बढी श्यामबिछुरन व्यथा, ढरत उमँगजलनयन ॥
सो०-फिरत विकल सब ग्वाल, पूछत एकहि एकसों ।
चलन कहत नँदलाल, मन मलीन व्याकुल सबै ॥
ब्रजके लोग विकल सब देखैं ❋ तब अक्रूर सबन परितोखैं ॥
चिन्ता मतिहि करो मन माहीं ❋ इनको कछू और डर नाहीं ॥
भंजन धनुष यज्ञके काजा ❋ मधुपुर इनहिं बुलायो राजा ॥

---

१ भीति । २ समझावैं ।

व्याकुल महरि यशोमति धाई ❀ आतुर परी चरण पर आई ॥
सुफलकसुत में दासि तुम्हारी ❀ सुनो कृपाकरि विनय हमारी ॥
सन्तन धाम परम उपकारी ❀ सुनियत कीरति बडी तिहारी ॥
बडे दुखनमें यह प्रतिपारे ❀ राम श्याम प्राणनते प्यारे ॥
धनुष तोर कह जानैं बारे ❀ इन कब देखे मल्ल अखारे ॥
राजसभाको यह कह जानै ❀ कब इन नृप जुहार पहिंचाने ॥
राजअंश अपनो सब लीजे ❀ और कहो बरु अधिको दीजे ॥
जाहु नंद उपनंदहि लैकै ❀ मैं कह करों सुतनको दैकै ॥
हे अक्रूर तुम्हारो नामा ❀ नगर कहा लरिकनको कामा ॥

दो०-कहा धनुष यह देखि हैं, बालक अति अज्ञान ।
किये नृपति कछुकपट यह, परत मोहिं यों जान ॥
सो०-देहुँ नहीं हौं जान, मो निधनीके श्याम धन ।
लेहि कंस बरु प्रान, को जीवै नँदनंद बिन ॥

कहति बिलखि हरिसों दुख भारी ❀ क्यों मोहन मम छोंड़े बिसारी ॥
दुखित जानि अपनी महतारी ❀ मथुराजाहु न मैं बलिहारी ॥
ये अक्रूर क्रूर कृत रचि कै ❀ आये तुम्हैं लेन रथ सजिकै ॥
तिरछी भई करम गति आई ❀ यह धौं बिधना कहा बनाई ॥
मोसी मात महर सो ताता ❀ कहत रहत क्षणक्षण दोउभ्राता ॥
तिहि सुख जान कहत हौ प्यारे ❀ कैसे रहिहैं प्राण हमारे ॥
मैं बलि ऐसी जिय मति धारो ❀ मथुरामें कहकाज तिहारो ॥
निरखि रूप यशुमति अकुलाई ❀ व्याकुल परी धरणि मुरझाई ॥
कहि अब लैवैं प्राण कन्हैया ❀ ह्वैकै निठुर जातहैं मैया ॥
क्यों अक्रूर गोकुलहि आयो ❀ मेरे प्राण लेनको धायो ॥
नाम अक्रूर गुण क्रूर तुम्हारा ❀ करिहौ सूनो भवन हमारा ॥
रोवत बदन रोहिणी मैया ❀ ब्रजके जीवन ये दोउ भैया ॥

दो०-भये निठुर अक्रूर मिलि, घरहू आवत नाहिं ।

१ दया । २ दुष्ट । ३ गृह ।

कहा करों कासों कहौं, को राखै गहि बाहिं ॥
सो०-अति व्याकुल ब्रज वाम, जहां तहां बिलखी कहैं।
चलन चहत घनश्याम, धृक जु रहैं सखि प्राण तनु ॥
कहँ वह सुख हरिको सँग सजनी ❋ विविध बिलास शरदकी रैजनी ॥
हरि मुख शशि शीतलसुखकारी ❋ चखचकोर लखि रहत सुखारी ॥
कहँ वह सुंदरि हरि गरबाहीं ❋ पियतअधर रस मन न अघाहीं॥
जग उपहास सह्यो जिहिं लागी ❋ कुलअभिमान लाज सब त्यागी ॥
छुटयो चहत सो हमसों आली ❋ करीकठिनबिधिकरमकुचाली ॥
कहूं सखी फिरि कबहूं ऐसे ❋ मिलि हैं अब मिलियत हैं जैसे ॥
कहि हैं बहुरि बात हँसि कबहीं ❋ लागत परम निठुर म्वहिं अबहीं॥
बिरहानल अग्निहुँते ताती ❋ बिछुरत श्याम पीर अतिछाती ॥
न्यायहि सखी नागरी नारी ❋ जरत बिरह उर अमित प्रचारी॥
अब सहिहैं ऐसो दुख प्राना ❋ निशिदिन करि उरवज्रसमाना ॥
एक कहति कैसे हरि जैहैं ❋ यशुमति पै सखि जान न पै हैं ॥
कह करि है अक्रूर हमारो ❋ फिरिजैहैं करि मुख निजकारो ॥
दो०-हम तजि हरि नहिं जाइहैं, मोहिं जीय विश्वास ।
कहा लेहिंगे मधुपुरी, छांडि यशोमति पास ॥
सो०-धरयो तनक जब धीर, सुनि ताकी वाणी सबन।
सो जानै यह पीर, जो रँगराती श्यामके॥
करत नन्द उपनन्द बिचारा ❋ करिये कहा कौन उपचारा ॥
को जानैं कह नृपमनमाहीं ❋ नृप आयसु मेटयो नहिं जाहीं ॥
अति बालक बलराम कन्हाई ❋ भये शोच बश अब नँदराई ॥
तब बोल्यो यक गोप पुरानो ❋ प्रभु प्रभाव उर राखि सयानो ॥
कहताकि मो मनमें यह आवै ❋ सोई करो जो श्यामहिं भावै ॥
इनको बालक करि मति जानो ❋ कहि गये गर्ग सोई परमानो ॥
ये करता हरता सबहीके ❋ भार उतारनहार महीके ॥

१ दुःखित । २ शीतनिशा ।

जिन गिरि करधरि ब्रजहि बचायो ❀ बहुरि हमैं बैकुंठ दिखायो ॥
जाहि गयो सुरपति शिरनाई ❀ ल्यायो नाथि कालि अहि जाई ॥
वरुणधाम देखी प्रभुताई ❀ करति हते सब तुमहिं बडाई ॥
कहा कंस ताको भय मानैं ❀ इनकी महिमा येही जानैं ॥
कितक धनुष हरि तुरत चढैहैं ❀ देखत इनहिं कंस सुख पैहैं ॥
दो०-जो करि है कछु कपट तो, सब समरथ गोपाल ।
हरि हलधर भैया उभय, ये कालहुके काल ॥
सो०-हर्षे सबै अहीर, हरि प्रताप उरमें समुझि ।
सब लायक बल बीर, धीर धरौ यह जानिकै ॥
बार बार यशुमति अकुलाई ❀ कहत रहौं सुत कुँवर कन्हाई ॥
अबहीं तात बहुत तुम बारे ❀ मथुरा बसत मल्ल हत्यारे ॥
क्यों बलराम कहत तुम नाहीं ❀ तुमबिन लाल मात मरि जाहीं ॥
कहत राम सुनु यशुमति मैया ❀ तू मति बोरो जान कन्हैया ॥
मतिहि कंस भय व्याकुल होहीं ❀ एक भरोसो हरिको मोहीं ॥
प्रथमहिं बकी कपट करि आई ❀ अतिहिप्रबलबिषकुचलपटाई ॥
चारहि दिनके तबहिं कन्हाई ❀ तब देखतही ताहि नशाई ॥
शकट तृणावृत वत्स अन्याई ❀ अघ अरिष्ट केशी दुखदाई ॥
एकहि पलमैं सकल सँघारे ❀ विषजलते सब सखा उबारे ॥
गोवर्द्धन जिन करपर धारचो ❀ महाप्रलयको जलसब टारचो ॥
हरि सम बली और कोउ नाहीं ❀ तू मत शोच करै मनमाहीं ॥
हम बालक कह तुमहिं सिखावैं ❀ धीर धरौ हम फिरि ब्रज आवैं ॥
दो०-सुनि चरित्र गोपालके, उर आयो अवरोहि ।
जो कछु करैं सो सत्य प्रभु, आवत है सब सोहि ॥
सो०-कह्यो नंद तब आय, मैं लैजैहौं संग हरि ।
धनुषयज्ञ दिखराय, लै ऐहौं तुरतहि बहुरि ॥

अथ मथुरागमनलीला.

ऐसेहि सबको रात बिहानी ❀ भयो प्रात चिरिया चुहचानी ॥
महर कह्यो सब गोप बुलाई ❀ दधि घृत भार सजो बहु जाई ॥
नृपति भेंट हित करहु सँजोई ❀ हरिके संग चलै सब कोई ॥
ग्वाल सखा यह सुनि अकुलाने ❀ चहतश्याम मधुपुर निज जाने ॥
परचो शोर ब्रज घर जहँ ताँई ❀ हरि मुख देखनको सब धाई ॥
सजत ग्वाल चलबेको साजा ❀ गैया फिरत दुहुनके काजा ॥
कह्यो श्याम अक्रूरहि तबहीं ❀ जोतहु तात तुरत रथ अबहीं ॥
सुफलकसुत आयसु जब पायो ❀ सहित सकोच रथहि पलनायो ॥
सुफलकसुत ढिगते दोउ भाई ❀ होत नहीं न्यारे कहुँ राई ॥
देखतही यशुमति अकुलानी ❀ परी धरणि बिलपति बिललानी ॥
विकल कहति मोहिं तजो दुलारे ❀ जात किये सूनो ब्रज प्यारे ॥
यह अक्रूर ठगौरी लाई ❀ मोहे मेरे बाल कन्हाई ॥

दो०–यह सुफलकसुत बूझिये, तुम्हीं हरे मो बाल ।
बृद्ध समयकी लकुटिया, मेरे मदनगोपाल ॥
सो०–देखहु मनहिं बिचारि, लाभ कछू यामैं तुम्हैं ।
दियो धरम डरडारि, क्रूर भये इत आयकै ॥

चलत जात चितवति ब्रजनारी ❀ विरह विकल तनुसुरति बिसारी ॥
जहँ तहँ चित्र लिखीसी ठाढी ❀ नयनन नीरनदी जिमि बाढी ॥
लगत निमेष[1] कूल दोउ नाहीं ❀ भ्रमति नाव पुतरी ता माहीं ॥
ऊरध श्वास समीर झकोरत ❀ चित्र कपोल तीरतरु तोरत ॥
काजलकीच कुचील किये तट ❀ अधर कपोल उरज अंचल[2]पट ॥
रहे जहाँ तहँ पथिक जकेसे ❀ चरण हस्त मुख बचन थकेसे ॥
श्याम बिरह व्याकुल ब्रजबाला ❀ नीरहीन जिमि मीन बिहाला ॥
सूखत अधर बदन मुरझाने ❀ जनु हिम[3]परसि कमल कुम्हिलाने ॥
कहति परस्पर बचन अधीरा ❀ गदगद बचन ढरत दृग नीरा ॥
जीवन धन प्राणनको प्यारो ❀ लिये जात अक्रूर हमारो ॥

१ पलक । २ घूंघट । ३ पाला ।

सुनहु सखी अब कीजै सोई ❀ जाते बहुरि शूल नहिं होई ॥
गयो दूर रथ रह्यो न जैहै ❀ पुनि पाछे पछितायो ऐहै ॥
दो०-परिहरि यश आशा जियन, लाज पंचकी कान ।
करिये बिनती श्यामसों, सखी समय पहिंचान ॥
सो०-होनी होय सो होय, पायँ परशि हरि राखिये ।
नातरु मरि हैं रोय, समय चूक उर शालिहै ॥
प्रभु अन्तर्यामी सुखदानी ❀ विरह बिकल गोपीजन जानी ॥
चितये नयन कमल दल लोचन ❀ सकल शोच संतापबिमोचन ॥
मृदु मुसकानि ठगोरी डारी ❀ श्याम ठगी सब ब्रजकी नारी ॥
रहि गइँ चितवत बचन न आयो ❀ चढे श्याम रथ अवसर पायो ॥
हरिको नाम सुमिरि मन माहीं ❀ चढे अक्रूर तुरंत तहांहीं ॥
देखत महरि यशोमति धाई ❀ पुत्र पुत्र कहि टेर लगाई ॥
मोहन नेकु देखि इत लैहो ❀ बिछुरत लाल भेंटम्वाहिं दैहौ ॥
राखहु तात बोध करि मैया ❀ बहुरो चढहु बिमान कन्हैया ॥
लेहु निहारि जन्मको खेरो ❀ बहुरो ब्रजमें होत अँधेरो ॥
यह कहि ग्वाल सखनको फेरो ❀ अपनी गाय जाय सब घेरो ॥
ऐसे कहि यशुमति बिलखाई ❀ किये यत्न बहु प्राण न जाई ॥
विलपति बिकल राम महतारी ❀ अति व्याकुल सब ब्रजकी नारी ॥
दो०-देखि दुखित ब्रज लोग सब, और यशोदा माय ।
तब हरि कहि यह सुख दियो, बहुरि मिलैंगे आय ॥
सो०-धरणीके हितकारि, मथुरातन चितये बहुरि ।
कह्यो दृगन सनकारि, रथ हांकन अक्रूर सों ॥
बार बार यशुदा यों भाखै ❀ कोऊ चलत गोपालहि राखै ॥
सुफलकसुत बैरी भयो आई ❀ हरे प्राण धन बाल कन्हाई ॥
हरहु कंस बहु गोधन सारो ❀ कै करि मोहिं बन्दिमें डारो ॥
ऐसेहू दुख श्याम सभागे ❀ खेलहिं मो नयनके आगे ॥
यह कहि महि लोटति अकुलानी ❀ अतिही दुखित नन्दकी रानी ॥

गोपी जन विरहानल डाढीं ❃ रहि गईं प्रेम बियोगिनि ठाढीं ॥
जिमि कुमुदिनिगण नीरविहीना ❃ रविहि प्रकाश त्रास ते दीना ॥
श्यामविमुख क्षणक्षण कुम्हिलानी ❃ बहुरो मिलन कठिन जियजानी ॥
बल बुधि थकित स्रवत जललोचन ❃ चलि नहिं सकीं रहीं मदमोचन ॥
ग्वैंडेलौं सब गई बिहाला ❃ ब्रज तजि गमन कियो गोपाला ॥
लै गये मधु अक्रूर निकारी ❃ माखी ज्यों सब दीन बिडारी ॥
देखत रहीं थकी टकलाई ❃ जब लगि धूरि दृष्टिमें आई ॥

दो०-भये ओट जब दृगनते, मुर्च्छि परीं बिलखाय ।
कहति गयो रथदूरि अब, धूरि न परति लखाय ॥

सो०-कहा करैं ब्रज जाय, मन हरि लैगयो साँवरो ।
परत न आगे पाय, पाछेही लोचन लखत ॥

वदन बिकल बिरहारस मातीं ❃ भई न पवन संग उडि जातीं ॥
रजहू नहीं विधाता बानी ❃ जातीं चरण कमल लपटानी ॥
भई नहीं यक रथको अंगा ❃ जाती चलीं तहां लगि संगा ॥
बिछुरे आज श्याम सुखराशी ❃ तौ परतीति दृगनकी नाशी ॥
उडि नहिं गये श्याम सँग लागे ❃ कृष्णमयी नहिं भये अभागे ॥
रसिक प्रेमके जगत बखाने ❃ रूप लालची सब कोउ जाने ॥
सो करणी कछु इन नहिं कीन्हीं ❃ वृथा मीनकी छबि हरि लीन्हीं ॥
धनि धनि मीन प्रीतिपथ सांचे ❃ सखि ये नयन हमारे काँचे ॥
अब ये शूल सहत जिय शोचत ❃ उमँगिउमँगिभरिभरिजलमोचत ॥
हरि बिन अब लखिये ब्रज सूनो ❃ समय चूकि सहिये दुख दूनो ॥
भई अजान सबै मन माहीं ❃ काहू चलत गह्यो रथनाहीं ॥
वृथा लाजकरि काज बिगारचो ❃ सह्यो दुसह बिरहा दुख भारचो ॥

दो०-यों ब्रजतिय पछिताय सब, देखि यशोदहि दीन ।
लै आईं सब नंद गृह, कृश तनु वदन मलीन ॥

सो०-ब्रजतिय परमउदास, हरि बिन सुख संपतिसपन ।

१ कोकाबेली ।

रहैं प्राण इहि आस, श्यामकह्यो मिलिहौं बहुरि ॥

खग मृग बिकल जहां तहँ बोलैं ❀ गाय वत्स रँभत सब डोलैं ॥
तरु बेली पल्लव कुम्हिलानी ❀ ब्रजकी दशा न परति बखानी ॥
चले नंद गोपनसँग लैकै ❀ ब्रजबासिनको धीरज दैकै ॥
बाल सखा हरिके सुखदाई ❀ दरशन लागि चले सब धाई ॥
उत अक्रूर शोच मनमाहीं ❀ कियो काज मैं नीको नाहीं ॥
बल मोहन भैया दोउ बारे ❀ अति कोमल नवनीत पियारे ॥
करिकै जननी जनक दुखारी ❀ व्याकुल सबै घोषकी नारी ॥
मैं लै जात कंस पै तिनको ❀ मों देखत मारैगो इनको ॥
धृक धृक धृक कुबुद्धि यह मेरी ❀ जाहुँ लिवाय इन्हैं ब्रज फेरी ॥
कंस आज मारै बरु मोहीं ❀ हरिको जाय देहुँ नहिं ओहीं ॥
यहि अंतर यमुना नियराई ❀ ठाढो कियो तहां रथ जाई ॥
अंतर्यामी हरि भगवाना ❀ भक्त हृदय संशय पहिचाना ॥

दो०–भूख लगी तब हरि कह्यो, हमैं कलेऊ देहु ।
करि यमुनामें स्नान पुनि, तात तुमहुँ कछु लेहु ॥
सो०–सुनत वचन मृदुकान, सुफलकसुत सुनितुरतहीं ।
कछु मेवा पकवान, भोजन दुहुँ भैयन दियो ॥

आप स्नान करन मन दीन्हों ❀ यमुना पैठि संकलप कीन्हो ॥
जबहीं शीश नीरमें डारचो ❀ तब अचरजयक भाव निहारचो ॥
राम कृष्ण रथपर सुखदाई ❀ जल भीतर शोभित दोउ भाई ॥
चकित भयो जलते शिरकाढचो ❀ देख्यो रथ बाहर सो ठाढचो ॥
बहुरो बूडि सलिलमें पेख्यो ❀ वैसोइ फेरि तहां रथ देख्यो ॥
क्षण जलमें क्षण प्रगट निहारै ❀ पुनि पुनि संभ्रम बुद्धि विचारै ॥
स्वप्न किधौं जाग्रत यह होई ❀ कै धौं मो मतिमें भ्रम कोई ॥
कैधौं जलमें रथकी छाया ❀ कैधौं यह हरिकी कछु माया ॥
भयो बिकल मति थिर कछु नाहीं ❀ देखन लग्यो बहुरि जल माहीं ॥

१. पानी ।

जब अक्रूर बहुत अकुलायो ❋ निज स्वरूप तहँ श्यामदिखायो ॥
देखत भयो तहाँ जल माहीं ❋ सकल देव ठाढे हरि पाहीं ॥
अस्तुति करत चरण चित दीने ❋ नमित कंधपर सम्पुट कीने ॥
दो०-शेषसहसफणिमणिनयुत, जगमगज्योतिअनूप ।
श्वेत चरण पटपीत युत, राजित हलधर रूप ॥
सो०-नव नीरद तनु श्याम, पीत बास लावण्य निधि ।
भुज प्रलम्ब अभिराम, शेष अंक हरि सोहहीं ॥
चारु अरुण पङ्कजदल नयना ❋ चितवनि चारु चारु मृदुवयना ॥
चारु तिलक बर भाल विराजैं ❋ चारुकुटिल कुन्तल छबि छाजैं ॥
चारु तिलक नासिका सुहाई ❋ चारु कपोल अधर अरुणाई ॥
सुन्दर श्रवण चिबुक दरग्रीवा ❋ चारु बसन विहँसनि छबि सीवा ॥
उर विशाल श्रीचिह्न विराजैं ❋ उदर सुघर रोमावलि राजैं ॥
नांभि गँभीर क्षीण कटिदेशू ❋ भुज विशाल बरचारु सुवेशू ॥
जंघ गुल्फ अति चारु सुहाई ❋ पदकमलन नख शशिछबिछाई ॥
नख शिख अनुपम रूप बिराजै ❋ दिव्याभरणसकल अँग छाजै ॥
कुंडल मुकुट जटित मणिमाला ❋ मुक्तमाल बनमाल बिशाला ॥
यज्ञोपवीत पितम्बर काँधे ❋ कौस्तुभ मणि अङ्गन बरबाँधे ॥
करपल्लवन मुद्रिका राजै ❋ शंख चक्र गद पद्म विराजै ॥
क्षुद्रघंटिका अति द्युतिकारी ❋ मणिन जटित नूपुर छबिभारी ॥
दो०-नन्दसुनन्दादिकनते, दिव्य पारषद आहिं ।
कर जोरे ठाढ़े सबै, परिचर्य्याके माहिं ॥
सो०-ठाढी जोरे हाथ, माया निज मायासहित ।
भक्ति भक्तके साथ, अंबरीष प्रहलाद बलि ॥
शिव अज सहित शिवा अरुबानी ❋ सनकादिक नारद अरुज्ञानी ॥
भक्तन सहित सुरासुर जेते ❋ कर जोरे ठाढे सब ते ते ॥
चन्द्र कुबेर बरुण दिकपाला ❋ मनु विश्वकर्म धर्म यम काला ॥

१ तोंदी । २ मुँदरी ।

वंदन करत चरण धरि माथा ❋ गावत वेद सकल गुण गाथा ॥
जलमें लखि अक्रूर भुलान्यो ❋ कृष्णप्रभाव प्रगट सब जान्यो ॥
चिंता सकल चित्तकी नाशी ❋ जान्यो कृष्ण ब्रह्म अविनाशी ॥
मोहिं कृपा करि दर्शन दीनो ❋ तहँ प्रणाम सुफलकसुत कीनो ॥
अति आनंद बढ्यो मन माहीं ❋ अस्तुति करनलग्यो तिहिं ठाहीं ॥
धन्य धन्य प्रभु अंतरयामी ❋ नारायण त्रिभुवनके स्वामी ॥
सकल विश्व तुमहीं विस्तारो ❋ विश्वरूप है रूप तुम्हारो ॥
निर्गुण निर्विकार अविनाशी ❋ लीला सगुण गुणनकी राशी ॥
प्रभु तुम सब देवनके देवा ❋ जानै कौन तुम्हारो भेवा ॥

छं०-कोजान तुम्हरो भेवहरि, तुमसकलदेवमयी प्रभो ।
आदि कारण सबहिके तुम, विश्व[1] सब तुम्हरो विभो ॥
नाग नर सुर असुर अग जग, दास सब तुम्हरो हरी ।
रहत माया वश तुम्हारी, जाहि तुम ज्यहि विधि करी ॥
योग यज्ञ अनेक कर्मन, करि तुम्हैं सब ध्यावहीं ।
जैसो जाको भाव तैसो, तुमहिं ते फल पावहीं ॥
अति अगाधअपार तुम गति, पार काहू नहिं लह्यो ।
शंभु शेष गणेश विधना, नेति निगम[3]नहू कह्यो ॥
भक्तहित धरि विविध तनु तुम, चरित अद्भुत विस्तरो ।
मच्छ कच्छ बराह वपु है, वेद गिरि तुम उद्धरो ॥
होय नरहरि भक्त प्रण करि, शरण हित बामन भये ।
भृगुवंश मणि अभिरामतनु धरि, मानमय क्षत्रियहये ॥
राम रूप निपाति रावण, अरु विभीषण नृप कियो ।
कंस अरि यदुवंश भूषण, कृष्ण वपु छबि निधि लियो ॥
बौद्ध रूप दयालु कल्कि हिंसादि, कर्मन भावहीं ।

१ समूह । २ संसार । ३ वेद ।

निःकलंकमलेच्छहा, दशरूप श्रुति तव गावहीं ॥
दो०–तव गुण रूप अनंत प्रभु, हौ अजान जगदीश ।
यों अस्तुति अक्रूर करि, नायो पदपरशीश ॥
सो०–तबहिं श्याम सुखदाय, अंतरहित जलते भये ।
निकस्यो अति अकुलाय, तब जलते अक्रूर पुनि ॥
लखी कृष्णकी जब प्रभुताई ❀ बढ्यो हर्ष अति उर न समाई ॥
भूले नेम न कछु कहिजाई ❀ मगन ध्यान बलराम कन्हाई ॥
कहत मनहिं मन यह अविनाशी ❀ पूरणब्रह्म सकल गुण राशी ॥
हरण करण समरथ भगवाना ❀ नाहिंन इन समान कोउ आना ॥
कितक कंस भेदी उर संशा ❀ ये करिहैं ताको निरवंशा ॥
चल्यो हांकि रथ तब हर्षाई ❀ नँद उपनंद मिले तहँ आई ॥
हरि अक्रूरहि बूझत जाहीं ❀ करि सयान मन मन मुसकाहीं ॥
कहो तात तुम अब हरषाने ❀ प्रथमहिं कछू बहुत मुरझाने ॥
कहो सांच हमसों सोइ बानी ❀ तब अस्तुति अक्रूर बखानी ॥
धन्य धन्य प्रभु धनि श्रीकंता ❀ गुणन अगाध अनादि अनंता ॥
निगम नेति कहि जाहि बखानै ❀ सहसानन नित नव गुण गानै ॥
करिकै कृपा जानि निज दासा ❀ दिये दरश संशय सब नासा ॥
दो०–अब म्वहिं प्रभु बूझत कहा, तुम त्रिभुवनके नाथ ।
कर्ता हर्ता जगतके, सकल तुम्हारे हाथ ॥
सो०–कहा बापुरो कंस, कहा मल्ल कह कुबलिया ।
अब करिये निर्वंश, बेगि नाथ ऐसे खलन ॥
सुनि मोहन सुफलकसुतबानी ❀ भये प्रसन्न भक्तसुखदानी ॥
जात चले रथपर दोउ भाई ❀ सम्मुख दृष्टि मधुपुरी आई ॥
तरणि किरण महलन छबि छाई ❀ जगमगात नभ सुंदरताई ॥
अक्रूरहि बूझत घनश्यामा ❀ कहियतहै मधुपुर ये नामा ॥
श्रवणन सुनत रहत हे जाही ❀ देख्यो आजु दृगनते ताही ॥

१ म्लेच्छोंके हतने हारे ।

कंचन कोट कँगूरा सोहैं ❋ बैठे मनहुँ मदन मन मोहैं ॥
वन उपवन पुरके चहुँ पाहीं ❋ अति भावत मेरे मन माहीं ॥
लखि लखि हरि मथुराकी शोभा ❋ पुनि पुनिपुलकतकरिमनलोभा ॥
तहां जन्म जियमें करि जाने ❋ ताते अधिक हर्ष उर माने ॥
बाजति नौबति नृपतिदुवारा ❋ होत शब्द घरियाल उदारा ॥
सुनि सुनि मन आनंद बढावैं ❋ नगर शोर सुनि रुचि उपजावैं ॥
कंनकखचित मणि जटित अटारी ❋ धवलनवल अति ऊंचि सवाँरी ॥

दो०—ध्वजपताक तोरण कलश, जहँतहँ ललितवितान ।
मुक्ता झालरि झलमलै, को करिसकै बखान ॥

सो०—निरखि निरखि हर्षात, मन मोहन अक्रूरको ।
बलहि देखावत जात, लसित लासकर पल्लवन ॥

कह अक्रूर सुनहु ब्रजनाथा ❋ भई आजु मधुपुरी सनाथा ॥
तुमहिं विलोकि विराजति ऐसी ❋ पति आगमतिय सोहति जैसी ॥
कसी कोट कटि किंकिणि मानौं ❋ उपवन वसन विविध रँग जानौं ॥
मंदिर चित्र विचित्र सुहाये ❋ जनु भूषण रचि रंग बनाये ॥
जहँ तहँ विविध बाजने बाजैं ❋ मनहुँ चरण नूपुर ध्वनि साजैं ॥
धामन ध्वजा विराजतहैं जिमि ❋ संभ्रम गति अंचल चंचल तिमि ॥
उच्च अटन षटऋतु छवि छाजै ❋ जनु उर आनँद उमगि विराजै ॥
भूलीं अति सुख संभ्रमताते ❋ प्रगटे कनक कलश कुच जाते ॥
मोखा द्वार दरीची द्वारा ❋ लागे विद्रुम कुलिश किंवारा ॥
मनहु तुम्हारे दरशन लागी ❋ नयननरहीं निमेषन त्यागी ॥
मुक्ता झालरि खिरकि बिराजैं ❋ हँसति मनों आनन्दन साजैं ॥
जगमगि ज्योतिरही छवि झूली ❋ जनु तुम पंथ निहारत भूली ॥

दो०—नीके हरि अवलोकिये, पुरी परम रुचि रूप ।
असुर कंसको जीतिकै, होहु इहांके भूप ॥

सो०—सुनि बिहँसे नँदलाल, ललित वचन अक्रूरके ।
पहुँच्यो रथ ततकाल, जाय निकट मथुरापुरी ॥

नगरनिकट पहुँचे जब जाई ❀ सुफलकसुवनसहित दोउ भाई ॥
गौर श्याम रथ पर दोउ राजैं ❀ कोटिन काम निरखि छबिलाजैं ॥
कंस दूत लखि जहँ तहँ धाये ❀ समाचार सब नृपहि सुनाये ॥
आये बल मोहन दोउ भाई ❀ सुनतहि नाम उठ्यो अकुलाई ॥
गहि कर खड्ग चर्मलै धायो ❀ रंगभूमिके महलन आयो ॥
गज मुष्टिक चाणूर बुलाये ❀ और सुभट सब बोलिपठाये ॥
तिन सन कह्यो सजग सब होऊ ❀ ठाँवहि ठाँवँ रहो सब कोऊ ॥
बहुतक असुर निकट बैठाये ❀ धनुषपास बहु सुभट पठाये ॥
पठवत दूत दूतपर धाई ❀ आये कहँलगि देखौ जाई ॥
गर्जैं कंस सेन सब साजैं ❀ द्वारे विविधै बाजने बाजैं ॥
पीरो भयो हृदय डर मानो ❀ सूखत अधर वदन कुम्हिलानो ॥
नंदमहरके सुत सुनि आवत ❀ मन मन मारन गर्व बढावत ॥

दो०-पर्‍यो शोर मथुरा नगर, आवत नंदकुमार ।
सुनि धाये नर नारि सब, गृहको काम बिसार ॥
सो०-लाजकानडरडार, कोउखिरकिनकोउअटनपर ।
कोऊ खड़ी दुवार, कोउ धावत गलियन फिरत ॥

कियो प्रवेश नगरमें जाई ❀ असुरनिर्कन्दन जन सुखदाई ॥
इन्दुवरण रथपर दोउ बीरा ❀ सुभग श्याम वरगौर शरीरा ॥
शीश मुकुट कण्डल छबिछाजै ❀ कुण्डल एक राम श्रुति राजै ॥
नीलपीत बर बसन निकाई ❀ मुक्तमाल बनमाल सुहाई ॥
निरखि सकल पुरजन अनुरागे ❀ धाय धाय रथके सँगलागे ॥
युगल रूप लखि होहिं सुखारे ❀ यकटकलोचन टरहिं न टारे ॥
चढी अटारिन देखहिं नारी ❀ बढ्यो प्रेम आनँद उर भारी ॥
निशिदिनसुनिगुणगणअभिलासी ❀ अतिआरत दरशनकी प्यासी ॥
शशिआनन मृदुवेष किशोरा ❀ भयेनिरखिदोउ नयन चकोरा ॥

१ तरवारि । ५ योद्धा । ३ अनेकप्रकारके बाजन । ४ राक्षसोंके नाशकर्त्ता ।
५ चन्द्रवर्ण । ६ कोमल ।

पुलकि गात दृग आनँद पानी ❋ कहत सप्रेम परस्पर बानी ॥
येई सखि बलराम कन्हाई ❋ सुनियत जिनकी बहुत बडाई ॥
नन्दगोपके ये दोउ ढोटा ❋ गौर श्याम सुन्दर बरजोटा ॥
दो०-मणि कंचनके शिखर दोउ, किधौं मानसर हंस ।
कै प्रगटे ब्रजदेन सुख, त्रिभुवनके अवतंस ॥
सो०-धनि धनि गोकुलग्राम, धन्यश्यामबलराम धनि ।
धनि धनि ब्रजकी वाम, प्रगट प्रीतिपाली जिन्हन ॥
सुनत हुती पुरुषारथ जिनके ❋ देखहु रूप नयन भरि तिनके ॥
अतिहि अनूपवेष नट सोहै ❋ कहहु सो को छबि देखि न मोहै ॥
पूरव जन्म सुकृत कोउ कीन्हों ❋ सो विधि यह नयननफल दीन्हों ॥
अति अभिराम श्याम छविधारी ❋ इनहीं प्रथम पूतना मारी ॥
शकटा तृण इनहीं संहारे ❋ वत्स बका अघ पुनि इन मारे ॥
इन्द्रकोप वर्षन ब्रजकीनो ❋ इनहीं गिरिकर धरिनख लीनो ॥
जलते काली इनहिं निकारचो ❋ पुनि अरिष्ट केशी इन मारचो ॥
गौर शरीर नाग बल जोई ❋ धेनुक अरु प्रलम्बहा सोई ॥
अब अक्रूर पठे नृपराई ❋ इहां बोलि पठये दोउ भाई ॥
रंगभूमि रचि कियो अखारो ❋ कहा करन धौं हृदय विचारो ॥
जननी धीर धरचो धौं कैसे ❋ अति बालक पठयेहैं ऐसे ॥
देहिं अशीश मांगि विधिपाहीं ❋ न्हातहु बारखसहु तनुनाहीं ॥
दो०-लेत बलैया वारिकै, आंचर यह कहिनार ।
करिहै इनसों कपट नृप, तौ ह्वै है जारि छार ॥
सो०-सफल भये मनकाम, देखि दरश इनको सखी ।
कुशल जाहु निज धाम, देत अशीश सुनाय सब ॥
कहत युवति यक सुनहु सयानी ❋ मैं जो सुन्यो सो कहत बखानी ॥
ये वसुदेवकुँवर सखि दोऊ ❋ ऐसे लोग कहत सब कोऊ ॥
कंस त्रास करि मात पठाये ❋ नन्दसखा गृह जाय दुराये ॥

१ पुत्र । २ सुधर्म । ३ माता ।

करि दुलार यशुमति पय प्याये ❀ हित करि तिनके बाल कहाये ॥
गौर अंग नयनन रतनारे ❀ जो प्रलम्बको मारनहारे ॥
कुंडल एक वाम श्रुति धारी ❀ ते रोहिणिसुवनै सुखकारी ॥
अति अभिराम महाबलधामा ❀ ताते नाम धरयो बलरामा ॥
श्याम सुभगतनु उर बनमाला ❀ शीश मुकुट द्वउ नयन विशाला ॥
जिन्हें हेत करि सँग ब्रजबामा ❀ मान्यो नाह सकल सुख धामा ॥
जिनके चरण छुवत बड पापी ❀ पाई सुगति सुदर्शनशापी ॥
अमित प्रभाव कृष्ण सब कहहीं ❀ जिनके नाम अधमगति लहहीं ॥
कहत देवकीसुत सब तिनको ❀ कंस राज भय मानत जिनको ॥

दो०-आयेहैं अक्रूर सँग, तात मात सुख दैन ।
रंग भूमि रिपु जीतिकै, करिहैं यदुकुल चैन ॥

सो०-सुनिसुनिमुदित सुनारि, अतिप्रिय वानीतासुकी ।
माँगत गोद पसारि, विधिसों ऐसो होय सब ॥

देत सबन सुख यों मन भावन ❀ उतरे जाय बाग इक पावन ॥
गोपन सहित नन्द तहँ राख्यो ❀ तब सुफलकसुतसों हरिभाख्यो ॥
कहहु तात आगे तुम जाई ❀ आये श्याम राम दोउ भाई ॥
बहुरि नृपति जब हमैं बुलैहैं ❀ करि विश्राम हमहुँ तब ऐहैं ॥
तब अक्रूर जोरि युगपाणी ❀ बोल्यो सुनत श्यामकी वाणी ॥
म्वहिं न्यारो क्यों करत गोसाईं ❀ राखो निकट दासकी नाईं ॥
कंसदूत मोको जनि मानो ❀ निज सेवक अपनो करि जानो ॥
अरु मेरे मनमें यह आशा ❀ चलिपावन कीजै मो बासा ॥
तब हँसिकै बोले घनश्यामा ❀ ऐहौं एक दिना तुम धामा ॥
ऐसे कहि अक्रूर पठाये ❀ बिदा होय नृप पास सिधाये ॥
रथते उतरि परे दोउ भाई ❀ ग्वाल बाल सब लिये बुलाई ॥
सखा भ्रात सँग सहज हुलासा ❀ गये यमुनतट नगर निवासा ॥

दो०-बाल वयस शोभित सुभग, बाल सखनके सँग ।

१ अरुण । २ पुत्र ।

गौर श्याम शोभा निरखि, लज्जित कोटि अनंग ॥
सो०—अति विचित्रको जान, ब्रजवासी प्रभुके चरित ।
अमित गुणनकी खान, जनरंजन दुष्टन दलन ॥

अथ रजकवधलीला.

नृपतिरंजक अम्बर नृप धोवै ❀ आवत देखि श्याम तनु जोवै ॥
हँसत गर्व्व बातें यों चालैं ❀ कंसराजके उर ये शालैं ॥
लघु लघुवयस गोपके जाये ❀ बहुत अचगरी करिये आये ॥
तृणावर्त प्रभु रह्यो हमारो ❀ इनहीं ताहि शिला पर मारो ॥
अति खोटो जिहिं नाम कन्हाई ❀ प्रथम ताहि डारै मरवाई ॥
है बलभद्र तैसई खोटो ❀ गोरो अंग महाबल मोटो ॥
ताहू को मारैगो राजा ❀ बोलेहैं याही के काजा ॥
ऐसे कहत परस्पर बानी ❀ प्रभु अंतर्यामी सब जानी ॥
ग्वालन सहित गये तेहि पाहें ❀ कह्यो कछू अम्बर हम चाहें ॥
तिनको पहिरि नृपति पै जै हैं ❀ देहैं बहुरि तुम्हें जब ऐहैं ॥
जो पहिरावन नृप सों पैहैं ❀ तामें कछु तुमहूं को देहैं ॥
कै पहिलेही लेहो हम सों ❀ बूझत हैं तैसी हम तुम सों ॥
दो०—हँस्यो वचन सुनि श्यामके, कह्यो गर्व करि बैन ।
बलिके बकराह्वै रहे, आये हैं पट लैन ॥
सो०—राखैं घरी बनाय, ह्वै आवहु नृप द्वारलौं ।
तब लीजो पट आय, जो भावै सो दीजियो ॥
वन वन फिरत चरावत गैया ❀ अहिर जाति कामरी उढैया ॥
नटको भेष साजिकै आये ❀ नृप अम्बर पहिरनमनभाये ॥
जुरिकै चले नृपतिके पासा ❀ पहिरावन लेबेकी आशा ॥
नेक आश जीवनकी जोऊ ❀ खोवन चहत अबहिं पुनि सोऊ ॥
यह सुनि श्याम कह्यो मुसकाई ❀ देहु वसनहै तुमहिं भलाई ॥
हम माँगतहैं सहजहि तुमसों ❀ तुमकत करत इती रिस हमसों ॥

सहज बातको रिस नहिं कीजै ❀ मांगे देहु मानि गुण लीजै ॥
भौंह ऐंठि तब रजक रिसानो ❀ ये नृप बसन नहीं तुम जानो ॥
अबहीं सुनत क्षणकमें मारैं ❀ नन्दहि पकरि बन्दिमें डारैं ॥
जाहु चले ह्यांते अब नीके ❀ कैहैहो अबहीं बिनजीके ॥
करत अचगरी मोसों आई ❀ दुहुँन मारिहौं कंस दुहाई ॥
यह सुनि कियो श्यामसों ख्याला ❀ भुजापकरि पटक्यो ततकाला ॥

दो०—तुरत गये तनुतजि स्वरग, कीन्हों रजकनिहाल।
जन्ममरणते रहगयो, ऐसो गुण गोपाल ॥

सो०—लखिकै गये परायं, संगी ताके सब रजक।
लीन्हे बसन लुटाय, श्याम प्रथमहीं नृपतिके ॥

रजक मारि सब बसन लुटाये ❀ आप पहिरि ग्वालन पहिराये ॥
बिविध रङ्ग बहु भाँति नवीने ❀ निजनिजरुचि ग्वालनसबलीने ॥
चले तहांते सब हरषाई ❀ मिल्यो एक दरजी पुनि आई ॥
प्रभुको देखि बहुत सुखपायो ❀ चरण कमलको माथ नवायो ॥
घाट बाट जो बसन सुहाये ,❀ ते उनकारि सम तुरत बनाये ॥
ताको कृतहि मान प्रभु लीन्हों ❀ अभयदान दै निज पद दीन्हों ॥
पुनि यक माली हतो सुदामा ❀ ताके द्वार गये घनश्यामा ॥
तुरत आइ तिनपद शिरनायो ❀ हरि हलधर लखि हर्ष बढायो ॥
आदर सहित सदनमें आने ❀ चरण धोय निजभाग्य बखाने ॥
नृपतिहेत जो हार बनाये ❀ ते सप्रेम प्रभुको पहिराये ॥
हाथ जोरि बहुविनय सुनाई ❀ जय जय श्रीपति प्रभु यदुराई ॥
मोको बहुत अनुग्रह कीन्हों ❀ दीन जानि अपनो करि लीन्हों ॥

दो०—सुनि सप्रेम ताके वचन, रीझे श्याम सुजान।
माली पूरणकाम करि, दियो भक्तिवरदान ॥

सो०—सखन सहित दोउ भाय, बहुरि हर्षि आगे चले।
तहां पंथमें आय, कुबिजा लै चन्दन मिली ॥

१ भागगये। २ कृपा।

निरखि श्यामछबि तनुसुधि भूली ❁ बोली हरषि प्रेम रस फूली ॥
हो प्रभु दीनबन्धु सुखदाई ❁ तुम्हें नाथ चन्दन मैं ल्याई ॥
मोहिं कल्पना यह जगवन्दन ❁ चरचौं अंग तुम्हारे चन्दन ॥
दासी कुल कुबिजा मम नाऊं ❁ नृपके उर चन्दन नितलाऊं ॥
तुमहिं जानिकै प्रभु तिहिं ठाहीं ❁ अरि अरु मित्र बसत उरमाहीं ॥
आजहि दरश प्रकट प्रभु पायो ❁ मो जियकी संताप नशायो ॥
अब यह मलय कृपा करि लीजे ❁ पूरण काम नाथ मम कीजे ॥
अन्तर्यामी प्रभु सुखदानी ❁ भाव भक्ति कुबिजा पहिंचानी ॥
भावहिके बश त्रिभुवनराई ❁ हितकरि कुबिजा निकट बुलाई ॥
वन्दनकरि पूजे दोउ भाई ❁ रही श्याम छबि निरखि भुलाई ॥
तब हरि हलधरसों हँसि भाख्यौ ❁ हेत बहुत इन हमसों राख्यो ॥
हमहूं कछु याको हित कीजै ❁ सूधे अङ्ग नेक करि दीजे ॥

दो०-पगराख्यो पग पीठपर, धरेउ शीशकर श्याम ।
नेक उठाई चिबुकगहि, भई सुन्दरी बाम ॥

सो०-को करिसकै बखान, जाहि बनाई आपु हरि ।
भईरूप गुणखान, कुबिजामन आनन्द अति ॥

महाकुरूप कूबरी तैसी ❁ परसंत तुरत भई रति जैसी ॥
तब कुबिजा अपने मन मान्यो ❁ मिले मोहिं मोहन पति जान्यो ॥
पुनि पुनि कमलचरण शिरनाई ❁ हाथ जोरि बहु बिनय सुनाई ॥
जिमि कीनी म्वहिं कृपा कृपाला ❁ तिमि ममसदन चलहु नँदलाला ॥
अपने चरण कमल तहँ धरिये ❁ सफल मनोरथ मेरो करिये ॥
तासों बिहँसि कह्यो घनश्यामा ❁ कंस देखि अइहौं तव धामा ॥
अपनी करि तिय सदन पठाई ❁ चले धनुष देखन दोउ भाई ॥
ग्वाल सखा सँग सुभग सुहाये ❁ कामसेन बर रूप बनाये ॥
पुरजन भीर चहूँदिशि भारी ❁ चढी अटारिन देखहिं नारी ॥
निरखि श्याम मुखइन्दु उदारा ❁ जनु पुर उदधि तरंग अपारा ॥

१ अभिलाषा । २ बलदेवजी । ३ ठोडी । ४ छुवत । ५ घर । ६ समुद्र ।

जहँ तहँ कहत सकल पुरवासी ❋ भई सुन्दरी कुबिजा दासी ॥
श्याम कछू चेटकसो कीनो ❋ अंग सुधारि रूप बर दीन्हो ॥
दो०-रजकमारि लूटे बसन, करी कूबरी चारु ।
बाल भाव मोहत मनहिं, हैं कोउ देव उदारु ॥
सो०-सुनत रहे दिन रैन, पुरुषारथ इनको भवन ।
तैसे देखे नैन, ब्रजवासी प्रभु नन्दसुत ॥
गये धनुषशाला दोउ बीरा ❋ देखत चकित भये भटभीरा ॥
अस्त्र सँभारि उठे अकुलाई ❋ देखि थके सुन्दर दोउ भाई ॥
धनुष समीप असुर सब ठाढे ❋ अति बलवन्त धीर रण गाढे ॥
सहजहि घेरि लिये दोउ भैया ❋ बोलि उठे सब सुनहु कन्हैया ॥
सुनियत अतिबल भुजा तुम्हारी ❋ यह कोदण्ड[१] चढावहु भारी ॥
तिनसों बिहँसि कह्यो सुखरासी ❋ कहा करत हमसों यह हासी ॥
कहां बाल हम बैस किशोरा ❋ कहां धनुष अति गरुअ कठोरा ॥
शूरबीर ठाढे सब लहिये ❋ तिनसों धनुष चढावन कहिये ॥
खेलन कहौ खेल कछु हमको ❋ सो हम खेलि दिखावैं तुमको ॥
ऐसे श्याम हँसत तिन माहीं ❋ अरु अक्रूर गये नृप पाहीं ॥
समाचार सब जाय सुनाये ❋ नन्दसहित बल मोहन आये ॥
यह कहि घर अक्रूर सिधारे ❋ रजक जाय तिहिं काल पुकारे ॥
दो०-मारे बिन दूषण हमैं, नन्दगोपके बाल ।
लीन्हे बसन लुटायके, पहिराये सब ग्वाल ॥
सो०-सुनतहि उठ्यो रिसाय, बोल्यो सबन बुलाय नृप ।
करी प्रथमहीं आय, देखौ इन ढीठे बडे ॥
अब मारिहौं अवशि दोउ भाई ❋ लेहुँ आज सब ब्रजहि लुटाई ॥
देहुँ बन्दिमें नन्दहि ल्याई ❋ गये अहीर बहुत इतराई ॥
मैं सादर करि इनहिं बुलायो ❋ आगे दै इन रजक मरायो ॥
देखहु कोऊ जान नहिं पावैं ❋ असुर जाय सबको गहिल्यावैं ॥

१ धनुष ।

ऐसे कंस कहत रिसिआई ❀ तबहीं दूतन खबरि जनाई ॥
कुबिजासों चन्दन हरि लीन्हों ❀ ताको रूप अनूपम दीन्हों ॥
धनुष निकट पहुँचे दोउ भाई ❀ यह सुनतहि कछु गयो सुखाई ॥
बहुरि धीर धरि असुर पठाये ❀ ते यह कहत श्याम पहँ आये ॥
पहिले तोरि धनुष गोपाला ❀ बहुरि बुलायो निकट भुवाला ॥
सुनि असुरनके वचन कन्हाई ❀ बोले मनहीं मन मुसकाई ॥
याहीको नृप हमहिं बुलायो ❀ जोरेउ वैर जानि यह पायो ॥
गहन लगे ते बालक जानी ❀ तबहिं श्याम कछु रिस उरआनी ॥

छं०–उरआनिरिसगहिपानितुरतहि, असुरलै मारे सबै ।
अतिहि बेगि उठाय धनुषहि, तोरि महिडारेउ तबै ॥
उठे तब करि क्रोध योधा, मार मार पुकारहीं ।
नंदसुत रणवीरहो धर धीर: असुर सँहारहीं ॥
एक झटकत एक पटकत, तेन मटकत फिरतहीं ।
एक अटकत एक लटकत, एक सटकत जहिं तहीं ॥
तालचटकत चमकि छटकत, देखिभटकत नट भले ।
एक पकरि[1] फिराय पटकत, जातते नृप पहँ चले ॥

दो०–ख्यालहि मारे असुर सब, तोरि धनुष नँदलाल ।
चले सामुहें पवँरितकि, जहां कुवलिया ब्याल[2] ॥

सो०–देखत चढे विमान, ब्रह्मादिक सुर सिद्ध मुनि ।
डारत सुमन सुजान, ब्रजबासी प्रभुपद हरषि ॥

रंगभूमि हरि हलधर आये ❀ संग सखा सब ग्वाल सुहाये ॥
आप आपनी छबि सब छाये ❀ रवि शशि उडुगण[3] उदित सुहाये ॥
देख्यो द्विरद द्वारपर ठाढ़ो ❀ मनहुँ गर्वको गिरिवर गाढो ॥
कंध केशरी गर्वप्रहारी ❀ बल तन हँसे गयन्द निहारी ॥

१. पकरनलगे । २ हाथी । ३ नक्षत्र ।

ताक्षणकी छबि कही न जाई ❀ कसत पीतपट कटि लपटाई ॥
श्याम सुभग लट घूँघुरवारी ❀ पागपेंच मिलि पाग सँवारी ॥
मधुपुरकी युवती सब बाढी ❀ कहत परस्पर महलन ठाढी ॥
लखहु सखी अँग अँग लुनाई ❀ रूपराशि मनहरण कन्हाई ॥
कोटि मदनछबि विधि लुनिलीनी ❀ तब यह मूरति सांवरि कीनी ॥
अतिहिकुशल ये लखिसुखदाता ❀ हम अभागिके कूर विधाता ॥
धनि ब्रजतिय इनके सँग लागीं ❀ निशिदिन रहत प्रेम रसपागीं ॥
बनवीथिन कुंजन बिच डोलैं ❀ रास हास रस करत कलोलैं ॥

दो०–होयँ हमारे सुकृत कछु, सुनहु सखी तौ आज ।
जैसे तोरेउ धनुष हरि, त्यों जीतैं गजराज ॥

सो०–सुरन मनावतजात, अति कोमल नँदलाललखि ।
बचहु कुशल दोउ भ्रात, मात पिताके पुण्यते ॥

देखि मतंग द्वार मतवारो ❀ गजपालहिं बलराम हँकारो ॥
सुनहु महावत बात हमारी ❀ लेहु द्वारते बारण टारी ॥
जान देहु हमको नृपपासा ❀ नातरु ह्वैहै गजको नासा ॥
कहै देत नहिं दोष हमारो ❀ मति जानै तू हरिको बारो ॥
त्रिभुवन पति दुष्टन संहारी ❀ धरणीभार उतारनकारी ॥
सुनत बोल गजपाल रिसानो ❀ रे गोपाल तुम्हें मैं जानो ॥
त्रिभुवन पति अब गाय चराये ❀ गांडे खान गजनसों आये ॥
बारदंत बडे शूरकी नाईं ❀ जैहैं प्राण अबहिं क्षण माईं ॥
तोरेउ धनुष भयो अति गारो ❀ नहिंजानतयह गज अति भारो ॥
दश सहस्र गजको बल याही ❀ डरपत है ऐरावत ताही ॥
जब लगि यासों लरि नहिं लैहो ❀ तब लगि कैसे भीतर जैहो ॥
ऐसे कहि अंकुश कर लीन्हों ❀ गज गजपाल सामुहें कीन्हों ॥

दो०–तबहिं कोपि हलधर कह्यो, सुनु रे मूढ कुजात ।
गज समेत पटकौं अबहिं, मुँह सँभारि कहु बात ॥

---

१ मथुरापुरी । २ शोभा । ३ हाथी-कुवलयापीड । ४ बोलत । ५ गर्व ।

सो०–नेक न लगि है बार, वारणं मरिजैहै अबहिं ।
तासों कहत पुकार, मान अजहुँ मेरो कह्यो ॥
यह सुनि गज गजपाल चलायो ❀ झटकि शुंड बहुरो गज धायो ॥
लीन्हो लपटि सूंडके माहीं ❀ देखत शूर बीर चहुँपाहीं ॥
तब बलराम कोप करि भारी ❀ वज्र समान थाप इक मारी ॥
तनुसमेटिकर करि सकुचान्यो ❀ दई कूक मदरंध्र सुखान्यो ॥
तबहीं उचटि भये बल न्यारे ❀ असुरसेन देखत हिय हारे ॥
हँसत निकट ठाढे दोउ भाई ❀ देखि महावत रह्यो लजाई ॥
थकित रहेउ हाथी जब जान्यो ❀ तब मनमें गजपाल डरान्यो ॥
जो ये बालक बधे न जाहीं ❀ मारै कंस मोहिं पलमाहीं ॥
अंकुश मसकि शीशपर दीन्हो ❀ बहुरि गयन्दहि तातो कीन्हो ॥
भयो क्रोध हाथी मनमाहीं ❀ गंडस्थल मद अंबु चुचाही ॥
पवन वेगते आतुर धायो ❀ गरजि घुमरि दोउनपर आयो ॥
महा कोप करि गहे कन्हाई ❀ परेउ दशन दै धरणि धसाई ॥
दो०–डरपि उठे तेहि काल सब, सुर मुनि पुर नरनारि ।
दुहूँ दशन बिच है कढे, बलनिधि प्रभु दैत्यारि ॥
सो०–उठे गजहिके साथ, बहुरि ख्यालईहांकदै ।
तुरतहि भये सनाथ, देखि चरित सब श्यामके ॥
हांक सुनत अति कोप बढायो ❀ झटकि सूंड बहुरो गजधायो ॥
रहे उदरंतर दबकि मुरारी ❀ गये जान गजरहेउ निहारी ॥
पाछे प्रगट बहुरि हरि टेरेउ ❀ बलदाऊ आगे ते घेरेउ ॥
लागे गजहि खेलावन दोऊ ❀ चकित भये देखत सब कोऊ ॥
चहुंघाँ फिरत चक्रकी नाईं ❀ सूंड पूंछ क्षण क्षण छ्वै जाई ॥
नेक नहीं अवसर गज पावै ❀ चारों दिशि हरि फिरत नचावै ॥
घात करत मनहीं मनमाहीं ❀ गजरिसविकल इन्हैं रिसनाहीं ॥
कबहूं पूंछ पकरिकै झेलैं ❀ ज्यों बालक बछरन सँग खेलैं ॥

१ हाथी । २ पेट ।

कबहूं इत उत ते दोउ वीरा ❀ भजत मारिकै मुष्टि गँभीरा ॥
कबहुँ उदरतर ह्वै कढि जाहीं ❀ नेक छुवन पावत गज नाहीं ॥
नीलपीत पट कटि फहराहीं ❀ चपल नयन दीरघ बरबाहीं ॥
खेलत गज चंचल सँगराजैं ❀ निर्तत मदन मनहुं गति साजैं ॥
छं०-जनुमदननिर्ततसाजिगति,इमिश्यामअरुगजखेलहीं
पूंछ कर गहि कबहुँ आगे, कबहुँ पाछे पेलहीं ॥
गजहि लखि पुर नारि नर सब बिकल विधिहि मनावहीं।
बेगि मारैं श्याम गजको, हम निरखि सुख पावहीं ॥
दीन्हों महावत बहुरि अंकुश, क्रोध करि हाथी चल्यो।
जबहिं हरि गहि पूंछ पटक्यो, नेक नहिं भूपरहल्यो ॥
लये खैंच मृणाल ज्यों रद, सुमन झरि देवन करी।
दास ब्रजवासी हरषि सब, असुरकी सेना डरी ॥
दो०-हँसत हँसत मारेउ प्रबल, द्विरद कुवलियाश्याम।
सखन सहित ठाढे मुदित, छबिनिरखतब्रजबाम ॥
सो०-मारेउ गज बल भ्रात, जहँ तहँ सब कोऊ कहत।
चिरजीवहु दोउ भ्रात, प्रभु ब्रजबासी दासके ॥

अथ मल्लयुद्धलीला.

चले जहां सब मल्ल गोपाला ❀ द्विरद दंत धरि कंध विशाला ॥
गौर श्याम सुंदर दोउ भाई ❀ श्रमसीकर मुख कमल सुहाई ॥
छबि अपार बलनिधि गंभीरा ❀ संग गोपबालककी भीरा ॥
सुनत कंस जिय अति भय मान्यो ❀ नव खर्ग ज्यों पिंजर अकुलान्यों ॥
भाजनको मन मांझ बिचारा ❀ भाजि न सक्यो लाजके मारा ॥
गये रंगमहि मोहन जबहीं ❀ जहिजसभावदरश तेहि तसहीं ॥
उठे शंक सब मल्ल अधीरा ❀ बल समूह देखे दोउ बीरा ॥

१ लंबी । २ पृथ्वी । ३ दांत । ४ । पक्षि ।

दुष्टी दैत्य हते तहँ जेते ❀ रूप भयानक दरशे तेते ॥
कंस समीप भूप जे आये ❀ तिन्हैं राजवंशी दरशाये ॥
साधु सिद्धि देखहिं शुभ धामा ❀ इष्ट देव पूरण सब कामा ॥
देखे सुर गण गगन सुखारी ❀ सब देवनके देव मुरारी ॥
ग्वाल बाल सब देखत ऐसे ❀ सदा संग खेलत ब्रज जैसे ॥

दो०–महलनते देखैं प्रभुहि, सकल सुंदरी बाम ।
कोटि काम शोभा हरण, नव किशोर सुखधाम ॥

सो०–देखत अति विपरीति, कंस नृपति नँदलालको ।
कंपि उठयो भय भीति, प्रकटकालदरशनभयो ॥

सर्व भाव पूरण भगवाना ❀ अवलहिंअवल बलहिंबलवाना ॥
ललितहि ललित साधुको साधू ❀ छलन छला सब गुणन अगाधू ॥
जो जन जैसो ध्यान लगावैं ❀ ताको तिहिविधि दरशदिखावैं ॥
कहत देखि सब सुन्दर जोटा ❀ येई नंदमहरके ढोटा ॥
रजक मारि नृप बसन लुटाये ❀ कीन्हें कुबिजा अंग सुहाये ॥
इनहीं असुर समूह सँहारेउ ❀ धनुष तोरि हाथी इन मारेउ ॥
धरे कंध गजदन्त बिराजैं ❀ बालक गोप सखा सँग राजैं ॥
देखत असुर भीर चहुँपासा ❀ जिनके वशमें भूमि अकासा ॥
लीन्हें घेरि कंस भय मानी ❀ तब चाणूर कहत हँसि बानी ॥
आवहु श्याम इतहि पग धारो ❀ सुनत हुते बहु नाम तुम्हारो ॥
सबकोउ तुम्हरे बलहिबखानैं ❀ हारि जीत काकी को जानै ॥
कहा भयो जो गज तुम मारो ❀ लरहु आज हम संग अखारो ॥

दो०–कहा नाम हमरो सुन्यो, हँसि बोले घनश्याम ।
हम बालक भोरे अबहिं, हमै खेलसों काम ॥

सो०–कहिये बात बिचार, हमैं तुम्हैं लरिबो कहा ।
अपगति यह व्यवहार, आप देखि देखहु हमैं ॥

जान देहु हमको नृप पाही ❀ काहेको रोंकत मग माहीं ॥

१ आकाश । २ राह ।

नृप हमको करि हेत बुलायो ❋ तुम यह हमको कहा सुनायो ॥
तब चाणूर कह्यो पुनि ऐसे ❋ तुमको बालक कहिये कैसे ॥
किये कर्म ब्रजमें तुम जैसे ❋ देखे सुने नहीं कहुँ तैसे ॥
गिरि गोवर्द्धन कर पै धारेउ ❋ जलते काली नाग निकारेउ ॥
औरौ असुर बीर बल भारे ❋ सुनियत खेलतही तुम मारे ॥
सो बल आज देखि हम लैहें ❋ आगे जाय तुम्हैं तब देहैं ॥
ज्यों ज्यों कंस लखत दोउ भाई ❋ त्यों त्यों भयव्याकुलअकुलाई ॥
कहि कहि बारहि बार पठावै ❋ मल्लनको बहु त्रास सुनावै ॥
क्यों रे सकुच करत मन माहीं ❋ मारत शत्रु बेग क्यों नाहीं ॥
जो दोउ बालक आज न मारो ❋ करौं सकुल तौ नाश तुम्हारो ॥
नृपसँदेश सुनि मल्ल डराने ❋ कहत परस्पर मन सकुचाने ॥

दो०-लोन नृपतिको मानकै, नंदसुवनसों आज।
लर मरिये कै मारिये, करैं कंसको काज॥

सो०-लेहु सुयश नृपपास, अब विलंब नहिं कीजिये।
कछू क्रोध कछु त्रास, बोलि उठे तब मल्ल सब॥

हमसों श्याम लरत क्यों नाहीं ❋ घाटि न कछु हम ते बल माहीं ॥
पशुपालक तुम कुवँर कन्हाई ❋ जीते बहुतक पशुन खिलाई ॥
अबलगि नहीं मल्ल कोउ भेट्यो ❋ अब तौ हमसँग परचो चपेट्यो ॥
मल्लयुद्ध तुम सों हम लरिहैं ❋ अवनरपतिको कारज करिहैं ॥
ऐसे कहि कहि प्रभुहि सुनावैं ❋ भुजा ऐंठि रज अंग चढावैं ॥
ठोंकैंताल गांज ज्यों गरजैं ❋ गहैं गाँसैं हरितन तकि तरजैं ॥
आपुसमें सब करत विचारा ❋ डारहुमारि उभय सुकुमारा ॥
सुनि सुनि हरि हलधर मुसकाहीं ❋ बोले बहुरि बिहँसि तिहिं पाहीं ॥
सुनिये सकल मल्ल समुदाई ❋ यहै तुम्हारे मन अब आई ॥
नृपपै हमें जाय नहिं देहौ ❋ बडो सुयश हमसों लरिलेहौ ॥
निपट खोज अब परे हमारे ❋ यह न वसी उर भली तुम्हारे ॥

१ कंस। २ वज्र। ३ दांव।

हम न कहैं तौ तुम चित जैसी ❋ कहत कहा कीजे अब तैसी ॥
दो०-जबहिं श्याम ऐसे कह्यो, बिलखि उठीं सबनार ।
देखौ री मारन चहत, मल्ल उभय सुकुमार ॥
सो०-अति कोमल अति चार, बाचैं कैसेहू दई ।
कहत नयन जलढार, क्यों जननी पठये इहां ॥
अतिहि निठुर उर जाति अहीरा ❋ लोभ लागि पठये दोउ वीरा ॥
येतौ बालक अतिहि अजाना ❋ कियो कहा उन यह अज्ञाना ॥
होन चहत अब धौं यह कैसी ❋ कहत कंस यह बात अनैसी ॥
कहत सबै हमको यह भावै ❋ करि सहाय विधि इनहिं बचावै ॥
तोरयो धनुप हन्यो गज जैसे ❋ जीतहिं श्याम इनहुँको तैसे ॥
जोरि जोरि कर विधिके आगे ❋ अंचर छोरि छोरि सब मांगे ॥
तब चाणूर कृष्णपै आयो ❋ सहज श्याम कटिपट लपटायो ॥
भुज भुज जोरि भये भिड़ि ठाढे ❋ तकि तकि दाँव चलावत गाढे ॥
ऐसेई मुष्टिक बलरामा ❋ भिड़े बढाय बाद बलधामा ॥
दोऊ वीर लरत अति सो हैं ❋ देखत सुरनरके मन मोहैं ॥
दीरघ नयन कमलते आछे ❋ ललितलाल कछनी कटिकाछे ॥
तनु चन्दन चित्रित छबि जाला ❋ वृषभकन्ध उर बाहु विशाला ॥
दो०-शिरसों शिर भुजसों भुजा, दृष्टि दृष्टिसों जोरि ।
चरण चरण गहि झपटिकै, लपटझपट झकझोरि ॥
सो०-गहन न पावत घात, छूटि जात लपटात पुनि ।
शिव विधि पै न गहात, तिन्हैं मल्ल चाहत गहन ॥
श्याम सहज मल्लन सों खेलैं ❋ पकरि पकरि भुज दण्डन पेलैं ॥
भये प्रथम कोमल तनु ताहीं ❋ शिथिलरूप पविवत मन माहीं ॥
तब चाणूर मनहिं गरवान्यो ❋ हरिके बलहि तुच्छ करि मान्यो ॥
कोटि कुलिशसम तनु तिहिकाला ❋ तुरतहि होय गये नँदलाला ॥
करिकै कोप मुष्टि यकमारी ❋ फूल समान श्याम उर पारी ॥

१ माता । २ बैल । ३ क्रोध ।

पहुपहुते कोमल तिहि मान्यो ❋ तिनमारचो अपने जिय जान्यो ॥
भयो वेगि अति हर्षि नियारो ❋ कहन लग्यो मुरि अहिर पछारो ॥
देख्यो हँसत गोपालहि ठाढो ❋ परचो शोच प्राणन अति गाढो ॥
नंदसुवन महिमा तव जानी ❋ निश्चय मीच आपनी मानी ॥
तब मोहन करिकोप हँकारचो ❋ जनु गजको मृगराज पुकारचो ॥
सुनत हाँक सब दाँव भुलानो ❋ थरथराय चाणूर डरानो ॥
धरचो धाय तव झपटि कन्हाई ❋ पटक्यो महि गहि चरण फिराई ॥
छं०-पटक्योचरणगहिफेरिमहि, चाणूरअतिबलसाँवरे ।
धँसिगयो धरणीमसकि अँग सब, बिकटभूल्योदाँवरे ॥
भयो शब्दाघात सुनि नृप, कंस उर धसको परचो ।
निरखि पुर नर नारि नभसुर, हर्षि हिय आनंद भरचो ॥
पकरि ऐसिय भाँति तब, बलराम मुष्टिक मारियो ।
कहैं धनि धनि लोग सब जय, जयति सुरन उचारियो ॥
शल्ल अरु अति शल्ल आदिक, मल्ल तहँ जितने हते ।
लपटि झपटि पछारि कै, पुनि नंदसुत मारे तिते ॥
दो०-जब मारे हरि मल्ल सब, परचो कटक में शोर ।
जिमि तारागण रवि उदय, छपैं असुर चहुँओर ॥
सो०-सखन सहित दोउ बीर, रंगभूमि राजत खरे ।
हरण भक्त भय पीर, ब्रजबासी प्रभु नंदके ॥

अथ कंसासुरवधलीला.

जवहीं श्याम मल्ल सब मारे ❋ चपे असुर सब लखि हिय हारे ॥
देखि कंस अति भयो दुखारी ❋ सेनापतिन कहत दैगारी ॥
कांपतालिये खड्ग बहु क्रोधा ❋ कहत गये कितरे सब योधा ॥
लै तरवार ढाल सब कोऊ ❋ डारहु मारि नंदसुत दोऊ ॥

डारे मारि मल्ल सब मेरे ❀ तनक छोहरा अहिरनकेरे ॥
डर नाहिं करत चले इत आवैं ❀ देखहु जीवत जान न पावैं ॥
असुर वीर अपनी सँरि जेते ❀ लैलै नाम पठाये तेते ॥
कहा द्वारपालन भय बाढो ❀ करहु कपाट पँवरिको गाढो ॥
नृप भय मानि असुर सब धाये ❀ अस्त्र शस्त्रलै हरिपर आये ॥
भये विकल लखि पुर नरनारी ❀ मनमन देत कंसको गारी ॥
कहत कि भई कठिन यह बाता ❀ बचहिं श्याम सो करै विधाता ॥
आवत लखी असुरकी भीरा ❀ भिरे हांक दैदै दोउ बीरा ॥

छं०-अवलोकि असुर समूह आवत, हांक दै दोऊ भिरे ।
मनहुँ गजगण निरखि केहरि, धाय तिनऊपर परे ॥
सुनत शब्द गँभीर हरिको, हहरि सेनापति गये ।
लपकि गहिमहिपटकि जहँ तहँ, क्रोधकर बलजू हये ॥
श्याम गौर किशोर सुन्दर, असुर गण बिच यों लरैं ।
जनु शांत अरु शृंगार धरि तन, बीरकी करनी करैं ॥
जात नाहिं बरणी चटक गहि, पटक इत उत धावहीं ।
भूमि भार अपार अघ निधि, असुरनिकरैं नशावहीं ॥

दो०-परयोनगरखलभलसकल, अतिभयव्याकुलकंस ।
पुनि पुनि मंत्रिनसों कहत, बढयो अधिकडरसंस ॥

सो०-कीजै कछू उपाय, जियत जाहिं नहिं बंधु दोउ ।
मारहु नंद बुलाय, ब्रज कोउ रहन न पावहीं ॥

पुनि वसुदेव देवकी दोऊ ❀ मारहु कठिन बन्धते सोऊ ॥
बहुरों उग्रसेनको मारौं ❀ पिता दोष कछु उर नहिं धारौं ॥
ऐसे पुनि पुनि वचन उचारे ❀ कंपित रिसन खड्ग कर धारे ॥
क्षण बैठत क्षण उठत अधीरा ❀ मारे असुर सकल दोउ बीरा ॥

१ तुल्य । २ झुंड । ३ सिंह । ४ भयभीत । ५ समूह ।

अति बलवन्त नन्दके बारे ❀ तब सकोप नृप ओर निहारे ॥
गये मचान मचकि चढि दोऊ ❀ बाज झपट देखत सब कोऊ ॥
ह्वै गयो चकित नृपति भय मान्यो ❀ आयो काल निकट यह जान्यो ॥
रहि गयो लिये खड्ग करमाहीं ❀ हरिको मारिसक्यो सो नाहीं ॥
तबहीं श्याम लात इक मारी ❀ गिरिगयो मुकुट शीशते भारी ॥
दीन ढकेलि मंचते भूपर ❀ कूदि परे हरि ताके ऊपर ॥
तहां चतुर्भुज रूप दिखायो ❀ सो स्वरूपदै स्वर्ग पठायो ॥
मारयो कंस कहत सब बानी ❀ जयध्वनि सुरगण गगन बखानी॥

छं०-जय ध्वनिगगंनसुरगण बखानी,सुमनकीवर्षाभई।
कहत सब हरि कंस मारयो, हांक यह त्रिभुवनं गई ॥
ब्रह्मादिसुरमुनिसिद्धगंध्रब, मुदितमनअस्तुतिभनी ॥
भूमिसुर उपकार हित, अवतार धरि त्रिभुवन धनी ॥
धन्य गज धनि मल्ल मारे, धन्य कंसासुर अनी।
परशि तनु अनुपम लहीगति, जातनहिं महिमागनी ॥
धनि अखिल ब्रह्मांड नायक, भक्तहित नर तनु धरयो।
धन्यब्रजवासी सकल जिन, प्रेमकरि तुम वशकरयो ॥

दो०-करि अस्तुति पुनि पुनि हरषि, सुमन वर्षि सुरवृंद।
मुदित बजावत दुन्दुभी, कहि जय जय नँदनन्द ॥

सो०-मथुरापुर नर नारि, अतिप्रफुलितसबको हियो।
मनहु कुमुद वन चारि,विकसत हरि शशिमुख निरखि ॥

मारयो कंस जबहिं भगवाना ❀ भ्राता अष्ट तासु बलवाना ॥
करि करि कोप युद्धको धाये ❀ ते पुनि सब बलदेव नशाये ॥
बहुरि केश गहि कंस मुरारी ❀ दियो घसीट यमुनजल डारी ॥
कीन्हों कछुक तहां विश्रामा ❀ भयो विश्राम घाट तिहिं नामा ॥

---

१ आकाश। २ स्वर्ग, पाताल, मृत्युलोक। ३ मसन्न। ४ श्रीकृष्ण।

सुनिकै मरन कंसकी नारी ❋ और सकल भ्रातनकी प्यारी ॥
रोदन करि करि विविध विलापा ❋ सुमिरि भूपगुण रूप प्रतापा ॥
निजहित समुझिभयो दुख भारी ❋ चहत मरण पति नेह विचारी ॥
गये तहां बहुरो दोउ भ्राता ❋ करुणामय कोमल सुखदाता ॥
करि प्रबोध बोलीं सब रानी ❋ रहीं मरण ते सुनि प्रभु बानी ॥
बहुत भाँति तिनको समुझाई ❋ आये महल द्वार दोउ भाई ॥
कालनेमिके वंश सुहायो ❋ उग्रसेन सुनिकै उठि धायो ॥
तिन प्रभु चरण आय शिर नायो ❋ त्राहि त्राहि कहि वचन सुनायो ॥
छं०-त्राहित्राहि सुनायआरत ,वचनप्रभुचरणनगिरचो ।
अबकरहुकरुणानिधि क्षमा, अपराध यह हमते परचो ॥
असुर मारे कंस भाइन, सहित सो उचितै करी ।
परद्रोहरत खलदलनहित, अवतार यह तुम्हरो हरी ॥
करिकै कृपा अब प्रजापालन, हेत प्रभुचित दीजिये ।
वर बैठि सिंहासन सुभग, यहराज्यमधुपुरि कीजिये ॥
सुनि दीन वचनन हर्षि, हरि तब उग्रसेन उठायकै ।
बहुभांति करि सनमान पुनिपुनि,लिये हृदयलगायकै ॥
दो०-श्रीमुखसों कर जोरि पुनि, कह्यो सुनहु महराज ।
यदुवंशिनको शापहै, हमैं उचित नहिं राज ॥
सो०-करहु देव तुम राज, दूरि करौ सन्देह सब ।
हम करिह सब काज, जो आयसु देहो हमैं ॥
जो नहिं मानै आँनि तुम्हारी ❋ ताहि दण्ड करि हैं हम भारी ॥
और कछू चित शोच न कीजै ❋ नीति सहित परजहि सुखदीजै ॥
यादवजिते कंसकी त्रासा ❋ गृहतजि ते भजिगये प्रवासा ॥
तिन सबको अब खोज बुलावो ❋ सुखदै मथुरा मांझ वसावो ॥
विप्र धेनु सुरपूजन कीजै ❋ इनकी रक्षामें चित दीजै ॥

१ दुष्टोंके नाशके लिये । २ उत्तम । ३ आज्ञा ।

यों प्रभु उग्रसेन समुझाये ❀ राज सिंहासन पुनि बैठाये ॥
शिरपर मंजुल छत्र फिराई ❀ निजकर चँवर लिये दोउ भाई ॥
युग युग प्रभु भक्तन सुखदाई ❀ राखत जनकी सदा बडाई ॥
बरषि सुमन सुर कहत सुखारी ❀ जय जय जय भक्तन हितकारी ॥
उग्रसेन नृप करि बैठायो ❀ लखि मथुरा लोगन सुखपायो ॥
धनि धनि कहत सकल नरनारी ❀ अब करिहैं पितु मातु सुखारी ॥
यहै बात सब घर घर माहीं ❀ इनसम और जगत कोउ नाहीं ॥

छं०-नरनारि सब यहकहतघरघर, औरनहिंइनते वियो।
धनि मातुपितुदिनरातिधनि, सोजन्मजगजबहारिलियो॥
गहि कंस सहित सहायमारचो, मरननहिं रानिनदियो।
उग्रसेन नरेश करि पुनि, चवँर कर अपने कियो॥
विबुध हर्षे सुमन वर्षे, सुथिर सब यदुकुल भयो।
अब पावहीं पितु मातुसुनि, सुखसकलदुखउनकोगयो॥
हमजियेअबसबनिरखिमुख, छबिजन्मकोफलजगलह्यो।
जियहु युगयुग भ्रात दोऊ, हरषि पुरवासिन कह्यो॥

दो०-कंस मारि भूभार हरि, उग्रसेन करि भूप।
कहां हमारे मातु पितु, तब बोले सुखरूप॥

सो०-संगहि चले लिवाय, उग्रसेन अक्रूर तब।
राम कृष्ण दोउ भाय, ब्रजबासी जन दुखहरन॥

उत वसुदेव स्वप्न निशि आयो ❀ हृदय हर्षि देवकी सुनायो ॥
रामकृष्ण जनु मधुपुर आये ❀ सुफलकसुत सँग नृपति बुलाये ॥
असुर सेन हति कंसहि मारचो ❀ उग्रसेन नृपकरि बैठारचो ॥
सुनि तिय कहैं नयनभरि पानी ❀ कहत कहा पिय ऐसी बानी ॥
सुनिहै दूत कोऊ दुखदाई ❀ कहिहै अवहिं कंससों जाई ॥
हम करि पाप जन्म जगलीन्हों ❀ सोफल हमैं विधाता दीन्हों ॥

१ पवित्र-श्वेत। २ रात्रि। ३ अक्रूर।

बधे सात सुत देखत आगे ❀ बच्यो एक डरि ब्रज लै भागे ॥
तापर बन्दिकिये हम दोऊ ❀ धृग जीवन परवश जगकोऊ ॥
हमको मीच नीचविधि भूल्यो ❀ होहु कंसको वंश निमूल्यो ॥
कह वसुदेव रोउ मति नारी ❀ धोवो वदन दीन्ह जलझारी ॥
कहियतहै दुखहरण गोपाला ❀ गर्वप्रहारी दीनदयाला ॥
ह्वैहैं प्रगट कबहुँ सुखदाई ❀ तात तुम्हारे त्रिभुवन राई ॥

दो०–अब जनि होहु अधीर तिय, धरहु धीर सुखपाय ।
आयु तुलानी कंसकी, देखत जाय बिलाय ॥

सो०–स्वप्न वृथा नहिं जाय, मानु कह्यो मेरो प्रिया ।
आज कालिह में आय, तोहिं मिलैं तेरे सुवन ॥

यहि अन्तर द्वारे हरि आये ❀ वज्र कपाट जहां जडिलाये ॥
करुणाकरि हरि तिन्हें निहारा ❀ गये सहज सब उघरि किवाँरा ॥
लखि वसुदेव सामुहें पाये ❀ कहत कुँवर काके दोउ आये ॥
दियो दरश तिहि प्रेम सुहायो ❀ जन्मसमय जो दरशन पायो ॥
मिले धाय पितु मातु निहारे ❀ कह्यो तात हम सुवन तुम्हारे ॥
रोवत मधुर निरखि सुत दम्पति ❀ सुनै न कंस मनहिंमन कम्पति ॥
तबहीं कृष्ण कह्यो सुनु माता ❀ मारचो कंस असुर हमताता ॥
मल्ल पछारि सुभग सब मारे ❀ द्विरद कुवलिया दन्त उखारे ॥
यह कह करि पितु मातु सुखारे ❀ तुरत तोरि पगबन्धन डारे ॥
तब जननी निश्चय करिजानी ❀ रोवन लगी कण्ठ लपटानी ॥
बारहिं बार कहति उरलाये ❀ मैं नहिं कबहूं गोद खिलाये ॥
द्वादशवर्ष कहां रहे प्यारे ❀ मातापिता जाहिं बलिहारे ॥

दो०–सुनि जननी के वचन प्रभु,करुणानिधि यदुराय ।
भये प्रेम वश दुखित लखि, बोले अतिसकुचाय ॥

सो०–लिख्यो न मेटचो जाय,मतिकरुमातविषादचित ।
अब पुरवैं दोउ भाय, तुव मनके अभिलाषसब ॥

१ उमर । २ माता ।

पुत्रजन्म जगमें सुखकारी ❀ तुम पायौ हमते दुखभारी ॥
मातपिता जाते दुखपावैं ❀ वृथा जन्म सुत तासु बतावैं ॥
सो कब दोष न मनमें दीजैं ❀ होनहार ताकी कह कीजै ॥
अब जननी सब शोच निवारो ❀ तजो शोक आँनद उर धारो ॥
सकल मनोरथ तुम्हरो करिहौं ❀ स्वर्ग पताल जात नहिं डरिहौं ॥
अष्टसिद्धि नव निधि ले आऊं ❀ घर घर मथुरा मांझ बसाऊं ॥
सुनि प्रभुवचन जननि सुखपायो ❀ बार बार गहि कण्ठ लगायो ॥
अति आनन्द भयो मन माहीं ❀ सो कहि सकत शारदा नाहीं ॥
कहत तात तुम वदन निहारो ❀ सफल भयो अब जन्म हमारो ॥
सुत हित स्रवतें[1] पयोधर[2] क्षीरा[3] ❀ मिटी सकल उर अन्तर पीरा ॥
वसुदेव हृदय हर्ष अति आयो ❀ सिद्धि लाभ साधक जनु पायो ॥
पूरवपुण्य फल्यो सुखकारी ❀ पायो सुत हित करि दैत्यारी ॥

अथ वसुदेवगृहउत्सवलीला.

दो०-तुरत बोलि तब विप्रवर, प्रीति सहित परि पाँय ।
प्रथमहिं संकल्पी हती, दई लक्ष ते गाय ॥
सो०-और दियो बहु दान, बन्दी जन आये सुनत ।
परितोषे सन्मान, अति उछाँह वसुदेव मन ॥

तब देवकी कह्यो पति पासा ❀ भरी परम आनंद हुलासा ॥
प्रगटो आज सुवन मम धामा ❀ करहु जन्म उत्सवकी सामा ॥
सुनि वसुदेव परमसुखपावा ❀ हर्ष[4] द्वार दुंदुभी बजावा ॥
यदुवंशी सगरे जुरि आये ❀ ध्वज पताक मंदिरन बँधाये ॥
रोपे कदलीखंभ[5] रसाला[6] ❀ बांधीं रचि रुचि वंदनमाला ॥
लखि हरि जन्म अनंद बधाई ❀ ऋद्धि सिद्धि प्रकटी सब आई ॥
हाटँककलश[7] अनेकविधाना ❀ मंगल द्रव्य[8] रचे विधि नाना ॥
गज मुक्तनके चौक बनाये ❀ मंदिर गलिन सुगंध सिंचाये ॥

---

१ माता । २ टपकत । ३ दूध । ४ हर्ष । ५ केला । ६ अम्ब । ७ सोनेके । ८ पदार्थ ।

सुनि सब मथुरा पुर नर नारी ❋ उमगि उठीं आँनद उरभारी ॥
घरघर सबहिन मंगल साजे ❋ द्वार द्वार प्रति बाजन बाजे ॥
नौसत साज सकल वरनारी ❋ सजि सजि मंगलकंचन थारी ॥
गान करत कलकंठ लजावैं ❋ श्रीवसुदेव धामको आवैं ॥

दो०—जाति पांति परिजन प्रजा, बंधु हितू सब लोग ।
लैंलै आवत भेट सजि, हरषत निज निज योग ॥

सो०—भइ भवन अति भीर, नट नाचत गावत गुणी ।
धरि धरि मनुजशरीर, मानहुँ सुख आये सकल ॥

तब जननी मन अति सुखपाये ❋ उबटनकरि दोउसुत अन्हवाये ॥
निज कर अंग अँगौछि सुहायो ❋ तन द्युति लखिहगतापनशायो ॥
केशरि मलय मिलिय रुचिकारी ❋ कियो तिलकवर भालसुधारी ॥
भूषण वसन शृंगारत कैसे ❋ राजकुवँर बर पहरत जैसे ॥
कंचन मणि मय खचित नवीनो ❋ क्रीट मुकुट शोभित शिरकीनो ॥
कलँगी ललित जडाव जडाई ❋ तुर्रा मध्य अनूप सुहाई ॥
गज मुक्तनके कुण्डल कानन ❋ अतिविशालछविशोभितआँनन॥
कंठपदिकके हार बिराजैं ❋ उरविशाल पर अतिछबि छाजैं ॥
पंच रत्नके अंगद नीके ❋ शोभित भुजन भावते जीके ॥
कर चूरा नव रतन निकाई ❋ पाणि पल्लवन छाप सुहाई ॥
किंकिणिललितकलित रवकारी ❋ कटि केहरिपर बलित सवाँरी ॥
चूरा चारु मनोहर पाँयन ❋ चरण कमल भक्तन सुखदायन ॥

दो०—नील पीत बर बसन तनु, दोउ सुतन शृंगार ।
चारुअलकमुखशशिझलक, निरखिजातबलिहार ॥

सो०—हते श्यामके साथ, ग्वाल तिन्हैं पुनि देवकी ।
पहिराये निज हाथ, जानि कृष्ण प्रीतम सबै ॥

ग्वालबाल सब चकित निहारे ❋ कहिन सकत कछुमनाहिं विचारे ॥
ये तो कृष्ण देवकी जाये ❋ झूठहिं यशुमतिसुवन कहाये ॥

१ कोकिला । २ चन्दन । ३ मुख ।

करत शोच मनहीं मन माहीं ❋ अब हरि ब्रज चलि हैं कै नाहीं ॥
तब दोउ कुवँर चौक बैठारे ❋ विप्रवृन्द¹ वसुदेव हँकारे ॥
विधिवत पूजि तिलक करवाये ❋ दान बहुत हरि हाथ दिवाये ॥
बहुरि आरती मात उतारी ❋ लखिछविमुदित सकलनरनारी ॥
वेद ध्वनी महिदेवन कीन्हों ❋ द्रव्य अनेक निछावरि दीन्हों ॥
वरुण सहित सुरनभ यश गावें ❋ वरषि कुसुम² दुंदुभी बजावें ॥
परमानन्द सकल पुरवासी ❋ निधि सिधि सब गृहगृहकी दासी ॥
बहुरो सखन सहित दोउ भैया ❋ निजकर परसि जिमाये मैया ॥
पूजी सकल कामना जीकी ❋ मिटी कल्पना दारुण हीकी ॥
यहि विधि कंस मारि यदुराई ❋ मात पिताकी बंदि छुडाई ॥

छं०-इहिभाँतिकंसनिपातियदुपति, मातुपितुकोसुखदयो
हर्षि अति नर नारि मथुरा, घरन घर आनँद भयो ॥
परम पावन यश सुहावन, पलहिमें त्रिभुवन गयो ।
जीव जल थल नाग नर सुर, सरसरस जहँ तहँ भयो ॥
यह कंसहतन पुनीत यश, नित नर सुनैं जे गावहीं ।
ते न भव बंधन परहिं, फिरि अँघ³समूह नशावहीं ॥
मिटहिं दारिददोष दुरमति, विपतिनिकट न आवहीं ।
सकल मन वांछितलहै अरु, भक्ति अविचल पावहीं ॥

दो०-कठिन शूल संकट हरण, मंगल करण अशेष ।
राम कृष्णके चरित वर, गावत सुनत विशेष ॥

सो०-नरतनु पाय सुजान, अनुँदिन⁴ गावत हरिकथा ।
सकल सुखनकी खान, ब्रजवासी प्रभुके सुयश ॥

अथ कुब्जागृहप्रवेशलीला.

श्रीयदुकुल कुल कमल तमारी ❋ दीनबन्धु भक्तन हितकारी ॥
करिकै जननी जनक सुखारी ❋ तब कुबिजाकी सुरति सवाँरी ॥

१ ब्राह्मण । २ पुष्प । ३ पाप । ४ अहर्निश ।

नृपति भवन तजिकै अभिरामा[1] ❀ चले वसन कुबिजाके धामा ॥
कृष्ण कृपा सबही पै न्यारी ❀ भाव भजन कुबिजाभइ प्यारी ॥
साँचो भाव हृदय जहँ जाने ❀ विवश होय तेहि हाथ बिकाने ॥
नारि पुरुष कछु नाहिंन भेदा ❀ नीच ऊंच नहिं करत निषेदा ॥
प्रथमहिं आय मिली मग पाई ❀ सो हित मानि लियो यदुराई ॥
चन्दन चर्चि तनक तनु दीन्हों ❀ मनहुँ कोटि तप काशी कीन्हों ॥
अति अकुलीन कंसकी दासी ❀ परसत पावन भई रमासी ॥
आये पुनि प्रभु ताके धामा ❀ भक्त वछलहै जिनको नामा ॥
जब कुबिजा जान्यो हरि आये ❀ पाटम्बर पाँवडे बिछाये ॥
अति अनंद लियो उठि आगे ❀ पूरब पुण्य पुंज सब जागे ॥

दो०-टेढीते सूधी करी, दियो रूप अभिराम।
दासी ते रानी भई, पूरे सब मन काम ॥

सो०-कोकरिसकै प्रकास, अति विचित्र हरिके गुणन।
सदादासको दास, भयो रहै प्रभु जननके ॥

पुरवासिन सबहिन यह जानी ❀ राजा हरि कुबिजा पटरानी ॥
घर घर कहत सकल नर नारी ❀ कियो कहा धौं इन तप भारी ॥
मिली तनक चंदन दै मगमें ❀ भई विदित अति पावन[2] जगमें ॥
यह महिमा कछु कहत न आवै ❀ को ताकी पटुतर अब भावै ॥
भूलि कहत कुबिजा जो कोऊ ❀ ताहि रिसाय उठत सब कोऊ ॥
सो तो भई कृष्णकी प्यारी ❀ दासी कहत डरत नरनारी ॥
करत त्रास[3] मनमें सब प्रानी ❀ डारहि मारि सुनै जो रानी ॥
जापर कृपा करैं यदुराई ❀ ताहि नहीं यह कछु अधिकाई ॥
सदा सदा हरिकी यह रीती ❀ मानत एक भक्तसों प्रीती ॥
धनि धनि कुबिजा हरिकी रानी ❀ धनिधनिकृष्णप्रीतिकरिमानी ॥
धनि धनि चन्दन अंग लगायो ❀ धनिधनि भवन जहाँ हरिआयो ॥
कहि कहि सबसुर नारि सिहाहीं ❀ आज कूबरी सम कोउ नाहीं ॥

१ आनन्ददाता। २ पवित्र। ३ भय।

दो०--बसे श्याम कुबिजा सदन, तहँ करिकछुविश्राम।
पुनि आये वसुदेव गृह, जन मन पूरण काम॥
सो०--तब श्री नन्दकुमार, ब्रज बासिनकी सुरति करि।
मनमें कियो विचार, अब सब चलिये नंदपै॥
लै वसुदेवसंग दोउ भाई ❀ गे जहँ उग्रसेन नृपराई॥
तहां बहुरि यादव सब आये ❀ पुनि उद्धव अक्रूर बुलाये॥
तब हरि ऐसे वचन सुनाये ❀ ममहित ब्रजवासी सब आये॥
नंदादिक सब गोप जितेका ❀ रह्यो नहीं ब्रजमें कोउ एका॥
गाय वत्स सब तजे अनेरे ❀ हैं सूने मंदिर सब केरे॥
ह्वैहै दुखित यशोमति मैया ❀ जिन हम प्रतिपाले दोउ भैया॥
बहुत हेत उन हमसों कीन्हों ❀ विविध भाँति अबलौं सुख दीन्हों॥
सकुचत हौं अपने मन माहीं ❀ उनसों उऋण कबहुँ मैं नाहीं॥
पलटो नहिं जो उनको दीजैं ❀ अब चलि बिदा उन्हें ब्रजकीजे॥
सुनि हरि वचन परम सुख पाई ❀ सब मिलि चले जहां नँदराई॥
सुनी नंद गोपन यह बाता ❀ मारो कंस जाय दोउ भ्राता॥
साँच नहीं मनमें कछु माने ❀ प्रजाभाव सब रहे सकाने॥
दो०-मनहीं मनशोचत खड़े, नहिं आये बलराम।
ब्रज में आये ह्वैगयो, तिन्हैं आयबो बाम॥
सो०-अब कैसे ब्रज जाहिं, बल मोहन दोऊ बिना।
अति व्याकुल मन माहिं, कबधौं नयनन देखि हैं॥

अथ नन्दबिदालीला

आये तबहीं कुँवर कन्हाई ❀ नृप वसुदेवसहित दोउ भाई॥
देखत नन्द मिले उठि धाई ❀ लिये लगाय कण्ठ सुखदाई॥
अब चलि हैं ब्रजको यह जान्यो ❀ अति आनन्द हृदय हरषान्यो॥
लखि वसुदेव बहुत सुखपाई ❀ मिले नन्दसों सादर धाई॥
उग्रसेन तब नन्द जुहारे ❀ आदर सहित सकल बैठारे॥
उग्रसेन वसुदेव उपँगसुत ❀ सुफलक सुत अरुयादवगणयुत॥

बैठे मिलि हरि हलधर भाई ❋ नन्दहि मिले निकट बैठाई ॥
और गोप ठाढे सब पेखैं ❋ यशुमति सुतको भाव न देखैं ॥
नंद मनहिं मन अति अकुलाहीं ❋ चलत वेगि अब ब्रज क्यों नाहीं ॥
सबहीके मनमें यह आई ❋ हरि अब हम सों प्रीति घटाई ॥
करत विचार श्याम मनमाहीं ❋ प्रीति विवश बोलत सकुचाहीं ॥
तब हरि यौं मुख वचन उचारे ❋ बहुत कियो प्रतिपाल हमारे ॥

दो०–झझकि परे नँदराय सुनि, कहा कहत गोपाल ।
मोसों कहतकि आनसों, किन कीन्हों प्रतिपाल ॥

सो०–चौंकत जिय नँदराय, मति मोसों ऐसे कहौ ।
गहबरहिय भरि आय, डारिसकत नहिं नयनजल ॥

तब हरि मधुर कह्यो नँदराई ❋ सुनहु तात हम कहत लजाई ॥
कही गर्ग तुमसों जो वानी ❋ सो तुम तब निश्चय नहिंजानी ॥
पुत्र हेतु हमको प्रति पारे ❋ तात मात जिमि अधिक दुलारे ॥
खेलत हँसत बसत ब्रज माहीं ❋ जात इते दिन जाने नाहीं ॥
हमको तुम दीन्हों सुख जितनो ❋ कह्यो न जात बदन ते तितनो ॥
तुम सम मात पिता न हमारे ❋ जहाँ रहे तहँ तात तुम्हारे ॥
बिछुरन मिलन मोह अरु माया ❋ यह प्रपंच जग विधि उपजाया ॥
ह्वै हैं दुखित यशोमति मैया ❋ मोबिन ब्रज तिय अरु सब गैया ॥
ताते गमन वेगिं ब्रज कीजे ❋ जाय सबनको धीरज दीजे ॥
यशुमति सों विनती मम कहियो ❋ माने सदा पुत्रहित रहियो ॥
मेरी सुरति न उर ते टारो ❋ मैं तुमते कबहूं नहिं न्यारो ॥
हरि यों नन्दहि वचन सुनाई ❋ बहुरो रहे सकुचि अरगाई ॥

दो०–निठुर वचन सुनि श्यामके, भये विकलअतिनंद ।
उमगि नीर नयननचल्यो, परिगये दुखकेफंद ॥

सो०–दुखित सखाअरु गोप, चकित रहेहरिमुखनिरखि ।
करत मनहिं मन कोप, ये चरित्र अक्रूरके ॥

१ विह्वळ । २ व्यवहार । ३ शीघ्र ।

परे नन्द तब चरणन धाई ❀ कहत न ऐसी कबहुँ कन्हाई ॥
हौं तजि मोहन चरण न जैहौं ❀ तुम बिन जाय कहा ब्रज लैहौं ॥
मधुवन तुमहिं छांडि जो जाऊं ❀ यशुदे उत्तर कहा सुनाऊं ॥
सन्मुख सुनत दौरि जब ऐहैं ❀ तुम बिन काहि गोद भरि लैहैं ॥
पंथ निहारत ह्वैहै मैया ❀ चलहु वेगि ब्रज कुवँर कन्हैया ॥
सद माखन मथि कीन्हो ह्वैहै ❀ कहोसो तुम बिन काहि खवैहै ॥
क्यों जीहै बिन दरशन पाये ❀ होत निठुर कित मथुरा आये ॥
बारह बर्ष कियो हम गारो ❀ नहिं जान्यो परताप तुम्हारो ॥
अब प्रकटे वसुदेवकुमारा ❀ कीन्हो वचन गर्ग निरधारा ॥
कत हम काज महारिपुमारे ❀ कत दरिद्र दुख हरे हमारे ॥
डारि न दियो कमलकर गिरिवर ❀ दबि मरते ब्रज जन ताकेतर ॥
कहै नन्द यों विकल अधीरा ❀ भई कठिन बिछुरनकी पीरा ॥

दो०-देखि प्रीति अति नंदकी, मन वसुदेव सिहात ।
सकुचि रहे सब प्रेम वश,कहि न सकत कछु बात ॥
सो०-ब्याकुल सबै अहीर, मानहुँ पन्नगके डसे ।
हरिमुख लखत अधीर, ठाढे काढे चित्रसे ॥

तब हलधर नंदै समुझावत ❀कहत तात तुम कत दुखपावत ॥
करि कछु काज बहुरि ब्रज आवैं ❀ तुम बिन और कहाँ सुख पावैं ॥
हरि प्रगटे भूभार उतारन ❀ कह्यो गर्ग तुमसों सब कारन ॥
मात पिता हमरे नहिं कोऊ ❀ तुम्हरे सुवन कहावैं दोऊ ॥
हमैं तुम्हैं सुत पितुको नातो ❀ और परे अब होत न ह्वातो ॥
बहुत कियो प्रतिपाल हमारो ❀ जाय कहाँ उर ध्यान तुम्हारो ॥
जननि अकेली व्याकुल ह्वै है ❀ तुम्हैं गये धीरज कछु पैहै ॥
व्याकुल नंद सुनत यह बानी ❀ पुनि पुनि कहतजोरियुगपानी ॥
अबकै चलहु श्याम मम गोहन ❀ ब्रजमें मिलिआवहु फिरिमोहन ॥
मारेउ कंस कियो सुरकाजा ❀ दीन्ह्यों उग्रसेन को राजा ॥

१ सर्प । २ पालन । ३ साथ ।

सुख वसुदेव देवकी पायो ❋ भयो सकलयदुकुल मन भायो ॥
तदपि यशोमति बिन गिरिधारी ❋ को जानै प्रभु टेक तुम्हारी ॥
दो०—ऐसे कहि अति विकलह्वै, रहे नंद गहि पाँय ।
भई छीन द्युतिहीन मति, नयनन जल न रहाय ॥
सो०—मायारहित मुकुन्द, नहीं विरह संयोग तिहि ।
ब्रह्म पूरणानन्द, सब घटबासी एकरस ॥
देखि विरह अति कादर नंदहि ❋ सखा वृंद अरु सब उपनन्दहि ॥
बिछुरत तजन चहतहैं प्राना ❋ तब यह चरित रच्यो भगवाना ॥
मेरी अति दुस्तरहै माया ❋ जिनकर जीवविमुख भरमाया ॥
तिन कछु दुन्द कियो जगमाहीं ❋ तब हरि बोध करत नँदपाहीं ॥
कत पछितात तातहौ एतो ❋ ब्रज अरु मथुरा अंतरकेतो ॥
कहा दूरि तुमते कहुँ जाहीं ❋ करि विचार देखौ मन माहीं ॥
हैं ब्रजके नरनारि दुखारी ❋ ताते कीजत बिदा तुम्हारी ॥
ऐसे बोधकियो ब्रजनाथा ❋ तब नँद कह्यो जोरि युग हाथा ॥
जो प्रभु तुमको ऐसे भाई ❋ तौ अब मेरो कहा बसाई ॥
जैहौं ब्रज प्रभु कहे तुम्हारे ❋ जात वचन मोपै नहिं टारे ॥
बहुत करी तुम मम प्रभुताई ❋ नीच दशालै ऊंच चढाई ॥
परम गँवार ग्वाल पशुपाला ❋ भयो धन्य सब जगत विशाला ॥
दो०—मेटि पाप संताप सब, कियो सुकृतकी खान ।
भरी साखि चौदह भुवन, सुर मुनि वेद पुरान ॥
सो०—ऐसे कहि नँदराय, परे बहुरि हरिके चरण ॥
लीन्हे श्याम उठाय, कह्यो जान सनमान तव ॥
तब वसुदेव विनय बहु भाखी ❋ आगे बहुत संपदा राखी ॥
कियो जो हमप्रति तुम उपकारा ❋ ताको बदलो नहिं संसारा ॥
बालक ये अपनेही जानो ❋ इहाँ उहाँ कछु भेद न आनो ॥
सुनि सुनि नंद महर पछिताई ❋ रहेठगे तनु दशा भुलाई ॥
ऊरधश्वास नयन बह पानी ❋ कंपित तनु कहि जात न बानी ॥

सो कछु संपति¹ नंद न लीन्हीं ❀ विनती बहुरिश्याम सों कीन्हीं ॥
माँगतहौं प्रभु यह कर जोरी ❀ ब्रजपर कृपा होय नहिंथोरी ॥
तब सब गोप नृपति पहँ आये ❀ बहुत बोध करि ब्रजहि पठाये ॥
गोप सखा बोधे हरि सबहीं ❀ बिदा किये आदरदै तबहीं ॥
चले सकल ब्रज शोचत भारी ❀ हारे सरबस मनहुँ जुवारी ॥
काहू सुधि काहू सुधि नहीं ❀ लटपट चरणपरत मग माहीं ॥
ब्रजतन जात विलोकत मधुवन ❀ विरह व्यथा बाढी व्याकुल तन ॥

दो०-भये विरह वारिधिमगन, अतिअचेत अकुलाय ।
श्यामराम तजि मधुपुरी, आये ब्रज नियराय ॥

सो०-उतहि गये हरि गेह, उग्रसेन वसुदेव युत ।
ब्रज बासिनको नेह, पुनि पुनि श्रीमुखते कहत ॥

पुनि पुनि नंद कहत पछिताई ❀ चूकपरी हरिकी सेवकाई ॥
कहँ लगि गनिये यह अपराधू ❀ किये कर्म हम परम असाधू ॥
कोमल पद वन अति कठिनाई ❀ तहँ हरि पै हम गाय चराई ॥
किंचक दधिके काज रिसाई ❀ बांधे यशुमति ऊखल लाई ॥
इंद्रकोप ब्रजलोग बचाये ❀ वरुणलोक ममहित उठि धाये ॥
हम मतिमन्द न उनहीं जाने ❀ निकट बसत नाहिंन पहिचाने ॥
तनधन लोभ कंस भयपाई ❀ करि दीन्हे आगे दोउ भाई ॥
ऐसे समुझि नंद निज करनी ❀ परे मुरछि व्याकुलअतिधरनी ॥
बार बार जोवतमग² माता ❀ व्याकुल बिन मोहनबलताता ॥
आवत देखि गोप ब्रज ओरी ❀ हरषि हृदय आतुर उठि दौरी ॥
धाई धेनु वत्सको जैसे ❀ माखन प्यारे हैं धौं कैसे ॥
कनियां लेबेको अतुरानी ❀ आये बल मोहन यह जानी ॥

दो०-धाई अति हर्षित हिये, सुनत रोहिणी पास ।
दरश आश आई सबै, ब्रजतिय हिये हुलास ॥

सो०-त्यहि क्षणअति आनन्द, ब्रजबासी ब्रजतियसबै ।
अति सकोच वश नंद, सो दुख कापै जात कहि ॥

१ धन-वस्त्रालंकार । २ मार्ग देखत ।

अथ ब्रजकी विरहलीला.

आतुर सकल गईं नँदपासा ❋ मनमोहन दर्शनकी आसा ॥
पेखे नन्द गोप सब देखे ❋ श्याम राम दोऊ नहिं पेखे ॥
बूझत यशुमति अति अकुलाई ❋ कहँ मम श्याम राम दोउ भाई ॥
सुनत वचन व्याकुल नँदराई ❋ नयन नीर भरि नारि नवाई ॥
देखत सूखि गईं ब्रजनारी ❋ जनुप्रफुलितकुमुदिनि हिममारी ॥
जान्यो आन भई विधि सोई ❋ कहि गये वचन गर्ग मुनि जोई ॥
अति व्याकुल सब विनब्रजनाथा ❋ भये सकल नरनारि अनाथा ॥
परे भूमि सब टेर लगाई ❋ कौन दोष प्रभु हम बिसराई ॥
यशुमतिअतिबिलपतिबिलखानी ❋ कहत सरोष नंदसों बानी ॥
धिग धिग महर कहा यह कीनो ❋ मथुरातजि सुत ब्रज पगदीनो ॥
मारग सूझि परेउ केहि भांती ❋ बिदा होत फाटी नहिं छाती ॥
अर्द्ध वचन सुनतहि उठि धाये ❋ कहा लेन सुख ब्रजमें आये ॥

दो०-कैसे प्राण रहे हिये, बिछुरत आनँद कन्द ।
सुनी नहीं दशरथ कथा, कहूँ श्रवण मतिमन्द ॥

सो०-मैं मधुपुरको जाय, रहिहौं हरिकी धाय ह्वै ।
लीजै ठोंकि बजाय, अपनो अब ब्रज नंद यह ॥

यह सुनि नन्द परे मुरझाई ❋ अति व्याकुल ब्रजलोगलुगाई ॥
पुनि पुनि कहति यशोमति टेरे ❋ कहँ छांडे दोऊ सुत मेरे ॥
जीवन प्राण सकल ब्रज प्यारो ❋ छीनि लियो वसुदेव हमारो ॥
सुफलकसुत वैरी भयो भारी ❋ लै गयो जीवनमूरि हमारी ॥
हौं न गई हरि संग अभागी ❋ सिखये इनलोगनके लागी ॥
जो मैं जानि पावती गोहन ❋ तौ क्यों छाँडि आवती मोहन ॥
ऐसे रोवत करत विलापू ❋ कहिन जात यशुमति परितापू ॥
हरि बिन सब नरनारि उदासी ❋ आये जवहिं सकल ब्रजवासी ॥

---

१ क्रोधकरके ।

नहीं श्याम बिन सदन सुहाई ❀ मनहुँ मशानभूमि धरिखाई ॥
पूछत विलखि यशोमति मैया ❀ कहौ नंद कहकह्यो कन्हैया ॥
तुमको बिदा ब्रजहिं जब कीन्हो ❀ हरि कछु मोहिं सँदेशो दीन्हो ॥
तुम कछु हरिसों विनय न भाखी ❀ कहा श्याम मनमें यह राखी ॥
दो०-मैं अपनोसो बहु कियो, वे प्रभु त्रिभुवननाथ ।
जो चाहैं सोई करैं, कहा सु मेरे हाथ ॥
सो०-कहिकै तोहिं प्रणाम, बहुरि श्याम ऐसे कह्यो ।
करिकै कछु सुरकाम, मिलिहौं तुमसों आयब्रज ॥
पुनि बोले ऐसे बल भैया ❀ दुखीहोनपावै नहिं मैया ॥
धीरज देहु तात तुम जाई ❀ कछु दिनमें हम मिलिहैं आई ॥
पठयो मोहिं तोहिं हितलागी ❀ तबमैं बचन सक्यो नहिं त्यागी ॥
सुनि सँदेश यशुमति दुखपागी ❀ रहे प्राण हरि चरणनलागी ॥
एक पलक बिछुरत हरि नाहीं ❀ गहि रहि मिलन आश मनमाहीं ॥
ब्रज घरघर सब कहत गुवाला ❀ कियो कृष्ण मथुरा जो ख्याला ॥
मारेउ रजकजाय हरि जबहीं ❀ नहिं निबहै जान्यो हम तबहीं ॥
चन्दन बहुरि कंसको लीन्हो ❀ रूप अनूपम कूबरि दीन्हो ॥
वैसो धनुष तोरि पुनि डारेउ ❀ फिरि दोउ भाइन गजको मारेउ ॥
रंगभूमि सब मल्ल पछारे ❀ असुर अनेक युद्ध करि मारे ॥
कहत हते ब्रजमें हरि जैसे ❀ कियो जाय कंसहि पुनि तैसे ॥
केशपकरि महि तुरत गिरायो ❀ मारि यमुन जल माहिं बहायो ॥
दो०-उग्रसेन राजा कियो, निज कर चमर ढुराय ।
मथुरा नर नारी सबै, आनन्दे सुख पाय ॥
सो०-पुनि भेंटे हरि जाय, देवकि अरु वसुदेव सों ।
कह्यो परम सुख पाय, तात मात कहि भ्रात दोउ ॥
तहाँ भयो उत्सव अति भारी ❀ दियो दान बहु विप्र हँकारी ॥
हरिहि बसन भूषण पहिराये ❀ मंगल सब नर नारिन गाये ॥

१ मरघटकी भूमि ।

मथुरा घर घर बजी बधाई ❋ बहु सम्पति वसुदेव लुटाई ॥
अब नहिं गोप गोपाल कहावैं ❋ वासुदेव सब नाम बुलावैं ॥
यदुकुल कमल सकलजगनायक ❋ विरदवान वर्णन गुण गायक ॥
भये कृष्ण मथुराके राजा ❋ अहिरन देखि लगति अतिलाजा॥
पुनि ग्वालन यह बात सुनाई ❋ बसे श्याम कुबिजा गृह जाई ॥
भये जासुवश अति हित मानी ❋ कीन्ही ताहि आपनी रानी ॥
राजा हरि कुबिजा भइ रानी ❋ गोपिन सुनी जबहिं यह बानी ॥
गई विरहतन तपन सिराई ❋ सौति शाल शाल्यो उर आई ॥
भयो दुसह दुख ऊरध श्वासा ❋ मिटी श्याम आवनकी आशा ॥
नयनन जल धारा अति बाढी ❋ रही शोच बैठी कोउ ठाढी ॥

दो०-जुरि आई ब्रज तिय सबै, सुनि कुबिजाकी बात ।
लागीं आपस में कहन, मन दुख मुख हर्षात ॥

सो०-करी सुहागिनि श्याम, कुबिजा दासी कंसकी ।
आपुन पति वह बाम, कियो नाम तिहुँपुर विदित ॥

लै श्रीखण्ड[1] मिली मग माई ❋ सुनियत ताते अति मन भाई ॥
भली बुरी कछु जात न चीन्ही ❋ बहुत रूप दै सम कर लीन्ही ॥
वे बहु रमण नगर की सोऊ ❋ बन्यो संग अब नीको ओऊ ॥
कहत जु वह सोई अब मानैं ❋ निशि दिन वाके गुणहि बखानैं ॥
जानि अनोखी नेह बढावैं ❋ अब नहिं सखी श्याम ब्रज आवैं॥
अपर कह्यो कछु रोष जनाई ❋ श्याम सदाके ऐसइ माई ॥
जब अक्रूर लेन ब्रज आयो ❋ कान लागि तब यहै सुनायो ॥
नई[2] कूबरी नारि बताई ❋ तबहिं गये ताके सँग धाई ॥
बोली और एक तिन माहीं ❋ कुबिजा तुम देखी कै नाहीं ॥
दधि बेचन जब जात तहाँरी ❋ तब नीके हम ताहि निहारी ॥
अँग टेढी मालिनकी जाई[3] ❋ हँसत जाहि सब लोग लुगाई ॥
बसत ढिगन नृप महलन जोई ❋ सुनियत करी सुन्दरी सोई ॥

१ चंदन । २ नई । ३ उत्पन्न की ।

दो०—कोटि बार दाहौ अनल, कोटिकसौकिन सोय ।
तौ कत पीतरते कहूं, कैसे सोनो होय ॥
सो०—हरि तजि दीन्हीं लाज, हमैं होत सुनिकै हँसी ।
जाय कूबरी काज, मथुरा मारेउ कंस नृप ॥
बोली सखी और यक बानी ❀ अलि यह बात नहीं तुम जानी ॥
कुबिजा सदा श्यामकी प्यारी ❀ वे भर्त्ता उनकी वह नारी ॥
तैसे वहां ताहि करि दासी ❀ राखी ये अविगति गुणरासी ॥
रूप रतन कूबर में राख्यो ❀ जिमि मोती सीपनमें भाख्यो ॥
कंस मारिकै सो अब लीन्ही ❀ ताकी प्रभुता प्रगट न कीन्ही ॥
ब्रजवनिता त्यागी अब तातें ❀ बूझी सकल श्यामकी बातें ॥
कहत एक तब सुनु सखि एरी ❀ वे दिन हरिको बिसरि गये री ॥
लिये फिरतहीं जब सब कनियां ❀ पहिरावन सिखये हम तनियां ॥
घर घर डोलत माखन खाते ❀ यशुदहि उरहन देत लजाते ॥
बहुरि भये जब कछुक सयाने ❀ बाट घाट अवगुण बहु ठाने ॥
जो जो उन हमसों गुण ठान्यो ❀ हम सब ताहीमें सुख मान्यो ॥
जिमि भजि आप गोकुलै आये ❀ गोपभेष करि रहे छिपाये ॥
दो०—देव मनावत दिन गये, बड़े होनकी आस ।
बड़े भये तब यह कियो, बसे कूबरी पास ॥
सो०—यशुमति लाड लडाय, बारेते सेवा करी ।
ताहूको बिसराय, भये देवकीपुत्र अब ॥
सुनो सखी अब कह्यो हमारो ❀ नहिं कीजे तिनको पतियारो ॥
जो जन जगमें कृतंहि न माने ❀ निज स्वारथ लगि बहु गुणठाने ॥
ज्यों भँवरा कल कुंज सुहाई ❀ बैठन चाहि सुमनपर आई ॥
रसहि चाखि पुनि हित नहिं माने ❀ तहीं जात जहँ नूतन जाने ॥
पालत काग पिकहि हितमाने ❀ मिलत कुलहि जब होत सयाने ॥
सोई भई हमाहिं अरु नन्दहि ❀ कहिये कहा सखी गोविन्दहि ॥

१ कियेका उपकार । २ नवीन ।

जे खोटे मन कपट सयाने ❀ औसर परे परैं पहिचाने ॥
बैठत अब नृप आसन माहीं ❀ सुनियत मुरली देखि लजाहीं ॥
मोरपङ्ख देखत नहिं भावैं ❀ ब्रजको नाम लेत बहरावैं ॥
सुरभी चित्रहुमें जो हेरत ❀ तो लजाय इतउत मुख फेरत ॥
हमरो नाम सुनत चपिजाहीं ❀ सुरत करत ग्वालनकी नाहीं ॥
वे कह जानैं पीर पराई ❀ जिनकी प्रकृति परी यह आई ॥

दो०—भयो नयो अब राज ह्वां, नये मात पित गेह ।
नई नारि कुबिजा मिली, भये सखा नवनेह ॥
सो०—बिसरे ब्रजकी बात, कुंजकेलि रस रासको ।
गये आपनी घात, दिन दिन दुख दूनो लहौ ॥

कौन बातको करैं परेखो ❀ सखि अपने जिय शोचि न देखो ॥
नाहरि जाति न पांति हमारी ❀ तिनको दुख मानिये कहारी ॥
गोपीनाथ नन्दके लाला ❀ अब न कहावत कान्ह गुवाला ॥
वासुदेव अब उहाँ कहावत ❀ यदुकुलदीप भाटवर गावत ॥
नहिं वनमाल गुंज उर माहीं ❀ मोर पिच्छ माथेपर नाहीं ॥
गृह वनकी सब प्रीति भुलाई ❀ वा मुरलीसँग गई सगाई ॥
अब वह सुरति होत कत राजन ❀ दिनदश प्रीति करी निजकाजन ॥
सबै अजान भई तिहिं काला ❀ सुनि मुरलीको शब्द रसाला ॥
अब मन जलनिधि खग ज्यों थाकें ❀ फिरिफिरिशरण जहांजिहितांकें ॥
कहत एक सुनुरी ब्रजनाथा ❀ ब्रज अब मानों कियो अनाथा ॥
तब वह कृपा हुती ब्रज पाहीं ❀ राख्यो गिरिवर करतल माहीं ॥
बहुरो और प्रताप कियोरी ❀ हमहित दावानल अँचयोरी ॥

दो०—अब यह दोष लगै हमैं, समुझत सकुचत जीय ।
भयो वज्रहूते कठिन, बिछुरत फट्यो न हीय ॥
सो०—अब लागे दिल जान, सुनु सखि मोहनलालबिन ।
रहत देहमें प्रान, बिन वह सूरति सांवरी ॥

१ गोवर्द्धन । २ छगुनिया पर । ३ अग्निकी ज्वाला ।

रहत वदन देखे बिन नयना ❋ श्रवण न रहत सुने बिन बयना ॥
रहतहियो बिन हरि कर परसे ❋ वेधत बाण मनोभव बरसे ॥
अब सखि यों सहियत दुखभारो ❋ मनहूँ नयन तन प्राण हमारो ॥
जब विधि बालक वर्त्स चुराये ❋ तब हरि तैसेइ और बनाये ॥
जनु वैसेई कुँवर कन्हाई ❋ विरहवृष्टि ब्रज ओर चलाई ॥
ऐसे मन गुण गुणि गोपाला ❋ भई विरहवश सब ब्रजबाला ॥
अतिही कठिन भयो दुख मनमें ❋ व्यापी दशईं अवस्था तनमें ॥
कोउ कहे लोचन दीन हमारे ❋ क्यों जीवहिं बिन श्याम निहारे ॥
ज्यों चकोर बिन चन्द दुखारी ❋ जैसे री वारिज बिनवारी ॥
विवरन जिमि ग्रीषम के खंजन ❋ जैसे दुखी भ्रमर बिनकंजन ॥
श्याम सिंधुते बिछुरि परेरी ❋ तड़फड़ात ज्यों मीन खरेरी ॥
भरत ढरत पुनि पुनि अकुलाहीं ❋ हरिबिन धरत धीर दृग नाहीं ॥

दो०—देख्यो नहीं सुहात कछु, गृहवन बिन नँदनन्द ।
विरह व्यथा जारत तनहिं, भयो तपनि अति चन्द ॥
सो०—बिन श्वासाकी देह, और रूपह्वै जात जिमि ।
तिमि लागत ब्रज गेह, हरि बिन सखी भयावनो ॥

इहि बिरियां बनते हरि आवत ❋ दूरिहिते कलवेणु बजावत ॥
कबहुँक परम चतुर गोपाला ❋ गावत ऊँचेस्वरन रसाला ॥
कबहुँक लैलै नाम सुनावत ❋ धौरी धूमरि धेनु बुलावत ॥
देत दृगन सुख बनतें आई ❋ वह मनमोहन रूप दिखाई ॥
और सखी बोली इक ऐसे ❋ बहुरो कबहुँ देखिये वैसे ॥
बैठे ग्वाल बालकन साथा ❋ बांटत खात अशन ब्रजनाथा ॥
यक दिन दधि चोरत मम धामा ❋ मैं दुरि देखि रही छबिश्यामा ॥
वे भाजे मम लखि परछाहीं ❋ तब मैं धाय लई गहि बाहीं ॥
मुख कर पोंछि लिये गहि कनियां ❋ प्रेम प्रीतिरसके सुख दनियां ॥
रहे लागि छाती सों जैसे ❋ सो वह कहो जात सुख कैसे ॥

१ बछरा । २ उदास । ३ कमलन । ४ सुंदरवंशी । ५ भोजन ।

जिन धामन वे सुख अवलोके ❀ ते अब धरि धरि खात विलोके ॥
सुमिरि सुमिरि वे गुणगण नाना ❀ हरिबिन रहतअधमतनुप्राना ॥

दो०—कहँ लगि कहिये ये सखी, मनमोहनके खेल ।
उन बिन अब गोकुल भयो, ज्योंदीपक बिन तेल ॥

सो०—रहतनयनजलछाय, सुमिरिसुमिरिगुणश्यामके ।
कहिये काहि सुनाय, भये पराये कान्ह अब ॥

एक प्रलाप करत मन माहीं ❀ कहै जाय कोऊ हरि पाहीं ॥
लेहु आय निज गायन घेरी ❀ फिरत नहीं ग्वालनकी फेरी ॥
बिडरी फिरत सकल बनमाहीं ❀ तुमबिन नाहिं काहु पतियाहीं ॥
अपनो जानि सँभारहु आई ❀ मति बिसरौ ब्रजहेतु कन्हाई ॥
बिलखत गाय वत्स सब ग्वाला ❀ नेकु सुनावहु बेणु रसाला ॥
बूडत विरहसिंधुमें नारी ❀ लेहु आय गहि भुजा निकारी ॥
कोऊ कहत कहै कोउ जाई ❀ बसो फेरि ब्रज कुवँर कन्हाई ॥
अब नहिं तुमसों गाय चरावैं ❀ नहिं जगाय बन प्रात पठावैं ॥
माखन खात बरजिहैं नाहीं ❀ नहिं उरहन यशुदहि लैजाहीं ॥
नहिं दाँवँरि यशुमतिको दैहैं ❀ नहिं अब ऊखल सों बँधवैहैं ॥
चोरी प्रगट करैं नहिं काहू ❀ नहीं जनावहिं अवगुण ताहू ॥
वेनी फूल गुहन नहिं कैहैं ❀ नहीं महावर चरण दिवैहैं ।

दो०—माँगत दान न बरजिहैं, हठ नहिं करिहैं मान ।
आय दरश अब दीजिये, रहत न तुमबिन प्रान ॥

सो०—ऐसे कहि गहि पाँय, ल्यावहिं फेरि मनाय हरि ।
बसहिं बहुरि ब्रज आय, तौ ब्रजनंदन साँवरो ॥

एक कहत अब हरि नहिं आवैं ❀ नृपपद तजि क्यों ग्वाल कहावैं ॥
वहँ गजरथ चढि चलत कन्हाई ❀ इहँ क्यों गाय चरावहिं आई ॥
उहां पटम्बर पहिरि दिखावैं ❀ इहांकि क्यों अब कामरि भावैं ॥
अब उन यशुमति मातु बिसारी ❀ कौन चलावै बात हमारी ॥

१ अनेकप्रकार । २ अनर्थपात । ३ भागी । ४ रस्सी ।

बोली अपर सखी बिलखाई ❋ भये निठुर अब कुँवर कन्हाई ॥
करौ प्रीति हमसों हरि ऐसी ❋ सुनु सखि सलिल मीनकी जैसी॥
तलफत मीन निपट अकुलाने ❋ नीर कछू उर पीर न जाने ॥
इतनी दूर दया नहिं कीन्हीं ❋ बीती अवधि खबरि नहिं लीन्हीं ॥
दैगये बिहँसि चलत परतीती ❋ मिलि हौं आय बहुरि रिपु जीती ॥
हारे नयन उतहि मग जोवत ❋ रोय रोय उर कंचुकि धोवत ॥
जैसो दिन निशि तैसी जाई ❋ पल भर नींद परत नहिं आई ॥
मंद समीर चंद दुखदाई ❋ इनते जरत सेज अधिकाई ॥

दो०—स्वप्नेहू तो देखिये, नींद परै जो नैन ।
कीन्हे विविध उपाय मन, क्योंहू लहै न चैन ॥

सो०—बोलि उठी इक बाम, सुन सखि हौं तोसों कहौं ।
जबते बिछुरे श्याम, आज लखे मैं स्वप्नमें ॥

आये जनु मम सदन गोपाला ❋ हँसि भुज पाणि गहे नँदलाला ॥
कहा कहौं अँरि नींद भईरी ❋ एकहु क्षण नहिं और रहीरी ॥
ज्यों चकई लखि निज परछाहीं ❋ पतिहि जानि हरषी मन माहीं ॥
तबहीं निठुर विधाता आई ❋ दियो पवन मिस सलिल डुलाई ॥
मेरी दशा भई सखि सोई ❋ जो जागों तो ढिग नहिं कोई ॥
देखहु कहा अधिक अकुलाई ❋ विरह जरी अरु काम जराई ॥
कहा कहौं किहिं दोष लगाऊं ❋ अपनी चूक समुझि पछिताऊं ॥
बिछुरतही नहिं तज्यो शरीरा ❋ समुझि परी तबहीं यह पीरा ॥
महादुखित अब अंग हमारे ❋ भये सखी दोउ नयन पनारे ॥
अतिही भ्रम माते बिन देखे ❋ चाहत रूप श्यामको पेखे ॥
रसना यही नेम गहि राख्यो ❋ हरि बिन और न चाहत भाख्यो ॥
जबते बिछुरे कुँवर कन्हाई ❋ तबते भये सबै दुखदाई ॥

दो०—वोई निशि वोई दिवस, वोई ऋतु वइ मास ।
बदलेसबै सुभाव जनु, बिन हरि मदनविलास ॥

१ पानी । २ शत्रु । ३ वैरी । ४ राति । ५ दिन । ६ महीना ।

सो०-चली औरही चाल, अब या ब्रजमें ऐ सखी ।
विमुख भये गोपाल, भये दुखद जे सुखद सब ॥
गृह कन्दरा सेज भइ शूली ❋ शशिकी किरणि अग्निसमतूली ॥
सींचत अली मलय घसि नीरा ❋ होत अधिक ताते उर पीरा ॥
फूली अरुण फूल वन डारी ❋ झरत देखियत मनहुँ अँगारी ॥
हरि विन फूल लगत सब कैसे ❋ मनहुँ त्रिशूल शूल उर जैसे ॥
तब इन तरुन अमृत फल लागे ❋ अबते फल सब विष रस पागे ॥
त्रिविध समीर तीर तम लागे ❋ कोकिल शब्द अग्नि जनु दागे ॥
तप्त तेल सम वारिद[1] पानी ❋ उठत दाह सुनि चातक बानी ॥
सुनु सखि चातक दोष न दीजे ❋ ज्याये या पक्षीके जीजे ॥
जैसे पिय पिय हम रट लावत ❋ तैसेही कहि कहि वह गावत ॥
अति सुकंठ पीतम हित मानी ❋ क्षण नहिं रहत रटत पिय बानी ॥
आप सुधारस पी सुख पावैं ❋ टेरि टेरि बिरहिनको ज्यावैं ॥
जो यह खग नाहिं करत सहाई ❋ लहत प्राण तो दुख अधिकाई ॥
दो०-या पक्षी सम औरको, सुनु सखि सुकृतसमाज ।
सफल जन्म है तासुको, जो आवै परकाज ॥
सो०-मगन सकल ब्रजबाल, ऐसे हरिके विरहवश ।
नहिं बिसरत नँदलाल, सोवत जागतादिवसनिशि ॥
पथिक जात मधुवनतन हेरैं ❋ ताहि धाय ब्रजतिय सब घेरैं ॥
कहत परहिं हम पायँ तुम्हारे ❋ सुनहु बटोही वचन हमारे ॥
उतहैं बसत कृष्ण ब्रजनाथा ❋ कहियो तिनसों ब्रजकी गाथा ॥
तुम जो इन्द्रको यज्ञ नशायो ❋ पुनि गिरि कर धर ब्रजै बचायो ॥
सो अब वह विरहा ह्वै आयो ❋ चाहत है ब्रज फेरि बहायो ॥
वर्षत निशि दिन दृग घनकारे ❋ बहत कुचन बिच सलिलपनारे ॥
ऊरध श्वास पवन झक झोरे ❋ गर्जत शब्द पीर घन घोरे ॥
महा वज्र दुख सुख द्रुम डारे ❋ व्याकुल अंग सकल अति मारे ॥

[1] मेघ ।

तब संदीपन तिय पहँ आये ❀ वचन कृष्ण के ताहि सुनाये ॥
देन कहत हरि दछिना हमको ❀ मँगें कहा सों बूझें तुमको ॥
मरेहुते ताके सुत दोई ❀ तिन मांगे हरि सों पुनि सोई ॥
कृष्ण सकल जीवनके स्वामी ❀ जल थल सब जिनके अनुगामी ॥
गये बहुरि भक्तन सुखकारी ❀ जग उतपतिपालन लयकारी ॥
चाहे कियो होय सब सोई ❀ आनि दिये गुरुके सुत वोई ॥
भये सुखी द्विज अरु द्विजनारी ❀ सुत संताप मिट्यो दुख भारी ॥
ह्वै प्रसन्न गुरु आशिष दीन्हों ❀ नमस्कार प्रभु गुरुको कीन्हों ॥
गुरु आयसु ले पुनि दोउ भाई ❀ आये मधुपुरि जन सुखदाई ॥
तात मात लखि अति सुख पायो ❀ भयो मनोरथ सब मन भायो ॥
राज काज पुनि प्रभु सब करई ❀ उग्रसेन आयसु अनुसरई ॥
हित जल परिजन नर अरु नारी ❀ सुखी सकल हरि वदननिहारी ॥

दो०–ऊधो अरु अक्रूर जे, सखा श्यामके साथ ।
मिलि बैठत खेलत हँसत, इनके सँग यदुनाथ ॥

सो०–ब्रजवासिनको ध्यान, ब्रजवासी प्रभुके सदा ।
यदपि ब्रह्म सुखखान, तदपि भक्तवश प्रेमरस ॥

अथ उद्धवजीकी बिदालीला.

उद्धव यदुपति सखा सज्ञानी ❀ एक ब्रह्म सुख सों रति मानी ॥
हरिको त्रिगुण रूप करि मानें ❀ प्रेम कथा कछु उर नहिं आनें ॥
जब हरि ब्रजकी बात चलावें ❀ तब उद्धव हँसिकै उचटावें ॥
हरि लखि मनहीं मन पछिताहीं ❀ भली बानि याकी यह नाहीं ॥
रूप रेख जाके नहिं कोई ❀ धरयो नेम उरमें इन सोई ॥
निर्गुण कथा योगकी गावै ❀ जामें कछु रस स्वाद न आवै ॥
मानत एक ब्रह्म अविनाशी ❀ ज्ञान गर्वमें रहत उदासी ॥
बिछुरन मिलन दुःख सुख जाहीं ❀ नहीं प्रेम उपजत तनु माहीं ॥
कनककलश पानी बिन जैसे ❀ याको रूप बन्योहै तैसे ॥

१ घमंड ।

जो हौं कहौं कहा यह मानैं ❋ निंदा और हमारी ठानै ॥
कहिये काहि प्रेमकी गाथा ❋ बन्यो हंस वायसको साथा ॥
ब्रजको ध्यान सदा उर मेरे ❋ प्रेम भजन याके नाहिं नेरे ॥
दो०-कहा यशोदा नंदसे, सुखद तात अरु मात।
कहँ वह सुख ब्रजधामको, नहिं बिसरत दिनरात॥
सो०-कहां सखनको संग, कहां केलि वृन्दाविपिन।
कहँ वह प्रेम तरंग, वंशीबट यमुना निकट॥
कहां नवल ब्रज गोप कुमारी ❋ कहँ राधा वृषभानु दुलारी ॥
कहँ वह प्रीति रीति सुख संगा ❋ कहां रासरस हासतरंगा ॥
कहँ कुंजन बनकेलि निकाई ❋ कहां मानलीला सुखदाई ॥
कहँ लगि ब्रजके सुखन सँभारों ❋ जिहिंलगि पुरवैकुंठ विसारों ॥
कहिये यह रस वाके आगे ❋ उद्धव सुनत प्रेमको भागे ॥
कैसे प्रेम होय या माहीं ❋ मेरे कहे मानिहै नाहीं ॥
ब्रजको याको देउँ पठाई ❋ पैहै प्रेम तहां यह जाई ॥
याके मन अभिमान बढ़ाऊं ❋ कहि युवतिनकी प्रीतिसुनाऊं ॥
यहै बात यदुपति उर आनी ❋ पठऊं ब्रज यहि थापत ज्ञानी ॥
कहौं बोध तिनको करि आवो ❋ प्रेममिटाय ज्ञान समुझावो ॥
जैहैं तुरत सुनत यह बाता ❋ कहिहैं हरि जानत म्वहिं ज्ञाता ॥
करि अभिमान तुरत ब्रज जैहैं ❋ ह्वाँते जाय साधहै ऐहैं ॥
दो०-ऐसे हरि बैठे करत, अपने उर अनुमान।
उद्धवके उरते करों, दूर ज्ञान अभिमान॥
सो०-आय गये तिहिं काल, उद्धवजी हरिके निकट।
विहँसि मिले नँदलाल, सखा सखाकरि अंकभरि॥
अति सुंदर सांवलि छबि छायो ❋ जब हरिको प्रतिबिम्ब सुहायो ॥
अंशभुजा दैके यदुराई ❋ उद्धवसे ब्रजबात चलाई ॥
उद्धव सुनो कहौं तुम पाहीं ❋ ब्रजको सुख म्वहिं बिसरत नाहीं ॥

१ कौवा।

नेकहु नहीं यहां मन लागत ❀ उठि उठि पुनि उतहीको भागत ॥
यह मन होत वहीं पुनि जैये ❀ गोपी ग्वालनमें सुख पैये ॥
कहँ वह हेत यशोमति मैया ❀ दैदै माखन लत बलैया ॥
नहिं बिसरत मनते बिसराई ❀ वह राधाकी प्रीति सुहाई ॥
गोप सखा वृन्दावन गैयां ❀ नहिं भूलत वंशीवट छैयां ॥
त्यागत तिन्हैं बहुत दुखपाये ❀ मिटत नहीं मनते पछिताये ॥
उद्धव सुनि बोले मुसकाई ❀ कहा कहत हरि यों अकुलाई ॥
सदा रहत यह हित थिर नाहीं ❀ जगव्योहार सकल मिथ्याहीं ॥
मोसों सुनो बात यदुराई ❀ एकै ब्रह्म सदा सुखदाई ॥

दो०-जब उद्धव ऐसे कही, विहँसि ज्ञानकी बात ।
तब यदुपति सुख पायकै, पुनि बोले हर्षात ॥

सो०-भाई मो मन माहिं, उद्धव कहि जो बात तुम ।
तुम समान कोउ नाहिं, सखा और मेरो हितू ॥

उद्धव तुम ब्रज वेग सिधारो ❀ करि आवहु यह काज हमारो ॥
पूरण ब्रह्म अलख अज जोई ❀ मात पिता ताके नहिं कोई ॥
रूप न रेख जाति कुल नाहीं ❀ व्यापिरह्यो सब घटघट माहीं ॥
हौ ताके ज्ञाता तुम ज्ञानी ❀ गोपी सकल प्रीतिरत मानी ॥
यह मत तिन्हैं बोधकरि आवो ❀ प्रेममेटिकै ज्ञान दृढ़ावो ॥
मेरे प्रेम विवश वे बाला ❀ सहत विरहदुख दुसह विशाला ॥
काम अग्नि तनु तूल[1] समाना ❀ शोच श्वास मारुत[2] बलवाना ॥
भस्म होन पावत सो नाहीं ❀ भीज रहत नयनन जल माहीं ॥
इहै आज लोपै इहि भांती ❀ विरहव्यथा व्याकुल दिनराती ॥
ऐतेपै कैसे वे न्यारे[3] ❀ समाधान विन धीरज धारे ॥
ताते सखा वेगि तुम जाहू ❀ मेटो तिनके उरको दाहू ॥
पठऊं नारिनके ढिग सोई ❀ जो तुमहीं सों लायक होई ॥

दो०-यक प्रवीण गुरु सखा मम, तुमते ज्ञानी कौन ।

१ रूई । २ वायु । ३ रैहैं सब ।

सो कीजै ज्यहि ब्रजवधू, साधन सीखैं पौन ॥
सो०-जिहि सुख पावैं नारि, ज्ञान योग उपदेशते ।
डारैं मोहिं बिसारि, ब्रह्म अलख परचौकरैं ॥
उद्धव सुनो कहत मैं तुमको ❀ तुमसम हितू और नहिं हमको ॥
कैसेहु उन गोपिन सों मोहीं ❀ उऋण कीजिये बिनवत तोहीं ॥
निशिदिन भक्ति मेरि ये उनको ❀ नाहिं आनि रुचि कैसिहु तिनको ॥
सर्वस तिनन मोहिं सब दीन्हों ❀ तन मन प्राण समर्पण कीन्हों ॥
मुक्ति तीन तिनको मैं दीन्हीं ❀ सो उनहित एकहु नहिं कीन्हीं ॥
रही एक सो योजन कहिये ❀ सो वह ज्ञान बिना नहिं लहिये ॥
सो अब देहु तिनहिं तुम ज्ञानू ❀ जिहिं पावैं पद पदनिरवानू ॥
जो अंगीकृत करैं न तासू ❀ तौ मैं हौं उनको ऋणदासू ॥
गाय चरावत उनकी रैहौं ❀ ब्रजतजि नहीं अनत कहुँ जैहौं ॥
यहै बात मेरे मन भावै ❀ और न कछु मोपै बनि आवै ॥
उद्धव जाहु विलम्ब करो जिन ❀ उनको युग बीतत मो बिन छिन ॥
समाधान तिनको करि आवो ❀ ब्रजमें जाय विलम्ब न लावो ॥
दो०-उद्धव ब्रजमें जायकै, विलँब न रहियो जाइ ।
तुम बिन हम अकुलायहैं, श्याम करत चतुराइ ॥
सो०-तुमहौ सखा प्रवीन, बार बार सिखऊं कहा ।
जिय ज्यों जल बिन मीन, सोई मतौ बिचारिये ॥
कही श्याम ऐसे जब बानी ❀ तब उद्धव अपने जिय जानी ॥
यदुपति योग साँच अब जान्यो ❀ ज्ञान गर्व अपने मन आन्यो ॥
बोल्यो अति अभिमान बढ़ाई ❀ तुम आयसु शिरपर यदुराई ॥
तुम पठवत गोपिनके माहीं ❀ मैं कैसे प्रभु करौं कि नाहीं ॥
तुम्हरे कहे गोकुलहि जैहौं ❀ ज्ञानकथा ब्रज लोगन कैहौं ॥
जो मानि हैं ब्रह्म उपदेशू ❀ तौ कहि हौं समुझाय सँदेशू ॥
दिन द्वै रहि ब्रजमें सुख देहौं ❀ बहुरो आय चरण पुनि गैहौं ॥

१ मोक्ष ।

यह सुनि बिहँसि कह्यो हरि तबहीं ❀ जाहु उपँगसुत ब्रजको अबहीं ॥
ज्ञान दृढाय खबरि तिन दीजै ❀ एक पन्थ द्वैकारज कीजै ॥
आये भ्रात इते हम दोऊ ❀ तब ते ब्रज पठयो नहिं कोऊ ॥
जाय नन्द यशुमति परितोषो ❀ ज्ञान कथा कहि युवतिन पोषो ॥
सकुचो मतिहि जानि ब्रजनारी ❀ कहियो ज्ञान योग विस्तारी ॥

दो०–वचन कहतही समुझिहैं, वेहैं परम प्रवीन ।
ह्वैहैं शीतल बिरहते, ज्यों जल पायो मीन ॥

सो०–पठवत थापि महन्त, उद्धव को यहि काज हरि ।
ह्वै आवेंगे सन्त, ब्रज भक्तनके दरशते ॥

अपनोही रथ तुरत मँगायो ❀ दै उपंगसुत को पलनायो ॥
अपनेइँ भूषण वसन सुहाये ❀ निज कर उद्धव को पहिराये ॥
अपनइँ मुकुट आपनी माला ❀ पहिराई उर बिहँसि विशाला ॥
उद्धव तब हरि रूप सुहाये ❀ यक भृगुपदके चिह्न बनाये ॥
लिख्यो पत्रिका श्रीयदुराई ❀ नन्द बबाको विनय बड़ाई ॥
पालागन कहियो कर जोरी ❀ यशुमतिसे यहि भाँति करोरी ॥
बालक ग्वाल सखा समुदाई ❀ लिख्यो मिलन सबहीं उरलाई ॥
अरु नर नारि सकल ब्रज जेते ❀ प्रीति जनाय लिखे सब तेते ॥
लिखि गोपिनको योग पठायो ❀ भाव जानि काहू नहिं पायो ॥
लेहु दृढाय प्रीति ब्रजबाला ❀ यह आनी उरमें नँदलाला ॥
नीके रहियो यशुमति मैया ❀ कछु दिनमें अइहैं दोउ भैया ॥
लिखि पाती उद्धवकर दीन्हीं ❀ और मुखागर विनती कीन्हीं ॥

दो०–कहा कहौं कछु दिवसते, जननी बिछुरेउँ तोहिं ।
ता दिनते कोऊ नहीं, कहत कन्हैया मोहिं ॥

सो०–कह्यो सँदेश न जात, अति दुख पायो मात तुम ।
अब मोको निजतात, वसुदेव रु देवकि कहत ॥

कहियो नन्द बबासों जाई ❀ कह मन धरी इती निठुराई ॥

१ उद्धव । २ समाधान । ३ मछली ।

जबते दियो इतै पहुँचाई ❋ बहुरो शोध लियो नहिं आई ॥
बारेक बरसानेलै जैयो ❋ समाचार तहँके सब लैयो ॥
ग्वाल बाल सब सखा हमारे ❋ है हैं वे मम विरह दुखारे ॥
तिन्हैं जाय मम दिशिते भेंटो ❋ कहि सँदेश तिनको दुख मेटो ॥
ब्रजवासी जेते नरनारी ❋ गोप वत्स खग मृग वनचारी ॥
जो जिहिं विधि तासों तिहि भाँती ❋ अरस परस कहियो कुशलाती ॥
मित्र एक मम दरशन पैहो ❋ देखत ताहि परम सुख लैहो ॥
वृंदावनमें रहत निरंतर ❋ होत नहीं कबहूं उर अन्तर ॥
सघन कुंज तरु लतां सुहाई ❋ मिलियो ताको शीशनवाई ॥
इहि विधि उद्धवसों यदुराई ❋ कहि सब मनकी बात सुनाई ॥
बल करि ताको प्रेम जनायो ❋ ज्ञान गर्व ताके उर छायो ॥

दो०–ऐसे उद्धवसों करी, प्रगट श्याम ब्रज प्रीति ।
उद्धव तिनको ज्ञानलै, चले करन विपरीति ॥

सो०–लखि उद्धवको जात, हलधरलिये बुलाय ढिग ।
समुझत ब्रजकी बात, आये जल भरि नैन पुनि ॥

कहा कहौं उद्धव मैं तुमसों ❋ यशुमति करत हेत जो हमसों ॥
एक दिवस खेलत मो साथा ❋ खेल कियो झगरो यदुनाथा ॥
मोको दौरि गोद तब लीन्हों ❋ करसों ठेलि श्यामको दीन्हों ॥
नन्द बबा तब बनते आये ❋ इन्हें गोदलै मोहिं खिझाये ॥
लगे कहन नान्हो तेरो भाई ❋ तोको छोह लगतनाहिं राई ॥
वह हित नहिं भूलत है हमको ❋ कहत सँदेश बनत नहिं तिनको ॥
कहियो तुम प्रणाम पुर जाई ❋ अरु दोउ भैयनकी कुशलाई ॥
कहियो हमहैं तनय तुम्हारे ❋ मात पिता नहिं आन हमारे ॥
मिलि हैं आय धायकै तुमको ❋ कारज कछुक औरहै हमको ॥
नहिं बिसरत क्षण गोकुल गाई ❋ तुम तजि सुखको हमैं देखाई ॥
सुनि वसुदेव देवकी पायो ❋ उद्धव ब्रजको जात पठायो ॥

दो०-नंद यशोमति हित समुझि, लिखि पाती वसुदेव ।
पालि दिये तुम सुत हमैं, नहीं उऋण तुम सेव ॥
सो०-मति सकुचो जिय माहिं, रामकृष्णतुम्हरेतनय ।
हम कहिबेको आहिं, मात पिता तुम दुहुनके ॥

बालपने तुम पालनहारे ❋ बालकेलि रस तुम्हें दुलारे ॥
हमतो पाये बैस कुमारा ❋ सो यह सब उपकार तुम्हारा ॥
मति कल्पो अपने मनमाहीं ❋ हरिसों मिलि किन जात इहाँहीं ॥
श्याम राम नहिं तुम्हें भुलावें ❋ दिवस रैनि तुम्हरे यश गावें ॥
ऐसे लिखिपाती सुखदाई ❋ उद्धव कर वसुदेव पठाई ॥
तब हरि उद्धव बेगि पठायो ❋ तुरत अकेले रथ बैठायो ॥
आयसुलियो विदा हरि कीन्हों ❋ चले उपँगसुत ब्रजपथ लीन्हों ॥
उद्धव चले गर्व मन धारी ❋ कहा ज्ञान समुझेंगी ग्वारी ॥
देखौं हौं ब्रजलोगन धाई ❋ मानत इतो तिन्हें यदुराई ॥
चले उपँगसुत जब हर्षाई ❋ गोपिनमन तब गयो जनाई ॥
पुनि पुनि भ्रमर श्रवण लगि जाई ❋ भयो कछुक दुख कछु हर्षाई ॥
समुझि सो शकुन दरशअनुरागीं ❋ जहँ तहँ काग उडावन लागीं ॥

दो०-जो गोकुल हरि आवहीं, तो तू उडरे काग ।
दधि ओदन तोहिं देहुँगी, अरु अंचलकी पाग ॥
सो०-सुनि गोपिनके बैन, उठि बैठत बायस अनत ।
लखि पावत सब चैन, कहत परस्पर आपसे ॥

सखी आज गोकुल हरि आवैं ❋ कैधौं काहू ब्रजहिं पठावैं ॥
नीकी बात सुनावै कोऊ ❋ फरकत बाम नयन भुज दोऊ ॥
बिन बयारि अम्बर फहराई ❋ टूटि टूटि कंचुकि बँदजाई ॥
उठि उठि बैठत काग कहेते ❋ उमगत मन आनंद लहेते ॥
भ्रमर एक चहुँ दिशि मडराई ❋ पुनि पुनि कान लगतहै आई ॥
होत शकुन सुन्दर शुभ काला ❋ आवन हार भये नँदलाला ॥

१ काग । २ अँगिया ।

जानत भाग्य दशा विधि फेरी ❀ दूरि करो अब दुख मनते री ॥
बहुरि गोपाल मिलैं जो आई ❀ सुख सनेह करिलीजे माई ॥
आसन हृदय कमलमें दीजै ❀ नयनन निरखि वदनछवि लीजै ॥
देखत रूप मान तजि दीजै ❀ प्रेम भजन अपनो करि लीजै ॥
आवैं जो ब्रज कुंजविहारी ❀ बडि भागिनी सबै ब्रजनारी ॥
नंद यशोमति सखि सुख पावैं ❀ अति बडिभागिनि बहुरि कहावैं ॥

दो०-घर घर शकुन विचारहीं, ब्रजकी तिय बड भाग ।
ब्रजवासी प्रभु दरशको, सबके मन अनुराग ॥

सो०-मथुरातन टक लाय, अनुदिन पंथ निहारहीं ।
कब आवहिं ब्रजराय, यहै करत अभिलाष सब ॥

अथ उद्धवजीकी ब्रजागमनलीला.

उद्धव चले ब्रजहि समुहाये ❀ मथुरातजि गोकुल नियराये ॥
रथपर बैठे शोभित कैसे ❀ दूजे नन्दनँदन मनु जैसे ॥
वहै मुकुट पीताम्बर काछे ❀ श्याम रूप शोभित अँगआछे ॥
दूरहिते रथकी उजियारी ❀ देखत हरषीं ब्रजकी नारी ॥
जान्यो आवत कुँवर कन्हाई ❀ आतुर जहँ तहँते उठिधाई ॥
कहत परस्पर देखहु आली ❀ मधुवनते आवत वनमाली ॥
गये श्याम रथपर चढि जाहीं ❀ तैसो रथ आवत मगमाहीं ॥
तैसोइ मुकुट मनोहर राजै ❀ तैसोइ पट कुंडल छबि छाजै ॥
रथतन सब देखत अनुरागीं ❀ स्वप्नेको सुख लूटन लागीं ॥
ज्यों ज्यों रथ आतुर चलि आवै ❀ त्यों त्यों पीतांबर फहरावै ॥
भई सकल सुख व्याकुल नारी ❀ प्रेम विवश आनँद उर भारी ॥
जब लगि रथ आवत नियराई ❀ तब लगि मानहुँ कल्प बिहाई ॥

दो०-यहै शोर ब्रज घर घरन, आवत हैं नँदलाल ।
देखनको निकसे हरषि, तरुण वृद्ध अरु बाल ॥

सो०-सुनत यशोदा नन्द, लेन चले आगे हरषि ।
भये परम आनंद, तिहिं क्षण ब्रजके लोग सब ॥

जब कछु रथ आगे नियरायो ❋ तब संदेह सबन मन आया ॥
श्याम अकेले रथके माहीं ❋ हलधर संग देखियत नाहीं ॥
कोऊ कहत न हैं ब्रजनाथा ❋ जोपै हलधर नाहिंन साथा ॥
इतना कहत निकट रथआयो ❋ उद्धव निरखि नयन जल छायो ॥
रहीं ठगीसी सब ब्रजबाला ❋ नूतन विरह भई बेहाला ॥
मनहुँ गई निधि केहूँ पाई ❋ बहुरि हाथते तुरत गँवाई ॥
ह्वैगइ सपनेकी रजधानी ❋ जागत कछू नहीं पछितानी ॥
जबहीं कह्यो श्याम तो नाहीं ❋ यशुमति मुरछि परी महिमाहीं ॥
परी बिकल यशुमति ज्येहिठाई ❋ ब्रजतिय धाय तहां चलिआई ॥
श्याम विना रथलखि अकुलानी ❋ जहाँ सो तहाँ रहीं मुरझानी ॥
रुदन करत व्याकुल अति भारी ❋ लई उठाय पोंछि दृगवारी ॥
यह कहि बोध करत सब बाला ❋ उद्धवको पठयो गोपाला ॥

दो०–भली भई मारग चल्यो, सखा पठायो श्याम ।
उठहु बूझिये हरि कुशल, कहति महरिसों बाम ॥
सो०–सफल घरीहै आज, करहु जानि यह मन हरष ।
आवनको ब्रजराज, इनके कर ह्वै है लिख्यो ॥

यह सुनि उठी कछुक सुखपाई ❋ उद्धव निकटहिं पहुँची आई ॥
हरिके रूप निरखि सुखपायो ❋ श्यामसखी कहि सबन सुनायो ॥
उद्धव निरखि कहत ब्रजनारी ❋ सुंदर सलज सुशील महा री ॥
ताहीते हरि याहि पठायो ❋ लै सँदेश मोहनको आयो ॥
नीके नीके वचन सुनैहैं ❋ सुनिसुनि श्रवणन हियो सिरैहैं ॥
यह जानिये बेगि हरि अइहैं ❋ याके मुख अब यह सुनिपइहैं ॥
चहुँदिशि घेरलियो रथजाई ❋ नंद गोप ब्रजलोग लुगाई ॥
गये लिवाय नंद निजद्वारे ❋ उद्धव रथते हर्षि उतारे ॥
अरघदेय भीतर घर लीन्हों ❋ धनिधनितिनकहिआदरकीन्हों ॥
चरण धोय आसन बैठायो ❋ बहुप्रकार भोजन करवायो ॥

१ यशोदा । २ उत्तम ।

विविध भाँति करिकै पहुनाई ❀ नंद श्यामकी बात चलाई ॥
उद्धव कह्यो कुशल दोउ भैया ❀ अरु वसुदेव देवकीमैया ॥
दो०–करत हमारी सुधि कबहुँ, कहु उद्धव बलबीर ।
पुलकि गात गदगद बचन, पूछत नंद अधीर ॥
सो०–चूकपरी अनजान, कह पछिताने आजके ।
घर आये भगवान, जाने हम निज अहिर कारि ॥
प्रथम गर्गमुनि कह्यो बखानी ❀ भूल्यो सङ्गदोष हितजानी ॥
अब उद्धव बिछुरे गिरिधारी ❀ मरियत समुझि शूल सोइ भारी ॥
कह्यो यशोमति दृगभरि पानी ❀ उद्धव हम ऐसी नहिं जानी ॥
सुतको हितकरिकै हममाने ❀ हरि है वासुदेव प्रगटाने ॥
जेहि विरंचि¹ शिव ध्यान लगावैं ❀ निशिदिन अङ्ग विभूतिचढावैं ॥
सो बालक हम अतिहि अयानी ❀ ऊखल सों बाँध्यो गहि पानी ॥
फाटत नहीं वज्र सम छाती ❀ अबयहसमुझि हृदय पछिताती ॥
वैसे भाग कबहुँ अब ऐहैं ❀ बहुरि श्यामको गोद खिलैहैं ॥
जबतेहरि मधुपुरी सिधारे ❀ तबते ऊधो प्राण दुखारे ॥
तलफत मीन नीर बिन जैसे ❀ देख्यो श्याम मनोहर तैसे ॥
उठिकै प्रात जातिहौं खरिका ❀ देखत दुहत औरके लरिका ॥
उठत शूल उद्धव मनमाहीं ❀ क्यों ये प्राणनिकासि नहिं जाहीं ॥
दो०–ग्वाल सखा सँग जोरि अब, को गैया लै जाय ।
को आवै संध्यासमय, बनते गाय चराय ॥
सो०–काहि लेहुँ उर लाय, आँचरसों रज² झारिकै ।
काकी लेहुँ बलाय, चूमि मनोहर कमल मुख ॥
मैं बलि साँची कहियो ऊधो ❀ कैसे श्याम रहत ह्वां सूधो ॥
दही मही माखन नित जाई ❀ खात कौनके धाम कन्हाई ॥
कौन ग्वाल बालनके साथा ❀ भोजन करत तहां ब्रजनाथा ॥
कौन सखा लीन्हे सँग डोलैं ❀ खेलत हँसत कौनसे बोलैं ॥

१ ब्रह्मा । २ धूरिके कन ।

को माखन चोरैं जाई ❀ देन उरहनोको अब आई ॥
बनमें यमुनातीर कन्हाई ❀ किन गोपिनको रोंकत जाई ॥
किनको दूध दही ढरकावें ❀ किनसों दधिको दान चुकावें ॥
इतनी बूझति यशुमति माई ❀ भई बिकल गुण सुमिरि कन्हाई ॥
बोले नंद बिलखि तब बानी ❀ कहियो उद्धव साँच बखानी ॥
श्याम कबहुँ बहुरो ब्रज ऐहैं ❀ ब्रजबासिनकी ताप नशै हैं ॥
मोहिं तात यशुमतिसों माता ❀ सदा कहतहैं हरि सुखदाता ॥
कहि गये चलती बार मुरारी ❀ मिलिहौं बहुरि तात यकबारी ॥

दो०–करिहैं सो अपनो वचन, कबहुँ श्याम प्रतिपाल।
कह उद्धव तुमसों कछू, कह्यो कि नाहिं गोपाल ॥

सो०-भये सकल कृशगात, श्याम बिरह ब्रज नारिनर ।
युग सम दिवस बिहात, उद्धव हमको हरिबिना ॥

लखि उद्धव ब्रज रीति सुहाई ❀ रहे कछुक मनमें सकुचाई ॥
सुनत नन्द यशुमतिकी बानी ❀ बोल्यो हृदय परम सुखमानी ॥
कहि दोउ भाइनकी कुशलाती ❀ दई श्याम दीन्ही सो पाती ॥
हरिको कह्यो सँदेश सुनायो ❀ हलधरको सब कह्यो सुहायो ॥
पाती बाँचि नन्द उर लाई ❀ भेंटे मानहु कुवँर कन्हाई ॥
लिखी श्यामके करकी पाती ❀ यशुमति लै लै लावति छाती ॥
दुसह बिरहकी ताप नशावै ❀ हरिसँदेश सुनि सुनि सुख पावै ॥
पुनि वसुदेव लिख्यो है जोई ❀ उद्धव दियो नंदको सोई ॥
बाँचत नयन नीरभरि आये ❀ कहत श्याम अब भये पराये ॥
पुनि वसुदेव लिखीका बाता ❀ बोली बिलखि यशोदा माता ॥
यद्यपि हरि वसुदेवकुमारा ❀ उदर देवकीके अवतारा ॥
तद्यपि मोहिं धायहुके नाते ❀ एकबार मोहन मिलिजाते ॥

दो०–उद्धव यद्यपि हम सबै, समझावत ब्रज लोग ।
उठत शूल तद्यपि निरखि, माखनहरिसुखयोग ॥

१ दुर्बळ ।

सो०—रोटी अरु नवनीत, नित माँगत उठि प्रातहीं ॥
को देहै करि प्रीत, तिन्हैं बानि जाने बिना ॥

यदपि देवगृह सम सुख भोगा ❀ है वसुदेव सदन सब योगा ॥
हम पशुपाल ग्वाल ब्रजवासी ❀ दही मही धन घोष निवासी ॥
राज सुखन कोउ कोटि लडावे ❀ बिनमाखन नहिं हरि सुखपावे ॥
निशिदिन रहत यहै जिय शोचू ❀ ह्वैहैं हरि ह्वां करत सकोचू ॥
एकबार गोकुल फिरि आवैं ❀ मनकरि माखन भोग लगावैं ॥
अधिक रहैं गोकुलमें नाहीं ❀ उलटि बहुरि मधुपुरिको जाहीं ॥
ऐसे कहि यशुमति बिलखाई ❀ उद्धव चरण रही शिर नाई ॥
तब उद्धव बोले सुखपाई ❀ धन्य यशोमति धनि नँदराई ॥
धन्य धन्यहैं भाग तुम्हारे ❀ जिनको कृष्ण प्राण ते प्यारे ॥
पूरण ब्रह्म कृष्ण सुखरासी ❀ जगदातमा सकल घट बासी ॥
हैं ब्यापक पूरण सब पाहीं ❀ जैसे अग्नि काठके माहीं ॥
मतिजानो हरि हमते न्यारे ❀ वैहैं सब जनके रखवारे ॥

दो०—मति जानो सुत करि तिन्हैं, वे सबके करतार ।
तात मात तिनके नहीं, भक्तन हित अवतार ॥

सो०—हम हैं सब अज्ञान, प्रभु महिमा जानैं नहीं ।
वे प्रभु पुरुष पुरान, जन्म कर्म करिकै रहित ॥

हम सब अपने भ्रमहिं भुलाने ❀ नर समान हरिको करि जाने ॥
ज्यों शिशु आप चक्र सम फिरई ❀ ताको फिरत जानि सब परई ॥
ताते प्रभुहिं जानि हरि ध्यावो ❀ जाते मुक्ति पदारथ पावो ॥
उद्धव जो तुम हमहिं सिखावत ❀ हमहूँ बहुत मनहिं समुझावत ॥
तदपि वह मृदु रूप कन्हाई ❀ देखे बिना रहो नहिं जाई ॥
सब ब्रजके जीवन हरि बारे ❀ उद्धव कैसे जात बिसारे ॥
जादिन मोहन बनहिं न जाते ❀ तादिन बन खग मृग अकुलाते ॥
नहिं अघात देखे वह मूरति ❀ रूपनिधान साँवरी सूरति ॥

१ माखन ।

ग तृण भरि उदर[1] न खाहीं ❀ भये रहत कृशे श्यामबिनाहीं ॥
यली ध्वनि खग मोहे जोई ❀ सो अब मुखफल खात न कोई ॥
जे वन सदा नवल सुखदाता ❀ ते अब सूखे जीरण[2] पाता ॥
कोकिल कीर मोर नहिं बोलैं ❀ व्याकुलभये सकल वनडोलैं ॥

दो०-जिन्हैं चरावत श्यामजू, फिरत दुखारी गाय ।
जहँ जहँ गोदोहन कियो, सूँघत तहँ तहँ जाय ॥

सो०-सब ब्रज बिरह अधीर, युग सम बीतत पल हमैं ।
धरैं कौन विधि धीर, उद्धव मनमोहन बिना ॥

ऐसेहि कहत सुनत गुण हरिके ❀ बैठे बीति गई निशि भरिके ॥
ठाढे यशुदहि रैनि बिहानी ❀ भरि भरि लोचन ढारत पानी ॥
ब्रज घर घर सब होत बधाई ❀ कहत कान्हकी पाती आई ॥
निपट समीपी सखा सुहायो ❀ उद्धवको हरि ब्रजहि पठायो ॥
कंचन कलश दूध दधि रोरी ❀ नन्द सदन लै आवत गोरी ॥
गोप सखा सब कृष्ण उपासी ❀ आये धाय सकल ब्रजवासी ॥
उद्धवको हरि रूप निहारी ❀ भये सुखी सब नर अरु नारी ॥
ब्रजयुवती मिलि तिलक बनावैं ❀ करि परदक्षिण शीश नवावैं ॥
कहत पायकै दरश तुम्हारो ❀ भयो जन्म अब सफल हमारो ॥
बूझत कुशल सकल नर नारी ❀ नन्द अवाँस भीर भइ भारी ॥
उद्धव लखि ब्रज प्रेम जकेसे ❀ बोलि सकत नहिं रहे थकेसे ॥
हकबकात चहुँ दिशि सब ठाढे ❀ उद्धव रहे मौन गहि गाढे ॥

दो०-उद्धवकी लखिकै दशा, ब्रज जन मन अकुलात ।
क्यों उद्धव तुम कहत नहिं, राम कृष्ण कुशलात ॥

सो०-इक क्षण युग सम जाहि, हमैं सुनेबिनप्रीति हरि ।
आवन कह्योकि नाहिं, ब्रजहि कृपा करि साँवरे ॥

तब उद्धव बोले धरि धीरा ❀ सदा कुशल हरि हलधर बीरा ॥
दियो तुम्हैं लिखि पत्र सँदेशू ❀ अरु श्रीमुख यह कह्यो निदेशू ॥

करि समाधि अन्तर मोहिं ध्यावो ❀ गोपसखाकरि मति चितलावेई ॥
हौं अनादि अविगति अविनासी ❀ सदा एक रस सब घटवासी ॥
निगुण ज्ञान बिन मुक्ति न होई ❀ वेदपुराण कहत है सोई ॥
ताते दृढ करि यह मन धारो ❀ सगुणरूप तजि निगुण विचारो ॥
तुरत तापत्रय टरि दुखदाई ❀ मिलिहौ ब्रह्मसुखहि सबजाई ॥
उद्धव कही जबहिं यह बानी ❀ गोपी जन सुनिकै बिलखानी ॥
इतनी दूर बसत सुनि आली ❀ अब कछु और भये बनमाली ॥
रही बिरहकी बात बिचारी ❀ बूडी सकल मनहुँ बिनवारी ॥
मिलन आश गइ सुनत सँदेशू ❀ उपज्यो उर अतिकठिन अँदेशू ॥
फैलि गई जहँ तहँ यह बानी ❀ कहत परस्पर सब अकुलानी ॥

दो०-यह सब दोष लगै हमैं, करमरेख को जान ।
प्रेम सुधा रस सानि कै, अब लिखि पठयो ज्ञान ॥

सो०-इक ऐसे यह देह, रही झरसि विरहा अनल ।
कैलाहूते खेह, अब आयो उद्धव करन ॥

रूप राशि जो सब सुखदाई ❀ ब्रजके जीवनभूरि कन्हाई ॥
बिछुरे जिन्हैं इतो दुखपायो ❀ सो अब हिरदय माहिं बतायो ॥
तिन्हैं कहत चितवो मन माहीं ❀ वेहैं पूरण भरि सब ठाहीं ॥
जाको यत्न करतहैं योगी ❀ निर्गुण निराकार निर्भोगी ॥
सो करि कृपा आइकै ऊधो ❀ बीथिन माँझ बहायो सूधो ॥
अबलन कारण श्याम पठायो ❀ व्यापक अगह गहावन आयो ॥
भयो आय विरहन सब कोई ❀ गायौ निर्गुण निगम न जोई ॥
जो समदृष्टि एकरस मोहन ❀ तो कित चित्त चुरायो गोहन ॥
उद्धव यह हित लागै काहै ❀ जोपै इष्ट कृष्ण हिय माहै ॥
निशिदिन नयन दरशहितजागत ❀ कलनहिंपरतपलकनाहिंलागत ॥
चहुँदिशि चितवत विरह अधीरा ❀ बिलखि बिलखिभरिडारत नीरा ॥
ऐसेहु दुख प्रगटत क्यों नाहीं ❀ जोपै श्यामहिं कहत इहाहीं ॥

दो०-रहन देहु ऐसेहि हमाहिं, अवधि आशकी थाह ।

फिरि चाहै नहिं पाय हौं, डारे अगुण अथाह ॥
यो०-ल्याये युवतिन योग, जो योगिनको भोग तुम ।
हम तनुभरेउ वियोग, भयो अधिकदुखश्रवणसुनि ॥
एक कहत दूषण नहिं याको ❋ यह आयो पठयो कुबिजाको ॥
वाने जो कहि याहि पठायो ❋ सोई याने आय सुनायो ॥
अब कुबिजा जो जाहि सिखावै ❋ सोई ताको गायो गावै ॥
कबहुँ श्याम कैहैं नहिं ऐसी ❋ कही आय ब्रजमें इन जैसी ॥
ऐसी बात सुनैको माई ❋ उठै शूल सुनि सहि नहिंजाई ॥
कहत भोग तजि योग अराधो ❋ ऐसी कैसे कहि हैं माधो ॥
जप[1] तप[2] संयम[3] नेम अचारा ❋ यहसब विधवाको व्यवहारा ॥
युग युग जीवहु कुवँर कन्हाई ❋ शीश हमारे पर सुखदाई ॥
अच्छत पति विभूति किन लाई ❋ कहो कहाँ की रीति चलाई ॥
हमरे योग नेम व्रत एहा ❋ नंदनँदन पद सदा सनेहा ॥
उद्धव तुम्हैं दोषको लावै ❋ यह सब कुबिजा नाच नचावै ॥
जब युवतिन यह बात सुनाई ❋ उद्धव रह्यो मौन सकुचाई ॥
दो०-योग कथा युवतिन कही, मनहीं मन पछिताय ।
प्रेम वचन तिनके सुनत, रहिगयो शीश नवाय ॥
सो०-तब जान्यो मन माहिं, ये गुणहैं सब श्यामके ।
मोहिं पठयो इहि ठाहिं, याही कारन के लिये ॥
उद्धव सुनि गोपिनकी बानी ❋ गुरु करि तिन्हैं प्रथमहीं मानी ॥
मन मन करि प्रणाम हर्षाने ❋ उद्धव चले बहुरि बरषाने ॥
श्री वृषभानु कुवँरि हरि प्यारी ❋ और सकल ब्रज गोपकुमारी ॥
जिनके मनमोहन नँदलाला ❋ सुनी सबन यह बात रसाला ॥
कोउहै मधुबनते आयो ❋ हित करि श्रीनँदलाल पठायो ॥
यूथ यूथ मिलि अति अतुराई ❋ पिय सँदेश सुनतै उठि धाई ॥

---

१ जैअक्षरका मन्त्रहोय तै हजार नित्यजपैभूतशुद्धि प्राणायामकरिके । २ येनकेन इन्द्रियोंको दमनकरै । ३ शुभाचरण ।

मिले उपँगसुत पंथ मँझारी ❋ रथ लखि कहत परस्पर नारी ॥
बहुरि सखी सुफलक सुत आयो ❋ वैसोई रथ परत लखायो ॥
लैगयो प्रथमहिं प्राण हमारो ❋ अबधौं कहा काज जिय धारो ॥
तिहिं क्षण उद्धव दरश देखायो ❋ तब धीरज सबके मन आयो ॥
संगी सखा श्यामको चीन्हों ❋ सबन प्रणाम जोरि कर कीन्हों ॥
उद्धव लखि अति भये सुखारी ❋ मनहुँ बिकल झख पायो बारी ॥
दो०-तब उद्धव रथते उतरि, बैठे तरुकी छाहिं।
भई भीर गोपीनकी, अति आनँद मनमाहिं ॥
सो०-अति प्रिय पाहुन जान, सुधि ल्याये ब्रजराजकी।
करिकै अति सनमान, प्रेम सहित पूजे सबनि ॥
हाथ जोरि पुनि विनय सुनाई ❋ कहिये उद्धव निज कुशलाई ॥
बहुरि कहौ मधुबन कुशलाता ❋ है वसुदेव देवकी माता ॥
कुशल क्षेम कहिये बलदाऊ ❋ अरु अक्रूर कुशल कुबिजाऊ ॥
बूझत श्याम कुशल अकुलानी ❋ नयन नीर मुख गदगद बानी ॥
लखि गोपिनकी प्रीति सोहाई ❋ प्रेम मगनभे उद्धवराई ॥
पुलकि गात अँखियन जल छाई ❋ गयो ज्ञानको गर्व हिराई ॥
पुनि पुनि यहै कहत मन माहीं ❋ ऐसी हरिको बूझिय नाहीं ॥
ब्रज नारिन को योग पठावैं ❋ चितते ब्रजकी प्रीति मिटावैं ॥
पुनि उद्धव उरमें धरि धीरा ❋ बोले शोधि नयनको नीरा ॥
सबबिधि कहि हरिकी कुशलाती ❋ दीन्हीं प्रथम श्यामकी पाती ॥
लै लै करन मिलति सब पाती ❋ कोउ नयनन कोउलावतिछाती ॥
काहू लैकर शीश चढाई ❋ बूझत आपन लिखी कन्हाई ॥
दो०-अतिहितपातीश्यामकी, सबमिलिमिलिसुखपाय।
उद्धव कर दीन्ही बहुरि, दीजै बाँचि सुनाय ॥
सो०-उद्धव सबन समोध, बाँचि श्यामकी पत्रिका।
लागे करन प्रबोध, ज्ञान कथा बिस्तारिकै ॥
मोको हरि तुम पास पठायो ❋ आतमज्ञान सिखावन आयो ॥

...कुँ पाप नहीं नियराई ❀ मनते विषय देहु बिसराई ॥
...योआपहि नर आपुहि नारी ❀ आपहि गृही आप ब्रह्मचारी ॥
दो...पहि पिता आपही माता ❀ आपहि पुत्र आपही भ्राता ॥
आपहि पंडित आपहि ज्ञानी ❀ आपहि राजा आपहि रानी ॥
आपहि धरती आप अकासा ❀ आपहि स्वामी आपहि दासा ॥
आपहि ग्वाल आपही गाई ❀ आपहि गाय दुहावन जाई ॥
आपहि भ्रमर आपही फूला ❀ आपहि ज्ञान बिना जग मूला ॥
रांव रङ्क दूजा नहिं कोई ❀ आपहि आप निरन्तर होई ॥
ज्यों बहु दीप ज्योति है एकू ❀ तैसोइ जानें ब्रह्म बिवेकू ॥
यहि प्रकार जाको मन लागै ❀ जरा मरण संशय भ्रम भागै ॥
योग समाधि ब्रह्म चित लावै ❀ ब्रह्मानन्द सुखहि तब पावै ॥

दो०-सुनतहि उद्धवके वचन, रहीं सबै शिरनाय ।
मानहुं माँगत सुधारस, दीन्हों गरल पियाय ॥
सो०-रहीं ठगीसी नारि, हरि सँदेश दारुण सुनत ।
बोली बहुरि सँभारि, उद्धवसों करजोरिकै ॥

भले मिले तुम उद्धवराई ❀ भली आय कुशलात सुनाई ॥
कछु यक हती मिलनकी आशा ❀ कियो आप ताको तुम नाशा ॥
इन बातन कैसे मन दीजै ❀ श्याम बिरह तनु पल पल छीजै ॥
बिन देखे वह मूरति प्यारी ❀ कुंडल मुकुट पीत पट धारी ॥
उद्धव कहो कौनविधि जीजै ❀ योग युक्ति लैकै कह कीजै ॥
छाँडि अछत नँदनंदन प्यारो ❀ को लिखि पूजै भीति पगारो ॥
हम अहीर गोरसके भोगी ❀ योग युक्ति जानैं कोउ योगी ॥
उद्धव तुमसों साँच बखानैं ❀ प्रेम भक्ति हमरे मन मानैं ॥
हमको भजनानंद पियारो ❀ ब्रह्मानँद सुख कहा बिचारो ॥
ब्यावरि व्यथा न वंध्या जानैं ❀ ये दृग हरि दरशन सुखमानैं ॥
पुनि पुनि हमैं वहै सुधि आवै ❀ कृष्णरूप बिन और न भावै ॥

१ राजा । २ दरिद्री । ३ विष । ४ बांझ ।

नवकिशोरको नयन निहारैं ❀ कोटि ज्योति ताऊपर वारैं ॥
दो०-अधर अरुण मुरली धरे, लोचन कमल विशाल ॥
क्यों बिसरत उद्धव हमैं, मोहन मदनगोपाल ॥
सो०-सजल मेघतनु श्याम, रूपराशि आनँद भरचो ।
मोही सब ब्रज बाम, और न जानत ब्रह्म हम ॥
उद्धव सुनि गोपिनकी बानी ❀ बोले बहुरो साजि सयानी ॥
जो लगि हृदय ज्ञान नहिं नीकैं ❀ तौलौं सब पानीकी लीकैं ॥
बूझे बिन स्वप्नो सब होई ❀ बिनविवेक सुख पाव न कोई ॥
रूप रेख जाके कछु नाहीं ❀ नयन मूँदि चितवो मन माहीं ॥
हृदय कमलमें ज्योति बिराजै ❀ अनहदनाद निरंतर बाजै ॥
इडा पिंगला सुखमन नारी ❀ सहज शून्यमें बसत मुरारी ॥
नासा अग्र ब्रह्मको बासा ❀ धरहु ध्यान तहँ ज्योति प्रकासा ॥
क्रम क्रम योग पंथ अनुसरहू ❀ इहि प्रकार भव दुस्तर तरहू ॥
उद्धव हम गोपाल उपासी ❀ ब्रह्मज्ञान सुनि आवत हासी ॥
जो वै रूप रेख नहिं चीन्हा ❀ हाथ पांव मुख नयन बिहीना ॥
तो यशुदा करि काको जायो ❀ काको पलना घालि झुलायो ॥
कैसे ऊखल हाथ बँधायो ❀ चोरि चोरि कैसे दधि खायो ॥
दो०-कौन खिलाये गोदकरि, कहे न तुतरे बैन ।
उद्धव ताको न्यावहै, जाहि न सूझै नैन ॥
सो०-नटवर वेष प्रकाश, श्रीवृंदावन चंद्र तजि ।
को खोजै आकाश, शून्य समाधि लगायकै ॥
जानि बूझि मति होहु अयानी ❀ मानहुँ सत्य हमारी बानी ॥
भजो ब्रह्म ब्रह्मै सब होहू ❀ छांडि देहु ममता अरु मोहू ॥
माया नित आँधरी न बूझै ❀ ज्ञान अनन्त नयन सब सूझै ॥
मैं यह कहत कृष्णकी भाखी ❀ देखहु बूझि वेद सब साखी ॥
लगे आगि घर घूर जरावै ❀ को निज गृह तजि घूर बुझावै ॥

१ नेत्र । २ ज्ञान । ३ माया ।

...कुंकरौं बलयोग सँवारो ❋ भक्ति विरोधी ज्ञान तुम्हारो ॥
...या कहा सब ओढि बिछावें ❋ दुसह वचन हमको नहिं भावें ॥
दो बलन आनि सिखावत योगू ❋ हमभूलीं कैधौं तुम लोगू ॥
ऐसे कहि गोपी अनखानी ❋ मनमें श्याम परेखो आनी ॥
ताही समय भ्रमर इक आयो ❋ सहज निकट ह्वै वचन सुनायो ॥
तासों कहि सब बात सुनावैं ❋ उद्धव प्रति बहु व्यंग्य बनावैं ॥
वचन स्वभाव त्रिगुण अनुसारी ❋ लागीं कहन सकल ब्रजनारी ॥
दो०-कोऊ उद्धव सों कहति, कोइ आली प्रति बात ।
निज निज मनकी उक्तिकरि, अपनी अपनीघात ॥
सो०-उद्धव भूले ज्ञान, उत्तर बोलि न आवहीं ।
रहे मौनसों मान, सुनत वचन नारीनके ॥
बोलि उठी ऐसे इक ग्वारी ❋ आय सुनोरी सब ब्रजनारी ॥
आयो मधुप देन पदनीको ❋ लीन्हे शशी सुयशको टीको ॥
तजन कहत भूषण पट गेहा ❋ सुतपति बंधव सजन सनेहा ॥
शीश जटा अरु भस्म लगावो ❋ सगुण छाँडि निर्गुण मनलावो ॥
आये करन तियन परछोहां ❋ वस्ती छाँडि बतावत खोहा ॥
सुनि सखि कहत एक अरु बाला ❋ ये मधुपुर दोउ बसत मराला ॥
वे अक्रूर और ये ऊधो ❋ निरवारक पानी अरु दूधो ॥
जानत भली गाँसकी बाता ❋ इनहीं कंस करायो घाता ॥
इनके कुल ऐसी चलि आई ❋ प्रगट उजागर वंश सदाई ॥
अबकरि कृपा ब्रजहि उठिधाये ❋ अबलन योगसिखावन आये ॥
ऐसे एक कहति अरु ग्वाली ❋ ये दोउ इकमन सुन री आली ॥
तब अक्रूर अबहिं ये ऊधो ❋ ब्रज आखेट कीन इन सूधो ॥
दो०-बचनफाँसि फँसिहँसि हरन, उनलिय रथबैठाय ।
हर लीन्हीं इन गोपिका, हती ज्ञान शर[3] आय ॥
सो०-देखहु लीन्हीं लाय, चहुँ दिशि दावा योगकी ।

१ दया । २ शिकार । ३ बाण ।

भई कठिन अति आय, अबधौंकाचाहतकि[illegible]ई ॥
लागी कहन और यक ग्वारी ❀ मधुकर जानी बात तुम्ह[illegible] ॥
तुम जो हमें योग यह आन्यो ❀ करी भली करणीसो जान्य[illegible] ॥
इक हरि विरह रहीं हम जरिके ❀ सुनते अधिक उठीं अब बरिके ॥
तापर अब जनि लोन लगावो ❀ मतै पराई बात चलावो ॥
दई श्याम तुम्हरे कर पाती ❀ सुनिकै बहुत सिरानी छाती ॥
कीन्हों उलटो न्याय कन्हाई ❀ बहेजात माँगत उतराई ॥
इकहम दुसह विरह दुखपावैं ❀ दूजे लिखिलिखि योग पठावैं ॥
मधुकर श्याम भेद अब पायो ❀ नेहरत्न उन कहूँ गवाँयो ॥
पहिले अधर सुधारस प्यायो ❀ कियो पोष बहु लाड लडायो ॥
बहुरो शिशुको खेल बनायो ❀ गृहरचना रचि चलत मिटायो ॥
साँप कंचुकी ज्यों लपटाई ❀ ऐसी हितकी रीति दिखाई ॥
बहुरो सुरतिलई नहिं जैसे ❀ तजी श्याम हमको अब ऐसे ॥
दो०–करहुराजजहँजाउतहँ, लेहु अपन शिरभार ।
दीजत सबै अशीश यह, न्हातहु खसो न बार ॥
सो०–बहुरङ्गी सुखतूल, जितहिंजात तितहीं सदा ।
इक रंगी दुखमूल, चातक मीन पतंग गति ॥
[illegible]धुप कहा कहि तुम्हैं सुनैये ❀ करिकै प्रीति सबै पछितैये ॥
निबहैगी ऐसे हम जानी ❀ उन लैकै कछु औरै ठानी ॥
कारे तनको कहा पत्यारो ❀ मृदु मुसकनि मनहरो हमारो ॥
तब काहू मन हरत न जान्यो ❀ हँसिहँसि सबलोगन सुखमान्यो ॥
बरुवहि कुबिजा कीन्हों नीको ❀ सुनिसुनिमधुपमिटत दुखजीको ॥
चंदन तनक श्याम उर धरिकै ❀ श्रीसरबस्यपियो सब भरिकै ॥
जैसो छल हमसों हरिकीन्हों ❀ ताको दावँ कूबरी लीन्हों ॥
बोली और एक या नारी ❀ भाग दशा उद्धवकिन जारी ॥
बिलपत रहत सकल ब्रजनारी ❀ कुबिजा भई श्यामकी प्यारी ॥

बच्यो असुरनको जोई ❀ अबकुलबधू कहावति सोई ॥
कुँवरि कोऊ हरि वरते ❀ तो कछु हमचितमें नहिं धरते ॥
यो साथ अब अतिही आगर ❀ कागा और मराल उजागर ॥
दो०–अब खेलत दोउ लाजतजि, बारहमासी फाग ।
लौंडीकी डौंडी बजी, हाँसी अरु अनुराग ॥
सो०–हमैं देत वैराग, अपना दासी वश भये ।
चतुर चचोरत आग, उद्धव यह अचरज बडो ॥
उद्धव हरि ऐसे काजन करि ❀ सुयश रह्यो त्रिभुवन माहींभरि ॥
आये असुर जिते ब्रजमाहीं ❀ मारे सकल बच्यो कोउ नाहीं ॥
बिष जल सों सब ग्वाल जिवाये ❀ कालीनाग नाथिलै आये ॥
इन्द्रमान दलि ब्रजहि बचायो ❀ गोवर्द्धन कर बाम उठायो ॥
जब विधि बालक वत्स चुराये ❀ करिकै यत्न आप उपजाये ॥
धनुष तोरि गजप्रबल सँहारो ❀ मल्लन सहित कंस नृप मारो ॥
कीन्हों उग्रसेन को राजा ❀ भये सकल देवनके काजा ॥
ऐसी कीरति करि सब नासी ❀ कीन्ही नारि कूबरी दासी ॥
कहँ श्रीपति त्रिभुवन सुखदायक ❀ अखिललोक ब्रह्मांडकेनायक ॥
ब्रह्मा शिव इन्द्रादिक देवा ❀ करत निरंतर जाकी से[illegible] ॥
उद्धव कहाँ कंसकी दासी ❀ यह सुनि होत सकल ब्रजहा[illegible]
कत मारत यदुकुलको लाजन ❀ अब करिकै हरि ऐसे काजन ॥
दो०–गावत जग सब गीत अब, धा चेरीके काज ।
उद्धव यह अनुचित बडो, चेरीपति ब्रजराज ॥
सो०–उद्धव कहिये जाय, अबहूँ चेरी परिहरैं ।
यह दुख सह्यो न जाय, सवति कहावति कूबरी ॥
बोली और बाम यक ऐसे ❀ उद्धव हरि रीझे धौं कैसे ॥
यक चेरी अरु कूबर पाछे ❀ सोवत नहीं उताने आछे ॥
कुटिल कुरूप जातिकुल हीनी ❀ ताको श्याम सुहागिनि कीनी ॥

१ हंस । २ सम्पूर्ण ।

कहा सिद्धि धौं कूबर माहीं ❀ हमको लिखि पठवत क्यों [illegible]कीाई ॥
हमहूं कूबर यत्न बनावैं ❀ चालक टेढी चाल दि[illegible] ॥
कहैं श्याम सोई अब कीजै ❀ लोक लाज भामिनि तजि दीजै ॥
होहिं आय गोकुलके बासी ❀ तजैं निगोडी कुबिजा दासी ॥
मधुकर जो हरि हमैं बिसारचो ❀ गोपीनाथ नामयों धारचो ॥
जो नहिं काज हमारे आवत ❀ तौ कलंक कत हमहिं लगावत ॥
जोपै प्रीति करी कुबिजाकी ❀ तौ अब बिरद बुलावहि ताकी ॥
करतहि सुगम सबन करि पाई ❀ प्रीति निबाहन अति कठिनाई ॥
अब परतीति कौन विधि माने ❀ क्षणमें ह्वैगये श्याम बिराने ॥

दो०-ज्यों गजकेरदत्योंकरी, हरिहमसों पहिचान ।
दिखरावनको आनही, काज करनको आन ॥

सो०-विषकीरा विष खात, छाँडि छुहारा दाख फल ।
मन मन कीजै बात, उद्धव कहिये काहिसों ॥

उद्धव कहि कह तुम्हैं सुनावैं ❀ जैसे हरि बिन हम दुख पावैं ॥
बरु रहते मथुरा घनश्यामा ❀ कित आये यशुदाके धामा ॥
कत करि गोप वेष सुख दीन्हों ❀ कत गोवर्द्धन कर पर लीन्हों ॥
क[illegible] रासरसरचि बनमाहीं ❀ किये विविधसुखबरणि न जाहीं ॥
[illegible]के ऐसी प्रीति कन्हाई ❀ अब मन धरी इती निठुराई ॥
जबते ब्रजतजि गये बिहारी ❀ तबते ऐसी दशा हमारी ॥
घटे अहार विहार हर्ष हिय ❀ भोग सँयोग आश आवन जिय ॥
बाढी निशा बलय आभूषन ❀ लोचन जल अंचल प्रति अंजन ॥
उर चिन्ता कंचुकी उसासा ❀ जीवन रह्यो अवधिकी आसा ॥
बीतत निशा गनत नभतारे ❀ दिवस तकत पथ लोचन हारे ॥
रही नहीं सुधि बुधि मन माहीं ❀ बिरहानल तनु जरत सदाहीं ॥
सुमिरि सुमिरिकै हरिगुणग्रामा ❀ दुख अधिकात सुहात न धामा ॥

दो०-कहँलगि कहिये निजव्यथा, अरु हरिकीनिठुराय ।

१ दाँत । नेत्र ।